आर्चबिशप की मृत्यु

आर्चबिशप की मृत्यु

लेखिका

कुमारी विला कैथर

जय भारती
९०, नया कटरा, इलाहाबाद—२
१९६१

हिन्दी अनुवाद—प्रथम संस्करण सन् १९६९

●

अनुवादक—विद्या भास्कर
और
हरिप्रताप सिंह

●

मूल्य ४॥५०

●

मुद्रक—सरयू प्रसाद पाण्डेय,
नागरी प्रेस,
दारागंज, इलाहाबाद

विषय-सूची

पूर्व कथा : रोम में

सन् १८४८ ई० के ग्रीष्म ऋतु मे, एक दिन सध्या समय, रोम नगर के समीपवर्ती पर्वतीय प्रदेश स्थित एक मकान के उद्यान मे बैठे हुए, तीन कार्डिनल (धर्म्माध्यक्ष) तथा अमेरिका से आये हुए एक धर्म-प्रचारक पादरी भोजन कर रहे थे। मकान के बारजे पर खडे होने से प्राकृतिक छटा का मनोहर दृश्य उपस्थित होता था। जिस उद्यान मे बैठे वे चारो व्यक्ति भोजन कर रहे थे, वह उस लम्बे बारजे के दक्षिणी किनारे के लगभग बीस फुट नीचे, पहाडी की एक सीधी ढाल के ऊपर स्थित था। ढाल मे, नीचे अगूर का लता-कुज था। उद्यान से ऊपर बारजे तक पत्थर की सीढियाँ लगी हुयी थी। खाने की मेज एक वर्गाकार स्थान मे लगी हुई थी, जिसके चारो ओर सतरे तथा सदाबहार के वृक्ष लगे हुए थे और जो चट्टानो पर उगे हुये चीड के वृक्षो से आच्छादित था। उद्यान के जगले से आगे बढ़ने पर हवा घाटी मे प्रवेश करती थी, और उससे भी नीचे, ऊँचा-नीचा विशाल विस्तृत मैदान रोम नगर की सीमा तक फैला हुआ था, बीच मे अन्य कुछ भी नही था।

आर्चविशप की मृत्यु

स्पेनिश कार्डिनल तथा उनके तीनो मेहमान आज बडी जल्दी ही भोजन करने बैठ गये थे। सूर्यास्त होने में अभी एक घण्टे की देरी थी। साध्य रवि की उज्ज्वल किरणो से सारा प्रदेश देदीप्यमान था। दूर, रोम नगर की वाह्य रेखा क्षितिज मे धुँधली पड गयी थी, केवल सेट पीटर्स गिरजाघर का वह भूरे रग का गुवद ही एक विशाल वैलून के चपटे सिरे के रूप मे, सध्या के उस सुनहरे प्रकाश में चमक रहा था। कार्डिनल को इस समय, तीसरे पहर के अत मे, जब इतना पर्याप्त प्रकाश था, कि बाहर अन्य कोई कार्य किया जाय, भोजन आरम्भ करने की अजीव सनक थी। संध्या का प्रकाश वडा ही मनोहर था। उसमे सहज ही कार्य करने की प्रेरणा मिलती थी। वह प्रखर भी था और साथ ही सुहाना भी। उसकी प्रखरता कुछ ऐसी थी, मानो असख्य लाल लौ वाली मोमवत्तियाँ एक साथ जल रही हो। प्रकाश की किरणे चीड के वृक्षो पर पड़ती थी, जिससे उनके लाल, वादामी रंग के तने चमक रहे थे, परन्तु उनकी काली पत्तियाँ अपेक्षाकृत धुँधलो दीख रही थी। सतरे की चमकीली हरी पत्तियाँ तथा सदावहार के गुलावी फूल किरणो के प्रकाश मे सुनहरे रग के हो रहे थे। पत्तियो पर किरणो के पडने से विभिन्न प्रकार के टेढे-मेढे, गुलावी, वेल-वूटेदार तथा स्फटिक आकार के चित्र वन रहे थे। पादरीगण धूप से वचने के लिये अपने सिरो पर चौकोर आकार की टोपियाँ लगाये हुये थे। तीनो कार्डिनल काले रग के चुस्त चोगे पहने हुए थे, जिनके किनारे तथा वटन गहरे लाल रंग के थे। पादरी एक वैगनी रग के वासकट के ऊपर एक लम्वा काला कोट पहने हुए थे।

वे एक विशेष प्रयोजन की वातें कर रहे थे। वात यह थी, कि उत्तरी अमेरिका के न्यू मेक्सिको नामक राज्य मे, जो हाल ही मे सयुक्त राज्य अमेरिका मे मिलाया गया था, एक विकारेट (पोप द्वारा नियुक्त साकेतिक विशप का पद) की स्थापना के सम्वन्ध मे वे विचार विमर्श कर रहे थे।

बाल्टीमोर की प्रातीय कौंसिल इसकी स्थापना के लिये पोप के यहाँ अपील करने वाली थी। न्यू मेक्सिको के इस नये राज्य-क्षेत्र के सम्बन्ध मे उन्हे बहुत थोडा ज्ञान था। धर्म-प्रचारक पादरी भी कुछ विशेष नही जानते थे। इटालियन तथा फ्रासीसी कार्डिनल उसे लॉ मेक्सीक कहते थे, और स्पेनिश कार्डिनल बातचीत के दौरान मे उसे 'न्यू स्पेन' कहते थे। उनका इस सभावित विकारेट के सम्बन्ध मे अल्पमात्र अनुराग था, जिसे पादरी फादर फेराड रह-रह कर जाग्रत किया करते थे। फादर फेराड जन्म से आयरिश थे, उनके पूर्वज फ्रासीसी थे तथा वे विश्व मे बहुत दूर-दूर तक घूमे हुए थे और नयी दुनिया (अमेरिकी गोलार्द्ध) मे, जो ईसाई धर्म का नया प्रचार-केन्द्र था, पर्याप्त सफलता प्राप्त की थी। चारो व्यक्ति फ्रासीसी भाषा मे बात कर रहे थे—अब वह समय नहीं रह गया था कि कार्डिनल लोग किसी समकालीन विषय पर लेटिन भाषा मे बातचीत करते।

फ्रासीसी तथा इटालियन कार्डिनल अधेड अवस्था के हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति थे—फ्रासीसी मोटे तगडे तथा लाल रग के थे और इटालियन दुबले-पतले, कुछ पीले रग के तथा टेढी नाक वाले। इनके मेज़बान स्पेनिश कार्डिनल ग्रेशिया मेरिया द अलादे, अब भी युवावस्था मे थे। उनका रग कुछ गेहुँआ था, परन्तु उनका लम्बा स्पेनिश चेहरा उनके पूर्वजो की भाँति, जिनके अनेक चित्र उनके कमरे मे टगे हुए थे, लम्बा नही था, क्योकि उनकी माँ एक अग्रेज़ महिला थी। उनकी आँखें काले रग की थी, उनका अग्रेज़ी मुखडा बडा आकर्षक एव सुहाना तथा उनका व्यवहार निष्कपट एव स्पष्ट था।

सोलहवें ग्रेगरी के शासन-काल के अतिम वर्षो मे द अलादे वेटिकन (रोम नगर मे पोप का वास-स्थान) के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे, परन्तु दो वर्ष पहले, ग्रेगरी की मृत्यु के पश्चात्, वे वेटिकन छोडकर अपने ग्रामीण निवास-स्थान मे चले आये थे और अब यही रहने लगे थे। वे

नये पोप के सुधारो को अव्यावहारिक तथा खतरनाक समझते थे और उन्होने राजनीति से सन्यास ले लिया था। वे अब केवल सोसायटी फॉर दी प्रोपेगेशन ऑफ दी फेथ (ईसाई मत के प्रचार की सस्था) के लिये, जो ग्रेगरी द्वारा स्थापित की गयी थी, कार्य करते थे। अपने अवकाश के समय मे कार्डिनल महोदय टेनिस खेलते थे। वालकपन मे, जब वे इगलैड मे थे, वे इस खेल के बडे ही शौकीन थे। तब टेनिस वाहर लान (मैदान) मे नही खेला जाता था। कार्डिनल घर के अदर ही फील्ड आदि बनाकर खेलते थे। स्पेन और फ्रास के प्रसिद्ध खिलाडी उनके मुकावले मे टेनिस खेलने आया करते थे।

पादरी फेराड अन्य तीनो व्यक्तियो की अपेक्षा कही अधिक वृद्ध दीख पडते थे। उनका शरीर वृद्ध तथा कठोर था परन्तु उनकी गाढी नीली आँखें अब भी बिलकुल स्पष्ट तथा स्वस्थ दीख पड़ती थी। उनका धार्मिक अधिकार-क्षेत्र अमेरिका के ग्रेट लेक्स के किनारे का शीत प्रदेश था। वे अपने क्षेत्र मे, अपने काम के सिलसिले मे, अकेले ही घोडे पर सवार होकर लम्बी-लम्बी यात्राए करते थे और उस शीत प्रदेश की ठंडी तथा तेज़ हवा ने उनके शरीर को काफी जर्जरित कर दिया था। चूँकि पादरी महोदय यहाँ एक विशेष प्रयोजन से आये थे, वे अपने मतलव की ही वात पर वार-वार वल दे रहे थे। वे अन्य तीनो व्यक्तियो की अपेक्षा अधिक शीघ्रता से खा रहे थे, इसलिये उन्हे अपनी वात कहने का अपेक्षाकृत अधिक समय मिलता था। वे भोजन की वस्तुए इतनी शीघ्रता से समाप्त कर रहे थे कि फ्रासीसी कार्डिनल ने यह व्यगोक्ति की कि वे नेपोलियन के साथ भोजन करने के लिये आदर्श साथी सिद्ध हुए होते।

इस पर पादरी हँस पडे और हाथ फैला कर अशिष्टता के लिये क्षमा माँगने लगे। "सम्भव है कि मै शिष्टाचार भी सब भूल गया हूँ। वात यह है कि मेरा मस्तिष्क दूसरी उलझन मे लगा हुआ है। आप लोग यहाँ

बैठे यह नही समझ सकते कि अमेरिका द्वारा उस विशाल राज्य क्षेत्र को, जहाँ से नयी दुनिया मे ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ हुआ था, अपने देश मे मिला लेने का महत्त्व क्या है। न्यू मेक्सिको का विकारेट कुछ वर्षो मे ही तोड दिया जायगा और उसके स्थान पर विशिष्ट विशप के पद की स्थापना होगी, जिसका अधिकार-क्षेत्र उस समूचे विशाल देश पर होगा, जो रूस को छोड़कर मध्य और पश्चिमी यूरोप से क्षेत्रफल मे बडा है। उस पद पर आसीन विशप के निर्देशन मे महत्त्वपूर्ण कार्यों की शुरुआत होगी।"

"क्या शुरुआत होगी," इटालियन कार्डिनल ने बुदबुदा कर कहा, "कितनी बार, कितने कार्य वहाँ आरम्भ किये गये, परन्तु सब टाँय-टाँय फिस ! केवल गडबडी के समाचार तथा पैसो की माँग अवश्य आया करती है।"

पादरी ने उनकी ओर घूमकर बडी शांति से कहा, "कृपया मेरी बात ध्यान से सुनिये। इस प्रदेश मे ख्रीष्टीय श्रुति का प्रचार सन् १५०० ई० मे फ्रासिस्कन फादर्स द्वारा आरम्भ किया गया था। पिछले लगभग ३०० वर्षो मे यह वहाँ गैर सिलसिलेवार ढग से चलता आ रहा है और अब तक किसी न किसी प्रकार जीवित है। अब भी वह दु ख के साथ अपने को एक ईसाई धर्म-प्रधान देश कहता है और बिना किसी शिक्षा-दीक्षा के धर्म के स्वरूप को बनाये रखने का प्रयत्न करता है। पुराने प्रचार-गिरजाघर खडहर हो रहे है। जो थोडे से पुरोहित या पादरी है, उनका न तो कोई पथ-प्रदर्शन करने वाला है और न उनमे कोई अनुशासन है। धार्मिक आचार मे वे बडे ढीले हो रहे है और उनमे से कितने तो रखेली पत्नियो के साथ रह रहे है। यदि यह गदगी और गडबडी अब दूर नही की गयी, तो, चूँकि अब यह राज्य-क्षेत्र एक प्रगतिशील देश द्वारा अपने मे मिला लिया गया है, परिणाम

यह होगा कि सारे उत्तरी अमेरिका मे ईसाई धर्म के हितो को धक्का पहुँचेगा।"

"परन्तु वहाँ के धर्म प्रचार-केन्द्र अब भी मेक्सिको के अधिकार-क्षेत्र मे है, क्यो ?" फ्रासीसी कार्डिनल ने पूछा।

"डुरैगो के बिशप के अधिकार-क्षेत्र मे है," मेरिया द अलादे ने कहा।

पादरी ने एक लंबी साँस ली और कहा, "परन्तु प्रभुवर डुरैगो के बिशप एक वृद्ध व्यक्ति है और उनके प्रधान वास-स्थान से साता फे तक की दूरी लगभग पन्द्रह सौ मील की है। गाडी आदि चलने योग्य कोई सडक नही है, नहरे नही है, नाव आदि चलने योग्य नदियाँ नही है। माल असबाब ढोने का काम खच्चरो द्वारा, जिन्हे खतरनाक पगडडियो से होकर चलना पडता है, होता है। वहाँ के रेगिस्तानो मे एक विचित्र ढग का खतरा बना रहता है, मेरा तात्पर्य पानी की कमी अथवा रेड इण्डियनो द्वारा आक्रमण करके हत्या से, जो बहुधा ही हुआ करता है, नही है। वहाँ की भूमि मे असख्य गहरे-गहरे सकरे दर्रे हैं। जमीन मे कुछ गड्ढे तो केवल दस ही फुट गहरे होगे, और साथ ही कुछ ऐसे भी होगे जिनकी गहराई एक हजार फुट तक होगी। यात्री को अपने खच्चर सहित इन पथरीली दरारो मे से होकर गुजरना पड़ता है। किसी भी ओर चलिये, थोडी-थोड़ी दूर पर इन दरारो को पार करना आवश्यक हो जाता है, अन्यथा आप आगे नही बढ सकते। यदि डुरैगो के बिशप किसी अवज्ञा करने वाले पुरोहित को पत्र द्वारा अपने पास तलब करना चाहे, तो पुरोहित को उनके पास पहुँचायेगा कौन ? यह सिद्ध भी कैसे किया जा सकता है, कि पत्र पुरोहित को मिला ही ? डाक ले जाने का काम शिकारियो, सोना ढूंढनेवालो तथा किसी भी ऐसे व्यक्ति से लिया जाता है, जो सयोग से घूमता-घामता उन पगडडियो पर दिखायी पड जाय।"

फ्रासीसी कार्डिनल ने अपना गिलास खाली करके मुँह पोछा।

"और, फादर फेराड, वहाँ के निवासी लोग कौन है ? यदि सभी लोग बनजारे ही है, तो घर पर कौन रहता है ?"

"रेड इण्डियनो की लगभग तीस विभिन्न जातियाँ, जिनमे प्रत्येक के अलग-अलग रीति-रिवाज, अलग-अलग भाषाएँ है। उनमे से बहुत मे तो एक दूसरे के भयानक शत्रु है। इनके अतिरिक्त मेक्सिकन लोग रहते है, जो स्वभावत: बडे ही धर्मिष्ठ होते है। चूंकि वे अशिक्षित है तथा उन्हे कोई पथ-प्रदर्शन करनेवाला नही है, वे अपने पूर्वजो के धर्मों से चिपके हुए है।"

"मेरे पास डुरंगो के बिशप का एक पत्र आया है, जिसमे उन्होने इस नये पद के लिये अपने ही किसी पुरोहित की सिफारिश की है," मेरिया द अलादे ने कहा।

"प्रभुवर, यदि कोई वही का पुरोहित इस पद पर नियुक्त किया गया, तो यह बडे दुर्भाग्य की बात होगी। इस क्षेत्र मे वहाँ के लोगो ने कभी ठीक काम नही किया है। इसके अतिरिक्त यह पुरोहित वृद्ध व्यक्ति है। नया विकार अर्थात् इस नये पद पर नियुक्त किया जाने वाला पुरोहित कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिये, जो नौजवान हो, स्वस्थ एव हृष्ट-पुष्ट हो, उत्साही और बुद्धिमान् हो। उसे जगलीपन से, मूढता से, चरित्रभ्रष्ट पादरियो से तथा राजनीतिक दाव-पेच से निपटना होगा। उसे ऐसा व्यक्ति होना चाहिये, जो सुव्यवस्था को प्राथमिकता दे, उसे वह इतनी ही प्रिय हो, जितनी उसकी जिन्दगी।"

स्पेनिश कार्डिनल की गाढ़ी भूरी आँखो मे एक चमक सी दिखाई दी और उन्होने अपने मेहमान पर तिरछी दृष्टि डालते हुए कहा, "आपकी इस भूमिका से तो मुझे यह सदेह हो रहा है कि आपका अपना कोई उम्मेदवार है, और वह कदाचित् कोई फ्रासीसी पुरोहित है। है न ठीक ?"

"आपका अनुमान ठीक है महोदय! मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि फ्रासीसी मिशनरियो के सबध मे हम एकमत हैं।"

"हाँ," कार्डिनल ने धीरे से कहा, "वे सर्वश्रेष्ठ धर्म-प्रचारक होते है। हमारे स्पेनिश फादर लोगो मे अनेक शहीद हुए है, परन्तु फ्रासीसी कैथोलिक सम्प्रदाय वाले उनसे भी आगे है। वे कुशल सगठन-कर्ता होते है।"

"क्या वे जर्मनो से भी अच्छे होते है ?" इटालियन कार्डिनल ने पूछा, जिसकी सहानुभूति आस्ट्रियनो के प्रति अधिक थी।

"जर्मनो की विशेषता यह है कि किसी वस्तु का वर्गीकरण अच्छा करते है, परन्तु फ्रासीसी लोग उसे सुव्यवस्थित करने मे बडे कुशल होते है। फ्रासीसी मिशनरी लोगो मे सतुलन की भावना होती है तथा उनके सभी कार्य युक्तिपूर्ण होते है। वे सदा ही वस्तुओ के तार्किक सबध का पता लगाने मे लगे रहते हैं। यह उनका व्यसन है।" स्पेनिश कार्डिनल वृद्ध पादरी की ओर फिर घूमे और बोले, "परन्तु फादर, आप इस बर्गंडी शराब की ओर उदासीन क्यो है ? मैने यह शराब अपनी आलमारी मे से विशेषकर आप ही के लिये निकाली है, जिससे कनाडा मे वितायी हुई बीस शीत ऋतुओ की ठड आपकी देह से निकल जाय। ग्रेट लेक हर्टन के आस-पास के प्रदेश मे आपको ऐसी अगूरी शराब तो मिलती न होगी ?"

अपने गिलास को उठाते हुये, जिसे पादरी महोदय ने अब तक नही छुआ था, वे मुस्करा पडे। "यह अत्यन्त श्रेष्ठ शराब है, प्रभुवर। परन्तु अब मुझे इन अगूरी शराबो मे कोई स्वाद ही नही मिलता। वहाँ तो कभी-कभी थोड़ी ह्विस्की और कभी-कभी थोडा रम, यही हमारे लिये अधिक लाभप्रद होता है। हाँ, पेरिस मे पिये हुए शैम्पेन को मैने बहुत पसद किया। हमने चालीस दिन तक समुद्र की यात्रा की थी और समुद्री यात्रा मेरे अनुकूल नही पड़ती।"

"तो फिर हम आपके लिये ऐसी ही शराब मगाते है।" स्पेनिश कार्डिनल ने अपने गुमाश्ते को सकेत किया। "क्या आप उसे बहुत ठडी करके

पीते है ? और आपके नये विकार उस जंगली भैसो, साप, विच्छू आदि वाले देश मे क्या पियेंगे ? वहाँ वे खायेंगे क्या ?"

"वे भैसे का मास तथा लाल मिर्च खायेंगे और पियेंगे पानी । यह भी यहाँ उन्हे वडी कठिनाई से मिलेगा । उनका जीवन कोई आराम का जीवन नही होगा, प्रभुवर । वह देश उनके यौवन तथा शक्ति को ठीक उसी प्रकार सुखा देगा, जिस प्रकार वह वर्षा के पानी को सुखा देता है । उन्हे प्रत्येक त्याग के लिये तैयार रहना पडेगा, सभव है कि उन्हे शहीद भी होना पडे । अभी पिछले ही वर्ष सन फरनैंडिज़ द ताम्रो के रेड इण्डियनो ने अमेरिकन गवर्नर तथा अन्य लगभग एक दर्जन श्वेत व्यक्तियो की हत्या कर डाली तथा उनकी खोपडी का चमडा उतार लिया । उन्होंने अपने पादरी की हत्या नही की, क्योंकि वह विद्रोह का नेता था और उसने स्वय ही इस हत्याकाड की योजना बनायी थी । यह है न्यू मेक्सिको की वर्त्तमान दशा ।"

"आपका उम्मेदवार इस समय कहाँ है, फादर ?"

"वह मेरे ही अधिकार-क्षेत्र मे लेक ओटैरियो के किनारे एक पादरी है । मैने नौ वर्षो तक उसके काम को भली प्रकार देखा है । उसकी अवस्था इस समय केवल पैंतीस वर्ष की है । धार्मिक शिक्षालय से निकलकर वह सीधे हमारे ही यहाँ आया ।"

"और उसका नाम क्या है ?"

"जीन मेरी लातूर ।"

मेरिया द अलादे अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर टिक गये और अपने दोनो हाथो की अँगुलियो के छोरो को आपस मे मिला कर उन्ही की ओर गौर से देखने लगे ।

"यह निश्चित है, फादर फेराड, कि रोम की धार्मिक समिति इस नये पद पर उसी व्यक्ति को नियुक्त करेगी, जिसकी सिफारिश वाल्टीमोर की कौंसिल करेगी ।"

"वह तो है ही प्रभुवर, परन्तु यदि आप 'बाल्टीमोर की प्रातीय कौंसिल को दो शब्द लिख दे, अपना कोई सुझाव दे दें तो—"

"इसका प्रभाव पडेगा, इसे मै मानता हूँ", कार्डिनल ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया। "और आपके कथनानुसार यह पादरी बुद्धिमान्, ज्ञानवान् व्यक्ति है ? तो फिर आप ऐसे व्यक्ति को कौन से अच्छे जीवन मे डालना चाहते है ! लेकिन मेरा ख्याल है, कि हूरो के बीच जीवन बिताने से तो यह बुरा नही है। आपके देश के विषय मे मेरा ज्ञान फेनीमोर कूपर द्वारा अग्रेजी भाषा मे लिखित पुस्तको पर ही आधारित है, जिन्हे मैने बडे चाव से पढा है। परन्तु क्या आप के पादरी को बहुत से विषयो का ज्ञान है ? उदाहरण के लिये, क्या उन्हे कला आदि मे भी रुचि है ?"

"लेकिन महोदय, उसे इसकी क्या आवश्यकता पडेगी ? इसके अतिरिक्त वह ऑवग्ने का रहने वाला है।"

इस पर तीनो कार्डिनल ठहाका मार कर हँस पडे और अपने गिलास फिर से भरने लगे। पादरी द्वारा वार-वार अपनी ही बात पर बल देने के कारण वे ऊब से रहे थे।

"सुनिये", स्पेनिश कार्डिनल ने कहा, "जब तक पादरी महोदय मेरे शैम्पेन को पीकर मुझे अनुगृहीत करते है, मै एक कहानी सुनाता हूँ। आपसे यह प्रश्न पूछने का, जिसे आपने इतनी आसानी से समाप्त कर दिया, एक विशेष कारण है। वेलेशिया के अपने पुश्तैनी घर मे मेरे पास महान् स्पेनिश चित्रकारो के द्वारा रंजित अनेक चित्र है। ये चित्र मेरे परदादा द्वारा एकत्र किये गये थे, जिन्हे इस क्षेत्र का बड़ा अच्छा ज्ञान था तथा जो उस समय के अनुसार काफी धनवान् व्यक्ति थे। अल ग्रीको के चित्रो का उनका सग्रह, मेरे अनुमान से, सारे स्पेन मे सर्वश्रेष्ठ है। मेरे परदादा की वृद्धावस्था मे एक वार न्यू स्पेन से एक धर्म-प्रचारक पादरी भीख

भागता हुआ आया। अमेरिका के सभी धर्म-प्रचारक पादरी आज की तरह तब भी पक्के भिखमगे होते थे, फादर फेराड। इस फ्रासिस्कन पादरी ने पुण्यात्मा रेड इण्डियनो के धर्म-परिवर्तन तथा प्रचार-केन्द्रो के घोर परिश्रम की बात सुना-सुनाकर पर्याप्त सफलता प्राप्त कर ली थी। वह मेरे परदादा के घर आया और स्थानीय पादरी की अनुपस्थिति में उपासना आदि का नेतृत्व करने लगा। उसने मेरे बूढे परदादा से बहुत धन ऐंठ लिया। इसके अतिरिक्त उसने पहनने के कपडे, प्याले इत्यादि भी माग लिये। वह कोई भी वस्तु लेने को तैयार हो जाता था। उसने मेरे परदादा से चित्रो के विशाल सग्रह से एक चित्र की भी याचना की, जिसे वह रेड इण्डियनो के बीच बने मिशनरी गिरजाघर मे लगाना चाहता था। मेरे परदादा ने उससे सग्रह मे से कोई भी चित्र चुन लेने को कहा। उन्हे यह आशा थी कि वह पादरी कदाचित् वही चित्र चुनेगा, जिसे वे आसानी से दे सकते हो। परन्तु नही, उस बडे-बडे बाल वाले फ्रासिस्कन ने सग्रह के एक अत्यन्त श्रेष्ठ चित्र को ही चुना। उसने अल ग्रीको द्वारा चित्रित युवक सन्त फ्रासिस की ध्यान-मुद्रा मे एक चित्र को ही चुना और उस चित्र मे सन्त के माडल के लिये अलबुकर्क के एक सुन्दर डयूक को चुना गया था। मेरे परदादा ने उसके इस चुनाव पर आपत्ति की तथा उसे यह समझाने का प्रयत्न किया कि रेड इण्डियनो को महात्मा ईसा के क्रास पर लटकाये जाने या अन्य किसी के शहीद होने का चित्र अधिक पसन्द आयेगा। सत फ्रासिस का चित्र, जिनका सौंदर्य स्त्रियो जैसा था, उन हत्यारो के लिए किस काम का होगा?

"परन्तु परदादाजी का सब समझाना व्यर्थ सिद्ध हुआ। मिशनरी ने उन्हे जो उत्तर दिया, वह मेरे परिवार में एक कहावत बन गयी है। उसने कहा था—'आप मुझे यह चित्र नही देना चाहते, क्योकि यह एक अच्छा चित्र है। यह ईश्वर के लिये आवश्यकता से अधिक अच्छा

हो सकता है, परन्तु यह आपके लिए आवश्यकता से अधिक अच्छा नहीं है।

"वह चित्र को अन्त मे ले ही गया। मेरे परदादा की सूची मे सत फ्रासिस के क्रमांक एव नाम के नीचे लिखा हुआ है—ईश्वर के नाम पर फ्रे ट्यूडेशियो को दे दिया गया, जिससे न्यू स्पेन के जंगलियों के बीच बने प्यूब्लो दे सिया के मिशनरी गिरजाघर की शोभा बढ़ सके।

"इसी चित्र के सम्बन्ध मे, फादर फेराड, मैने व्यक्तिगत रूप मे डुरेगो के बिशप से पत्र-व्यवहार किया था। एक बार मैंने उन्हे सारा तथ्य लिख कर भेज दिया था। उन्होंने मुझे उत्तर दिया कि सिया का मिशन (प्रचार केन्द्र) बहुत पहले ही नष्ट हो चुका है और उसमे का सारा सामान इधर-उधर हो गया हैं। वह चित्र भी किसी लूट-पाट या हत्याकाड के सिलसिले मे सभवत नष्ट हो गया। यह भी सभव है कि वह अब भी उस गिरजाघर के किसी कोठरी आदि मे या किसी रेड इण्डियन की अंधेरी झोपडी मे कही पड़ा हो। यदि आप का यह पादरी सूक्ष्म दृष्टि वाला हो, तो इस विकारेट पर भेजे जाने पर वह मेरे इस चित्र पर विशेप ध्यान रखे।"

बिशप ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, "नही, मै आप से वादा नही कर सकता, मै कुछ भी नही कह सकता। यह मैने अवश्य देखा है कि यह पादरी बडी असाधारण एव उच्च रुचि का व्यक्ति है, परन्तु वह बहुत ही गभीर रहता है। और, प्रभुवर, वहाँ रेड इण्डियन लोग अब अंधेरी झोपडियो मे नही रहते।"

"इसकी कोई चिंता नही, फादर। मैने फेनीमोर कूपर की पुस्तको द्वारा आपके रेड इण्डियनो के विषय मे जो कुछ जाना है, उससे मै उन्हे पसद करता हूँ। अच्छा, अब चलिये ऊपर बारजे पर चल कर कॉफी पी जाय और वही से सध्या आगमन का आनद लिया जाय।"

पूर्व कथा

कार्डिनल तथा उनके मेहमान तग सीढियो से होकर ऊपर पहुँचे। वह लम्बा बारजा तथा उसकी झझरीदार चहारदीवारी उसकी गोधूलि वेला मे किसी झील के सदृश नीले दीख रहे थे। सूर्यास्त हो चुका था। भूरा मैदान अब वैगनी रग का दीख रहा था। वैसिलिका के गुवद के पीछे से गुलाब तथा गुलमुहर की सुगध से वायुमण्डल आच्छादित हो रहा था।

'बारजे पर चहलकदमी करते हुए तथा ऊपर आकाश मे निकलते हुए तारो का आनद लेते हुए, पादरी तथा तीनो कार्डिनल विभिन्न विषयो पर बाते करने लगे, परन्तु उन्होने राजनीति को दूर ही रखा, हालाँकि खतरनाक समय मे लोग राजनीति की बात अधिक करते हैं। उन्होने लोम्बार्ड युद्ध की, जिसमे पोप की स्थिति नियम से बहुत विरुद्ध हो गयी थी, तनिक भी चर्चा नही की। इसके बजाय उन्होने नवयुवक वर्डी के एक नये सगीत-नाटक की चर्चा की, जो वेनिस मे खेला जा रहा था, उन्होने एक स्पेनिश नर्तकी की चर्चा की, जो हाल ही मे बडी धार्मिक हो गयी थी और अब अडालूशिया मे चमत्कार दिखला रही थी। इस वार्ता मे फादर फेराड ने भाग नही लिया और न तो उन्होने उसमे कोई अनुराग ही दिखाया। उन्होने सोचा कि बहुत दिनो तक समाज से दूर, देश की सीमावर्ती प्रदेश मे रहने के कारण कदाचित् उन्हे चालाक मनुष्यो की वार्ता मे कोई अनुराग ही नही रह गया है। परन्तु सोने जाने के पहले मेरिया द अलादे ने पादरी के कान मे, अँग्रेजी भाषा में एक बात कही।

"आप कुछ खोये-खोये से है, फादर फेराड। क्या आप यह सोचने लगे हैं कि आप अपने नये विशप को इस पद पर न नियुक्त करें? परन्तु अब तो फैसला हो चुका है। जीन मेरी लातूर! यही न है उसका नाम?"

अध्याय 1

प्रतिनिधि-पादरी

१

क्रूश वृक्ष

सन् १८५१ ई० की शरद् ऋतु मे एक दिन तीसरे पहर न्यू मेक्सिको के मध्यवर्ती भाग के किसी निर्जन एव सूखे प्रदेश मे एक घुडसवार अकेला ही भटक रहा था। उसके पीछे उसका सामान लादे हुये एक खच्चर भी था। वह रास्ता भूल गया था और अपने कुतुबनुमा तथा दिशा ज्ञान की सहायता से सही रास्ते पर पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। उसके साथ कठिनाई यह थी कि जिस प्रदेश में वह पहुँच गया था, वहाँ ऐसी कोई वस्तु नही दीख रही थी, जो अन्य सभी वस्तुओ से स्पष्टतया भिन्न हो, सारा प्रदेश लगभग एक जैसा ही था। जहाँ तक उसकी दृष्टि जाती थी, चारो ओर लाल-लाल, वनस्पति-हीन पहाड के टीले ही टीले दिखलाई पडते थे, जो सूखी घास के ढेर की तरह बहुत बडे नही थे परन्तु उनका आकार वही था। यह बड़े आश्चर्य की बात थी कि जिधर ही आप देखिये, चारो ओर एक ही आकार के लाल-लाल टीले खडे दीख पड़ रहे थे। घुडसवार इन टीलो के बीच उस प्रदेश मे सुबह से ही भटक रहा था और चारो ओर देखने पर उसे ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वह तनिक भी

आगे नही बढा है और एक ही स्थान पर अचल रह गया है। वह इन त्रिभुजाकार नुकीले टीलो के बीच से होकर लगभग तीस मील तो अवश्य चला होगा और अब भी उनका अन्त न देखकर वह सोचने लग गया था कि कदाचित् अब वह अन्य कोई वस्तु देखेगा ही नही। उन टीलो मे इतना अधिक सादृश्य था कि उसे लगता था कि जैसे वह किसी गोरख-धन्धे मे घूम रहा हो। चपटे सिरे वाले इन त्रिभुजाकार टीलो का आकार घास के टीलो की अपेक्षा मेक्सिकन चूल्हे से अधिक मिलता जुलता था। या यो कहना अधिक ठीक होगा कि वे मेक्सिकन चूल्हे के आकार के थे, उनका रंग ईंट के चूरे जैसा लाल था तथा उन पर एक सदावहार की झाडी के अतिरिक्त अन्य कोई वनस्पति नही थी। इन झाडियो का आकार भी मेक्सिकन चूल्हे ही जैसा था। प्रत्येक नुकीले टीले पर ये छोटी-छोटी नुकीली झाडियाँ थी। जैसे उन सभी टीलो का रग लाल था, वैसे ही इन सभी झाडियो का रग भी कुछ पीली आभा वाला हरा था। इन टीले अथवा छोटी पहाडियो की सख्या इतनी अधिक थी, वे एक दूसरे से इतनी सटी हुई थी कि लगता था कि जैसे वे एक दूसरे को अगल-बगल धक्का दे रही हो।

इन चपटे सिरे वाले पिरामिडो को बार-बार देखकर, सैकडो बार उन्ही की आकृति दृष्टि से उतारते-उतारते, यात्री उस धूप और गर्मी मे घबरा गया था, वह वस्तुओ की आकृति के प्रति कुछ विशेष सवेदनशील भी था।

"यह तो भयानक है।" अपनी आँखो को इन सर्वव्यापी त्रिभुजो से बचाने तथा विश्राम देने के लिये बन्द करते हुए उसने कहा।

जब उसने पुन अपनी आँखें खोली, तो सद्य· उसकी दृष्टि एक ऐसी झाड़ी पर पडी, जो आकृति मे अन्य झाडियो से भिन्न थी। वह नुकीले आकार की पत्तेदार झाडी नही थी, वरन् एक ऐंठनदार तना सा खडा था, जिसकी ऊँचाई लगभग दस फुट थी और जिसका ऊपरी सिरा दो

शाखाओ मे विभक्त होता था। ये शाखाएँ दो आमने-सामने की दिशा मे तने से समकोण बनाती हुई गयी थी। शाखाओ के सन्धि-स्थल पर कलगी के आकार की थोडी हरियाली थी। क्रूश के आकार से इतना अधिक मिलने-जुलने वाला अन्य कोई प्राकृतिक वृक्ष या पौधा नही हो सकता था।

यात्री अपनी घोडी से उतर गया, उसने अपनी जेब से एक फटी-पुरानी पुस्तक निकाली और अपना सिर नगा करते हुए, उसे उस क्रूश-वृक्ष के आगे भुका दिया।

घुडसवारोवाले चमडे के कोट के नीचे वह एक काला वास्कट तथा पादरियो का गुलूबन्द और कालर पहने हुए था। वह उपासना मे रत एक नवयुवक पादरी था। उसे देखने से ही यह स्पष्ट हो जाता था कि वह हजारो मे एक पादरी था। उसका भुका हुआ सिर किसी साधारण मनुष्य का सिर नही था—वह एक तीव्र बुद्धि वाले व्यक्ति का सिर था। उसका माथा चौडा था, उसे देखने से ही लगता था कि वह एक दयालु तथा विचारवान पुरुष था। उसका चेहरा सुन्दर तथा कुछ गम्भीर था। चमडे के कोट की आस्तीन से बाहर निकले हुए उसके हाथो मे एक विशेष प्रकार का आकर्षण था। उसकी प्रत्येक बात से लगता था कि वह एक अच्छे कुल का व्यक्ति है। वह बहादुर, सवेदन-शील तथा बड़ा ही शिष्ट था। इस निर्जन मरुस्थल मे भी उसके आचरण असाधारण ढग के थे। वह स्वय के प्रति शिष्ट था, अपने जानवरो के प्रति शिष्ट था, उस क्रूश-वृक्ष के प्रति शिष्ट था, जिसके सामने वह भुका हुआ था तथा वह ईश्वर के प्रति शिष्ट था, जिसकी उस समय वह आराधना कर रहा था।

वह लगभग आधे घण्टे तक पूजा करता रहा और जब वह उठा, तब

उसकी थकावट दूर हुई लगती थी। वह अपनी घोडी से स्पेनिश भाषा में बात करने लगा और पूछा कि यद्यपि तुम थकी हुई हो, फिर भी रास्ता पा जाने की आशा में क्या आगे बढना ही श्रेयस्कर नही है ? उसकी सुराही में अब पानी नही रह गया था और घोडे कल सुबह से ही पानी नही पिये थे। कल रात वे इन्ही पहाडियो के अञ्चल मे ही कही डेरा डाले थे और बिना पानी पिये ही सो गये थे। दोनो ही जानवरो की शक्ति समाप्त-प्राय थी, और बिना पानी पिये उनमें फिर से ताजगी नही आ सकती थी। अत. इस परिस्थिति मे यही श्रेयस्कर प्रतीत होता था कि उनकी बची हुई शक्ति पानी की खोज मे ही लगायी जाय।

टेक्साज राज्य को एक काफिले के साथ पार करते समय इस लम्बी यात्रा में इस व्यक्ति को प्यासा रहने का कुछ अनुभव हुआ था, क्योकि वह जिस यात्री-दल के साथ था, उसे कई बार, कई दिनो तक सीमित मात्रा मे ही पानी पर रहना पड़ा था। परन्तु उसे उस समय इतना कष्ट नही सहना पडा था, जितना इस समय। सुबह से ही वह कुछ बीमार सा अनुभव कर रहा था। उसके मुँह मे उस फीकेपन का स्वाद था, जो ज्वर आने पर रहता है तथा उसे बार-बार भयानक चक्कर आ रहा था। इन भयानक नुकीली पहाड़ियो की छाया उसके मस्तिष्क पर अधिकाधिक घनी होती जाती थी और वह विचार करने लगा कि क्या आवर्न पहाड की उसकी लम्बी यात्रा का अन्त यही हो जायगा। उसने महात्मा ईसा की उस पुकार का स्मरण किया, जो उन्होने क्रूश पर चढे हुए की थी, "मै प्यासा हूँ।" महात्मा की सारी शारीरिक यातनाओ मे से केवल यही कि "मै प्यासा हूँ" उसके होठो पर आये। दीर्घकालीन शिक्षा से उसे जो शक्ति मिली थी, उसका सहारा लेकर नवयुवक पादरी ने अपनी सत्ता को भुला दिया और महात्मा ईसा की ही यन्त्रणा पर विचार करने लगा। उनकी मृत्यु-कालिक यंत्रणा के सम्बन्ध मे लिखा हुआ नाटक ही उसके

लिये एकमात्र वास्तविकता रह गयी, उसके शरीर की आवश्यकता भी उस कल्पना का ही एक अग के अतिरिक्त अन्य कुछ नही।

उसकी घोडी लड़खडायी और उसकी विचारधारा टूटी। उसे स्वय की अपेक्षा अपने जानवरो के लिए अधिक दु.ख हो रहा था। इन तीन जीवो के दल के नेता के रूप मे उसने ही इन बेचारे जानवरो को इस अनन्त तथा भयानक मरुस्थल मे ला पटका था। उसे लगा कि उसने अपनी लापरवाही से ही रास्ता भुला दिया था, क्योकि वह रास्ते पर ध्यान देने के बजाय अपनी समस्या के उधेडबुन मे लगा हुआ था। उसकी समस्या यह थी कि वह विशप का पद क्योकर पाये। वह एक प्रतिनिधि-पादरी (विकार) तो था, परन्तु उसके पास कोई विकार का घर या इलाका नही रह गया था। वह अपने इलाके से बाहर कर दिया गया था, और अब उसके अनुयायी, उसके इलाके के लोग, उसे वापस नहीं लेंगे।

यात्री जीन मेरी लातूर था, जो एक वर्ष पहले सिनसिनाटी मे, न्यू मेक्सिको के प्रतिनिधि-पादरी (विकार अपास्लिक) तथा अगाथोनिका के पद पर अभिषिक्त हुआ था, और तब से ही वह अपने इलाके मे पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था। सिनसिनाटी मे उसे कोई यह नही बतला सका, कि न्यू मेक्सिको कैसे पहुँचा जाय, क्योकि वहाँ कोई गया ही नही था। अमेरिका मे नवयुवक फादर लातूर के आने के बाद से न्यूयार्क से सिनसिनाटी तक एक नई रेलवे लाइन निकाली गई थी। परन्तु सिनसिनाटी मे ही उसका अत हो जाता था। न्यू मेक्सिको एक अर्ध महाद्वीप के मध्य मे स्थित था। ओहियो के सौदागर केवल दो रास्ते जानते थे। एक रास्ता सेंट लूई से साता फे का रास्ता था, परन्तु उस समय वह कमाचे दल के रेड इण्डियनो के आक्रमण के कारण बडा खतरनाक हो रहा था। फादर लातूर के मित्रो ने उन्हे सलाह दी थी, कि वे नदी के किनारे-किनारे न्यू आर्लियस पहुँचें, वहाँ से नाव द्वारा गैलवेस्टन जाँय और वहाँ से टेक्सास

राज्य पार करके सैन एंटोनिओ पहुँचे, और फिर रायो ग्रैंड प्रांटी मे से होकर न्यू मेक्सिको मे प्रवेश करे। उन्होने यही किया था, परन्तु ऐसा करने मे उन्हे अनेक भयानक आपत्तियो का सामना करना पडा।

उनका स्टीमर गैलवेस्टन बन्दरगाह ही मे क्षतिग्रस्त होकर डूब गया और उसके साथ ही उनकी पुस्तको के अतिरिक्त, जिन्हे उन्होने अपने जान की बाज़ी लगाकर बचा ली थी, उनका सारा सामान भी डूब गया था। उन्होने सौदागरो के एक काफिले के साथ टेक्साज़ राज्य पार किया और सैन एटोनिओ पहुँचते-पहुँचते उनकी घोडागाडी उलट गई, जिससे कूदने मे वे घायल हो गए। इसके फलस्वरूप उन्हे एक गरीब आयरिश परिवार में जिसमे बहुत से प्राणी थे, तीन मास तक बिस्तर पर पडे रहना पडा। तब जाकर कही उनका चोटग्रस्त पैर ठीक हो सका।

मिसीसिपी नदी मे अपनी यात्रा आरम्भ करने के लगभग एक वर्ष पश्चात् इस नवयुवक बिशप ने अततोगत्वा एक ग्रीष्मकालीन सध्या को सूर्यास्त के समय उस बस्ती को देखा, जिसके लिये उन्होने अब तक की यह लम्बी यात्रा की थी। उनकी गाड़ी सारा दिन एक विशाल मैदान मे से होकर चलती रही और सध्या से कुछ पहले उनकी गाडी के ड्राइवरो ने चिल्लाना आरम्भ किया कि बस्ती अब आगे दिखलाई पड़ रही है। मैदान समाप्त होते-होते फादर लातूर को कुछ छोटे-छोटे बादामी रङ्ग के आकार, जो मिट्टी के बने हुये धुस्स जैसे थे, हरी-हरी पहाडियो की तलहटी मे बने दिखलाई पडे। इन पहाडियो की चोटियो पर वनस्पतियाँ आदि नही थीं। उनके आकार उन बडी-बडी लहरो जैसे थे, जो सागर मे भयानक तूफान आने पर उठती है, और उनकी हरियाली दो रङ्ग की थी—मजनू के वृक्षो की तथा सदाबहार के वृक्षो की, परन्तु ये दोनो रङ्ग एक दूसरे से मिले हुए नही थे, वरन् स्पष्ट रूप मे कुछ दूर तक एक रङ्ग और फिर कुछ दूर तक दूसरा रग।

गाडी के आगे बढने पर सूर्यास्त होते-होते पहाडो की तलहटी मे छोटी-छोटी लाल रग की पहाड़ियो की एक श्रेणी दृष्टिगत हुई। उस घाटी के दो तरफ ये पहाड़ियाँ थी, जिनके बीच साता फे नगर अततोगत्वा दिखलाई पडा। नगर मे ईंटो के बने हुए मकान थे और बीच-बीच में हरियाली थी उसके एक किनारे पर एक बडा गिरजाघर था, जिसमे दो ऊँची-ऊँची मीनारे थी। नगर की मुख्य सडक इसी गिरजाघर से ही आरम्भ होती थी, ऐसा लगता था कि सारे नगर का उद्गम यही गिरजाघर था, जैसे किसी सोते से कोई नाला निकलता हो। सध्या के उस प्रकाश मे गिरजाघर की चिमनी तथा सभी ईंटो के मकान गुलाबी रङ्ग के दीख रहे थे। उनका रङ्ग उन लाल पहाडियो के रङ्ग से कुछ गाढा दीख रहा था और तेज़ हवा के कारण मजनू के वृक्ष कभी-कभी झुक कर अग्रेजी भाषा के उच्चारण चिह्न की भाँति तिरछे हो जाते थे और झोका हट जाने पर वे पुनः सीधे हो जाते थे।

साता फे पहुँचने की उस प्रसन्नता की घडी मे नवयुवक बिशप लातूर अकेले ही नही थे, उनके साथ उनके बचपन के मित्र फादर जोसेफ वेलेंट भी थे, जिन्होने उनके साथ ही यह लम्बी यात्रा की थी तथा उनके कष्टो मे हाथ बँटाया था। ईश्वरीय महिमा को धन्यवाद देते हुए दोनो व्यक्तियो ने साथ ही साता फे मे प्रवेश किया था।

तो फिर फादर लातूर अपने कार्यालय-निवासस्थान से सैकड़ो मील दूर, इस बीहड निर्जन प्रदेश मे, अकेले, रास्ते से भटकते हुए कैसे पहुँच गये थे ?

साता फे पहुँचने पर हुआ यह था कि मेक्सिकन पादरियो ने उनके प्राधिकार को मान्यता प्रदान करने से इनकार कर दिया था। उन्होने कहा कि उन्हे किसी प्रतिनिधि-पादरी अथवा अगाथोनिका के बिशप आदि का कोई ज्ञान नही है। वे तो डूरैगो के बिशप के अधिकार-क्षेत्र के अधीन के है

और उन्हें उसके विपरीत कोई आदेश नही मिला है। यदि फादर लातूर को उनका विशप नियुक्त किया गया है, तो उनके सम्बन्धित अधिकार-पत्र आदि कहाँ है ? फादर लातूर को मालूम था कि डूरैंगो के विशप के पास इस आशय के पत्रादि भेजे गये थे, परन्तु मालूम होता है कि ये उनके पास पहुँचे नही। इस प्रदेश मे डाक सेवा नही थी, अत डूरैंगो के विशप के साथ सम्पर्क स्थापित करने का सब से शीघ्र एव निश्चित तरीका उनके पास स्वय जाना ही था। इस प्रकार, लगभग एक वर्ष की यात्रा करने के पश्चात् साता फे पहुँच कर भी फादर लातूर को उसे कुछ सप्ताहो के पश्चात् ही छोडना पडा। वे एक दिन अकेले ही घोड़े पर सवार होकर ओल्ड मेक्सिको के लिये रवाना हो गए। वहाँ पहुँचने तथा वापस आने मे उन्हें पूरे तीन हज़ार मील की यात्रा करनी पडी थी।

उन्हे चेतावनी दी गयी थी कि रायो ग्राड सड़क से अनेक रास्ते इधर-उधर को निकलते हैं और कोई अनजवी सहज ही अपना रास्ता भूल सकता है। आरम्भ में कुछ दिनो तक तो वे सतर्क रहे। फिर वाद में ऐसा लगता है कि वे लापरवाह हो गये और कोई स्थानीय पगडडी पकड ली। जब उन्हे यह ज्ञात हुआ कि वे भटक गये है, तो उनका पानी का वर्तन खाली हो चुका था और घोड़े इतने थक गये थे कि पुनः अपने रास्ते पर आना कठिन हो रहा था। वे इस रेतीले रास्ते पर जो बराबर अस्पष्ट होता जा रहा था, यह सोचकर आगे बढते जा रहे थे कि कही न कही तो वह पहुँचायेगा ही।

अचानक ही फादर लातूर को लगा कि उनकी घोडी की शारीरिक स्थिति मे कुछ परिवर्तन हुआ। उसने इतनी देर के वाद पहली बार अपना सिर उठाया और ऐसा लगा कि वह एक बार फिर अपनी शक्ति अपने पावो मे लगाकर आगे वढना चाहती है। खच्चर ने भी ऐसा ही किया और दोनो ने अपनी-अपनी चाल वढ़ायी। क्या उन्हे कही पास ही मे पानी का आभास मिला था ?

लगभग एक घण्टा बीत गया, और फिर दो पहाड़ियो के बीच से (ये पहाडियाँ भी उन सैकडो पहाड़ियो की ही भाँति थी जो उन्हे रास्ते मे मिली थी) गुजरते हुए दोनो जानवर एक साथ ही हिनहिनाये। जहाँ वे पहुँचे थे, वहाँ से नीचे उस रेत के सागर के बीच, हरियाली की एक रेखा तथा एक बहता हुआ नाला दिखलायी पडा। मरुस्थल की वह हरियाली चौडी नही थी। उसकी चौडाई इतनी थी कि उसके आर-पार आसानी से ढेला फेंका जा सकता था। परन्तु इतनी गाढी हरियाली लातूर ने पहले कभी देखी नही थी, यहाँ तक कि उन्हे ऐसी हरियाली अपनी दुनिया के सर्वाधिक हरे प्रदेश मे भी देखने को नही मिली थी। उनकी घोडी प्रसन्नता से अपनी गरदन तथा कधो के चमडे को बारबार हिला रही थी। इसे देखकर ही फादर लातूर को विश्वास हुआ कि वास्तव मे वहाँ पानी है, अन्यथा इसे वे स्वप्न अथवा मृगतृष्णा ही समझते।

नवयुवक पादरी ने वहाँ बहता हुआ पानी देखा, पशुओ के चारे के खेत देखे, हरे-हरे सदाबहार तथा बबूल के वृक्ष देखे, कच्ची ईंटो के बने

हुए छोडे-छोटे मकान देखे, उन्होने एक लडके को सफेद वकरियो के एक झुण्ड को नाले की ओर हाकते हुए भी देखा।

थोडी देर पश्चात्, जव वे अपने घोडो को वहुत अधिक पानी पीने से रोकने का प्रयत्न कर रहे थे, एक नौजवान लडकी सिर पर काली शाल ओढे उनके पास दौडती हुई आई। उन्हे ऐसा लगा कि इतना मनमोहक चेहरा उन्होने पहले कभी नही देखा था। उसने एक पक्के ईसाई की भाँति उनका अभिवादन किया।

"आपको नमस्कार है महाशय, आप कहाँ से आ रहे हैं ?"

"भाग्यवान् लडकी," उन्होने स्पेनिश भाषा मे उत्तर देते हुए कहा, "मैं एक पादरी हूँ और रास्ता भूल गया हूँ, मैं प्यास से मर रहा हूँ।"

"आप पादरो है ?" उसने अविश्वास दिखलाते हुए कहा, "नही, नही, यह सम्भव नही है। परन्तु आपको देखने से तो आपका कहना सच जान पडता है। हमारे साथ पहले ऐसी घटना कभी नही घटी। पिता जी की प्रार्थना के फल-स्वरूप ही ऐसा हुआ है। दौडो, पेड्रो और पिताजी तथा साल्वाटोर से यह वताओ कि आप आये है।"

२
ओझल जल

एक घण्टे के पश्चात् जब उपत्यका मे अँधेरा हो चुका था, नवयुवक बिशप इस मेक्सिकन गाँव के, जिसका नाम उसकी विशेषता के अनुरूप 'ओझल जल' था, सबसे पुराने मकान मे बैठे भोजन कर रहे थे। उनके साथ घर का मालिक एक वृद्ध पुरुष, जिसका नाम बेनिटो था, उसका सबसे बड़ा लडका तथा दो पोते भी भोजन करने बैठे हुए थे। वृद्ध विधुर था और उसकी पुत्री जोसेफा, वही लडकी, जो बिशप को नाले पर मिली थी, घर की मालकिन थी। उनके भोजन मे मास की कोई कढी, रोटी, बकरी का दूध, ताजा पनीर तथा पके हुए सेब थे।

इस कमरे में, जिसकी कच्ची ईंटो की मोटी दीवारे चूने से पुती हुई थी, प्रवेश करते ही फादर लातूर को एक विशेष प्रकार की शान्ति का अनुभव हुआ था। इसकी सादगी मे भी एक मनोहरता थी, एक आकर्षण था, जैसा कि उस लडकी मे था, जो इस समय मेज़ पर भोजन लगा देने के पश्चात्, अँधेरे में दीवार के सहारे खडी हुई थी। उसकी आँखें फादर लातूर के चेहरे पर गडी हुई थी। बिशप काले बालो वाले उन चारो व्यक्तियो के साथ मोमबत्तियो के उस प्रकाश मे बडे इतमीनान से बैठे हुए थे। उनके व्यवहार बडे ही सरल तथा उनके बोलने की आवाज़ बड़ी धीमी एव मधुर थी। भोजन आरम्भ करने के पहले जब फादर ने प्रार्थना की, तो चारो

व्यक्ति कुर्सियो से उठकर भगवान् के प्रति फर्श पर सिर टेक दिए थे। बूढे दादा ने तो यहाँ तक कहा कि देवी मेरी ने ही फादर लातूर को उनका रास्ता भुला दिया था और यहाँ आने का सयोग उत्पन्न किया था, जिससे वे बच्चो को दीक्षा दे सकें और विवाहो को धार्मिक रूप दे सकें। बूढे ने बताया कि उनके गाँव को बहुत कम लोग जानते है। उनके पास उनकी भूमि के अधिकार सम्बन्धी कागज़ात नही है और उन्हे भय है कि अमेरिकन उनसे उनकी ज़मीन छीन न लें। उनके गाँव मे ऐसा कोई नही था, जो लिख-पढ सकता हो। उसका बडा बेटा साल्वाटोर पत्नी की खोज में अलबुकर्क तक गया था और वही उसने विवाह कर लिया था। परन्तु वहाँ के पुरोहित ने इस कार्य के लिये उससे बीस पेसो (दक्षिणी अमेरिका का एक सिक्का) ऐंठ लिया था। इस प्रकार उसने अपनी रकम का, जो उसने अपने मकान के लिये कुर्सी-मेज़ आदि तथा शीशे की खिडकियाँ खरीदने के लिये बचायी थी, आधा पुरोहित ही को दे दिया। उसके साथ घटी इस घटना से डर कर उसके भाइयो ने बिना विवाह सस्कार के ही पत्नियाँ रख ली थी।

बिशप के पूछने पर उन्होने अपनी जीवन-कथा सुनायी। उन्होने बताया कि यहाँ उनके पास सभी सुख-साधन विद्यमान है। वे अपनी भेडो के ऊन धुनकर, कात कर उससे कम्बल आदि बनाते है, वे खेती करके अनाज, गेहूँ तथा तबाकू के पत्ते पैदा करते है, जाडो के लिये खूबानी तथा बेर के फलो को सुखाकर रख लेते है। बच्चे वर्ष भर की आवश्यकता का गल्ला अलबुकर्क जाकर पिसा ले आते है, वही से चीनी और काफी जैसी मूल्यवान् वस्तुएँ खरीद लाते है। वे मधु-मक्खियाँ भी पालते है और जब चीनी महँगी हो जाती है, तो शहद से उसका काम लेते है। बेनिटो को यह नही ज्ञात था कि उसके दादा किस वर्ष में चिहुआहुआ से अपना सारा सामान बैलगाड़ियो पर लाद कर यहाँ लाकर बसे थे। "लेकिन यह उस समय की

बात है, जब फ्रासीसियो ने अपने सम्राट की हत्या की थी। दादा घर छोडने के पहले उसकी चर्चा सुन चुके थे और बूढे हो जाने पर हम बच्चो को उसकी कहानियाँ सुनाते थे।"

"कदाचित् आपने यह अनुमान लगा लिया है कि मै फ्रासीसी हूँ," फादर लातूर ने कहा।

लेकिन नही, उन्हे यह अनुमान नही हुआ था। हाँ, इसमे उन्हे कोई सदेह नही था कि वे अमेरिकन नही थे। वडा पोता, जिसका नाम जोस था, अतिथि को कुछ सदिग्ध दृष्टि से देख रहा था। वह एक सुदर लडका था। उसके काले बाल उसकी कुछ उदास आँखो के ऊपर भौंहो पर लटक रहे थे। वह अब पहली वार वोला।

"अलबुकर्क मे लोग कहते है, कि अब हम सभी अमेरिकन है, लेकिन यह सच नही है, फादर। मैं अमेरिकन कभी भी नही बन सकता, क्योकि वे सभी नास्तिक होते है।

"सभी ऐसे नही होते, मेरे बच्चे! मै उत्तर मे अमेरिकनो के साथ दस वर्ष तक रह चुका हूँ और मैने वहाँ बहुत से पक्के कैथोलिक देखे।"

लडके ने अविश्वास-सूचक सिर हिलाया। "हम लोगो के साथ युद्ध करते समय उन्होने हमारे गिरजाघरो को नष्ट करके उन्हे घोडो के अस्तवल बना दिये। और अब वे हमसे हमारा धर्म भी छीन लेंगे। हमे तो अपना ही धर्म, अपनी ही परम्पराए चाहिये।"

फादर लातूर उन्हे ओहिओ के प्रोटेस्टेटो से अपने मैत्री-पूर्ण सम्बन्ध की बाते बताने लगे, परन्तु उनके मस्तिष्क मे अन्य कोई बात बैठ ही नही सकती थी। उनके लिये तो केवल एक ही धर्म—कैथोलिक था और उसमे विश्वास न करने वाले सभी नास्तिक थे। हाँ, यह बात उनकी समझ मे अवश्य आई कि यहाँ फादर लातूर के झोले मे इनके पादरियो के कपडे थे, गिरजाघर की वेदी थी, जिस पर सभी सस्कार किये जाते थे, ईसाईयो

के विशेष पूजा-समारोह 'मास' के आयोजन की सभी सामग्रियाँ थीं, और यह कि कल प्रात:काल पूजा समारोह के पश्चात्, वे लोगो के धार्मिक विश्वास की बात सुनेंगे, दीक्षा देंगे और विवाहो को धार्मिक स्वरूप प्रदान करेंगे।

भोजन के पश्चात् फादर लातूर एक मोमबत्ती लेकर ताक मे रक्खी मूर्तियो को देखने लगे। सतो की काठ की बनी मूर्तियो को, जो मेक्सिको के गरीब से गरीब घर मे भी रहती थी, वे बहुत पसद करते थे। उन्हें आज तक ऐसी दो मूर्तियाँ नही मिली थी, जो ठीक एक दूसरे जैसी हो। बेनिटो के घर में रखी ये मूर्तियाँ लगभग साठ वर्ष पहले चिहुआहुआ से बैलगाडियो मे लदकर आई थी। इन्हे किसी धर्मात्मा ने गढ कर बनाया था तथा उन पर चमकदार पालिश की हुई थी, यद्यपि समय के साथ उनके रङ्ग कुछ धुँधले पड गए थे, और उन्हें गुड़ियो की भाँति कपडे पहना दिये गए थे। उन्हे ये मूर्तियाँ ओहिओ के गिरजाघरो मे रखी कारखानो मे बनी मिट्टी की मूर्तियो की अपेक्षा कही अधिक पसद आयी। वे आवर्न के पुराने गिरजाघरो के फाटको पर बनी पत्थर की मूर्तियो से अधिक मिलती-जुलती थी। देवी मेरी की लकडी की मूर्ति बडी ही उदास मुद्रा की मूर्ति थी,—लम्बी, सीधी तथा बड़ी गम्भीर, गरदन से लेकर कमर तक का भाग बहुत ही लम्बा, कमर से लेकर पैरो तक तो उससे भी लम्बा जैसा कि एशियायी देशो में रङ्गीन पत्थरो के बडे-बडे चित्र बने होते है। उन्हे काला कपडा पहनाया गया था, ऊपर से एक सफेद चोगा था, सिर पर एक काली ओढनी, जैसा गरीब मेक्सिकन महिलाए ओढती है। उनके दाहिनी ओर सत जोसेफ की मूर्ति थी और उनकी बाईं ओर क्रुद्ध मुद्रा मे, घोडे पर सवार एक छोटी-सी मूर्ति थी, यह मूर्ति भी किसी सत की थी, जो मेक्सिकन कृपक के कपडे पहने हुए थे, मखमली पतलून, जिसमें बेल-बूटे कढे हुए थे और जो नीचे की ओर चौडा था, मखमल का जैकेट तथा रेशम की कमीज़ तथा

ऊँची, चौडे किनारे की फेल्ट की टोपी। वे अपने मोटे घोडे पर एक लकड़ी की कील द्वारा जो जीन मे ठोकी हुई थी, जडे हुए थे।

छोटे पोते ने इस मूर्ति में फादर के विशेष अनुराग को देखा। "वे मेरे नामधारी सत सैंटियागो है," उसने कहा।

"ओह! सत सैंटियागो! वे तो मेरी ही भाँति धर्म-प्रचारक थे। हम अपने देश मे उन्हे सत जेक्स कहते है और उन्हे एक डडा तथा झोला लिए हुए दिखाया जाता है—लेकिन यहाँ तो उनके लिये घोडा अनिवार्य ही होता।"

लडके ने उनकी ओर आश्चर्य से देखा और कहा, "परन्तु वे तो घोडो के ही देवता माने जाते है। क्या आपके देश मे उन्हे ऐसा नही माना जाता?"

बिशप ने नकारात्मक ढग से अपना सिर हिलाया। "नही मै इसके विषय मे कुछ भी नही जानता। वे घोड़ो के देवता कैसे हुए?"

"वे घोड़ियो को आशीर्वाद देते है, जिसके फल-स्वरूप वे बच्चे देने लग जाती है। रेड इण्डियन भी ऐसा विश्वास करते है। वे जानते है कि यदि वे कुछ वर्षों के लिये सत सैंटियागो की प्रार्थना करना छोड दे तो घोडियो के बच्चे ठीक तरह से पैदा नही होगे।"

थोडी देर पश्चात्, पूजा आदि समाप्त करके नवयुवक बिशप बेनिटो के बिस्तर पर लेटे हुए सोच रहे थे कि यह रात उनकी कल्पना से कितनी भिन्न थी। उन्होने तो सोचा था कि उन्हे यह रात जगल मे ही कही, किसी वृक्ष के नीचे, पैगम्बर जोसेफ स्मिथ की भाँति, प्यास से तडपते हुए बितानी पडेगी। परन्तु वे यहाँ बडे आराम से स्वजनो के प्रति हृदय मे प्रेम की भावना लिये हुए लेटे थे। यदि फादर वेलेट यहाँ होते, तो वे अवश्य कहते, 'यह तो चमत्कार है।" उन्हे ऐसा लगा कि क्रूश-वृक्ष के सामने देवी मेरी की जो उन्होने प्रार्थना की थी, उसी के फल-स्वरूप वे यहाँ आ

पहुँचे थे। और फादर लातूर इसे जानते थे कि वास्तव मे यह एक चमत्कार ही था। परन्तु उनके प्रिय सत जोसफ को बडे ही प्रत्यक्ष एव दर्शनीय चमत्कारो का अनुभव हुआ होगा। ये चमत्कार प्रकृति के सम्बन्ध मे नही हुए होगे, अपितु उसके विपरीत। वे कदाचित् यह बता सकते कि देवी मेरी उस समय किस रग का चोगा पहने हुए थी, जिस समय वे उनकी घोडी की लगाम पकडकर जगल और पहाडो के बीच से यहाँ ले आ रही थी, ठीक उसी तरह जिस तरह ईश्वर के दूत ने गधे को मिस्र की यात्रा मे रास्ता दिखाया था।

दूसरे दिन, तीसरे पहर बिशप उनकी जान बचाने वाले नाले के किनारे अकेले टहलते हुए प्रात.काल की घटनाओ पर विचार कर रहे थे। बेनिटो तथा उसकी कन्या ने देवी मेरी की काठ की मूर्ति के समक्ष एक वेदी बनाई थी और उस पर मोमबत्तियाँ लगा कर फूल चढाए थे। साल्वाटोर की बीमार पत्नी के अतिरिक्त गाँव के सभी प्राणी सार्वजनिक पूजा मे सम्मिलित होने आए थे। उन्होने दोपहर तक विवाह-सस्कार पूरे कराये थे, लोगो को दीक्षा दी थी, उनके धार्मिक विश्वास की बात सुनी थी तथा उन्हे गिरजे का पूर्ण अधिकार प्रदान किया था। इसके बाद दीक्षा-भोज हुआ था। जोस ने पिछली रात एक बकरी का बच्चा मारा था और जोसेफा अपनी दीक्षा के ठीक बाद ही चुपके से खिसक कर अपनी भाभी को मास पकाने मे सहायता करने चली गई थी। जब फादर लातूर ने उससे कहा कि उनके भाग मे लालमिर्च न मिलाई जाय तो लडकी ने उनसे पूछा था, कि क्या इस प्रकार खाना, अधिक पवित्र समझा जाता है। उन्होने उसे शीघ्रता से यह समझा दिया था कि सभी फ्रासीसी आमतौर पर ज्यादा मिर्च-मसाला नही पसद करते, ताकि वह स्वय न मिर्च-मसाले वाला भोजन, जो उसे बहुत पसन्द है, खाना छोड दे।

भोज के पश्चात् निद्रित बच्चो को घर पहुँचा दिया गया था और

सभी पुरुष चौपाल मे पेडो के नीचे एकत्र होकर सिगरेट आदि पीने लगे। विशप को इस समय कुछ देर तक अकेला रहने की इच्छा हुई और वे एक ओर टहलने के लिये अकेले ही चल पडे। किसी को साथ ले चलने से उन्होने स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया। रास्ते मे उन्हे मिट्टी का बना वह स्थान मिला, जहाँ अनाज सूखे डठलो से पीट कर अलग किया जाता था। यहाँ गाँव वाले अनाज को पीट कर हवा मे ओसाई करते थे, जैसे हेब्रू लोग इजरायल मे करते थे। उन्होने अपने पीछे वकरियो का वडा तेज मेमियाना सुना और तुरन्त ही देखा, कि पैट्रो वकरियो के झुड साथ लिये हुए उनके सामने से निकल गया। वे दिन भर वाडे मे वन्द रहने से घवरा रही थी और इस समय पहाड की तलहटी के चरागाह मे पहुँचने के लिये अत्यन्त अधीर हो रही थी। उन्होने नाले को फाद कर इस प्रकार पार किया जैसे धनुष से वाण छूटता है और विशप के सामने पहुँचने पर वे उन्हे अपनी मनुष्यो जेसी अर्थभरी मुस्कराहट से चिढाते हुए आगे निकल गयी। वकरी के वच्चे वडे ही हलके तथा सुन्दर थे। उनकी नुकीली ठुड्डी तथा चमकती हुई तिरछी सीगे और भी सुन्दर लग रही थी। उनमे से प्रत्येक के चेहरे की वनावट एक दूसरे से भिन्न थी, परन्तु लगभग सभी मे उद्दण्डता एव कटुता दीख पडती थी। उनकी दुम के रेशमी वाल वडे लम्बे तथा अत्यन्त धवल थे। सूर्य के प्रकाश मे उन्हे उछलते हुए देखकर उनके श्वेत रङ्ग के सम्बन्ध मे विशप को वाइविल के दूसरे भाग के अन्तिम परिच्छेद का स्मरण हो आया, जिसमे संत जॉन को ईश्वरीय सत्ता का रहस्योद्घाटन हुआ था, तथा जिसमे यह वर्णन है कि वे महात्मा ईसा के रक्त से नहलायी गयी थी। नवयुवक विशप अपने धर्म की इस परस्पर विरोधी वात पर स्वय ही मुस्करा पडे। परन्तु, यद्यपि ईसाई धर्म मे वकरे को सदा से ही हेय एव अपवित्र माना जाता रहा है, विशप ने अपने मन मे सोचा कि इनके ऊन से हजारो-लाखो ईसाई अपने शरीर गरम रखते है तथा उनके पौष्टिक दूध से अस्वस्थ वच्चे स्वास्थ्य लाभ करते है।

गाँव से लगभग एक मील दूर आने पर बिशप पानी के सोते के समीप पहुँचे, जो नुकीली पत्तियो वाले वृक्षो से आच्छादित था। उसके चारो ओर वही तदूर के आकार की पहाडियाँ थी, जिसमे वहाँ पानी होने का रञ्चमात्र भी सकेत नही मिलता था। पानी का यह स्रोत चमत्कार की भाँति अचानक ही उस रेत के सागर में एक स्थान पर प्रकट होता था। ऐसा लगता था कि कोई भूमि के नीचे का नाला, अधेरे से बाहर होकर यहाँ ऊपर फूट निकला था। इसका परिणाम यह हुआ था कि वहाँ घास, पौधे, वृक्ष, फूल आदि उग आये थे और कुछ थोडे से मनुष्य भी रहने लगे थे। वहाँ घर-गृहस्थी जम गयी थी, चूल्हे-चौके बन गए थे, जिनमे से लकडी के धुएँ का आकाश मे उठना ऐसा लगता था, मानो ईश्वर के प्रति हवन आदि किया जा रहा हो।

बिशप बहुत देर तक सोते के किनारे बैठे रहे। अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य की सुन्दर किरणे उन छोटे-छोटे घरो तथा शोभापूर्ण उद्यानो पर पड रही थी। बूढे दादा ने उन्हे तीरो के अग्र भाग, कुछ घिसे हुए पदक तथा एक तलवार की मूँठ, जो स्पष्टत स्पेनिश थी, दिखलाई थी। इन वस्तुओ को उसने इस सोते के समीप जमीन मे गडा पाया था। मेक्सिकनो द्वारा इस स्थान की खोज के बहुत पहले से ही लोग यहाँ मन-बहलाव आदि के लिये आया करते थे। यह प्रागैतिहासिक स्थान था, जिस प्रकार बिशप के अपने देश मे वे सोते थे, जहाँ रोमन आदिमवासियो ने किसी जल-देवी की मूर्ति स्थापित की थी और बाद को ईसाईयो ने आकर वहाँ एक क्रास लगा दिया था। यह गाँव उनके अधिकार-क्षेत्र का ही एक सूक्ष्म रूप था, सैकडो वर्ग मील तक फैला हुआ निर्जल मरुस्थल, फिर एक सोता, एक गाँव जहाँ बूढे लोग अपने नाती-पोतो को पढाने के लिए अपने पुराने पाठो को याद करने का प्रयत्न करते थे। स्पेनिश सतो ने ईसाई धर्म के जिस पौधे को वहाँ लगाया और उसे अपने खून से सीचा, वह अब तक

सूखा नही था, उसे तो और भी पनपने तथा वढने के लिये अब किसी कृपक-श्रमिक जैसे परिश्रम तथा देख-भाल की आवश्यकता थी। उन्हे सान्ता फे के विद्रोह की चिन्ता नही थी और न तो ताग्रोस के मार्टिनेज नामक उस बूढे स्थानीय पादरी की ही चिन्ता थी, जो इस विद्रोह का नेता था तथा जो नये विकार से रास्ते मे ही मिलने तथा उन्हे भगा देने के लिये ही अपने हलके से घोडे पर चढ कर आया था। वह बूढा पादरी वडा ही भयानक था, उसका सिर वडा था, उसका स्पेनिश चेहरा वडा ही उग्र था और उसके कधे भैसो के कधे जैसे थे। परन्तु उसके अत्याचार के दिन अब लद चुके थे।

३
बिशप अपने घर मे

क्रिसमस के दिन सध्या का समय था। विशप अपनी डेस्क पर झुके हुए पत्र लिख रहे थे। साता फे वापस आने के दिन से ही उन्हे अपने पद से सम्बन्धित अनेक पत्र लिखने पडे थे। परन्तु इस समय वे जो लम्बा पत्र लिख रहे थे तथा जिसे लिखते-लिखते वे मुस्कराते भी जा रहे थे, वह प्रेलेटो, आर्चविशपो (ईसाई धर्म के उच्चधर्माधिकारी आदि) या धार्मिक सस्थानो के प्रधानो के लिये नही था, अपितु वह पत्र फ्रास, आवर्न उनके अपने छोटे नगर, एक टेढी-मेढी कँकरीली पतली सी गली के लिये था, जो दोनो ओर ऊँचे-ऊँचे अखरोट के वृक्षो से आच्छादित थी। इन वृक्षो मे कदाचित् आज भी थोडी सी पत्तियाँ होगी, या एक-एक करके सब गिर कर दीवारो पर चढी हुई बेल-लता मे फँसी हुई होगी।

विशप केवल नौ दिन पहले घोडे पर अपनी लम्बी यात्रा करके मेक्सिको वापस आये थे। डुरँगो मे, वहाँ के बूढे मेक्सिकन पादरी ने उन्हे वे सव कागज़-पत्र दिये थे, जिनमे उनके विकार पद पर नियुक्त होने तथा उनके

अधिकारो आदि का विवरण था । इन कागज-पत्रो को लेकर फादर लातूर शीत ऋतु के प्रारम्भ मे धूप के दिनो मे पन्द्रह सौ मील की यात्रा करके साता फे वापस आये थे । वापस आने पर उन्होने यहाँ देखा कि लोग उनसे विरुद्ध होने के बजाय, मैत्री-भावना से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । फादर वेलेंट लोगो को प्रिय हो चुके थे । मेक्सिकन पादरी, जो वहाँ के मुख्य गिरजाघर का कर्ता-धर्ता था, सीधे से ही हट गया था और वह अपना सब सामान इत्यादि लेकर मेक्सिको स्थित अपने घर चला गया था । फादर वेलेंट ने पादरी के घर पर अधिकार कर लिया था तथा बढइयो एव 'पैरिश' (पादरी का इलाका) की मेक्सिकन स्त्रियो की सहायता से उसे साफ करके ठीक कर लिया था । उत्तरी सयुक्त-राज्य अमेरिका के सौदागरो तथा फोर्ट मार्सी के सैनिक कमाडेंट ने बिस्तर, कम्बल, कुर्सी, मेज आदि से प्रचुर मात्रा मे सहायता की थी ।

बिशप का निवासस्थान कच्चे ईंटो का बना हुआ एक पुराना मकान था, जिसकी बहुत दिनो से मरम्मत नही हुई थी, परन्तु वह ऐसा था, कि उसे आरामदेह बनाया जा सकता था । फादर लातूर ने अपने पढने-लिखने के लिए एक किनारे का कमरा चुना था । इसी कमरे मे इस समय क्रिसमस के दिन बैठे हुए वे पत्र लिख रहे थे । अब धीरे-धीरे सध्या हो गयी । कमरा लम्बा तथा सुडौल आकार का था । उसकी मिट्टी की मोटी दीवारो के भीतरी भाग की पुताई, उन पर मिट्टी आदि लगाने का कार्य रेड इण्डियन स्त्रियो द्वारा हुआ था और केवल हस्तकौशल से बनाई गई वस्तुओ मे जो एक अनियमितता मूल रूप से होती है, वह उनमे भी थी । उसकी दीवारें दुर्भेद्य एव मोटी थी, वे दरवाजो तथा खिडकियो के चौखटो के पास तथा कोने मे बने आग जलाने स्थान पर भी कोरदार नही थी, अपितु इन स्थानो पर उन्हे बेलनाकार बना दिया गया था । अन्दर के भाग मे , अभी हाल ही मे बिशप की अनुपस्थिति मे सफेदी हुई थी और कोने मे

जलती हुई आग की लपट से ऊबड़-खाभड दीवारो पर गुलाबी रङ्ग की चमक उत्पन्न हो रही थी। दीवार किसी स्थान पर भी पूर्णत: समतल नही थी और वह सफेदी होने पर भी कही भी पूर्णत श्वेत नही थी, क्योकि दीवार की मिट्टी का रक्ताभ रग चूने की सफेदी के साथ मिलकर उसे कुछ कुछ पीली आभा का वना रहा था। कमरे की छत मे देवदारु की मोटी-मोटी वल्लियाँ लगी थी तथा उसकी पटाई मजनू वृक्ष की छोटी-छोटी डालियो से हुई थी, जो एक ही नाप की थी तथा सटा-सटा कर विछाई हुई थी, जैसे मोटे सूती कपडे की उठी हुई धारियाँ होती है। फर्श मोटे-मोटे इण्डियन कम्वला से ढकी हुई थी और दो बहुत पुराने कम्वल, जिनकी डिजाइन और रग बहुत ही सुदर थे, पर्दे की भाँति दीवारो पर टगे हुए थे।

आग के स्थान के दोनो ओर दीवार मे पलस्तर की हुई आलमारियाँ वनी हुई थी। एक आलमारी मे, जो पतली तथा मेहराबदार थी, क्रूशबद्ध महात्मा ईसा की प्रतिमा रखी हुई थी। दूसरी आलमारी चौकोर थी, जिसमे झझरी की तरह काम किये हुए लकडी के किवाड लगे हुए थे और उसमे कुछ दुर्लभ तथा वहुत ही अच्छी पुस्तकें रखी हुई थी। विशप की अन्य पुस्तकें कमरे के एक कोने मे वनी हुई खुली आलमारियो मे रखी हुई थी।

मकान के कुर्सी-मेज तथा अन्य साज-सामान फादर वेलेट ने पुराने मेक्सिकन पादरी से खरीद लिये थे। ये सामान वजन मे भारी और कुछ भद्दे से थे, परन्तु देखने मे बहुत वदसूरत नही थे। मेज, कुर्सी तथा पलंगो आदि की सभी लकडी पेडो के तनो से कुल्हाडी आदि जैसे भद्दे हथियारो से ही काट कर निकाली गई थी। वह मोटा तख्ता भी, जिस पर विशप की धार्मिक पुस्तकें रखी हुई थी, कुल्हाडी से ही काट कर वनाया गया था। उस समय समूचे उत्तरी न्यू मेक्सिको में न तो कोई लकडी चीरने का कारखाना था और न कोई लकडी खरादने की मशीन थी। वहाँ के देशी

वढई कुर्सियो के डडो तथा मेज के पायो को वसुले आदि से गढ [illegible] लोहे की कीलो के वजाय लकडी की गढी हुई कीलो से [illegible] जडे [illegible]। रसोईघर की दराज़दार मेज़ो के स्थान पर लकडी के वने वडे सदूक काम मे लाए जाते थे और इन पर कभी-कभी तो सुदर काम किया होता था या उन पर नक्काशीदार चमडे लगे हुए होते थे। जिस डेस्क पर वैठे हुए विशप लिख रहे थे, वह अमेरिका मे वनी हुई अखरोट की लकडी की एक 'सेक्रेटरी' डेस्क थी, जिसे फादर वेलेंट के कहने पर फोर्ट मार्सी के किसी अधिकारी ने भेज दी थी। वे चाँदी का वना हुआ अपना वत्तीदान वहुत पहले ही फ्रास से ले आये थे। इसे उनकी एक अत्यत प्रिय चाची उनके पादरी वनने के समय उन्हे दी थी।

नवयुवक विशप की लेखनी वैंगनी रग की स्याही से सुदर फ्रेंच लिपि में लिखती हुई तेज़ी से कागज़ पर भागती जा रही थी।

"प्रिय भाई, मेरा यहाँ का यह लिखने-पढने का कमरा, जहाँ वैठा हुआ यह पत्र मै लिख रहा हूँ, इस समय देवदारु की मीठी सुगध से, जो मेरी अँगीठी मे जल रहा है, भरा हुआ है। (हम यहाँ यही सुगधित लकड़ी ईंधन के काम मे ले आते है। वह वड़ी ही सुगधित तथा कोमल होती है। हम कोई भी काम करते रहते है, हमे लगातार उसकी सुंदर महक मिलती हैं।) मेरी कितनी इच्छा है कि तुम और मेरी प्यारी वहन इस आराम और शान्ति के स्थान को देख सकते। तुम तो जानते हो कि हम धर्म-प्रचारक लोग दिन भर लम्बा, ढीला कोट तथा चौडे हाशिया का हैट लगाये रहते है और अमेरिकन सौदागरो सदृश दीख पड़ते है। रात को घर वापस आने पर अपना पुराना 'कैजोक' (चोगे के नीचे का तग कपड़ा) पहन कर मुझे क्या ही आनन्द आता है। उस समय मै अपेक्षाकृत अधिक पादरी जैसा अनुभव करता हूँ (दिन भर तो मै व्यवसायी 'जैसा वना रहता हूँ) और उसी समय, पता नही क्यो, मैं स्वय को अधिक फासीसी भी अनुभव करता

हूँ। दिन भर मै मन और वाणी दोनो ही से अमेरिकन बना रहता हूँ, हृदय से भी मै अमेरिकन रहता हूँ। अमेरिकन व्यवसायियो की और विशेषकर फोर्ट के सैनिक अधिकारियो की कृपा का फल यह हुआ है कि मेरी उनके प्रति आदर तथा प्रेम की भावना केवल दिखावटी नही है। मैं यहाँ अधिकारियो को उनके काम में सहायता करना चाहता हूँ। जितना वे सोचते है, उससे अधिक मै उनकी सहायता कर सकता हूँ। हम धर्म-प्रचारक लोग इन बेचारे मेक्सिकनो को 'अच्छे अमेरिकन नागरिक' बनाने मे फोर्ट की अपेक्षा अधिक कुछ कर सकते है। और ऐसा करना जनता के हित मे है, वे अन्य किसी उपाय से अपनी स्थिति नही सुधार सकते।

"परन्तु तुम्हे अपने कर्तव्यो एव अभिप्रायो के सम्बन्ध मे लिखने का दिन यह नही है। इस रात तो हम निर्वासित व्यक्ति है, मस्त है तथा घर की याद कर रहे है। फादर जोसेफ ने मेक्सिकन नौकरानी को अपने घर जाने की आज्ञा दे दी है—वे उसे शीघ्र ही भोजन बनाने मे निपुण बना देगे, लेकिन आज रात तो वे स्वय ही क्रिसमस भोज तैयार कर रहे है। मैने तो यह सोचा था कि वे आज थक कर चूर हो गये होगे, क्योकि वे आज नौ दिन से विशेप आराधना एव धार्मिक समारोहो (हाई मास) का, जो यहाँ की प्रथा के अनुसार क्रिसमस के नौ दिन पहले से मनाये जाते है, नेतृत्व कर रहे है। मैने सोचा था, कि पिछली रात इस विशेप आराधना तथा अर्द्ध-रात्रि के 'हाई मास' को समाप्त कराने के पश्चात् अब आज वे विश्राम करना चाहेगे, परन्तु आज भी उन्होने रञ्चमात्र भी विश्राम नही किया। तुम तो उनका आदर्श जानते हो, 'कार्य करने मे ही विश्राम है'। मैं डुरैंगो से घोडे पर ढो कर उनके लिये एक बोतल जैतून का तेल ले आया था (मै 'ज़ैतून का तेल' इसलिये कह रहा हूँ कि यहाँ तो 'तेल' का अर्थ उस चिकनी वस्तु से है, जो घोडागाडी, बैलगाडी आदि की पहियो मे उन्हे आसानी से चलने के लिये लगाया जाता है), और वे

उसी से एक प्रकार का पकाया हुआ सलाद तैयार कर रहे है। यहाँ शीत के मौसम मे हरी तरकारियाँ नही मिलती और यहाँ तो किसी ने उस अद्भुत पौधे 'सलाद' का नाम ही नही सुना है। जोसेफ का काम सलाद के तेल के बिना नही चलता। ओहिओ में वे इसे अवश्य रखते थे यद्यपि यह वहाँ बडा मँहगा था तथा उसका खाना फजूलखर्ची समझा जाता था। वे तीसरे पहर से ही रसोई घर में घुसे हुए है। भोजन पकाने का एक ही खुला हुआ चूल्हा है और एक मिट्टी का चूल्हा आगन में बना हुआ है। परन्तु इसमे क्या ? वे अब तक किसी मामले मे चूके नही है, और मै यह दावे से कह सकता हूँ कि आज रात दो फ्रांसिसी व्यक्ति सुन्दर एवं सुस्वादु भोजन करने बैठेंगे और तुम्हारे स्वास्थ्य की शुभकामना करते हुए शराब पियेगे।"

बिशप ने लेखनी रख दी और आग से दो मोमबत्तियाँ जलायी। फिर वे अपना हाथ साफ करते हुए खिडकी के पास आ खडे हुए और बाहर गोधूलि बेला की पीली आभा से चमकते हुए नीले आकाश की ओर देखने लगे। इस पीली-केसरिया आभा के ऊपर आकाश में शुक्र का उदय हो चुका था। वह इतना सुहावना एव कांति-युक्त लग रहा, मानो वह स्वय अपने श्वेत प्रकाश मे धुलकर निखर आया हो। उनके धार्मिक शिक्षालय मे उनके एक मित्र जिस गाने को बडे ही सुन्दर ढग से गाते थे, उसी गाने को गुनगुनाते हुए बिशप अपनी डेस्क के पास वापस आये और दावात मे लेखनी डुबोने ही जा रहे थे कि दरवाज़ा खुला और किसी ने कहा,

"महाशय, भोजन तैयार है। अभी आपने पत्र नही समाप्त किया ?"

बिशप बत्तियाँ लेकर भोजन करने के कमरे में गये, जहाँ मेज पर भोजन लगा हुआ था और फादर वेलेंट रसोइया के कपडे बदल कर अपना तग चोगा पहन रहे थे। आग के सामने खड़े रहने के कारण उनका चेहरा लाल हो रहा था और साधारणतया वह जितना सादा लगता था,

इस समय उससे भी अधिक सादा लग रहा था—यद्यपि प्रथम मिलन मे फ़ादर जोसेफ को देखकर यही लगता था कि ईश्वर ने कदाचित् ही किसी को इतना कुरूप बनाया हो। वे ठिगने कद के दुबले-पतले व्यक्ति थे। घुडसवारी करने के कारण उनके पैर धनुप की भाँति टेढे हो गये थे तथा उनके चेहरे मे दया एव सजीवता के अतिरिक्त अन्य कोई आकर्पण नही था। यद्यपि इस समय उनकी अवस्था केवल चालीस वर्ष की थी, वे वृद्ध लगते थे। अत्यधिक शीत ऋतु वाले प्रदेश में हमेशा खुले रहने के कारण उनके शरीर का चमडा कडा तथा झुर्रीदार हो गया था, उनकी गरदन बूढों की भाँति पतली तथा शिकनदार हो गयी थी। उनकी नाक बडी तथा चपटी, ठुड्ढी, उभरी हुई, चौडा मुँह, होठ मोटे तथा आर्द्र, परन्तु ढीले या लटकते हुए कभी नही, इसके विपरीत हमेशा ही उत्साह से काम करने या प्रयास द्वारा अन्दर की ओर खिचे हुए। उनके बाल धूप मे खुले रहने के कारण सूखी घास के रंग के हो रहे थे, पहले उनका रग सन की तरह सफेद था, उन्हे धार्मिक शिक्षालय मे लोग 'ब्लाचेट' (जिसका अर्थ 'श्वेताग' होता है) कहा करते थे। उनकी आँखे भी कमजोर हो रही थी तथा उनका रग पीला और हलका नीला मिला हुआ था, जिससे वे प्रभावशाली नही मालूम होती थी। उनके बाह्य रूप को देखकर यह बिलकुल नही पता चल सकता था कि यह व्यक्ति इतना उग्र, साहसी एव उत्साही होगा, फिर भी कुद बुद्धि वाले तथा मिश्रित जातियो से उत्पन्न मेक्सिकन भी उनके गुणो को तुरन्त ताड जाते थे। बिशप के साता फे वापस आने पर उन्हे लोगो से जो सौहार्द्र पूर्ण व्यवहार मिला था, उसका कारण यह था कि लोग फादर वेलेंट का विश्वास करते थे, जो बडे ही सादे, सच्चे तथा धुन के पक्के थे और उनके दुबले-पतले शरीर मे एक दर्जन व्यक्तियो की कार्य-शक्ति थी।

भोजन के कमरे मे आकर बिशप लातूर ने मोमबत्तियो को आग जलाने के स्थान के ऊपर रखा, क्योकि मेज पर पहले ही से छ रखी हुई

थी जिनके प्रकाश मे भूरे रङ्ग का 'सूप' का बर्त्तन चमक रहा था। दोनो व्यक्तियो ने खडे रहकर एक क्षण तक मौन प्रार्थना की। इसके पश्चात् फादर जोसेफ ने सूप के वर्त्तन का ढक्कन हटाया और गाढे रंग के प्याज़ के सूप को, जिसमे सेकी हुई डवल रोटी के छोटे-छोटे टुकडे भी थे, प्लेटो मे ढाला। फादर लातूर ने उसको चखा और अपने साथी की ओर देखकर मुस्कराने लगे। कई चम्मच सूप पी लेने के बाद उन्होने चम्मच नीचे रख दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर टेकते हुये बोले,

"ब्लाचेट, जरा सोचो, मिसीसिपी नदी तथा प्रशात महासागर के बीच स्थित इस विशाल प्रदेश मे कदाचित् ऐसा कोई अन्य व्यक्ति नही है, जो इस प्रकार का सूप बना सके।"

"यदि वह फ्रासीसी व्यक्ति नही है तो," फादर जोसेफ ने कहा। वे अपने चोगे के सामने के भाग पर एक तौलिया (नैपकिन) डाले हुए थे और उत्तर देने में उन्होने तनिक भी देर नहीं की।

"जोसेफ, यह मत सोचना कि मै तुम्हारी वैयक्तिक योग्यता या निपुणता को कम बताने के उद्देश्य से कह रहा हूँ," विशप ने आगे कहा, "लेकिन मै सोचता हूँ कि इस प्रकार का सूप बनाना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है। यह तो एक लगातार अधिकाधिक सुसस्कृत परम्परा का परिणाम है। इस सूप मे लगभग एक हजार वर्षों का इतिहास छिपा हुआ है।"

फादर जोसेफ भृकुटी चढाकर मेज़ के मध्य मे रखे हुए उस मिट्टी के बर्तन को देख रहे थे। उनकी पीली, कमजोर दृष्टि वाली आँखो को देखने से प्रतीत होता था कि जैसे वे हमारे ही किसी वस्तु को बडे गौर से देखते हो। "वह तो ठीक है, वह तो सच है" वे बुदबुदाये। विशप की प्लेट को पुन. भरते हुए उन्होने कहा, "परन्तु तरकारियो के राजा 'लीक' (प्याज ही की किस्म की एक तरकारी, परन्तु जो आकार मे प्याज से भिन्न होती है)

के बिना अच्छा सूप बनाना कैसे सभव हो सकता है ? आखिरकार हम लोग सदा प्याज ही नही खाते रहेगे ।"

सूप की प्लेट हटा देने के पश्चात् वे भुना हुआ मुर्गा तथा आलू की कढी ले आये । "और सलाद, जीन" मुर्गे की वोटी काटते हुए वे वोले । "क्या हमे अब सारे जीवन सेम का सुखाया हुआ वीज तथा ये जडवाली तरकारियाँ ही खानी पडेगी । हमे समय निकाल कर एक वगीचा तैयार करना चाहिये । आह, सैडस्की मे मेरा क्या ही अच्छा वगीचा था । और तुम मुझे उससे दूर हटा कर यहाँ घसीट लाये ? यह तो तुम मानोगे कि फ्रास मे तुमने उससे अच्छा सलाद अन्यत्र कही नही खाया था । और मेरी अगूर-वाटिका । अगूर के प्रति तो मेरी स्वाभाविक रुचि है । मै तुमसे वता देता हूँ कि एक दिन आयेगा कि ईरी झील के किनारे चारो ओर अगूर की ही लताए दीख पडेगी । मुझे उस व्यक्ति के प्रति ईर्ष्या है, जो मेरे उन अगूरो की शराव पी रहा होगा । लेकिन आह, धर्म-प्रचारक का जीवन ही यही है कि वोओ तुम और काटे कोई और ।"

चूँकि आज क्रिसमस का दिन था, दोनो मित्र अपनी मातृ-भाषा में वाते कर रहे थे । वर्षों से उन्होने अपना यह नियम वना लिया था कि वे अत्यन्त विशेष अवसरो के अतिरिक्त आपस मे अग्रेजी भाषा ही मे वात करते थे और पिछले कुछ दिनो से वे स्पेनिश भाषा मे, जिसमे वे दोनो ही अभी पारगत नही हुए थे, वात करने लगे थे ।

"फिर भी तुम सैडस्की तथा वहाँ के आरामो के प्रति कभी-कभी खीझ उठते थे," विशप ने उन्हे याद दिलाते हुए कहा, "और कहते थे कि कदाचित् तुम जीवन भर घर मे रहने वाले ही पादरी वने रहोगे ।"

"मै ठीक कहता था, लेकिन यह भी तो है कि लोग ओहिओ मे प्रचलित कहावत के अनुसार, अपनी केक खाना भी चाहते है और उसे रखना भी चाहते है, अर्थात् मानव कभी-कभी दो परस्पर विरोधी कार्य भी

करना चाहता है। परन्तु नही, फादर जीन, अब बहुत हो गया। अब मुझे आगे मत घसीटो।" फादर जोसेफ एक लाल शराब की बोतल के काग को धीरे-धीरे अपनी उगलियो से खोलने लगे। "यह मैने तुम्हारे लिये फारम से माँग ली थी, जहाँ मै सेंट टामस के दिन एक बच्चे का नामकरण कराने गया था। इन पैसे वाले मेक्सिकनो को उनकी फ्रासीसी शराब से अलग करना आसान नही है। वे इसके मूल्य को जानते है।" उन्होने उसे थोडी सी निकाल कर चखी। "इसमे तो इस काग का भी कुछ स्वाद आ गया है, वे इसे अच्छी तरह रखना जानते ही नही। खैर, हम जैसे मिशनरियो के लिये तो फिर भी अच्छी ही है।"

"जोसेफ, तुम कहते हो कि मैं अब आगे तुम्हे न घसीटूँ। मै जानना चाहूँगा," कहते हुए फादर लातूर कुर्सी पर पीछे झुक गये तथा अपने दोनो हाथो की उँगलियो को आपस मे जकडते हुये ठुड्ढी के नीचे ले आये, "मै जानना चाहूँगा कि इस 'आगे' से तुम्हारा तात्पर्य क्या है। यह 'आगे' अभी कितनी दूर तक है? क्या कोई इस इलाके या क्षेत्र के विस्तार को जानता है? फोर्ट का कमाडेंट तो उतना ही कम जानता है, जितना मै। उसने बताया कि मै किट कार्सन से, जो ताओस मे रहता है, कुछ जानकारी प्राप्त कर सकता हूँ।"

"इलाके के विषय मे चिन्ता न करो, जीन। इस समय यही समझो कि साता फे ही इलाका है। कल मुझे गिरजे के उन सतरियो से निबटना है जिन्होने नशे मे चूर चरवाहो के उस दल को मध्य रात्रि की विशेष आराधना मे आने दिया तथा उन्हे पूजा के पवित्र जलपात्र को अपवित्र करने दिया। यहाँ ही अभी बहुत काम है। हमे धीरे-धीरे आगे बढना है। मैंने एक वर्ष के लिये यह निश्चय कर लिया है कि साता फे से तीन दिन की यात्रा से अधिक लम्बी यात्रा नही करूँगा।"

बिशप मुस्कराये और उन्होने अपना सिर हिला दिया। "और जब तुम

शिक्षालय मे थे तो तुमने यह निश्चय किया था कि तुम चिन्तन का ही जीवन व्यतीत करोगे।"

फादर जोसेफ का सादा चेहरा अचानक उद्दीप्त हो उठा। "मैने यह विचार अभी छोडा नही है। एक दिन तुम मुक्त करोगे ही, और तब मै फ्रास के किसी धार्मिक सस्थान मे वापस चला जाऊँगा और 'होली मदर' की पूजा मे ही जीवन के शेष दिन बिता दूँगा। फिलहाल, मेरे भाग्य मे यही लिखा है कि मै कार्यरत रह कर उनकी सेवा करूँ। परन्तु इससे आगे नही, जीन।"

बिशप ने पुन अपना सिर हिलाया और वे धीरे से अब बोले, "कौन जानता है कि कितना आगे जाना है?"

इस दुबले-पतले पादरी ने, जिसके जीवन मे आगे पर्वत श्रेणियाँ, बीहड मरु प्रदेश, मुँह बाये हुए पहाडी दर्रे तथा बढी हुई नदियाँ ही आने वाली थी, जो क्रूश को अज्ञात एव अनामधारी प्रदेशो मे ढोने को था, जो खच्चरो, घोडो, पथ-प्रदर्शको एव गाडीवानो को अपनी लम्बी-लम्बी यात्राओ द्वारा थका देने को था, आज रात अपने वरिष्ठ अधिकारी की ओर आशका भरी दृष्टि से देखा और फिर वही कहा, "अब नही, जीन। अब बहुत हो गया।' फिर शीघ्रता से विषय बदलते हुए उन्होने कहा, "सेम के बीज से अच्छा सलाद मै तुमको नही दे सकता था, लेकिन प्याज तथा सुअर के थोड़े से नमकीन मास के साथ, यह बहुत बुरा भी नही लगता।"

बेर का मुरब्बा खाते हुए वे(उन बडे-बड़े बेरो की चर्चा करने लगे, जो लातूर के घर मे उनके बगीचे मे पदा होने थे। वे उस टेढी-मेढी ककरीली सड़क की याद करने लगे, जो पहाडी के ढाल से नीचे उतरती थी, जिसके दोनो ओर बगीचे की ऊबड-खावड़ दीवारे तथा अखरोट के बडे-बडे वृक्ष थे तथा जो रात होते ही बीरान हो जाती थी और जिसकी

बत्तियाँ अँधेरे वाले मोडो पर लालटेन की भाँति टिमटिमाती रहती थी। उसके अत मे गिरजाघर था, जहाँ विशप ने अपना पहला धार्मिक समारोह किया था। उसके सामने ही वडी-वडी पत्तियो वाले कटे-छँटे वृक्षो का वगीचा था और इन्ही वृक्षों की छाया में प्रत्येक मगलवार तथा शुक्रवार को वाजार लगाता था ?

इस प्रकार जव वे पुरानी स्मृतियो मे लीन थे, यद्यपि ऐसा वे कदाचित् ही कभी करते रहे हो, दोनो पादरी वन्दूक की गोलियो की आवाज तथा वाहर लोगो की भयानक चीख और दौडते हुए घोड़ो की टापो की आवाज़ से चौक उठे। विशप उठने लगे, परन्तु फादर जोसेफ ने उन्हे आश्वस्त करते हुए पुन वैठा दिया।

"अशात मत हो। यही घटना 'आँल सोल्स' के दिन से पहले वाली सध्या को भी घटी थी। शराव मे मस्त चरवाहो का एक दल, जैसा कि कल रात गिरजाघर मे आया था, रेड इण्डियनो की वस्ती मे जाता है और उनके लडको को भी शराव पिलाता है, फिर सव लोग घोड़ो पर सवार होकर फोर्ट जाते है और वहाँ सैनिको के समक्ष गाते-वजाते है, गोलियाँ चलती है, लोग चीखते-चिल्लाते है।"

४
घण्टा और चमत्कार

डुरैगो ने साँता फे वापस आने पर, अपने निवास-स्थान मे प्रथम रात्रि विताने के पश्चात्, विशप का प्रात.काल निद्रा से जगना वडा सुहावना था। वे दिन भर, घोडे पर साठ मील की यात्रा करके (रास्ते मे उन्होने एक स्थान पर घोडा भी वदला था) रात होते-होते अपने घर के अहाते मे, विलकुल थके हुए पहुँचे थे। अत दूसरे दिन वे देर तक सोते रहे और उन्हे लगा जैसे वे रोमन गिरजाघर के घण्टे की आवाज सुनकर ही छः

बजे उठे थे। उन्होने पूर्ण जाग्रत् अवस्था वड़े धीरे-धीरे प्राप्त की, क्योकि वे इस जाग्रत-स्वप्न को नही छोड़ना चाहते थे कि वे इस समय रोम मे है। अब उन्हे यह कुछ-कुछ चेतना होने लगी थी कि वे तो इस समय सेंट जॉन लेटरन के पास कही रहते है, फिर भी उन्होने राम मे देवी मेरी की आराधना के समय बजने वाले घण्टे की प्रत्येक चोट स्पष्ट सुनी और उन्हे आश्चर्य हुआ कि यहॉ वह घण्टा इतने सही ढग से कैसे वजाया जा रहा है (कुल नौ चोटे, जिनमे से प्रत्येक तीन चोट के वाद कुछ क्षणो का अन्तर), उन्हे इस पर भी आश्चर्य हुआ, कि यहाँ वह घण्टा कहाॅ से आया, जिससे इतनी सुरीली ध्वनि निकल रही है। मधुर, मनोहर तथा स्पष्ट, प्रत्येक ध्वनि चाँदी के गोले की भाँति हवा मे तैर रही थी। नवी चोट के समाप्त होते-होते रोम अदृश्य हो गया और उन्हे ऐसा आभास हुआ, जैसे वे किसी प्राच्य देश मे पहुँच गये हो, जहाँ ताड और खजूर के वृक्ष है—कदाचित् यरुशलम मे, यद्यपि वे वहाँ कभी गये नही थे। उन्होने अपनी आँखे बद कर ली और वे इस प्राच्यदेशीय तथा साथ ही मन पर व्याप्त हो जाने वाली भावना को एक क्षण के लिये अपने हृदय मे सजोकर रख लेना चाहते थे। एक बार और भी पहले वे इस प्रकार अपने स्थूल शरीर से निकल कर किसी अत्यन्त दूरस्थ प्रदेश मे पहुँच गये थे। वह घटना न्यू आर्लियेस की किसी सडक पर घटी थी। वे सडक की एक मोड पर घूमे ही थे कि उन्हे एक वृद्ध स्त्री पीले फूलो से भरी एक टोकरी लिये हुए मिली थी। इन फूलो की शहद की भाँति मीठी सुगध हवा मे व्याप्त हो रही थी। ये फूल कदाचित् छुईमुई के थे, परन्तु उसके पहले कि वे फूल का नाम सोच सके, उन्हे स्थानातर की एक भावना ने जकड़ लिया था। वे अचानक दक्षिणी फ्रांस की एक पुष्प वाटिका मे, जहाॅ वे वचपन मे किसी बीमारी के पश्चात् स्वास्थ्य-लाभ के लिए शीत-ऋतु मे भेजे गये थे, उसी वेष मे पहुँच गये थे। और आज, घण्टे की इस मधुर आवाज ने

ध्वनि की गति से भी तीव्र गति से, उन्हे उससे भी दूर, किसी स्थान पर पहुँचा दिया था ।

जब कॉफी पीते समय फादर वेलेंट से उनकी भेंट हुई, तो उस उतावले व्यक्ति ने, जो कभी कोई भेद छिपाकर रख ही नही सकता था, उनसे पूछा कि क्या उन्होने कोई आवाज़ सुनी थी ।

"मुझे ऐसा लगा कि मैंने रोम के गिरजाघर के घण्टे की आवाज सुनी, फादर जोसेफ, परन्तु मेरा विवेक यह कहता है कि लम्बी समुद्री यात्रा ही मुझे ऐसी आवाज़ के समीप पहुँचा सकती है ।"

"बिल्कुल नही," फादर जोसेफ ने शीघ्रता से उत्तर दिया । "मैंने इस अद्भुत घण्टे को यहाँ सैन मिगुयेल के पुराने गिरजाघर के तहखाने मे पाया । लोग बतलाते हैं, कि यहाँ वह सौ या उससे भी अधिक वर्षो से है । यहाँ किसी गिरजे का घण्टाघर इतना मजबूत नही है, कि उसमे यह लटकाया जा सके, क्योकि वह बहुत ही भारी है—लगभग आठ सौ पौंड तो वजन में होगा ही । फिर मैंने यह किया कि गिरजे के अहाते मे एक मचान खडा कराया और बैलो की सहायता से उसे ऊपर उठा कर मजबूत खम्भो मे जडे हुए हुक से लटका दिया । मैंने एक मेक्सिकन लडके को उसे तुम्हारे आने तक ठीक तरह से बजाना भी सिखा दिया ।"

"परन्तु वह यहाँ आया कैसे होगा ? मेरा ख्याल है कि वह स्पेनिश है ।"

"हाँ, उसमे जो लिखावट है, वह स्पेनिश भाषा मे है और सेंट जोसेफ के प्रति है तथा उसमे तारीख सन् १३५६ ई० खुदी हुई है । वह किसी बैलगाड़ी में लादकर मेक्सिको नगर से यहाँ ले आया गया होगा । निस्सदेह यह बडी बहादुरी का काम था । यह कोई नही जानता कि वह बना कहाँ । हाँ, इतना लोग अवश्य बताते हैं, कि मुअरो के साथ युद्ध के समय लोगो ने

सेंट जोसेफ को एक घण्टा अर्पित करने की प्रतिज्ञा की थी और किसी घिरे हुए नगर के निवासियों ने अपने चादी, सोने तथा अन्य मूल्यवान् धातुओ के सभी गहने साधारण धातुओ मे मिला कर इस घटे को तैयार किया। यह तो निश्चित है कि घटे मे चादी की मात्रा काफी है, अन्यथा उसकी आवाज़ इतनी अच्छी कैसे होती ?"

फादर लातूर ने विचारते हुये कहा, "और स्पेनिश लोगो के गहने वास्तव मे मुअरो के ढग के गहने थे। यदि वे मुअरो द्वारा बनाये नही गये थे, तो कम-से-कम उन्ही की डिजाइनो की नकल तो अवश्य थे। स्पेनिश लोग चादी का गहना आदि बनाना तो बिल्कुल ही नही जानते थे। उन्होने जो कुछ सीखा, वह मुअरो से ही सीखा।"

"यह तुम क्या कह रहे हो जीन ? मेरे घटे को अपवित्र सिद्ध करना चाहते हो ?" फादर जोसेफ ने अधीरता से पूछा।

बिशप मुस्करा पडे। "मै अपनी उस भावना का समुचित कारण ढूंढने का प्रयत्न कर रहा हूँ, कि आज प्रात काल जब मैने इस घण्टे की आवाज़ सुनी, तो उसमे मुझे फौरन ही कुछ प्राच्यदेशीय ध्वनि का आभास मिला। स्काटलैंड के एक विद्वान् जेसुइट कैथोलिक ने मुझे मान्ट्रियल मे बतलाया था कि गिरजाघर के हमारे घण्टे, तथा सारे यूरोप मे, गिरजाघरो मे आराधना के समय घण्टो का चालू किया जाना मूलत प्राच्यदेशीय प्रथा की देन है। उन्होने बतलाया कि फिलिस्तीन को तुर्कों से वापस छीनने के लिए जो ईसाइयो का युद्ध हुआ था, उसी युद्ध से ईसाई धर्म-सैनिक 'ऐंजेलस' (रोम के गिरजाघर का घण्टा) वापस लाये तथा यह एक मुस्लिम रिवाज का बदला हुआ स्वरूप है।"

फादर वेलेंट ने नाक सिकोडते हुए कहा, "मै तो जानता हूँ, कि विद्वान् लोग हमेशा ही ऐसी बात अवश्य खोजकर निकालते है, जिससे किसी वस्तु की महत्ता कम होती हो।"

"महत्ता कम करना ? मै तो कहता हूँ कि वात ठीक इसके विपरीत है। मुझे यह जानकर वड़ी प्रसन्नता है कि तुम्हारे इस घरटे मे मुअरिश चाँदी है। साता फे आने पर, यदि हमें यहाँ कोई अच्छा कारीगर मिला, तो वह एक रौप्यकार ही था। स्पेनिश लोगो ने अपनी कला मेक्सिकनो को दी और मेक्सिकनो ने 'नवाजो' को चाँदी के गहने वनाने की कला सिखायी, लेकिन प्रारम्भ मे यह मुअरो से ही यहाँ आयी।"

"तुम तो जानते हो कि मै कोई विद्वान् या पण्डित व्यक्ति नही हूँ," फादर वेलेंट ने उठते हुये कहा। "और आज तो हमे वहुत से काम करने है। साता क्लारा स्थित रेड इण्डियनो के धर्म-सम्प्रदाय के एक भले वूढे स्थानीय पादरी को, जो मेक्सिको से वापस आ रहा है, मैंने यह वादा कर दिया है कि वह तुमसे मिल सकेगा। उसने हाल ही में ग्वाडालुपे स्थित देवी मेरी की समाधि की तीर्थ-यात्रा की है और उसका धार्मिक विश्वास वहुत ही पक्का हो गया है। वह अपने अनुभवो को तुमसे वतलाना चाहता है। ऐसा लगता है कि जव वह पादरी वना, तभी से उसे इस समाधि के दर्शन की वडी इच्छा थी। तुम्हारी अनुपस्थिति में मैंने यह जान लिया कि वह समाधि न्यू मेक्सिको के सभी कैथोलिको के लिये कितना अधिक मूल्यवान् है। वे उसे देवी मेरी का नयी दुनिया मे पूर्णत प्रामाणिक रूप में प्रकट होना तथा इस महाद्वीप पर अपने धर्म के लिये उनके प्यार का सच्चा सवूत मानते है।"

विशप अपने लिखने-पढने के कमरे में चले गये और फादर वेलेंट एस्कोलैस्टिको हेरेरा नामक पादरी को, जिसकी अवस्था लगभग सत्तर वर्ष की थी तथा जो इस पादरी के पेशे मे गत चालीस वर्षों से था और हाल ही मे अपने जीवन की सवसे वडी इच्छा पूरी की थी, ले आये। उसके हाल के ताज़े अनुभव की सुखद भावना से उसका मन अव भी ओत-प्रोत था। वह उसी मे इतना लीन था कि अन्य कोई वस्तु उसे

आकर्षित ही नही करती थी। उसने बडी जिज्ञासा से पूछा कि यदि इस समय जल्दी हो, तो क्या बिशप कुछ देर पश्चात्, इतमीनान से, उसकी बात सुनने के लिये अधिक समय दे सकेंगे। इस पर फादर लातूर ने उसके बैठने के लिये एक कुर्सी आगे खिसका दी और कहा कि आप अपनी कहानी कहिये।

वृद्ध व्यक्ति ने बैठने का सम्मान पाने के लिए उन्हे धन्यवाद दिया। आगे झुकते हुई तथा अपने दोनो हाथो को अपने पावो के घुटनो के बीच सटा कर रखे हुए, उसने देवी मेरी के चमत्कारयुक्त ढग से प्रकट होने की सारी कथा कह सुनायी। कथा उसने इसलिये सुनायी कि प्रथम तो वह उसे बहुत ही प्रिय थी और दूसरे इसलिये कि उसे पूर्ण विश्वास था कि किसी 'अमेरिकन' बिशप ने घटना को सच्चे रूप मे न सुनी होगी, यद्यपि रोम मे लोगो को पूरा विवरण मालूम था और दो पोपो ने समाधि के लिये भेंट भी भेजी थी।

सन् १५३१ ई० के ६ दिसम्बर को, शनिवार के दिन, सेंट जेम्स मठ का एक गरीब नवदीक्षित भिक्षु मेक्सिको नगर मे होने वाले 'मास' (विशेष पूजा, आराधना) मे सम्मिलित होने के लिये टापेअक पहाडी की ढाल पर तेज़ी से चला जा रहा था। उसका नाम जुआन डीगो था तथा उसकी अवस्था पचपन वर्ष की थी। जब वह पहाडी की आधी ढाल उतर चुका था, तो उसके मार्ग मे एक ज्योति चमकी और ईश्वर की माँ (देवी मेरी) उसके समक्ष एक अत्यन्त सुन्दर नवयुवती के रूप मे, नीले तथा सुनहरे वस्त्र पहने हुए, प्रकट हुईं। उन्होने जुआन को उसका नाम लेकर पुकारा और कहा—

"जुआन, जाओ अपने बिशप को खोजो और उनसे कहो कि वे मेरे सम्मान मे जिस स्थान पर मै खडी हूँ, वहाँ एक गिरजाघर बनवायें।

जाओ, मै तुम्हारे वापस आने तक यही खडी हुई तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी।"

भिक्षु जुआन नगर तक दौड़ता हुआ गया और सीधे बिशप के महल मे पहुँचा और उनसे सारी बात कह सुनायी। बिशप जुमरंगा नामक एक स्पेनियार्ड थे। बिशप ने भिक्षु से तरह-तरह के प्रश्न किये और उससे कहा कि उसे देवी मेरी से कोई निशानी ले लेनी चाहिये थी, जिससे यह विश्वास हो सके कि वे वास्तव मे देवी मेरी ही थी, न कि कोई प्रेतनी। उन्होने बेचारे भिक्षु को डाँट कर बाहर निकाल दिया और एक नौकर को उसकी गति-विधि पर दृष्टि रखने के लिये लगा दिया।

जुआन बहुत उदास तथा खिन्नावस्था मे अपने चाचा बर्नार्डिनो के घर पहुँचा। वे ज्वर से पीडित बिस्तर पर पडे थे। दो दिन तो उसने अपने बूढे चाचा की, जो मृत्यु के बिल्कुल समीप लगते थे, सेवा-शुश्रूषा करने मे बिता दिये। बिशप की डाँट के कारण उसके मन मे भी सन्देह उत्पन्न हो गया था और वह उस स्थान पर वापस नही गया, जहाँ देवी मेरी ने कहा था कि वे उसकी प्रतीक्षा करेंगी। मगलवार को वह बर्नार्डिनो के लिये दवा लाने अपने मठ वापस जाने के लिये नगर से रवाना हुआ, परन्तु उसने उस स्थान को बचाकर, जहाँ उसे देवी का दर्शन हुआ था, दूसरा मार्ग पकडा।

फिर उसने अपने मार्ग मे एक ज्योति देखी और देवी मेरी पुन पहले की भाँति प्रकट हुईं। उन्होने उससे कहा, "जुआन, तुम इस मार्ग से क्यो जा रहे हो?"

उसने रोते-रोते उन्हे बताया कि बिशप ने उसकी बात पर विश्वास नही किया और वह अपने चाचा की, जो मरणासन्न हैं, सेवा-शुश्रूषा मे लग गया था। देवी ने उसे बडी सात्वना दी और कहा कि उसका चाचा एक घण्टे के अन्दर ही अच्छा हो जायगा और वह बिशप जुमरंगा के पास

वापस जाय और उनसे उसी स्थान पर गिरजाघर बनवाने को कहे, जहाँ वे पहली बार प्रकट हुई थी। उसका नाम ग्वाडालुपे की देवी मेरी की समाधि पडे, जैसा कि स्पेन मे उनकी प्रिय समाधि का नाम था। जब भिक्षु जुआन ने उनसे विनय की कि बिशप कोई निशानी चाहते है, तो उन्होने कहा, "उधर उन चट्टानो पर जाओ और गुलाब के फूल तोड लो।"

यद्यपि दिसम्बर का महीना था, और वह गुलाबो का मौसम नही था, परन्तु जब वह दौडकर चट्टानो पर पहुँचा तो उसने वहाँ ऐसे गुलाब के फूल देखे, जैसे उसने पहले कभी नही देखे थे। उसने अपना 'तिल्मा' भर कर गुलाब के फूल तोडे। 'तिल्मा' एक ढीला लबादा होता है जिसे अत्यन्त गरीब लोग पहनते है। उसका तिल्मा अत्यन्त भद्दा और किसी पौधे के रेशो के सूत का मोटे ढग मे बुना हुआ और ऊपर से नीचे तक बीच मे सिला हुआ था। जब वह देवी के पास वापस आया, तो उन्होने फूलो को देखकर उन्हे उसके चोगे मे ठीक तरह से रखकर 'तिल्मा' के किनारो को बटोर कर गाँठ लगा दी और उससे कहा—

"अब जाओ अपने चोगे को बिशप के समक्ष ही खोलना, उससे पहले नही।"

जुआन दौडता हुआ नगर मे पहुँचा और बिशप के पास गया, जो अपने 'विकार' से बातें कर रहे थे।

"प्रभुवर", उसने कहा, "जिन देवी ने मुझे दर्शन दिये है, उन्होने ही ये गुलाब के फूल निशानी के रूप मे आप के पास भेजा है।"

इतना कहकर उसने अपने 'तिल्मा' की गाँठ खोल दी और फूलो को भरभराकर फर्श पर गिरा दिये। तुरन्त ही यह देखकर वह आश्चर्यचकित हो गया कि बिशप जुमर्रगा और उनके विकार उसी क्षण अपने घुटनो के बल फूलो के बीच दण्डवत् की मुद्रा मे पड़ गये। भिक्षु के फटे पुराने चोगे

के अन्दर वाले सतह पर ही देवी मेरी का एक चित्र बना था और वे नीले, गुलाबी और सुनहरे वस्त्र पहने हुए ठीक उसी रूप मे थी, जिस रूप मे वे उसके समक्ष पहाडी के पास प्रकट हुई थी ।

इस चमत्कारिक चित्र को प्रतिष्ठापित करने के लिये एक समाधि की स्थापना की गई, जो तभी से असंख्य तीर्थयात्रियो के लिये दर्शनीय स्थान बना हुआ है और उसने अनेक चमत्कार किये है ।

इस प्रतिमा के सम्बन्ध मे पादरी एस्कोलैस्टिको ने बहुत कुछ बतलाया । उसने बतलाया कि उसकी सुन्दरता असाधारण थी, उसके सुनहरे तथा अन्य रङ्ग इतने रुचिर एव कमनीय थे, जैसे उषा की मृदु लाली । समाधि का दर्शन करने अनेक चित्रकार भी आये थे और उन्हे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि इतने मोटे तथा कमजोर वस्त्र पर जैसा कि भिक्षु के चोगे का वस्त्र था, चित्रकारी हो कैसे सकी । साधारणतया ऐसे वस्त्र की तो सैकडो वर्ष पहले ही धज्जियाँ उड गई होगी । पादरी ने विनम्रता से बिशप लातूर तथा फादर जोसेफ को छोटे-छोटे पदक भेंट किये, जिन्हे वह समाधि से ले आया था तथा जिनके एक ओर उसी चमत्कारिक चित्र की नकल खुदी हुई थी और दूसरी ओर ये शब्द खुदे थे—**उसने (देवी ने) किसी अन्य राष्ट्र पर ऐसी अनुकम्पा नहीं की है ।**

फादर वेलेंट पादरी की कहानी सुनकर अत्यधिक प्रभावित हुए और बूढे पादरी के चले जाने के पश्चात् उन्होने बिशप से कहा कि मैं स्वय ही शीघ्रातिशीघ्र इस समाधि का दर्शन करना चाहता हूँ ।

"इस जंगली देश के नव-धर्मान्तरित व्यक्तियो के लिये यह क्या ही अमूल्य वस्तु है ।" उन्होने अपने चश्मे के शीशो को पोछते हुए, जो उनके उद्वेग मे आने के कारण धुँधले पड गये थे, कहा । "यहाँ के इन ग़रीब

कैथोलिको के लिये, जिन्हे अब तक किसी प्रकार की शिक्षा नही मिली है, यह बहुत बडी सात्वना की बात है कि देवी यहाँ इस प्रकार प्रकट हुई। उनके घर-घर मे चर्चा होती रहती हे कि उनकी माँ देवी मेरी उनके ही देश मे एक गरीब भिक्षु के समक्ष प्रकट हुई। विद्वानो के लिये धर्म-ज्ञान ही पर्याप्त हो सकता है, जीन, परन्तु चमत्कार तो ऐसी वस्तु है, जिसे हम प्रत्यक्ष देख सकते है और उसी से प्रेरणा लेते रह सकते है।"

फादर वेलेंट बोलते-बोलते उठ खडे हुए और उद्विग्नता से टहलने लगे, बिशप विचार मे निमग्न उन्ही को देख रहे थे। अपने मित्र की यही बात उन्हे बहुत प्रिय थी। "जहाँ प्रेम की पराकाष्ठा होती है, वही चमत्कार होते हैं", उन्होने अन्त में कहा। "यह कहना अत्युक्ति नही कि देवी-देवताओ का छाया-पुरुष के रूप मे दिखलाई पडना दैवी कृपा द्वारा विशुद्ध एवं परिष्कृत की हुई मानव दृष्टि ही है। मै तुम्हे तुम्हारे वास्तविक स्थूल रूप में नही देखता, जोसेफ, मै तो तुम्हे तुम्हारे प्रति अपने स्नेह के माध्यम से, जो तुम्हारे प्रति मेरी दृष्टि को ही बदल देता है, देखता हूँ। अदृष्ट से हमारे समीप आकर कोई दैवी शक्ति पार्थिव रूप मे प्रकट हुई, हमने उसकी वाणी की आवाज़ सुनी अथवा रोगादि से मुक्त करने की उसकी शक्ति का प्रदर्शन हुआ, केवल इसे ही चमत्कार कह देना मेरे विचार से ठीक नही। चमत्कार तो हमारे चारो ओर सर्वदा ही होते रहते है, और यदि हम अपनी ज्ञानेन्द्रियो को विशुद्ध करके अति सूक्ष्म बना लें, तो हम इन सर्व-व्याप्त चमत्कारो को देख, सुन तथा समझ सकते है।"

अध्याय २

प्रचार-यात्राएँ

१

सफेद खच्चर

मार्च मास के मध्य मे, एक दिन फादर वेलेंट अलवुकर्क की प्रचार-यात्रा करने के पश्चात् सडक की राह वापस हो रहे थे। वे एक मैनुएल लुजो नामक धनवान् मेक्सिकन के मकान पर उसके नौकर तथा नौकरानियों का, जो विना विवाह के ही पति-पत्नी की तरह रह रहे थे, विवाह कराने तथा वच्चो को दीक्षित करने के लिये रुकने वाले थे। वही वे रात बिताने वाले थे। कल या परसों वे साता फे पहुँचेंगे। रास्ते मे उन्हे रेड इण्डियनो की सैंटो डोमिंगो नामक वस्ती मे सार्वजनिक उपासना के लिये रुकना था। सैंटो डोमिंगो मे धर्म-प्रचारको का एक वहुत पुराना सुन्दर गिरजाघर था, परन्तु रेड इण्डियन वडे उद्धत तथा सनकी मिजाज के थे। एक सप्ताह पहले, अलवुकर्क जाते समय फादर वेलेंट ने इस वस्ती मे विशेष पूजा-समारोह ('मास') आयोजित किया था। घर-घर में जाकर समझाने-बुझाने तथा गिरजाघर मे आने वाले लोगो को पदक एव धार्मिक रगीन चित्रो का लालच देकर उन्होने एक वडा धार्मिक समूह एकत्र कर लिया था। यह एक वडी एव खुशहाल वस्ती थी, जो रायो ग्राडे की घाटी मे छोटी-छोटी

पहाडियो के बीच बसी थी। पहाडियो की तलहटी मे ही उनके पानी से सुसिंचित खेत थे। उनका धार्मिक समूह शान्त, सौम्य एव एकाग्र चित्त वाला था। लोग अपने अच्छे-से-अच्छे कम्बल ओढे हुए जमीन पर ही बडे आराम से बैठे हुए थे। फादर वेलेंट ने उनके समक्ष बडी बुलद आवाज मे स्पेनिश भाषा मे भाषण दिया था और लोगो ने बडे सम्मान से उसे सुना था। परन्तु वे अपने बच्चो को दीक्षा के लिये नही ले आये। बहुत पहले स्पेनिश लोगो ने उनके साथ बडा बुरा व्यवहार किया था और कई पीढियो से वे अपनी अप्रसन्नता अपने मन मे रखे हुए चले आ रहे थे। फादर वेलेट उस दिन एक बच्चे को भी दीक्षित करने में समर्थ नही हुए थे, परन्तु उनका विचार कल वहाँ रुकने तथा पुन प्रयत्न करने का था। फिर वे कल ही अपने बिशप के पास पहुँच जाने को थे, बशर्ते उनका घोड़ा ला बाजडा की पहाड़ी पार कर सके।

उन्होने अपना घोडा एक अमेरिकन सौदागर से खरीदा था, जिसमे उन्हे बुरी तरह धोखा हुआ था। बीस से तीस मील प्रति दिन की गति से एक सप्ताह की यात्रा ने ही उसे बिलकुल चकनाचूर कर दिया था। बर्नालिलो से आगे बढने पर मैनुएल लुजो के घर पहुँचते-पहुँचते फादर वेलेंट के मस्तिष्क में अनेक प्रकार की चिन्ताए थी। लुजो का फार्म एक प्रकार का छोटा-सा नगर था। उसमे अस्तबल बने हुए थे, बाडे थे तथा लकडी के छडो से बने हुए मवेशियो के घेरे थे। फार्म से बना बड़ा निवास-स्थान एक लम्बा तथा नीचा मकान था, जिसमे शीशे की खिडकियाँ तथा चमकदार नीले रग के दरवाजे थे। मकान के सामने की दीवार के एक छोर से दूसरे छोर तक एक ऊँचा मेहराबदार फाटक बना हुआ था। कच्चे ईंटो की बनी हुई दीवार पर लगाम, काठी, बडे-बडे बूट, घोडे की रकाबें, बन्दूके, जीनपोश, लाल मिर्च की रस्सी मे गुँथी हुई मालाएँ, लोमडी की खाले तथा दो विशाल सर्पों की खाले लटकी हुई थी।

प्रचार-यात्राएँ

फादर वेलेंट के फाटक मे प्रवेश करते ही चारो ओर से बच्चे उनकी ओर दौड़ पड़े। इनमे से कुछ तो केवल एक कमीज पहने हुए थे और औरतें अपने काले बालो वाले सिरो पर बिना कोई कपड़ा डाले ही बच्चो के पीछे दौडती हुई आयी। मैनुएल लूजो के घर के अदर से बाहर निकलते ही वे सबके सब चपत हो गये। लूजो हाथ मे टोपी लिये मुस्कराते हुए स्वागत के लिये आगे आये। उनकी अवस्था पैंतीस वर्ष की थी, गँठा हुआ शरीर तथा गर्दन मोटी। उन्होने ईश्वर के नाम पर पादरी का स्वागत किया और उन्हे घोडे से उतारने के लिये हाथ बढाया, परन्तु फादर वेलेंट शीघ्रता से ज़मीन पर कूद पडे।

"मैनुएल, ईश्वर तुम्हारा तथा तुम्हारे परिवार का कल्याण करे। जिनका विवाह होने को है, वे सब कहाँ हैं ?"

"सब लोग खेतो मे काम कर रहे है, पादरी साहब। कोई जल्दी नही है। थोडी सी शराब पीजिये, नाश्ता कीजिये और थोडा विश्राम कीजिये। इसके बाद फिर ब्याह आदि होगा।"

"शराब और नाश्ता सब होगा, लेकिन बाद को। मैने तो सोचा था कि भोजन के समय मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा, लेकिन मै दो घण्टे पिछड गया, क्योकि मेरा घोडा बड़ा खराब है। घोडे पर से मेरा झोला उतरवा लो, उसमे से निकाल कर मै अपने पादरी के कपडे पहन लूँ। अपने आदमियो को खेतो पर से बुलवा लो, लुजो। ब्याह के लिये लोग अन्य काम बद कर सकते है।"

साँवले रग का उनका मेजबान, उनकी इस जल्दीबाज़ी से हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा, "पादरी साहब, ज़रा ठहरिये। बच्चो को दीक्षित भी तो करना है। यदि आप मुँह-हाथ धोने तथा थोडा विश्राम करने के लिये नही तैयार है, तो क्यो नही तब तक बच्चो की दीक्षा ही आरम्भ की जाय।"

"मुझे मुँह-हाथ धोने तथा कपडे बदलने का कोई स्थान वतला दो। जव तक तुम उन लोगो को यहाँ वुलाकर एकत्र करते हो, तव तक मै तैयार होकर आ जाऊँगा। नही लुजो, मैं कहता हूँ कि विवाह का कार्य पहले होगा, दीक्षा पीछे। ईसाई धर्म मे यही व्यवस्था दी हुई है। मै वच्चो को दीक्षा कल प्रात काल दूँगा, तव तक कम से कम उनके माताओ-पिताओं का धर्म विहित व्याह तो हो गया रहेगा।"

फादर जोसेफ को उनके लिये निर्दिष्ट कमरे मे पहुँचाया गया तथा कुछ सयाने लडके पुरुषो को वुलाने के लिये खेतो पर दौडाये गये। लुजो तथा उसकी दो कन्याएँ मिलकर वडे कमरे के एक किनारे वेदी तैयार करने लगी। दो बूढी स्त्रियाँ कमरे की सफाई करने लगी तथा एक औरत कुर्सी, स्टूल, मेज़ इत्यादि लाने लगी।

"वाप रे वाप, यह पादरी कितना कुरूप है!" उनमे से एक स्त्री ने अन्य दोनो से कहा। "लेकिन वह वडा धार्मिक एव ईश्वर-भक्त होगा। और उसकी ठुड्डी पर कितना वडा मसा है। मेरी दादी यदि आज जीवित होती, तो वे वेचारे के इस मसे को मत्र से अच्छा कर देती! उसे तो चिमायो की उस चमत्कारिक मिट्टी के बारे मे वता देना चाहिये। उस मिट्टी के लगाने से सम्भव है कि यह मसा सूख जाय। अव तो ऐसा कोई रह ही नही गया, जो मसो को मत्र आदि से अच्छा कर देता।"

"नही, अव पहले वाली वातें और अच्छाइयाँ कहाँ रह गयी," दूसरी ने हाँ मे हाँ मिलाते हुए कहा। "और मुझे सन्देह है कि इन विवाहो आदि से समय फिर सुधर जाय। लोगो के वाल-वच्चे हो जाने के वाद उनका व्याह करने से क्या लाभ? और यह भी तो हो सकता है कि जिस पुरुष का व्याह होने को हो, वह पेञ्जो की भाँति किसी दूसरी स्त्री की वात सोच रहा हो। मैने पैञ्जो को पिछले रविवार की रात को त्रिनिदाद की सवसे वडी वाली लडकी के साथ झाडी मे से निकलते हुए देखा था।"

उसी समय फादर जोसेफ वहाँ आ गये और उनकी बेहूदा वार्ता बंद हो गई। वे वेदी के समक्ष झुककर बैठ गये और अपनी पूजा आदि करने लग गये। औरतें धीरे से बाहर निकल गयी। सीन्योर लुजो स्वयं नौकरों की कोठरियो की ओर 'विवाह-संस्कार के लिये उम्मेदवारो को जल्दी तैयार करने चले गये। औरतें हँस रही थी और अपने सर्वश्रेष्ठ कपडे पहन रही थी। उनमे से कुछ ने अपने हाथ भी धो लिये थे। घर के सभी लोग बड़े कमरे (हॉल) मे एकत्र हो गये और फादर वेर्लेंट बडी शीघ्रता से लोगो का विवाह संस्कार पूर्ण करा रहे थे।

"कल प्रात काल दीक्षा-कार्य होगा," उन्होने घोषित किया। "और माताएँ इस पर ध्यान रखें कि बच्चे साफ सुथरे रहे और उनमे से प्रत्येक के लिये धर्म-पिता भी रहे।"

पुन. यात्रा के अपने कपडे पहनने के पश्चात् फादर जोसेफ ने लुर्जो से पूछा—आप भोजन कितने बजे करते हैं ? सुबह नाश्ते के बाद से मैंने कुछ खाया नही है और मुझे भूख लगी है।

"जब भी भोजन तैयार हो जाता है, तभी हम खा लेते है—साधारणतया सूर्यास्त से थोडी देर बाद। मैंने आपके लिये भेंड का एक बच्चा कटवा रखा है।"

फादर जोसेफ ने यह सुनते ही बडी दिलचस्पी दिखलाई। "आहा, और वह पकाया कैसे जायगा ?"

सीन्योर लुजो ने कुछ विस्मित होते हुए कहा, "यह भी कोई पूछने की बात है ? अरे उसे थोडी लाल मिर्चों तथा प्याज के साथ पर चढा देते है, बस !"

"यही तो बात है। इधर मैंने काफी रसेदार गोश्त खाया है। यदि आप मुझे रसोईघर मे जाने की अनुमति दे देते, तो अपने हिस्से का गोश्त मै स्वयं पका लेता।"

लुजो ने अपना हाथ फैलाते हुए कहा, "मेरा घर आपका घर है, पादरी साहब। मै तो स्वय रसोईघर मे कभी नही जाता, क्योकि वहाँ वहुत सी औरते रहती है। परन्तु आप चले जाइये, इस समय वहाँ की इंचार्ज रोजा नामक एक स्त्री है।"

फादर ने रसोईघर मे प्रवेश किया, तो देखा कि वहाँ औरतो की एक खासी भीड एकत्र है, जो विवाहो के सम्बन्ध मे वार्तालाप कर रही है। उन्हे देखते ही वे सब चली गयी और अँगीठी के पास अकेली रोजा रह गयी। अँगीठी पर एक देगची चढी हुई है, जिसमे से मास पकने की सुगध निकल रही थी, जिससे फादर जोसेफ सुपरिचित थे। उन्होने भेंड के बच्चे का आधा भाग दरवाज़े के पास टगा हुआ देखा, जो खून से लथपथ खाल से ढका हुआ था। फादर ने रोज़ा से चूल्हा गरम करने को कहा और उससे बतलाया कि वे अपने लिये पिछली टाग पकाना चाहते है।

"लेकिन पादरी साहब, चूल्हे पर तो मैने विवाह की रस्म के पहले ही कुछ पकाया था। वह तो अब बिलकुल ठडा हो गया है। उसे अब गरम करने मे एक घण्टा लगेगा, और भोजन करने के समय मे अब केवल दो घण्टे की देर है।"

"ठीक है। मै अपना गोश्त एक घण्टे ही मे पका लूँगा।"

"गोश्त एक घण्टे मे पका लेगे ?" आश्चर्य प्रकट करते हुए बुड्ढी ने कहा "देवी भला करे, पादरी साहब, इतनी देर मे तो उसका खून भी नही सूखेगा।"

"वह सब ठीक है।" फादर जोसेफ ने कडाई से सक्षिप्त उत्तर दिया। "अब तुम आग जलाने मे थोडी शीघ्रता कर दो।"

जब पादरी साहब भोजन करने बैठे और छुरी से अपने पकाये हुए। -गोश्त की बोटियाँ काटने लगे, तो उससे जो लाल रंग का रसा टपका,

उसे देखकर उनकी कुर्सी के पीछे खडी हुई भोजन परसने वाली लडकियाँ घृणा से मुँह बिचकाने लगी, मैनुएल लुजो ने शिष्टता के नाते उसमे से एक टुकडा ले तो लिया, परन्तु खाया नही। फादर वेलेंट ने ही वह सब खाया।

सभी पुरुष और लडके लुजो के साथ ही भोजन करने बैठे। औरतें और छोटे बच्चे बाद को खाने को थे। फादर जोसेफ और लुजो मेज़ के एक किनारे बैठे। उन दोनो के बीच मे मेज़ पर बोर्डो नामक एक सफेद शराब की बोतल रखी हुई थी। लुजो ने बताया कि वह मेक्सिको नगर से खच्चर पर लादकर लाई गई थी। वे साता फे जाने वाली सडक के सम्बन्ध मे बातें करने लगे और जब पादरी महोदय ने यह कहा कि वे सैंटो डोमिंगो मे रुकेंगे, तो लुजो ने उनसे कहा कि वे वही एक घोड़ा क्यो नही खरीद लेते। "मुझे तो सदेह है कि आप अपने घोडे पर साता फे पहुँच भी सकेंगे। सैंटो डोमिंगो अच्छे घोडो के लिये प्रसिद्ध है। आ वही सौदा कर लीजिये।"

"नही", फादर वेलेंट ने कहा। "वहाँ के रेड इण्डियन बडे ही क्रोधी मिजाज़ के है। यदि मै उनसे किसी सौदे आदि की बात करूँगा, तो वे मेरे अभिप्राय पर सदेह करने लगेंगे। यदि हमें उनकी आत्माओ को शुद्ध करना है, तो हमे यह स्पष्ट कर देना होगा कि हम अपने लिये कोई लाभ नही चाहते जैसा कि मैने फादर गैलेगोस से अलबुकर्क मे कहा था।"

यह सुनकर मैनुएल लुजो हँस पड़ा और उसने अपने आदमियो की ओर देखा, जो सभी दाँत निपोडे हुए हँस रहे थे। "आपने अलबुकर्क के पादरी से भी यही बात कही थी? फिर तो आप साहसी व्यक्ति है। फादर गैलेगोस तो एक धनवान् व्यक्ति है। फिर भी मै उनका सम्मान करता हूँ। मैने उनके साथ पोकर (ताश का खेल, जिसमे कुछ बाज़ी भी लगती है) खेला है। वे तो पक्के जुआडी है और अपनी हार को मर्द की तरह बर्दाश्त

करते हैं। वे निरुत्साहित तो होते ही नही और अमेरिकन की तरह खेलते है।"

"और मै," फादर जोसेफ ने तपाक से उत्तर दिया, "मै ऐसे पादरी का तनिक भी सम्मान नही कर सकता, जो ताश खेलता है और धन एकत्र करता है।"

"तो आप नही खेलते क्या ?" लुजो ने पूछा। "मै तो वडा हताश हो गया। मैने सोचा था कि भोजन के पश्चात् हम लोग थोडी देर खेलेगे। रात को यहाँ मन वहलाव का कोई साधन ही नही है। आप 'डोमिनोज़ (एक अन्य खेल) भी नही खेलते ?"

"डोमिनोज़ खेलना दूसरी वात है।" फादर जोसेफ ने कहा। "आग के पास वैठकर, काफी या वह अद्भुत अगूरी व्राडी, जो आपने मुझे पिलायी थी, पीते हुए डोमिनोज़ खेलना मन को प्रसन्न कर देने वाली वात है। मैनुएल, तुम मुझे यह तो वताओ कि वह व्राडी तुम लाते कहाँ से हो ? वह तो फ्रेंच शराव जैसी है।"

"वह वडे परिश्रम एव यत्न से तैयार की जाती है। मेरे दादा के समय मे वर्नैलिलो मे वह तैयार की जाती थी। अव भी लोग वहाँ वनाते है, परन्तु अव उतनी अच्छी नही होती।"

दूसरे दिन प्रात.काल, काफी आदि पीने के वाद, जव वच्चे दीक्षा के लिये तैयार किये जा रहे थे, मैनुएल फादर वेलेंट को, अपने मवेशियो को दिखाने के लिये, वाड़ो तथा अस्तवलो मे लिवा गया। उसने वडे गर्व से सफेद रग के दो खच्चर दिखाये, जो अगल-वगल वँधे हुए थे। उसने स्वय अपने हाथ से उन्हे अस्तवल से वाहर निकाला, जिसमे वाहर प्रकाश मे वह उनकी सुन्दर जिल्द भली प्रकार दिखा सके, जो सफेद घोडो की जिल्द की तरह कुछ नीला लिये सफेद रग की नही थी, अपितु वह हाथी के दात की

तरह बिलकुल सफेद थी, लेकिन अस्तवल के अंधेरे में भूरे-से-सी लग रही थी। उनकी पूँछे छोर पर घण्टो के आकार में कटी हुई थी।

लुजो ने वतलाया कि उनके नाम कटेटो और ऐंजेलिका है और जैसे अच्छे उनके नाम हैं, वैसे ही वे अच्छे भी हैं। ऐसा लगता है कि ईश्वर ने उन्हे वुद्धि भी दी है। जब मैं उनसे बोलता हूँ, तो वे सच्चे क्रिश्चियनो की भाँति मेरी ओर देखते है, वे बडे मेली है। उन पर सदा ही साथ-साथ सवारी की जाती है और वे एक दूसरे को वहुत चाहते है।"

फादर जोसेफ ने एक की अगाडी पकड कर इधर-उधर घुमाया। "वाह, ये तो अद्भुत जानवर है। मैंने कोई खच्चर या घोडा इनकी तरह मृग-शावक के रग का पहले कभी नही देखा था।" लुजो यह देख कर चकित रह गया कि वह दुवला-पतला पादरी अचानक टिड्डे की तरह उछल कर कैसे कटेंटो की पीठ पर सवार हो गया। खच्चर भी चकित रह गया। वह उछला और खलिहान के फाटक की ओर सरपट भागा। फाटक पर पहुँच कर वह अचानक रुक गया। चूँकि उसकी इस अप्रत्याशित क्रिया से उसका सवार पीठ पर से नीचे गिरा नही, वह सतुष्ट सा हो गया, धीरे-धीरे वापस चला आया और ऐंजेलिका के पास शाति से खडा हो गया।

"आप तो पक्के घुडसवार हैं, फादर वेलेंट," लुजो ने कहा। "फादर गैलेगोस शायद ही पीठ पर अडे रहते, यद्यपि वे शिकारी वनते हैं।"

"तुम्हारे इस देश मे मुझे तो रात-दिन घोडे की ही पीठ पर विताना है, लुजो। इस खच्चर की चाल कितनी अच्छी है, और उसकी पीठ कितनी कम चौडी है। यही उसकी विशेषता है। मेरी तरह छोटे पाँववाले व्यक्ति के लिये चौडी पीठ वाले घोडे पर प्रतिदिन आठ घण्टे सवारी करना, एक प्रकार का दण्ड ही समझो। और मुझे तो दिन प्रतिदिन यही करना है। यहाँ से मैं साता फे जा रहा हूँ, और एक दिन तक विशप के साथ कुछ वातो पर विचार-विमर्श के पश्चात्, मै मोरा के लिये रवाना हो जाऊँगा।"

"मोरा के लिये ?" लुजो ने आश्चर्य से पूछा। "वह तो बहुत दूर है और सडकें बहुत खराब है। आप अपनी घोड़ी पर वहाँ तक नही पहुँच सकते। वह तो रास्ते ही मे कही मर जायगी।" वह बात कर रहा था और फादर घोडे की पीठ पर बैठे उसे धीरे-धीरे अपने हाथो से सहला रहे थे।

"परन्तु मेरे पास दूसरा घोड़ा तो है नही। ईश्वर यह न करे कि वह ऐसी जगह मरे, जहाँ भोजन और पानी भी न मिले। मै अपने साथ अपने लबादे तथा पवित्र वर्तनो के अतिरिक्त बहुत थोडा सामान ढो सकता हूँ।"

मेक्सिकन कृपक अधिकाधिक विचार मग्न होता जा रहा था, जैसे वह किसी तुच्छ बात पर नही, अपितु गम्भीर बात पर विचार कर रहा हो। अचानक उसकी भौ के बल अदृश्य हो गये और वह बच्चो जैसी भोली मुस्कान के साथ पादरी की ओर घूम गया "फादर वेलेंट" भाषण देने जैसी ध्वनि मे उसने कहा, "आपने मेरे परिवार को धर्म की दीक्षा दी है, और इसके लिये मुझसे बहुत कम ले रहे है। अतः मै आपके लिये एक बड़ी अच्छी बात करने जा रहा हूँ, मै आपको कटेटो भेंट स्वरूप दे रहा हूँ, और मै यह आशा करूँगा कि आप आराधना एवं प्रार्थना के समय मेरा विशेष रूप से स्मरण करेंगे।"

ज़मीन पर कूदते हुए फादर वेलेंट ने अपने मेज़बान को छाती से लगा लिया। "मैनुएल !" उन्होने आवेश मे कहा, "इस सुन्दर खच्चर के बदले मै तुम्हारे लिये इतनी प्रार्थना करूंगा कि तुम स्वर्ग में पहुँच जाओगे।"

लुजो भी हँस पड़ा और उसने भी फादर को छाती से लगा लिया। एक दूसरे का हाथ पकडे वे दीक्षा-सस्कार आरम्भ करने अदर चले गये।

× × × ×

प्रचार-यात्राएँ

दूसरे दिन प्रात काल जब लुजो फादर वेलेंट को नाश्ते के लिये बुलाने गया, तो उसने उन्हे खलिहान मे दोनो खच्चरो को टहलाते तथा उनके पुट्ठे को सहलाते हुए पाया, परन्तु आज उनका चेहरा कल की तरह प्रसन्न नही था।

"मैनुएल," उन्होने उसे देखते ही कहा, "मै तुम्हारी भेंट नही स्वीकार कर सकता। मैने रात भर इस पर सोचा है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मै नही स्वीकार कर सकता। बिशप भी उतना ही परिश्रम करते हैं, जितना मैं, और उनका घोडा मेरे से तनिक भी अच्छा नही है। तुम जानते हो कि यहाँ आते समय गैल्वेस्टन मे जहाज डूबने के कारण उनका सब कुछ चला गया था। अन्य वस्तुओ के अतिरिक्त उनकी एक सुन्दर सी गाडी भी पानी में डूब गई, जिसे उन्होने यहाँ के मैदानो वाले प्रदेश में यात्रा करने के लिये बनवाया था। मै इतने अच्छे खच्चर पर घूमता फिरूँ और मेरा बिशप एक सडियल से घोडे पर चढे, यह कैसे हो सकता है? यह अनुचित है। अत मै अपनी पुरानी घोडी पर ही सवार होकर जाऊँगा।"

"हाँ, पादरी साहब!" मैनुएल कुछ दुखी तथा खिन्न हुआ। वह सोचने लगा कि पादरी साहब सब बनी बनायी बातें क्यो नष्ट कर रहे है? कल की सभी बातें कितनी मोहक और सुहानी थी और वह अपने को कितना बडा दानी समझ रहा था। "परन्तु मुझे सदेह है कि वह ला बजाडा की पहाड़ी चढ लेगी," उसने अपना सिर हिलाते हुए धीरे से कहा। "अच्छा, पादरी साहब, आप मेरे घोडो को देख लीजिये और उनमे से जो आपके काम का हो, उसे ले लीजिये। उनमे से प्रत्येक आपकी घोड़ी से तो अच्छा ही है।"

"नही, नही," फादर वेलेट ने दृढता से कहा। "इन खच्चरो को देखने के पश्चात्, मै अन्य कोई जानवर नही ले सकता। मोतियो जैसा उनका

रंग है। मै विवाहो की दक्षिणा बढा दूँगा, जिससे मै यह जोडा तुमसे खरीद सकूँ। धर्म-प्रचारक पादरी के अकेलेपन के जीवन मे साथी के रूप मे ऐसा घोडा चाहिये, जिस पर वह भरोसा कर सके। मै ऐसा समझदार खच्चर चाहता हूँ, जो मेरी ओर, जैसा कि तुमने कहा, एक सच्चे क्रिश्चियन की तरह देख सके।"

सीन्योर लुजो ने एक ढडी सास ली और, वह अपने खलिहान की ओर देखने लगा, मानो वह इस स्थिति से बच निकलने का कोई उपाय ढूँढ रहा हो।

फादर जोसेफ आवेग से उसकी ओर घूम गये और बोले, "मैनुएल, यदि मैं तुम्हारी तरह सम्पत्तिशाली कृषक होता, तो मै जानते हो क्या कमाल का काम करता ? मै इन दोनो खच्चरो को, जो इस नास्तिक प्रदेश मे ईश्वर का सदेश घर-घर पहुँचायेंगे, प्रचारको को दे देता और फिर स्वय से गर्व के साथ कहता—वह देखो मेरे बिशप और मेरे विकार मेरे सुन्दर खच्चरो पर बैठे चले जा रहे है।"

"तो ऐसा ही हो, पादरी साहब," लुजो ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा। "परन्तु मेरे कल्याण के लिये काफी प्रार्थना की जानी चाहिये। अपनी सारी सम्पत्ति मे मै इन दो खच्चरो के समान अन्य किसी वस्तु को नही प्यार करता। यह सच है कि यदि इन दोनो को कुछ समय के लिये एक-दूसरे से अलग कर दिया जाय, तो वे खिन्न हो जायँगे और पुन मिलने के लिये लालायित हो उठेंगे। अब तक वे अलग नही किये गये और वे एक दूसरे को बहुत चाहते है। आप तो जानते है कि खच्चर जब किसी को प्यार करते हैं तो बहुत प्यार करते है। उन्हे दे देना मेरे लिये बडा कठिन हो रहा है।"

"इससे तुम्हे सुख ही मिलेगा, मैनुएल," फादर जोसेफ ने प्रसन्नता से

कहा "जब जब तुम इन खच्चरो का स्मरण करोगे, तब तब तुम यह सोच कर गर्वान्वित हो उठोगे कि तुमने कितना अच्छा काम किया है।"

नाश्ते के बाद ही फादर वेलेट कंटेटो पर सवार होकर रवाना हो गये। ऐंजेलिका चुपचाप पीछे-पीछे दौडा जा रहा था और सीन्योर लुजो अपने फाटक पर खडा बड़े उदास चित्त से उन्हे देख रहा था। धीरे-धीरे वे अदृश्य हो गये। उसे ऐसा लगा, जैसे वह अपने खच्चरो को दे देने के लिये वाध्य कर दिया गया था, फिर भी उसे कोई ग्लानि नही थी। उसे फादर जोसेफ की प्रचड अनुरक्ति एव लगन पर सदेह नही था। कुछ भी हो, विशप आखिरकार विशप है और उसी प्रकार विकार भी विकार है और यह तो उनके लिये श्रेय की बात है कि दोनो एक ही गिरजाघर मे पादरियो के जोडे के रूप मे काम कर रहे हैं। उसे यह सोचकर बडा गर्व हो रहा था कि वे कटेटो और ऐंजेलिका पर सवारी करेगे। फादर वेलेट ने उसे विवश कर दिया था, परन्तु उसे इस पर एक प्रकार की प्रसन्नता ही थी।

७

मोरा की निर्जन सडक

विशप और विकार खच्चरो पर सवार ट्रूकास पर्वत के एक भाग मे से होकर चले जा रहे थे। वर्षा हो रही थी। पर्वत शिखर से आती हुई तेज ठडी हवा वर्षा की तीखी एव सीसे के रग की धार को तिरछी कर रही थी। फादर लातूर सोच रहे थे कि वर्षा की ये बूंदे मेढक के डिभ के आकार की थीं और वे उनकी नाक और गाल पर पडकर छींटे उछालती हुई फूट जाती थीं, मानो वे खोखली थीं और उनमे हवा भरी हुई थी। पादरी लोग ऊँचे पहाड के चरागाहो मे से होकर जा रहे थे, जो कुछ सप्ताहो पश्चात् बिलकुल हरे हो जायँगे, यद्यपि इस समय वे स्लेटी रग के थे।

उनके चारो ओर पर्वत-श्रेणियाँ थी, जिन पर नीली आभा से युक्त हरे-हरे देवदारु के वृक्ष थे, उनके भी ऊपर सींग के आकार की मुख्य पर्वत-श्रेणियाँ थी। आकाश मे घने बादल छाये हुए थे, कुछ बैगनी आभा लिये हुए भूरे रग के बादलो से जनित, चीड के वृक्षो से आच्छादित पर्वत श्रेणियो की उपत्यका मे, धुँध छायी हुई थी। धुँध की इस अँधेरी में प्रकाश की एक झलक भी नही थी। इसके विपरीत सदाबहार वृक्षो की हरियाली का ही रग उद्दीप्त था। यहाँ तक कि श्वेत रग के खच्चर भी भीग जाने के कारण स्लेटी रग के दीख रहे थे और दोनो पादरियो के चेहरे भी इस अजीब प्रकाश में बैगनी तथा चितकबरे रग के हो रहे थे।

फादर लातूर आगे-आगे जा रहे थे। वे अपने खच्चर पर सीधे बैठे थे। आँख को पानी की धार से बचाने के लिये उन्होने अपनी ठुड्डी अन्दर की ओर खीचकर गर्दन से लगभग सटा दी थी। फादर वेलेंट उनके पीछे चल रहे थे। उन्हे देखने मे कठिनाई हो रही थी, क्योकि इस प्रकार के मौसम मे उनका चश्मा बेकार था और उन्होने उसे उतार दिया था। वे काठी मे खच्चर की पीठ से सटे आगे झुके हुए बैठे थे, उनके कन्धे खच्चर की गर्दन पर पहुँच गये थे। फादर जोसेफ की बहन फिलोमीन, जो अपने पैदायशी नगर पाय दे दोम के एक कनवेंट स्कूल मे मदर सुपीरियर (प्रधान अध्यापिका) थी, बहुधा ही अपने भाई तथा बिशप लातूर की इन लम्बी प्रचार-यात्राओ के, जिनके सम्बन्ध में फादर जोसेफ उन्हे पत्र लिखा करते थे, चित्र अपने मस्तिष्क मे अकित करने का प्रयत्न करती थी। वे सोचती थी कि दोनो पादरी अपने लबादे पहने, नगे सिर जैसे सेंट फ्रासिस जेवियर चित्रो मे, जिनसे वे परिचित थी, दिखाये गये थे, चले जा रहे होगे। वास्तविकता इतनी सजीव नही थी। फिर भी कोई भी व्यक्ति इन दोनो व्यक्तियो को शिकारी या सौदागर समझने की गलती नही कर सकता था। वे अपने गलो मे गुलूबद के बजाय क्लर्कों द्वारा पहने जाने वाले कालर

पहने हुए थे और विशप के मृगछाले वाले जैकेट के सामने के भाग पर उनका चाँदी का क्रूश चाँदी की जजीर से लटक रहा था।

वे मोरा जा रहे थे। आज उनकी यात्रा का तीसरा दिन था और उन्हें यह नही ज्ञात था कि अभी उन्हे कितनी दूर जाना है। प्रात काल से अब तक उन्हे रास्ते मे कोई यात्री नही मिला था और न तो उन्होने कोई मनुष्यो की बस्ती देखी थी। वे सोचते थे कि वे सही रास्ते पर हैं, क्योकि उन्होने अन्य कोई रास्ता देखा ही नही था। यात्रा की पहली रात उन्होने साता क्रुज मे, जो रायो ग्राडे की विशाल एव गरम उपत्यका मे पड़ता था, वितायी थी। घाटी के खेतो, बगीचो आदि में बसत का आगमन हो चुका था। परन्तु एस्पानोल प्रदेश से आगे बढने के पश्चात् पहले उन्हे आँधी और तूफान का सामना करना पडा था और अब ठडक से मुकावला था। विशप मोरा इसलिये जा रहे थे कि वे वहाँ के पादरी की उसके मकान से शरणार्थियो की एकत्र एक भीड को निकालने तथा उसे व्यवस्थित करने मे सहायता कर सके। कोनेजोस घाटी की एक नयी बस्ती मे कुछ दिन पहले रेड इण्डियनो ने आक्रमण कर दिया था, बहुत से लोग मार डाले गये थे और बचे हुए लोग, जो पहले मोरा ही के रहने वाले थे, बिलकुल अकिचन के रूप मे मोरा वापस चले गये थे।

यात्रियो ने अभी पर्वतीय चरागाह पार नही किया था कि वर्षा के साथ-साथ बर्फ और ओले भी पडने लगे। उनके मृगछाले के कोट फौरन जम गये और इतने कडे हो गये कि ओले के टुकडे उन पर टकरा कर उछल पडते थे। इस मौसम मे खुले में रात बिताने की सभावना बड़ी दु खदायी हो रही थी। ऐसे मे आग जलाना सभव नही था, उनके कम्बल जमीन पर भीग जायेंगे। अब वे मोरा की ओर वाली पहाड की ढाल से नीचे उतर रहे थे और प्रकाश भी मंद पडने लगा था, यद्यपि अभी तीसरे

पहर के चार ही बजे थे। फादर लातूर खच्चर पर बैठे ही बैठे पीछे की ओर गरदन घुमा कर बोले—

"खच्चर निश्चय ही बहुत थक गये है, जोसेफ। उन्हे कुछ खिलाना चाहिये।"

"बढ चलो", फादर वेलेंट ने कहा। "रात होने के पहले हमें कोई न कोई आश्रय-स्थल मिलेगा ही।" पर्वतारोहण के समय से ही विकार बड़ी ही तन्मयता से प्रार्थना कर रहे थे और उन्हे विश्वास था कि सेंट जोसेफ उनकी पुकार को अनसुनी नही करेंगे। एक घण्टा बीतने के पहले ही सचमुच उन्हे एक टूटा-फूटा कच्चा मकान दिखायी पडा, जो इतना छोटा और साधारण था कि यदि वह रास्ते के बिलकुल समीप (एक दर्रे के किनारे पर) न रहा होता, तो कदाचित् वे उसे देख भी न पाते। मकान का अस्तबल स्वय मकान की अपेक्षा अधिक रहने योग्य जान पडा और पादरियो ने सोचा कि वे उसी मे रात बिता लेंगे।

जैसे ही वे दरवाजे तक पहुँचे, एक व्यक्ति नगे सिर बाहर निकला और उन्हे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि वह कोई मेक्सिकन नही था, अपितु एक अनाकर्षक ढग का अमेरिकन था। उसने उनसे एक अजीब बोली मे, जिसे वे बडी कठिनाई से समझ पा रहे थे, बात की और पूछा कि क्या आप रात भर वहाँ ठहरना चाहते है। उससे कुछ क्षणो तक ही बात करने मे फादर लातूर को ऐसा लगा कि वे इस कुरूप तथा दुष्ट जान पडने वाले व्यक्ति के मकान मे कुछ घण्टे भी रहना कदाचित गवारा नही कर सकेंगे। वह लम्बा, दुबला तथा अजीब डील-डौल वाला व्यक्ति था, उसकी गरदन सर्प के आकार की थी, सिर छोटा तथा मास-शून्य। उसके बाल छोटे-छोटे थे, सिर जगह-जगह पिचका हुआ, जगह-जगह उभडा हुआ, मानो हड्डियो की बहुतायत के कारण वह समतल नही रह गया है। उसके कान बहुत छोटे-छोटे थे। इन कुरूप कानो के साथ उसका

सिर निश्चय ही भयानक लगता था। सम्यक् रूप से देखने पर वह अर्द्ध-मानव से अधिक कुछ नही लगता था, परन्तु मोरा की निर्जन सडक पर रहने वाला अकेला वही एक गृही था।

पादरी खच्चरो से उतर गये और उससे पूछा कि क्या वह खच्चरो को कही साये मे बाँध कर उन्हे खाने के लिए कुछ दाना दे सकता है।

"कोट पहन कर मे आता हूँ, तो इन्हे अन्दर ले जाऊँगा। आप लोग अन्दर चले आइये।"

वे लोग उसके पीछे-पीछे एक कमरे में गये, जहाँ एक कोने में आग जल रही थी। आग के पास जाकर वे अपने ठिठुरे हुए हाथ सेंकने लग गये। उनके मेज़बान ने रुष्ट वाणी में दूसरे कमरे की ओर किसी को पुकारा, जिसके उत्तर मे उस कमरे से एक औरत निकली वह मेक्सिकन थी।

फादर लातूर तथा फादर वेलेट ने उससे स्पेनिश भाषा मे शिष्टता के साथ, प्रथा के अनुसार देवी मेरी के नाम पर अभिवादन किया। उसने अपना मुँह नही खोला और एक क्षण तक उनकी ओर एक टक देखती रह गयी। फिर उसने अपनी आँखें नीची कर ली, सिकुड कर एक ओर हट गयी, जैसे वह बहुत डर गयी हो। दोनो पादरी एक-दूसरे को देखने लग गये, उन्हे यह याद आया कि उस व्यक्ति ने इस औरत को कोई गाली आदि दी थी। अचानक वह औरत की ओर घूम पडा।

"अजनबियो के लिये कुर्सियाँ खाली करो। डरती क्यो हो? ये तुम्हे खा नही जाँयेगे, ये लोग पादरी है।"

अन्यमनस्क भाव से वह कुर्सियो पर से चीथडो, भीगे मोजो तथा गन्दे कपडो को हटाने लगी। उसके हाथ काँप रहे थे, जिसके कारण उसके हाथ से चीज़ें गिरी जा रही थी। वह बुड्ढी नही थी, उलटे वह बहुत थोडी अवस्था की रही होगी, परन्तु कदाचित् वह जडबुद्धि थी। उसके चेहरे पर शून्यता एव भय के अतिरिक्त अन्य कुछ नही था।

उसका पति कोट और बूट पहन कर दरवाजे तक गया और सिटकिनी पर हाथ रखते-रखते अचानक रुक गया और घबरायी हुई उस औरत की ओर घूमकर एक अर्थ भरी घृणापूर्ण दृष्टि डाली।

"हे सुनती हो! चलो इधर, मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।"

उसने खूँटी पर से अपनी काली शाल ली और अपने पति के पीछे चली। दरवाज़े के पास पहुँच कर उसने गरदन घुमायी और देखा कि उसके अतिथि उसकी ओर दया एव हैरानी से देख रहे थे। उसी क्षण वह मूर्ख चेहरा वडा गम्भीर, भविष्य-सूचक एव अत्यन्त अर्थभरा वन गया। अपनी उँगलियो से उसने उन्हे भाग जाने का, फौरन भाग जाने का, इशारा किया। उसने अपना हाथ दो वार हवा मे झटका और फिर एक अत्यन्त भय-भरी दृष्टि से, जिसका वर्णन शब्दो द्वारा नही किया जा सकता, उसने अपनी हथेली का किनारा अपने गले पर दो वार फेरा और गायव हो गयी। चौखट का स्थान अब रिक्त था और दोनो पादरी उसी की ओर देखते हुये निर्वाक खडे रह गये। उसके सहसा आवेग की यह क्रिया कि इतनी तीव्र थी, उसने उसके द्वारा जो चेतावनी दी, वह इतनी स्पष्ट एव निश्चयात्मक थी कि वे चित्रवत् खडे रह गये।

फादर जोसेफ ने निस्तब्धता भग की। "उसक तात्पर्य के सम्बन्ध मे कोई सन्देह नही है। तुम्हारा पिस्तौल भरा हुआ है, जीन?"

"हाँ, लेकिन मैने उसे भीगने से वचाने मे लापरवाही की। खेर, कोई बात नही।"

वे फौरन मकान से बाहर निकले। इतना अब भी प्रकाश था कि वे वर्षा मे भी अस्तवल देख सकें और वे उसी ओर वढे।

"सीन्योर अमेरिकन," बिशप ने पुकार कर कहा, "कृपया हमारे खच्चर बाहर निकाल लाइये।"

वह व्यक्ति अस्तवल से वाहर आ गया। "तुम लोग क्या चाहते हो ?" उसने पूछा।

"अपने खच्चर। हमने इरादा वदल दिया है। हम लोग येन केन प्रकारेण आज ही मोरा पहुँचेगे। आप के कष्ट के लिये यह रहा एक डालर।"

अमेरिकन का रुख हिंसापूर्ण हो गया। वह एक वार फादर जोसेफ को देखता था और गरदन घुमा कर फिर विशप को। गरदन घुमाने की उसकी यह क्रिया सर्प द्वारा गरदन घुमाने की क्रिया से ठीक मिलती-जुलती थी। "वात क्या है ? मेरा मकान आपके रहने लायक नही है क्या ?" उसने पूछा।

"इसका उत्तर देना आवश्यक नही है। फादर जोसेफ, अस्तवल में जाओ और खच्चर निकाल लाओ।"

"तुम्हारी मेरे अस्तवल में जाने की हिम्मत, पादरी कहीं के।"

विशप ने पिस्तौल निकाल कर तान दी। "अपशब्द वकने का कोई काम नही, महाशय। हम आप से इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नही चाहते कि आपकी इस अशिष्ट भापा से दूर हो जाँय। आप अपने स्थान पर हीं खडे रहिये।"

मेक्सिकन नि शस्त्र था। फादर जोसेफ खच्चरो को, जो अव तक खोले नही गये थे, लेकर वाहर आये। वेचारे कुछ खाने लग गये थे, परन्तु उन्हे पुन रवाना हो जाने के लिये अधिक कोसने आदि की आवश्यकता नही पडी, क्योकि वे स्वय इस स्थान को नही पसन्द कर रहे थे। जैसे ही उन पर पादरी लोग सवार हुए, वे सडक पर, जो वहीं से एक दर्रे की ढाल से नीचे उतरती थी, भाग निकले। नीचे उतरते समय फादर जोसेफ ने कहा कि उस आदमी के पास मकान मे वन्दूक अवश्य होगी और हम नही चाहते कि पीछे से हमे गोली लगे।

"न तो मै ही चाहता हूँ। लेकिन गोली चलाने के लिये अब प्रकाश नही रह गया है। हाँ, वह घोडे पर हमारा पीछा करे तो दूसरी बात है," विशप ने कहा। "अस्तबल मे घोडे भी थे ?"

"केवल एक गधा था।" फादर वेलेंट सेंट जोसेफ की अनुकम्पा पर भरोसा कर रहे थे, जिसकी आराधना प्रात काल उन्होने वडे ध्यान से की थी। तनिक सा अवसर पाते ही उस बेचारी औरत ने उन्हे चेतावनी दे दी थी, यह इस बात का प्रमाण था कि कोई देवी शक्ति उनकी रक्षा कर रही थी।

दर्रे की दूसरी ओर की चढाई समाप्त करते-करते रात हो गयी और अब वर्षा और भी तेज़ हो रही थी।

"अब तो मुझे तनिक भी विश्वास नही रह गया है कि हम सड़क से भटकेंगे नही," विशप ने कहा। "परन्तु इतना तो मुझे अवश्य विश्वास है कि हमारा कोई पीछा नही कर रहा है। हमे इन समझदार जानवरो पर विश्वास करना चाहिये। मुझे उस बेचारी औरत की याद आ रही है। मुझे तो डर है कि वह उस पर सन्देह करेगा और उसे डाटे फटकारेगा।" उन्हे इस अंधेरे मे भी उसका वही चेहरा स्पष्ट दीख पडता था, जब वह आग के सामने चित्रवत् खडी थी।

वे आधी रात के कुछ देर बाद मोरा पहुँचे। वहाँ, पादरी का घर शरणार्थियों से भरा हुआ था। उनमे से दो शरणार्थी एक खाट पर से उठाये गये जिससे विशप और उनके विकार उस पर सो सकें।

प्रात काल एक लड़का अस्तवल से दौडा हुआ आया और बताया कि उसने एक पागल औरत को पुआल पर पडे देखा, जो सफेद खच्चरो वाले पादरियो से मिलना चाहती है। वह अन्दर बुलायी गयी। वह चीथडे पहने हुए थी, और उसके पाँव, चेहरा और यहाँ तक कि बाल भी मिट्टी

से इस प्रकार लथपथ थे कि पादरी लोग बड़ी कठिनाई से पहचान सके, कि यह तो वही औरत है, जिसने पिछली रात उनकी जान बचायी थी ।

उसने बताया कि रात वह अपने मकान मे फिर वापस नही गयी। जब दोनो पादरी वहाँ से चल दिये, तो उसका पति बन्दूक लेने दौड कर घर के अन्दर गया, और वह स्वय अस्तबल के पीछे पानी के कटाव से बने एक खन्दक में कूद कर पहाड के दर्रे में पहुँच गयी थी और सारी रात सडक पर चलती हुई मोरा पहुँची थी । उसे यह डर था कि उसका पति उसे रास्ते मे ही अवश्य पकड लेगा और मार डालेगा, परन्तु उसने ऐसा नही किया । वह पौ फटने के पहले ही मोरा पहुँच गयी और सर्दी से ठिठुरे हुए शरीर को गरम करने के अभिप्राय से जानवरो के बीच अस्तबल मे चली गयी तथा लोगो के जागने की बाट जोहती रही । बिशप के समक्ष घुटने टेकती हुई वह ऐसी दर्दनाक बातें बताने लगी कि उन्होने उसे रोक दिया और स्थानीय पादरी से बोले—

"इस मामले को तो अधिकारियो के समक्ष पेश करना चाहिये । यहाँ कोई मजिस्ट्रेट है क्या ?"

वहाँ कोई मजिस्ट्रेट नही रहता था, परन्तु वहाँ रोयेंदार जानवरो को पकडने वाला एक भूतपूर्व व्यापारी रहता था, जो लेख्य-प्रमाणक का भी काम करता था और उसे गवाही सुनने आदि का अधिकार प्राप्त था । उसे बुला भेजा गया, और इस बीच फादर लातूर ने कोनेजोस से आयी हुई शरणार्थी औरतो को आदेश दिया कि वे उस बेचारी औरत को नहला दें, उसे ठीक से कपडे पहना दें तथा उसके पाँव के घावो आदि पर मरहम-पट्टी कर दें ।

एक घण्टे के बाद वह औरत, जिसका नाम मैगडलेना था, भोजन आदि पा जाने के बाद स्वस्थ हुई और अपनी कहानी सुनाने के योग्य हुई । लेख्य-प्रमाणक सेंट व्रेन नामक अपने मित्र को भी अपने साथ लाया था ।

उसका मित्र रोयेदार जानवरो को पकडने वाला एक कनेडियन व्यापारी था, जो स्पेनिश भाषा को उसकी अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझता था। सेंट व्रेन उस औरत को बचपन से जानता था। उसने उसके इस बयान की पुष्टि की कि वह लोस रैंचोस दि ताग्रोस मे पैदा हुई थी, उसका नाम मैगडलेना वाल्देज़ था और इस समय उसकी अवस्था चौबीस वर्ष की थी। उसका पति, जिसका नाम बक स्केलस था अमेरिका के व्योमिंग राज्य के किसी स्थान से आये हुए शिकारियो के एक दल के साथ घूमता-घामता ताग्रोस पहुँच गया था। सभी श्वेत लोग उसे एक नराधम एवं महापतित व्यक्ति समझते थे, परन्तु मेक्सिकन औरतो के लिये किसी अमेरिकन के साथ ब्याह कर लेने का अर्थ समाज में ऊपर उठ जाना होता था और वे इसे अपना गौरव समझती थी। छ वर्ष पहले उसने उस नराधम के साथ ब्याह किया था और तब से ही वह उसके साथ मोरा की सडक वाले उस टूटे-फूटे मकान मे रहती थी। इस छ वर्ष मे उसने चार यात्रियो को, जो वहाँ रात भर शरण के लिए ठहरे थे, लूटा था तथा उनकी हत्या की थी। वे सभी अजनबी थे और उस प्रदेश मे कोई उन्हे जानता नही था। वह उनके नाम भूल गयी थी, परन्तु उनमे से एक जर्मन लड़का था, जो स्पेनिश भाषा तो बहुत थोडी बोल पाता था और अंग्रेज़ी भी कम बोलता था। वह एक अच्छा लडका था, उसकी आँखें नीली थी और उसे (मैगडलेना को) उसके मरने का सबसे अधिक दु ख था। वे सभी अस्तबल के पीछे बलुई ज़मीन मे गाड दिये गये थे। उसे यह डर सदा ही बना रहता था, किसी दिन वर्षा-तूफान मे उनकी लाशें मिट्टी कटने से बाहर न निकल आयें। बक उनके घोडो को रात ही मे ले जाकर उत्तर मे कही रेड इण्डियनो को बेच आया था। अब तक मैगडलेना को तीन बच्चे पैदा हुए थे और उसके पति ने तीनो को उनके जन्म के कुछ ही दिन पश्चात् इतनी निर्दयता से मार डाला था कि वह उसका वर्णन नही कर सकती। जब उसने पहले बच्चे

को मारा था, तो वह उससे भाग कर रैचोस में अपने माता-पिना के घर चली गयी थी। वह उसका पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा और उसके माता-पिता को डरा-धमका कर उसे फिर अपने घर ले आया। वह सहायता के लिये कही भी जाने मे बहुत डरती थी, परन्तु दो बार पहले भी उसने यात्रियो को, जब उसका पति किसी काम से घर से बाहर गया था, चेतावनी देकर भगा दिया था। इस बार उसे भाग जाने का साहस इसलिये हुआ कि इन दोनो पादरियो को देखते ही वह समझ गयी कि ये लोग अच्छे आदमी हैं और यदि वह इनके पीछे-पीछे भागेगी, तो वे लोग उसे बचा लेंगे। अब वह और हत्या नही बर्दाश्त कर सकती थी। वह अब इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नही चाहती कि कुछ देर के लिये किसी गिरजाघर और पादरी के पास पहुँच जाय, जिससे उसकी आत्मा ईश्वर मे विभोर होकर पवित्र हो जाय और फिर वह शाति से स्वय ही मर जाय।

सेंट व्रेन और उसके साथी ने तुरन्त कुछ आदमी एकत्र करके एक दल तैयार किया। वे घोड़ो पर सवार होकर बक स्केल्स के घर पहुँचे और उस औरत के कथनानुसार, उन्होने अस्तबल के पीछे, बाडे के पास जमीन खोदकर चारो मरे व्यक्तियो की लाशें निकाली। उन्होने स्केल्स को ताओस जाने वाली सडक पर पकडा। वह अपनी पत्नी की तलाश मे ताओस गया था और वही से लौट रहा था। वे उसे मोरा ले आये, लेकिन स्वय व्रेन कोई मजिस्ट्रेट लिवा आने ताओस चला गया।

मोरा मे कोई हवालात नही थी। इसलिये स्केल्स को एक खाली अस्तबल मे पहरे के अन्दर रखा गया। शीघ्र ही अस्तबल के पास एक भीड एकत्र हो गयी। लोग वहाँ कैदी की रोमाचकारी धमकियाँ सुनने आते थे, जो वह अपने पत्नी के प्रति चिल्ला-चिल्लाकर कहता था। मैगडलेना पादरी के घर मे रखी गयी, जहाँ वह एक कोने मे चटाई पर पडी थी और फादर लातूर से प्रार्थना कर रही थी कि वे उसे साता फे ले चलें,

जिससे उसका पति उसे न पा सके। यद्यपि स्केल्स बाँध कर रखा गया था, बिशप उसकी पत्नी की सुरक्षा के सम्बन्ध मे बहुत चिन्तित थे। वे तथा अमेरिकन लेख्य-प्रमाणक, जिसके पास एक रिवाल्वर के ढग का पिस्तौल था, रात भर हॉल मे बैठे रहे और उस पर पहरा देते रहे। प्रात काल मजिस्ट्रेट अपने दल के साथ ताओस से आ गये। लेख्य-प्रमाणक ने उन्हे मामले के सभी तथ्यो को चौपाल मे बैठकर सुनाया, जिससे सभी लोग सुन सके। बिशप ने पूछा कि क्या मैगडलेना के रहने के लिए ताओस मे कोई स्थान मिल सकता है, क्योकि यहाँ इस भयभीत दशा मे वह नही रह सकती।

मृग-चर्म के बने शिकारी कपडे पहने हुए एक आदमी भीड मे से बाहर निकला और उसने मैगडलेना को देखने की इच्छा प्रकट की। फादर लातूर उसे कमरे मे ले गये, जहाँ वह चटाई पर लेटी हुई थी। अजनबी अपना हैट उतारते हुए उसके पास तक गया। झुककर उसने अपना हाथ उसके कधे पर रखा। यद्यपि यह स्पष्ट था कि वह अमेरिकन था, उसने स्थानीय स्पेनिश भाषा मे बात आरम्भ की।

"मैगडलेना, तुम मुझे पहचान रही हो ?"

उसने दृष्टि उठाकर अजनबी की ओर इस प्रकार देखा, जैसे कोई अधेरे कुये मे से देखता हो, उसकी भयभीत एव मलीन दृष्टि मे ज्योति की चमक आयी। उसने दोनो हाथो से उसके शिकारी कपडे के छोर पकड लिये।

"क्रिस्टोवाल !" उसने रोते हुए कहा। "अरे, क्रिस्टोवाल तुम हो ?"

"मै तुम्हे अपने घर ले चलूँगा, मैगडलेना, और तुम मेरी पत्नी के साथ रहोगी। तुम मेरे घर मे तो नही डरोगी ?"

"नही, नही क्रिस्टोवाल, मैं तुम्हारे साथ नही डर सकती। मै कोई बुरी औरत नही हूँ।"

वह उसका सिर सहलाने लगा। "मैगडलेना, तुम बडी अच्छी लड़की हो, तुम सदा से ही अच्छी लडकी थी। अब सब ठीक हो जायगा। तुम सारी बातें मेरे ऊपर छोड दो।"

फिर उसने बिशप से कहा, "बिशप महोदय, इसे मेरे साथ जाने दीजिये। मै ताम्रोस के पास ही रहता हूँ। मेरी पत्नी एक स्थानीय औरत है, और वह इसके साथ अच्छा व्यवहार करेगी। वह नराधम यदि जेल भी तोड दे, तो भी मेरे घर के नज़दीक नही आयेगा। वह मुझे जानता है। मेरा नाम कार्सन है।"

फादर लातूर इस स्काउट से बहुत दिनो से मिलने के इच्छुक थे। उनका अनुमान था कि वह बडा लम्बा-चौडा, तगडा तथा रोबीला व्यक्ति होगा। लेकिन कार्सन उतना भी लम्बा नही था, जितना बिशप, स्वय वह दुबले-पतले शरीर का था, व्यवहार मे बडा नम्र तथा उसके अग्रेज़ी भाषा बोलने का ढग दक्षिणी अमेरिकनो जैसा कुछ हकला कर बोलने का था। उसका चेहरा चिन्ताशील होने के साथ-ही-साथ फुर्तीला भी था। चिन्ता के कारण उसकी नीली आँखो के बीच माथे पर स्थायी बल पड गया था। उसकी मूँछो से ढँके हुए उसके मुँह मे एक विशेष प्रकार की कोमलता थी। होठ उभडे हुए तथा पतले थे। उसके चेहरे में, जो मननशील एव कुछ उदास सा था, एक विचित्र आत्म-विस्मृति थी, बेखुदी थी, जो उसकी कोमलता एव दयालुता की परिचायक थी। उसे देखते ही बिशप के मन मे आनन्द का सचार हुआ। उसे इस प्रकार मृगचर्म के कपडे पहने हुए खडे देखकर उसमे ऐसे आदर्शो, विश्वासो एव सिद्धातो के होने की अनुभूति होती थी, जिन्हे शब्दो द्वारा व्यक्त करना कठिन है, परन्तु जिनका अनुभव उस समय सद्य. ही हो जाता है, जब दो ऐसे व्यक्ति अकस्मात् ही मिल जाते है, जो लोग भी उन्ही आदर्शों एव सिद्धातो के होते है। बिशप ने स्काउट का हाथ पकड लिया। "मै बहुत दिनो से किट कार्सन से मिलने का

इच्छुक रहा हूँ," उन्होने कहा, "यहाँ तक कि न्यू मेक्सिको आने के पहले से ही। मै यह आशा लगाये था कि तुम मुझसे मिलने साता फे आओगे।"

किट कार्सन मुस्करा पड़ा। "मै लज्जित हूँ, महाशय, परन्तु मुझे इस वात का डर हमेशा वना रहता है कि मै निराश न हो जाऊँ। लेकिन मेरे विचार से अव सव ठीक हो जायगा।"

यही से दोनो के वीच एक लम्वी मित्रता का श्रीगणेश हुआ।

कार्सन के घर की वापसी यात्रा मे मैगडलेना फादर वेलेंट के सरक्षण मे चली तथा विशप और स्काउट एक साथ घोडे पर वैठे। कार्सन ने बताया कि वह केवल औपचारिकता के नाते कैथोलिक वन गया था, जैसा कि सभी अमेरिकन किसी मेक्सिकन लड़की से विवाह करने पर साधारणतया करते है। उसकी पत्नी एक बड़ी अच्छी तथा धार्मिक औरत थी, परन्तु कैलिफोर्निया की विगत यात्रा के पहले तक उसका यह ख्याल था कि धर्म-कर्म केवल औरतो के लिये ही है। कैलिफोर्निया मे वह वीमार पड गया और वहाँ के एक मिशन मे पादरियो ने उसकी वड़ी सेवा-शुश्रूषा की। "तव से मेरी धारणा बदलने लगी और मैने सोचा कि किसी दिन मै सच्चे रूप मे कैथोलिक वन जाऊँगा। वचपन मे मै ऐसे वातावरण मे पला, कि मेरी यह धारणा वन गयी कि पादरी लोग वड़े वदमाश होते है और गिरजाघर की भिक्षुणियाँ वुरी औरतें होती है। ऐसी ही वात लोग मिसूरी मे करते है। यहाँ के वहुत से पादरी अपने कर्मो द्वारा इन वातो की सत्यता को प्रमाणित भी करते है। ताओस का हमारा वूढा पादरी मार्टिनेज़ एक दुष्ट व्यक्ति है। यदि पादरियो मे भी कोई दुष्ट हो सकता है, तो वह अवश्य दुष्ट है। यहाँ के आस-पास के लगभग प्रत्येक गाँव मे उसके वच्चे, नाती-पोते है। और अरोयो होंडो का पादरी लुसेरो पक्का कजूस है, वह

किसी गरीब आदमी को क्रिश्चियन ढग की अन्त्येष्टि के शुल्क मे उससे उसका सब कुछ छीन लेता है ।"

विशप ने वहाँ की जनता की आवश्यकताओ के सम्बन्ध मे किट कार्सन से विस्तार मे बातें की। उन्हे उसके निर्णय एव मत पर बडा विश्वास था। दोनो व्यक्तियो की लगभग एक ही अवस्था थी, यही चालीस से कुछ ऊपर, लम्बे अनुभव ने दोनो को स्थिर एव सूक्ष्म बुद्धिवाला बना दिया था। कार्सन ने विश्व-विख्यात अनुसधानकर्ताओ के पथ-प्रदर्शक का काम किया था, परन्तु आज भी वह लगभग उतना ही गरीब था, जितना उन दिनो, जब वह ऊदबिलाव फँसाने का काम करता था। वह अपनी पत्नी के साथ एक कच्चे मकान मे रहता था। साता फे तथा प्रशात महासागर के तट के बीच के इस विशाल रेगिस्तानी एव पर्वतीय प्रदेश का न तो कोई मानचित्र बना था और न उसमे गमनागमन के रास्ते आदि निर्दिष्ट हुए थे, उसका सबसे अधिक विश्वस्त मानचित्र किट कार्सन के मस्तिष्क मे था। मिसूरी का यह निवासी जिसकी दृष्टि किसी खुले प्रदेश के चित्र तथा मानव चेहरे को पढने एव समझने मे अत्यन्त तीव्र थी, लिख-पढ नही सकता था। उस समय मुश्किल से वह अपना नाम लिख सकता था। फिर भी उसे देखने से स्पष्ट हो जाता था कि उसमे एक तीव्र एवं सूक्ष्म बुद्धि है। यह तो सयोग की बात थी, कि वह निरक्षर रह गया, अन्यथा उसका ज्ञान किताबी ज्ञान से आगे बढ गया था, वह ऐसी जगह पहुँच गया था, जहाँ छपाई का प्रेस नही पहुँच सकता था। बचपन की कठिनाइयो के बावजूद, जब उसने चौदह वर्ष की अवस्था से लेकर बीस वर्ष की अवस्था तक बावर्ची या साईस का काम करके तथा नृशस एव भयानक डाकुओ की नौकरी करके एन-केन-प्रकारेण अपना जीवन-निर्वाह किया था, उसने आत्म-सम्मान की एक विशुद्ध भावना तथा कृपालु हृदय बनाये रखा। बेचारी मैगडलेना के सम्बन्ध में बिशप से बात करते समय उसने दु खी

होकर कहा—"मै ताओस मे उससे बहुधा ही मिलता था, तब वह बडी सुन्दर लड़की थी। कितने दु ख की बात है कि अब वह ऐसी हो गयी है ?"

पतित हत्यारे बक स्केल्स पर मुकदमा चला और थोडे दिन की सुनवाई के पश्चात् उसे फासी दे दी गयी। अप्रेल के आरम्भ मे बिशप साता फे से घोडे पर सवार होकर सेंट लूई पहुँच गये। वहाँ से उन्हे प्राविंशियल कौंसिल की सभा मे सम्मिलित होने बाल्टीमोर जाना था। जब वे सितम्बर मास मे बाल्टीमोर से लौटे, तो वे अपने साथ पाँच साहसी भिक्षुणियाँ, जो लारेटो मे 'सिस्टर' थी, लाये, जिनकी सहायता से वे अपढ नगर साता फे मे लडकियो के लिये एक विद्यालय स्थापित करना चाहते थे। उन्होने तुरन्त मैगडलेना को बुलवाया और उसे 'सिस्टरो' की सेवा मे लगा दिया। वह सिस्टरो के घर तथा रसोईघर की प्रबधक बन गयी। वह भिक्षुणियो के प्रति बडी श्रद्धालु थी तथा 'चर्च' की इस नौकरी मे वह इतनी सुखी थी कि जब बिशप स्कूल जाते थे, तो वे पीछे से, तरकारी वाले बाग के रास्ते से प्रवेश करते थे, जिससे वे उसके शान्त एव सुन्दर चेहरे को देख सकें। वह अब पुन वैसी ही सुन्दर हो गयी थी, जैसी कार्सन के कथनानुसार वह बचपन मे थी। उसके अत्यन्त भयकर एव कष्टपूर्ण यौवन का प्रभाव जब समाप्त हो गया, तो अब वह पुन ईश्वर के घर मे रहकर, कली की तरह खिलने लगी थी।

अध्याय ३

अकोमा में सार्वजनिक पूजा (मास)

१

लकड़ी का तोता

साता फे-निवास के प्रथम वर्ष मे बिशप वास्तव मे केवल चार महीने ही अपने इलाके मे रहे । छ महीने तो बाल्टीमोर मे हुई कौंसिल की मीटिङ्ग मे ही, जिसमे उपस्थित रहने के लिये उन्हे बुलाया गया था, बीत गये । वे साता फे की सड़क से, घोडे पर लगभग एक हजार मील की यात्रा करके, सेट लूई पहुँचे, वहाँ से स्टीम-बोट द्वारा पिट्सबर्ग, जहाँ से पर्वतो को पार करके कम्बरलैण्ड पहुँचे और वहाँ से नयी रेल लाइन द्वारा वाशिङ्गटन पहुँचे। वापसी यात्रा मे और भी समय लगा, क्योकि उनके साथ पाँच भिक्षुणियाँ भी थी, जो सत मेरी नामक विद्यालय की स्थापना के लिए आयी थी । सितम्बर मास के अन्त मे वे साता फे पहुँचे ।

अब तक बिशप लातूर मुख्यत ऐसे ही कामो मे लगे थे, जिनके कारण उन्हे अपने विकारेट से दूर ही रहना पडा था । उनका विशाल इलाका अब भी उनके लिये कल्पना से परे एक रहस्य ही था । वे उसमे घूमने के लिये, अपनी जनता को जानने के लिये उत्सुक थे । वे कुछ दिनो के लिये

निर्माण एव स्थापना आदि कार्यों की चिन्ता से मुक्त होकर पश्चिम की ओर दूरस्थ एव सबसे पृथक् रेड इण्डियन मिशनो मे जाना चाहते थे, जिनमे सैटो डोमिंगो, जो घोडो की नस्लो के लिये विख्यात था, इज़लेटा, जिसमे खडिया मिट्टी की बहुतायत थी, विशाल चारागाहो वाला प्रदेश लगूना, और अन्त मे बादलो से सदा ही आच्छादित अकोमा मुख्य थे।

अक्टूबर मास के सुहाने मौसम मे बिशप अपने कम्बल तथा काफी पीने के बर्तन आदि साथ लेकर जैसिंटो नामक एक नवयुवक रेड इण्डियन के साथ पश्चिम प्रदेश स्थित रेड इण्डियन मिशनो के लिये रवाना हो गये। जैसिंटो पेकोस नामक रेड इण्डियनो की बस्ती का रहने वाला था और बिशप ने उसे पथ-प्रदर्शन के लिये नौकर रखा था। उन्होने अलबुकर्क में हँसमुख तथा लोकप्रिय पादरी गैलेगोस के साथ एक रात तथा एक दिन बिताया। साता फे के बाद, अलबुकर्क का पादरी-युक्त गिरजाघर उनके इलाके का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण गिरजाघर था। पादरी एक प्रभावपूर्ण मेक्सिकन परिवार का था, और वह तथा वहाँ के सम्पन्न कृषक से मिलकर गिरजाघर को अपनी रुचि के अनुसार परिहासपूर्ण ढग से चलते थे। यद्यपि फादर गैलेगोस बिशप से अवस्था मे दस वर्ष बडा था, वह लगातार पाँच-पाँच रात तक 'फैडैंगो' (एक प्रकार का स्पेनिश नृत्य) नामक नृत्य में भाग लेता था और ऐसा लगता था, जैसे नाचने से उसका मन ही नही भरता। अमेरिकन बस्ती मे उसके बहुत से मित्र थे, और जब वह मेक्सिकनो के साथ नाचने से खाली होता था, तो इन अमेरिकन मित्रो के साथ 'पोकर' खेलता था, उनके साथ शिकार खेलने जाता था। उसकी आलमारी अल पासो द नोर्ते की अगूरी शराबो, ताओस की ह्विस्की तथा बर्नालिलो की अगूरी ब्राडी से भरी रहती थी। वह सच्चे अर्थ मे सत्कारी व्यक्ति था, और हारे हुए जुआडियो तथा नशे के इच्छुक सिपाहियो का वह सदा ही स्वागत करता था। पादरी को एक धनवान् मेक्सिकन विधवा स्त्री बहुत चाहती

थी, जो उसके द्वारा दी जाने वाली दावतो मे गृहिणी का काम करती थी, उसके लिये नौकर नियुक्त करती थी, पूजावेदी के लिये गोटे तथा पादरी की मेज़ के लिये मेज़पोश तैयार करती थी। प्रत्येक रविवार को उसकी गाड़ी (अलबुकर्क में यही एक बन्द गाडी थी) गिरजाघर के अहाते में, आराधना के बाद पादरी की प्रतीक्षा करती खड़ी रहती थी, और पादरी साहब अपने पादरियो के कपडे बदलकर, गाडी में सवार होकर रात्रि के भोजन के लिये उस महिला के घर रवाना हो जाते थे।

विशप तथा फादर वेलेंट ने फादर गैलेगोस के मामले की पूरी तरह से जाँच की थी और उन्होने क्रिसमस से पहले ही यहाँ की वदनामी की सभी बातो का अन्त कर देने का निश्चय कर लिया था। परन्तु फादर लातूर ने यहाँ आने पर किसी बात पर कोई आश्चर्य या अप्रसन्नता नही प्रकट की, और पादरी गैलेगोस वडा ही सहृदय, शिष्ट एव नम्र बना रहा। जव विशप ने अततोगत्वा इस बात पर थोडा आश्चर्य प्रकट किया कि उनके आने पर ऐसा कोई समारोह नही आयोजित किया गया है, जिसमे वे लोगो को पूर्ण रूपेण ईसाई बनने का प्रमाण प्रदान करते (इस प्रथा को ईसाई धर्म मे 'कन्फर्मेशन' कहते है), तो पादरी ने उन्हे यह कहकर समझा दिया कि उसका नियम बच्चो की बपतिस्मा (दीक्षा) के समय ही 'कन्फर्म' कर देने (पूर्ण रूपेण ईसाई बना देने) का रहा है।

"हमारे क्रिश्चियन सम्प्रदाय में इस प्रकार की बात करने से कोई अन्तर नही पडता। यह तो हम जानते ही हैं कि बढने पर उन्हे धार्मिक शिक्षा मिलेगी ही, इसलिये हम उन्हे आरम्भ में ही अच्छे कैथोलिक बना देते है। इसमें बुराई क्या है?"

पादरी यह सोच कर चिन्तित हो रहा था कि कही विशप अपनी मिशन-यात्रा पर उसे भी साथ चलने को न कह दें। उसे अल्प भोजन पर रहने तथा चट्टानो पर सोने मे कष्ट होता था। अत यद्यपि वह कुछ दिन

पहले ही रोज रात को नाचता था, फिर भी जब विशप आये तो उसने अपने एक पाँव को रेड इण्डियनो द्वारा पहने जाने वाले एक विशेष प्रकार के चमडे के जूते मे कस कर बाँधे हुए उनका स्वागत किया और यह वहाना किया कि उस पर गठिया रोग का भयानक आक्रमण हुआ है। यह पूछने पर कि उसने अकोमा मे पिछली वार 'मास' (विशेष आराधना) का आयोजन कब किया था, उसने कोई सीधा उत्तर नही दिया। उसने यह बतलाया कि उसका नियम वहाँ 'पैशन वीक' (ईस्टर त्यौहार से पूर्व पड़ने वाले सप्ताह) मे जाने का था, परन्तु अकोमा के रेड इण्डियनो का सुधार नही हुआ था और वे हृदय से अधार्मिक एव नास्तिक ही रह गये थे, और वे नही चाहते थे कि उन्हे 'मास' आदि का वखेडा उठाना पडे। पिछली वार जव वह वहाँ गया था, तो वह गिरजाघर मे प्रवेश ही नही कर सका। रेड इण्डियनो ने यह वहाना किया कि उनके पास उसकी चाबी ही नही है, वह तो गवर्नर के पास है और वह सेबोलेटा पर्वतो के अचल मे कही 'रेड इण्डियनो के किसी काम से' गया हुआ है।

विशप नही चाहते थे कि पादरी गैलेगोस भी उनकी यात्रा मे उनके साथ रहे, अतः इस वात से उन्हे वडी प्रसन्नता हुई कि उन्हे उसे अपने साथ ले चलने से इनकार करने का अप्रिय कार्य नही करना पडा और वे अलवुकर्क से औपचारिक विदाई के बाद रवाना हो गये। फिर भी वे सोच रहे थे कि गैलेगोस भले ही अच्छा पादरी न हो, उसके व्यक्तित्व मे एक प्रकार का आकर्पण अवश्य है। उसे पादरी के पद पर वनाये रखना तो असम्भव था, वह इतना आत्म-तुष्ट एव लोकप्रिय था कि उसके लिए अपनी आदते वदलना असम्भव था और निश्चय ही वह अपना चेहरा तो नही वदल सकता। वह विलकुल पेशेवर जुआडियो जैसा तो नही लगता था, फिर भी उसके चेहरे मे एक ऐसी अवाधता एव चपलता थी, जिससे इस वात का सकेत मिलता था कि उसकी रहन-सहन कुछ रहस्यमय अवश्य है।

इस परिस्थिति मे केवल एक ही रास्ता था कि उस व्यक्ति को पादरी का कोई भी कार्य करने से सद्य. रोक दिया जाय और स्थानीय छोटे-छोटे पादरियो को आदेश दे दिया जाय कि वे सचेत हो जाँय।

फादर वेलेंट ने विशप से कहा था कि वे किसी न किसी प्रकार एक रात के लिये इजलेता में अवश्य ठहरें, क्योकि वे वहाँ के पादरी जेसस द वाका को, जो श्वेत वालो वाला वृद्ध एव लगभग अधा व्यक्ति है तथा जो इजलेता में बहुत वर्षों से रह रहा है, और वहाँ के रेड इण्डियना के विश्वास एव श्रद्धा का पात्र बन गया है, अवश्य पसन्द करेंगे।

फादर लातूर जब इजलेता की इस बस्ती के समीप पहुँचे, तो उसे श्वेत मिट्टी वाले एक निचले मैदान के उस पार चमकता हुआ देख कर उनका मन प्रसन्न हो गया। वह एक छोटा-सा सुन्दर नगर ही था, जिसमें सफेद रग के छोटे-छोटे सटे हुए मकान बने थे तथा एक श्वेत ही रग का गिरजाघर भी था। उसकी सड़को एव मार्गों पर बबूल जाति के एक कटीले वृक्ष लगे हुए थे, जिनकी पत्तियाँ गाढी नीली आभा लिये हुए हरी थी। पत्तियो का रग बहुत कुछ वैसा था, जैसा खिड़कियो पर लगाये जाने वाले कागज के पर्दे का पुराने होने पर हो जाता है। यह वृक्ष उनके मन मे सदा ही सुखद स्मृतियाँ जगा देता था, इससे उन्हे दक्षिणी फ्रांस के उस बगीचे का स्मरण हो आता था, जहाँ वे अपने छोटे चचेरे भाइयो एव बहिनो से मिलने जाया करते थे। ज्योंही वे गिरजाघर के समीप पहुँचें, वहाँ का बुड्ढा पादरी उनसे मिलने बाहर निकल आया और अभिवादन के पश्चात् वह अपने एक हाथ से अपनी कमजोर आँखो को सूर्य की किरणो से बचाते हुए, फादर लातूर को देखता ही रह गया।

"तो क्या यही मेरे विशप हैं ? इतनी कम अवस्था के ?" उसने आश्चर्य से कहा।

वे गिरजा के पीछे अहाते मे लगे वगीचे के रास्ते से अन्दर गये। अहाता नागफनी के पौधो से भरा हुआ था, उनमे सभी प्रकार के और विशाल पौधे थे मालूम होता है कि पादरी को वे वहुत पसद थे, इन्ही के बीच किसी वृक्ष की लचीली टहनियो से वने हुए पिजडे टगे थे, जिनमे तोते फुदक रहे थे। नीचे, पगडडियो पर भी तोते फुदक रहे थे। इनके एक पर काट दिये गये थे, जिससे वे उड न सकें। फादर जेसस ने वताया कि वहाँ के रेड इण्डियन लोग विशेष अवसरो पर पहने जाने वाली अपनी पोशको को सजाने के लिये इन परो को बडी मूल्यवान् वस्तु समझते थे, और उसने बहुत पहले ही यह समझ लिया था कि वह ये चिडियाँ पाल कर यहाँ के निवासियो को प्रसन्न कर सकता था।

पादरी का मकान भी इज़लेता के अन्य मकानो की भाँति भीतर और बाहर दोनो ही सफेद पुता हुआ था और वह लगभग उतना ही खुला हुआ था, जितना किसी रेड इण्डियन का मकान। बूढा पादरी गरीव था और वह इतना सीधा था कि वस्ती के लोगो से किसी कर आदि की माँग नही कर सकता था। एक रेड इण्डियन लडकी उसके लिये सोयावीन, दलिया आदि पका देती थी, इससे अधिक वह कुछ खाता भी नही था। उसने वतलाया कि लडकी वडी चतुर थी तथा उसका भोजन वड़ी सफाई से पकाती थी। बिशप के यह कहने पर कि बस्ती की सभी वस्तुयें, यहाँ तक कि सडके भी, वडी साफ दीखती थी, पादरी ने उन्हे वताया, कि इज़लेता के समीप किसी सफेद खनिज पदार्थ की कोई पहाडी थी। रेड इण्डियन इसी पदार्थ को खोद ले आते थे और उसे मकानो की सफेदी के काम मे लाते थे। वे ऐसा अनादि काल से करते आ रहे हैं और गाँव अपनी सफेदी के लिये सदा से ही प्रसिद्ध है। फादर जेसस से थोडी बात करने पर ही बिशप को ज्ञात हो गया कि वे बच्चो की तरह भोले थे तथा बहुत ही अंध-विश्वासी। पर सज्जनता उनमे कूट-कूट कर भरी थी। उनकी दाहिनी आँख मे फूली

पड गई थी और वे अपनी गरदन एक ओर थोडा घुमाये रहते थे, मानो वे उस ओर कुछ देखने का प्रयास कर रहे हो। उनकी सभी गति-विधि वायी ओर को होती थी, मानो वे अपनी राह की किसी रुकावट से वचकर चलने का प्रयास कर रहे हो।

तोतो से भरे वाग की राह मकान मे प्रवेश करने पर फादर लातूर को यह देखकर बडी हँसी आ गयी कि उनके साधारण एव छोटे से हॉल की सजावट की वस्तु मात्र एक लकडी का तोता था, जो छत की वल्ली से लटके हुये एक छल्लेदार अड्डे पर वैठाया हुआ था। उधर फादर जेसस अपनी रेड इण्डियन नौकरानी को रसोईघर मे कुछ आदेश दे रहे थे और इधर विशप इस तोते को अड्डे पर से उतार कर वडे ध्यान से देखने लगे। वह लकड़ी के एक ही टुकडे से वना हुआ था, वह आकार में ठीक उतना ही वडा था, जितना कोई जीवित तोता, उसका शरीर और पूँछ विल्कुल सीधी और सिर का भाग एक ओर तनिक झुका हुआ। उसके डैने, पूँछ तथा गर्दन के पर लकडी पर खुदाई करके केवल साकेतिक रूप मे ही दिखाये गये थे और उन पर हलका रग चढाया हुआ था। यह देखकर उन्हे वड़ा आश्चर्य हुआ कि वह वडा हलका है। उसकी मखमली चिकनाहट तथा रग वहुत पुरानी लकडी की तरह था। यद्यपि उसमे नक्काशी नाम मात्र को ही थी और वह केवल गढ कर ही तोते के आकार का वना दिया गया था, तथापि वह वडा ही सजीव था, मानो वह किसी सच्चे तोते की अनुकृति ही हो।

पादरी विशप को हाथ मे चिडिया लिये देखकर मुस्करा पडा।

"तो आपने मेरी वहुमूल्य वस्तु पा ही ली। प्रभुवर, गाँव की वह कदाचित् सवसे पुरानी वस्तु है—वह इस गाँव से भी पुरानी है।"

फादर जेसस ने बताया कि वस्ती के रेड इण्डियनो के लिये तोता सदा से ही एक अद्भुत एव आकर्षण की वस्तु रही है। पुरातन काल मे

उसके पर रत्नो एव मणियो से भी अधिक मूल्यवान् समझे जाते थे। स्पेनिश लोगो के यहाँ आकर बसने से भी पहले उत्तरी न्यू मेक्सिको के ग्रामीण लोग अन्वेषको को भयानक एव कठिन व्यापारी मार्गों से उष्णकटिबधीय मेक्सिको मे भेजते थे, जो वहाँ से तोते के पर अपने शरीरो पर ढोकर ले आते थे। इनको खरीदने के लिये, व्यापारी लोग साता फे के समीप वाली सेरिल्लोस पहाडी से एकत्र मणियो को थैलो में भर कर ले जाते थे। यदि कभी कोई व्यापारी वहाँ से कोई जीता तोता ले आने मे सफल होता (ऐसा कदाचित ही कभी होता था), तो उसकी (तोते की) देवता की तरह पूजा होती थी और उसकी मृत्यु से सारा गाँव शोक-सागर मे डूब जाता था। यहाँ तक कि उसकी हड्डियो को पवित्र वस्तु मानकर सुरक्षित रखा जाता था। इजलेता मे तोते की एक बहुत पुरानी खोपडी रखी हुई थी।

पादरी ने अपना लकडी का तोता एक बूढे व्यक्ति से खरीदा था, जो उसका कर्ज़दार था तथा उसके कोई सतान नही थी और वह उस समय मृत्युशय्या पर था। पादरी की दृष्टि इस चिडिया पर बहुत वर्षों से थी। उस बूढे रेड इण्डियन ने उससे बताया था कि उसके पूर्वज पीढियो के लोग पहले इसे अपने साथ मातृभूमि मेक्सिको से यहाँ ले आये थे। पादरी ने उसके इस कथन को विश्वास कर लिया था कि वह एक ऐसे वास्तविक एव दुर्लभ तोते की अनुकृति थी, जो पुरातन काल मे उष्णकटिबन्धीय प्रदेश से लम्बी यात्रा के बाद जीवित ही लाये जाते थे।

फादर जेसस ने लगूना एव अकोमा के रेड इण्डियनो के विषय मे अच्छी रिपोर्ट दी। उसने बताया कि वह कुछ वर्ष पहले तक सार्वजनिक उपासना कराने इन बस्तियो में जाया करता था और वहाँ के रेड इण्डियन उसके बडे अनुकूल रहते थे।

"अकोमा मे" उसने बताया, "आप एक बडी ही पवित्र वस्तु देख

सकते है। वहाँ संत जोसेफ का एक चित्र है, जो बहुत काल पहिले स्पेन के किसी सम्राट द्वारा वहाँ के रेड इण्डियनो के पास भेजा गया था और उसने अनेक चमत्कार किये हैं। यदि कभी सूखा पड़ जाता है, तो अकोमा के लोग उस चित्र को अकोमिता स्थित अपने फार्मों पर ले जाते है और फिर अनिवार्यत. वर्षा होती है। सारे देश में सूखा भले ही पड जाय, परन्तु उनके यहाँ वर्षा अवश्य होती है, और उनके यहाँ फसल अवश्य अच्छी होती है, चाहे लगूना के रेड इण्डियनो की फसले नष्ट ही हो जायें।"

२

जैसिटो

फादर लातूर अपने पथ-प्रदर्शक जैसिटो के साथ प्रात.काल बडे तडके ही इजलेता तथा उसके पादरी से विदा हो गये और दिन भर अलबुकर्क के पश्चिम, सूखे एव रेतीले मैदान मे घोडो पर चलते रहे। यह मैदान सूखे वृक्षो वाला मैदान था, जिसमे न तो कोई सदावहार वाली झाड़ी और न अन्य कोई झाडी थी, कुछ सूखे तथा मृतप्राय नागफनी-पौधो की झुरमुट तथा कही-कही जगली लौकी की लता थी। इनके अतिरिक्त वहाँ अन्य कुछ नही दिखलाई पडता था। उसमे भी यह लौकी ही ऐसी वनस्पति थी, जिसमे कुछ जान दीख पड़ती थी। यह एक ऐसी लता होती है, जो चारो ओर फैलती नही, अपितु उसकी सारी शाखाए एकत्र होकर ऊपर चढती हैं। उसकी लम्बी, नुकीली तथा तीर के आकार की पत्तियाँ, जिन पर सफेद रङ्ग के चुभने वाले रोए होते हैं, एक दूसरे से उलझी हुई ऊपर को ही जाती है। पत्तियो का यह कसा एव उलझा हुआ ऊपर को जाने वाला गुच्छा देखने में ऐसा लगता है, जैसे भूरी-हरी छिपकलियो का एक विशाल दल एक साथ ही ऊपर बढता जा रहा हो और डर कर अचानक रुक गया हो।

दोपहर होते-होते उन्हे एक आँधी का सामना करना पड़ा, जिसकी धूलि से सूर्य विलकुल आच्छादित हो गया। जैसिटो इस प्रदेश से भली-भाँति परिचित था, क्योकि वह वहुधा ही लगूना मे होने वाले धार्मिक नृत्यो को देखने के लिये इसी प्रदेश से होकर जाया करता था। इस समय वह अपना सिर नीचे किये हुए तथा मुँह पर एक वैगनी रङ्ग की रूमाल वाँधे घोडे पर वैठा हुआ था। चूँकि वह एक ऐसे गाँव का रहने वाला था, जहाँ वृक्षो, वनस्पतियो एव पानी आदि की कमी नही थी, वह इस मैदान को बहुत बुरा समझता था। ठीक दोपहर के समय वह घोडे से उतर गया और कुछ लकड़ी के तिनके आदि चुनकर उसने विशप की काफी बनाने के लिये आग जलायी। वे आग के दोनो ओर बैठ गये और धूल के झोक उन पर अब भी आ रहे थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि जब वे पाव-रोटी खाने लगे, तो वह दाँत के नीचे किरकिरी लगने लगी।

गर्द से भरे आकाश मे भगवान भुवन भास्कर अपना मुँह लाल किये क्षितिज के उस पार गये। यात्रियो ने मैदान मे ही कही डेरा डाला और रात को अपने कम्वल ओढ कर सो गये। सारी रात ठडी हवा वहती रही और वे सर्दी से काँपते रहे। फादर लातूर इतनी ठंड खा गये कि सूर्योदय के बहुत पहले ही वे उठ गये। येन-केन-प्रकारेण प्रभात का आगमन हुआ, सुहावना एव निरभ्र प्रभात, और वे तडके ही वहाँ से रवाना हो गये।

उसी दिन लगभग तीसरे पहर दूर से ही जैसिटी ने चमकते हुए पीत रङ्ग के विशाल वालुका-स्तूपो के वीच वसे हुए लगूना की वस्ती की ओर सकेत किया। समीप पहुँचने पर फादर लातूर ने देखा कि ये वालुका-स्तूप बृहत् पाषाण-खडो के रूप मे परिवर्तित हो गये थे और वहाँ चिकने, कँकरीले पीत रङ्ग के चमकते हुए पहाड़ी टीलो की एक पक्ति तैयार हो गयी थी। ये टीले लगभग वनस्पति-विहीन थे, कही-कही गाढे हरे रग की छोटी-छोटी सदावहार की कुछ झाड़ियाँ थी, जो चट्टान की दरारो से

उगी हुई थी और बहुत ही पुरानी लगती थी। टीलो की हरी पंक्ति के नीचे एक झील थी, जिसे नीले पानी से भरा हुआ एक पत्थर का बर्तन कहना अधिक उपयुक्त होगा। इसी झील या तालाब के नाम पर गाँव का नाम लगूना पडा था। (लगूना का अर्थ अंग्रेजी मे तालाब होता है।)

इज़लेटा के सज्जन पादरी ने लगूना के निवासियो को यह चेतावनी देने के लिये अपनी नौकरानी के भाई को पहले ही पैदल रवाना कर दिया था कि नये बडे पादरी साहब वहाँ जा रहे है और वे बडे भद्रपुरुष है तथा वे पैसा आदि नही लेते। अत' वे लोग उसी के अनुसार तैयार थे, गिरजाघर साफ किया हुआ था, उसके दरवाजे, खिड़कियाँ आदि खुली हुई थी। वह एक छोटा-सा श्वेत रङ्ग में पुता गिरजाघर था, जिसके ऊपरी भाग तथा वेदी के पास वायु, जल एवं विद्युत् के देवता तथा सूर्य एवं चन्द्रमा के चित्र बने हुए थे। ये चित्र गहरे लाल, नीले तथा गाढे हरे रङ्ग में रेखागणित के किसी चित्र की डिजाइन मे एक दूसरे से सम्बद्ध थे, जिसे देखकर ऐसा लगता था कि गिरजा के ऊपरी भाग पर चित्रयुक्त पर्दा टंगा हुआ है। उसे देखकर फ़ादर लातूर को किसी ईरानी सरदार के तम्बू के अदरूनी भाग की याद आ गयी, जिसे उन्होंने फ्रान्सीसी नगर में हुई किसी टेक्सटाइल (सूती वस्त्र) प्रदर्शनी मे देखा था। वे यह नही जान सके कि यह चित्रकारी स्पेनिश मिशनरियो द्वारा की गयी थी या धर्म-परिवर्तित रेड-इण्डियनो द्वारा।

वहाँ के गवर्नर ने उन्हे बतलाया कि लोग प्रात काल 'मास' के लिये आवेंगे और बहुत से बच्चे दीक्षित होने को हैं। उन्होने बिशप से कहा कि वे रात को गिरजा के कमरे मे, जहाँ संस्कार आदि से सम्बन्धित कपड़े, बर्तन आदि रखे जाते है, विश्राम करे, परन्तु कमरे मे सीलन थी और उसमें से एक प्रकार की गन्ध निकल रही थी, और फादर लातूर ने

पहले ही यह सोच लिया था कि वे पहाडी टीले पर झाडी की छाँह में सोयेंगे।

जैसिंटो ने गाँव से कुछ जलाने की लकड़ी तथा कही से स्वच्छ जल प्राप्त किया और उन्होने गाँव से उत्तर एक टीले पर एक सुरम्य स्थान मे अपना डेरा डाला। साध्य रवि जब अस्ताचल की ओर पहुँचे, तो उनकी तिरछी किरणो के प्रकाश मे श्वेत गिरजाघर तथा गाँव के पीले रग के कच्चे मकान समतल टीलो से ऊपर स्पष्ट उभर आये। उनके डेरे के पीछे, थोडी ही दूर, अनेक बडे-बडे समतल चट्टानी टोले थे। बिशप ने जैसिंटो से पूछा—क्या तुम इस समीपस्थ टीले का नाम जानते हो ?

"मै किसी का नाम नही जानता," उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "हाँ, मै रेड इण्डियनो द्वारा पुकारा जाने वाला नाम अवश्य जानता हूँ," उसने आगे बुदबुदाते हुए कहा, जैसे उसका सोचना वाणीमय हो गया हो।

"अच्छा, तो रेड इण्डियन नाम क्या है ?"

"लगूना के रेड इण्डियन इसे हिम-पक्षी पर्वत कहते है।" वह उसने कुछ अनिच्छा से कहा।

"यह तो बडा अच्छा है," बिशप ने विचारमग्न होकर कहा। "यह तो वास्तव मे बड़ा अच्छा नाम है।"

"ओह, हम रेड इण्डियनो के भी तो अच्छे नाम होते है !" जैसिंटो ने होठ सिकोडते हुए शीघ्रता से उत्तर दिया और फिर जैसे उसने यह अनुभव किया कि उसे ऐसा नही कहना चाहिये था, इसलिये एक क्षण रुक कर बोला "लगूना के लोग इसे बडी अद्भुत बात समझते है कि इतना बड़ा पादरी, इतनी कम अवस्था का व्यक्ति हो। गवर्नर कहते है कि मै उन्हे 'पादरी' कैसे पुकारूँ, जब वे मेरे बेटो से भी कम उम्र के है ?"

अकोमा मे सार्वजनिक पूजा (मास)

जैसिंटो की आवाज मे एक गर्व की ध्वनि निकल रही थी, जिसे सुन कर विशप बहुत प्रमुदित हुए। उन्होने यह देखा, कि यदि कभी रेड इण्डियन लोग मधुर वाणी बोलते है, तो वह फिर कितनी मीठी हो सकती है। तनिक स्वर-परिवर्तन से ही व्यक्ति को अनुभव होने लगता कि उसे कितना बडा सम्मान-प्रदान किया गया।

"हृदय से मै उतना युवा नही हूँ, जैसिंटो। तुम्हारी क्या अवस्था है ?"

"छब्बीस वर्ष।"

"तुम्हारे कोई लडका है ?"

"एक। अभी वह शिशु है, थोडे ही दिन पहले पैदा हुआ है।"

दोनो चुप हो गये। कदाचित् उनके विचारो के आदान-प्रदान का यही सामान्य तरीका था। विशप टीन के प्याले मे काफी पीते हुए बैठे थे। काफी का बर्तन आग के पास था। सूर्यास्त हो चुका था, पीले रग के टीले अब भूरे लग रहे थे, गाँव मे, रसोई घरो में जलती आग लाल प्रकाश फैला रही थी, जो खुली हुई खिडकियो से दिखलाई पड रहा था, तथा देवदारु की लकडी के धुए की गध मन्द बयार मे तैरती हुई आ रही थी। सारा पश्चिमी आकाश सुनहरे रग का हो रहा था, कही-कही किसी बादल के छोर पर लाल रग दीख रहा था। क्षितिज से बहुत ऊपर शुक्र तारा तुरन्त की जलायी हुई बत्ती की भाँति झिलमिला रहा था, और उसके पास ही एक और तारा था, जो स्थिर रूप से चमक रहा था और आकार में शुक्र से बहुत छोटा था।

जैसिंटो ने मक्के की भूसी की बनी अपनी सिगरेट के टुकडे को फेक दिया और फिर स्वय ही कहने लगा।

"शुक्र तारा," उसने धीरे तथा अर्थपूर्ण ढग से अग्रेजी भाषा मे कहा

और फिर स्पेनिश भाषा मे बोलने लगा। "उसकी बगल मे छोटे से तारे को देख रहे है न, पादरी साहब ? रेड इण्डियन उसे पथ प्रदर्शक कहते हैं।"

दोनो साथी अपने ही विचारो मे डूबे बैठे रहे, रात बढती जा रही, अँधेरी तारो भरी रात, जिसमे ऊँचे समतल चट्टानी मैदान आकाश की ओर अतिक्रमण करते हुए दीखते थे। बिशप ने जैसिंटो से उसके विचारो एव विश्वासो के सम्बन्ध मे कोई भी प्रश्न नही किया। वे ऐसा करना अनुचित समझते थे और जानते थे कि वह व्यर्थ भी है। ऐसा कोई तरीका नही था कि वे यूरोपीय सभ्यता सम्बन्धी अपने स्मृतियो तथा विचारो को इस रेड इण्डियन के मस्तिष्क मे भर सकते, और वे यह मानने को बिलकुल तैयार थे कि जैसिंटो के पीछे एक लम्बी परम्परा, अनुभवो की एक कहानी थी, जिसे कोई भी भाषा उसे समझा नही सकती। बढती रात के साथ ठडक भी बढने लगी। फादर लातूर ने अपना जीर्ण ऊनी चोगा पहन लिया और जैसिंटो ने कमर मे बँधे अपने कम्बल को खोल कर सिर से ओढ लिया।

"असख्य तारे," उसने निस्तब्धता भग करते हुए कहा।

"तारो के सम्बन्ध मे आपका क्या विचार है, पादरी साहब ?"

"विद्वानो का मत है कि हमारे इस ससार की भाँति वे भी अलग अलग ससार है, जैसिंटो।"

बोलने के पहले रेड इण्डियन की सिगरेट का छोर एक बार चमका और फिर धुँधला पड गया। "मैं ऐसा नही सोचता," उसने उस व्यक्ति के ढग से कहा, जिसने किसी प्रस्ताव पर पर्याप्त विचार करने के पश्चात् उसे अस्वीकार कर दिया हो। "मेरे विचार से वे हमारे नायक है—महान् आत्माए।"

"कदाचित् वे यही हैं," विशप ने ठडी माँस लेते हुए कहा। "वे जो कुछ भी हो, परन्तु वे महान् अवश्य हैं। आओ, अब हम प्रभु का नाम लें और सो जाँय !"

जलती हुई आग के पास आमने-सामने घुटने टेकते हुए उन्होने एक स्वर मे प्रार्थना की और फिर अपने-अपने कम्बल ओढ कर लेट गये। सोने के पहले विशप को यह सोच कर सन्तोष था कि वे अपने इस रेड इण्डियन युवक के साथ साहचर्य की भावना का अनुभव करने लगे थे। लोग इन रेड इण्डियन युवको को 'लडके' कदाचित् इसलिये कहते थे कि उनके शरीरो में स्फूर्ति एव तारुण्य रहता ही था। हाँ, उनके व्यवहारो मे, न तो अमेरिकन अर्थ मे और न यूरोपियन अर्थ मे ही, किसी प्रकार का लड़कपन था। जैसिटो को किसी भी प्रकार सरल, भोला या वुद्धू नही कहा जा सकता था, वह कभी घवराता तो था ही नही। ऐसा लगता था कि उसकी शिक्षा ने, वह चाहे जैसी भी रही हो, उसे किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिये तैयार कर दिया था। उसे विशप के कमरे में भी उतना ही अच्छा लगता था, जितना अपने गाँव में—किसी एक स्थान से तो उसे कोई अपनत्व था ही नही। फादर लातूर ने अनुभव किया कि उन्होने काफी हद तक अपने पथ-प्रदर्शक की मित्रता प्राप्त कर ली है परन्तु वे यह नही जानते थे कि किस हद तक।

वास्तविकता यह थी कि जैसिटो को विशप का लोगो से मिलने का ढग पसन्द था। उसने देखा कि वे फादर गैलेगोस से भलमनसाहत से मिले थे, फादर जेसस से भी भलमनसाहत से मिले थे तथा रेड इण्डियनो के प्रति भी उनका अच्छा व्यवहार था। उसका अब तक का अनुभव यह था कि श्वेत लोग रेड इण्डियनो से वात करते समय हमेशा ही मुँह वना कर वात करते है। वनावटी चेहरे भी कई ढङ्ग के होते थे, उदाहरण के लिये फादर वेलेंट का चेहरा वडा दयालु था, परन्तु वह वहुत प्रचण्ड हो जाता था।

बिशप के चेहरे मे कोई भी परिवर्तन नही होता था। लगूना मे वे सीधे खडे हो गये और गवर्नर की ओर घूम कर बात करने लग गये और उनके चेहरे मे कोई भी परिवर्तन नही हुआ। जैसिंटो इसे असाधारण एव अद्भुत समझता था।

३

पर्वत-खण्ड

दूसरे दिन बडे सवेरे ही आराधना समाप्त करके फादर लातूर तथा उनका पथ-प्रदर्शक वहाँ से रवाना हो गये और उन्होने शीघ्र ही लगूना एव अकोमा के बीच के निचले मैदानी प्रदेश को पार कर लिया। अपनी अब तक की सारी यात्राओ मे बिशप ने ऐसा प्रदेश पहले कभी नही देखा था। लाल मिट्टी के इस समतल सागर मे जगह-जगह ऊँचे एव विशाल समतल पर्वत-खण्ड थे, जो वाह्य आकृति मे नोकदार ऊँची मेहराब की बनावट के थे और विशाल गिरजाघरो जैसे लगते थे। वे अव्यवस्थित रूप से पास-पास सटे हुए नही थे, अपितु एक दूसरे से काफी दूर थे तथा बीच मे मैदान का अच्छा दृश्य मिलता था। ऐसा लगता था कि यह मैदान कभी एक विशाल नगर रहा होगा, जिसकी सभी छोटी-छोटी इमारतें कालान्तर मे नष्ट हो गयी तथा केवल बडी-बडी सार्वजनिक इमारते ही, जो पहाडो की तरह थी, खडी रह गयी। मैदान की रेतीली मिट्टी मे कही-कही सदावहार की झडियाँ थी और कही-कही फूलो से युक्त एक अन्य झाड़ी थी, जिसका जैतूनी रग का पौधा आदोलित सागर की भाँति बडी तेजी से बढता है। वर्ष के इस मौसम मे ये पौधे पीले तथा गेंदे के रग की तरह केसरिया रग के फूलो से लदे हुए थे।

समतल पर्वत-खण्डो वाला यह मैदान देखने मे अत्यन्त प्राचीन एव अपूर्ण लगता था, मानो सृष्टिकर्त्ता ने अपनी रचना के सभी साधनो को

एकत्र करने के बाद अचानक काम बद कर दिया हो और वे सभी वस्तुओ को व्यवस्थित रूप मे रखने तथा उन्हे पर्वतो, मैदानो एव पठारो का रूप देने के पहले ही छोडकर चले गये हो। वह प्रदेश अब भी समतल क्षेत्र के रूप मे परिवर्तित होने की बाट जोह रहा था।

बिशप इसके बाद हमेशा ही अकोमा की अपनी इस प्रथम यात्रा को समतल पर्वत-खण्ड वाले प्रदेश से अपने प्रथम परिचय के रूप मे स्मरण करते थे। एक बात जिसने उनका ध्यान तुरन्त आकर्षित किया, यह थी कि प्रत्येक पर्वत-खण्ड की बादल-खण्ड के रूप मे एक अनुकृति थी, जैसे यह उसकी छाया हो, जो निश्चल रूप मे उसके ऊपर लटक रही हो या उसके पीछे से धीरे-धीरे ऊपर आ गयी हो। वायुमण्डल चाहे कितना ही गरम या ठडा क्यो न हो, ये बादल वहाँ हमेशा ही दीख पडते थे। कभी-कभी वे वाष्प के चबूतरो तथा परतो के रूप मे दिखलाई पडते थे और कभी-कभी वे गुबदाकार या विलक्षण आकृति के, एक दूसरे के ऊपर उठते हुये श्वेत बौद्ध-मदिरो के अनेक गुबदो के रूप मे दीखते थे, मानो कोई प्राच्य नगर ठीक इन्ही पर्वत-खण्डो के पीछे बसा हुआ है। इस शून्य विस्तृत मैदान मे स्फटिक शिला के इन विशाल पर्वत-खण्डो की कल्पना, उनके साथी बादलो के बिना नही की जा सकती थी। जो ठीक उसी तरह उनके एक अग थे, धुआँ धूपदानी का या फेन लहर का।

कसास राज्य के विस्तृत मैदानो से होकर साता फे की सडक से जाते हुए फादर लातूर ने आकाश को बनस्पति युक्त मैदान की अपेक्षा मरुस्थल के रूप मे अधिक पाया। चमकते हुए शून्य नीले आकाश की एकरसता फ्रासीसी आँखो के लिये अत्यन्त अरुचिकर थी। परन्तु पेकोस से पश्चिम, यह सब: कुछ बदल गया, यहाँ आकाश मे दिन भर बादल बनते और बिगडते रहते थे। चाहे वे काले, भयकर एव वर्षायुक्त हो या धुँधले, श्वेत रग के निस्पद एव सारहीन बादल, वे नीचे की दुनिया को अत्यधिक

प्रभावित करते थे। इन बादलो की छाया पडने के कारण, मरुस्थल, पहाडो एव पर्वत-खण्डो के रूप-रंग बराबर ही बदलते रहते थे। इस प्रकार लगातार बल-परिवर्तन के कारण तथा प्रकाश के चिर-परिवर्तनशील वितरण के प्रभाव से सारा प्रदेश ही आँखो के सामने प्रतिक्षण बदलता दीख पडता था।

फादर लातूर इसी विचारधारा मे बहे जा रहे थे कि जैसिंटो ने अचानक इस विचारधारा को तोड दिया। उसने जोर से कहा, "वह रहा अकोमा"। उसने अपना खच्चर रोक दिया।

बिशप की आँखो ने रेड इण्डियन युवक के उठे हुए हाथ का अनुसरण किया और उन्होने दूर दो बडे-बडे समतल पर्वत-खण्ड देखे। वे लगभग वर्गाकार थे और इतनी दूर से एक-दूसरे के समीप दीख पड़ते थे, यद्यपि वास्तव मे उनमे कई मीलो का अतर था।

"वह दूर वाला है," उनका पथ-प्रदर्शक अब भी वैसे ही सकेत कर रहा था।

बिशप की दृष्टि उतनी तेज नही थी, जितनी जैसिंटो की, परन्तु जिस ऊँचे पठारी स्थान पर वे रुके खडे हुए थे, वहाँ से दूर वाले पर्वत-खण्ड की ऊपरी भूरी सतह पर दृष्टि डालते हुए, उन्होने उस पर एक भूरी बाह्य रेखा देखी—वर्गों से बना हुआ एक बडा सफेद वर्ग। उनके पथ-प्रदर्शक ने बताया कि वही अकोमा की बस्ती है।

आगे बढते हुए वे शीघ्र ही अलौकिक पर्वत-खण्ड के नीचे पहुँच गये और जैसिंटो ने उन्हे बताया कि इस पर भी कभी एक गाँव था, परन्तु शताब्दियो पहले उसकी सीढियाँ, जो ऊपर चढने के लिए एकमात्र साधन थी, किसी भयकर तूफान मे नष्ट हो गयी और उसके निवासी ऊपर ही भूख से तडप-तड़प कर मर गये।

"परन्तु इस प्रकार के खुले पर्वत-खण्डो पर, सैकडो फुट ऊपर, जहाँ

मिट्टी या पानी कुछ भी नही, लोगो ने रहने की वात पहले सोची ही कैसे ?", विशप ने उससे पूछा ।

जैसिंटो ने विरक्ति के भाव से कहा, "कोई जव मनुष्य का जगली जानवर की भांति दिन-रात पीछा करे, तो वह सव कुछ कर सकता है। यहाँ पर उत्तर से 'नवाजो' के आक्रमण होते थे, दक्षिण से 'अपाचो' के आक्रमण होते थे, विवश होकर अकोमा निवासी सुरक्षा के लिये इन पर्वत-खण्डो पर भाग जाते थे।"

विशप ने अनुमान लगाया कि कभी इस सारे मैदानी प्रदेश मे मनुष्य का शिकार किया जाता था तथा वेचारे रेड इण्डियनो ने पीढियो तक भय के ही वातावरण मे पैदा होकर हत्या के ही शिकार होकर, अन्त मे धरती से यह उडान भरे थे और इस पर्वत-खण्ड पर पीडित एव त्रस्त प्राणियो की चिर आशा—त्राण—प्राप्त किये थे। वे शिकार करने तथा अपने खेत जोतने-वोने नीचे मैदान मे उतरते थे, परन्तु आवश्यकता पडने पर शरण के लिये एक स्थान तो रहता था। यदि 'नवाजो' का कोई दल अकोमा के मार्ग पर आक्रमण के लिये वढता आ रहा हो, तो रेड इण्डियन अपने इस गुप्त आश्रय पर पहुँच जाते थे। चट्टान की टेढी-मेढी सीढियो पर मोरचा वना कर मुट्ठी भर आदमी सैकडो और हजारो आक्रामको को पीछे ढकेल सकते थे। एक वार के अतिरिक्त, जव स्पेनियार्डो ने वन्दूक आदि से सुसज्जित सेना लेकर आक्रमण किया था, अकोमा के पर्वत-खण्ड पर कभी भी कोई शत्रु अधिकार नही कर सका। यह चट्टान किसी पहाडी दुर्ग से वहुत भिन्न था, अपेक्षाकृत अधिक एकान्त, अधिक दुर्भेद्य, अधिक भयप्रद तथा कल्पना मे अधिक सुहावना। यह पर्वत-खण्ड मानव आवश्यकता का मूर्त-रूप था, अनुभूति मात्र से ही उसके लिये लालायित होना पड जाता था, प्रेम और मैत्री मे वह सच्ची निष्ठा का आदर्श प्रतीक था। स्वय ईसा मसीह ने जिस शिष्य को अपने गिरजाघर की चाभी दी थी, उसकी तुलना आदर्श के रूप

मे इससे ही की थी। और 'ओल्ड टेस्टामेंट' (बाइविल के प्रथम भाग) में जिन हिब्रुओ की चर्चा आयी है, और जो हमेशा ही कैद होकर विदेशो मे भेजे जाते थे, वे अपने पर्वत-खण्ड को ईश्वर समझते थे; यही एक ऐसी वस्तु थी, जिसे उनके विजेता उनसे नही छीन सकते थे।

विशप ने यह पहले ही देख लिया था कि रेड इण्डियनो के जीवन मे एक विलक्षण वास्तविकता थी, जो कभी-कभी स्तब्ध एव घवरा देने वाली हो जाती थी। अकोमा के निवासियो ने जिन्हे भी स्वभावत अखिल मानवजाति की भाँति चिर काल से ही किसी स्थायी, टिकाऊ एव अपरिवर्तनीय वस्तु की खोज थी, अपने इस आदर्श को स्थूल वास्तविकता मे पाते थे। वे वास्तव मे अपने पर्वत-खण्ड पर रहते थे, उसी पर पैदा होते थे और उसी पर मरते थे। बात यह कितनी सीधी सी थी कि वे उसी पर पैदा होते थे, रहते थे एव मर जाते थे, परन्तु यह कि वे सचमुच ही ऐसा कर सकते थे, इसमे एक प्रकार की अत्युक्ति अवश्य थी।

उनके अकोमा पर्वत-खण्ड के पास पहुँचने के साथ ही उसके पीछे से, काले बादल उठने लगे, जैसे स्वच्छ आकाश मे स्याही के धब्बे फैल रहे हो।

"वर्षा आयी," जैसिंटो ने कहा। "अच्छा है, वे आनन्द मे रहेगे।" उसने खच्चरो को पर्वत-खण्ड की तलहटी स्थित एक लकडी के छडो से बने एक बाडे मे छोडा, कम्बल आदि लिया और फादर लातूर को शीघ्रता से चट्टान की एक दरार के पास ले गया जहाँ खडी, ऊँची-नीची चट्टान से एक प्रकार की प्राकृतिक सीढी बन गयी थी, जो ऊपर तक जाती थी। जहाँ कही ढाल खतरनाक थी, वहाँ चट्टान मे हाथ से पकडने के लिये घूँसेबाजी के दस्तानो की तरह खड्डे बने हुए थे। यो तो पर्वत-खण्ड पूर्णतया वनस्पति-हीन था, परन्तु उसकी तलहटी मे एक तेज गध वाला पौधा उगा हुआ दिखाई पड़ता था, जिसके बडे-बडे श्वेत फूल कुमुदिनी की तरह थे। उसकी

गाढी नीली-हरी पत्तियो से, जो बडी तथा खुरदरी थी, फादर लातूर ने पहचान लिया कि यह पौधा महकने वाले धतूरे की जाति का है। इस पौधे के आकार तथा फैलाव को देख कर उन्हे बडा आश्चर्य हुआ। वे भड़कीले रेशम के बने हुए विशाल कृत्रिम पौधो की तरह लगते थे।

वे पहाड पर अभी चढ ही रहे थे कि ऊपर आकश मे भयानक गर्जन के साथ कड़ाके की विजली चमकी और मूसलधार वृष्टि होने लगी, जैसे वादलो ने उसी स्थान पर अपना सारा पानी उडेल दिया हो। सीढियो की एक गहरी मोड पर ऊपर से लटकी हुई चट्टान के नीचे खडे होकर वे वर्षा की धार को देखने लगे जो हवा के कारण ऐसी लगती थी, मानो कोई मोटा परदा इधर-उधर हिल रहा हो। क्षण भर मे ही सँकरी सीढी, जहाँ वे खडे थे, किसी एक विशाल नाले की तेज शाखा वन गयी। वाहर यत्र-तत्र पर्वत-खण्डो से युक्त वर्षा की वूंदो से चमकते हुए मैदान की ओर दृष्टि डालते हुए विशप ने दूरस्थ पर्वतो को सूर्य के प्रकाश मे चमकते हुए देखा। उनके मन में फिर यह विचार उठा कि सृष्टि का प्रथम प्रात काल कदाचित् ऐसा ही रहा हो, जब सूखी भूमि सागर से प्रथम वार निकाली गयी थी, और चारो ओर गडवडी छायी हुई थी।

वर्षा आधे घण्टे बाद बन्द हो गयी। विशप और जैसिंटो जब तक सीढियो के अन्तिम मोड पर पहुँच कर, दरार मे से वाहर हुए और पर्वत-खण्ड की समतल भूमि पर पहुँचे, मध्याह्न सूर्य की प्रखर किरणें प्रचण्ड रूप से अकोमा पर चमक रही थी। नगर की पथरीली फर्श एव घिसे हुए मार्ग धुल कर सफेद एव स्वच्छ हो रहे थे, और फर्श के वे गड्ढे, जिन्हें अकोम निवासी अपना हौज़ कहते थे, वर्षा के ताजे जल से भरे हुए थे। महिलाएँ धुलाई आरम्भ करने के लिए अपने कपडे निकाल रही थी। पीने का पानी तो औरतें नीचे एक गुप्त सोते से मिट्टी के घडो मे सिर पर

लाद कर ले आती थी, परन्तु अन्य सभी कार्यो के लिए लोग इन हौजो मे भरे वर्षा के पानी पर भी निर्भर रहते थे ।

बिशप ने अनुमान लगाया कि पर्वत-खण्ड का ऊपरी समतल मैदान क्षेत्रफल में लगभग दस एकड़ था, और उस पर कोई वृक्ष या हरियाली का एक भी तिनका नही था । वहाँ कच्ची ईंटो की दीवार से घिरे हुए गिरजाघर के अहाते के अतिरिक्त, जहाँ दफनाने की क्रिया के लिये नीचे के मैदान से टोकरियो मे भर-भर कर मिट्टी लाकर रखी हुई थी, अन्य कही भी एक मुट्ठी मिट्टी नही मिल सकती थी । दो-दो, तीन-तीन मजिल के श्वेत मकान छिट-फुट नही बने हुए थे, अपितु वे एक दूसरे से सटे हुए एक ही स्थान मे बने हुए थे । उनके चारो ओर सुरक्षात्मक ढालू जमीन नही थी और न तो किसी चट्टान की कोई उभाड ही थी । वे समतल भूमि पर समतल रूप मे बने हुए थे, चमकती हुई भूमि पर स्वयं चमक रहे थे—चट्टान तथा श्वेत रंग मे पलस्तर किये हुए मकानो से प्रतिबिम्बित सूर्य का प्रकाश आँखो को चकाचौंध कर देने वाला था ।

पर्वत-खण्ड की एक ओर ठीक छोर पर अकोमा का पुराना एव सैनिकोचित पत्थर की दो मीनारो वाला गिरजाघर खडा था । वह नीचे की गहराई के ठीक ऊपर था, जिससे उसकी बाहरी दीवार को देख कर ऐसा लगता था कि चट्टान का किनारा ही ऊपर उठता गया है । उसका मध्य भाग सकरा, सफेद रङ्ग का तथा कुछ मनहूस-सा लगने वाला एव सत्तर फुट ऊँचा था । उसकी छत टूट-फूट रही थी । वह किसी पूजा के स्थान की अपेक्षा छोटे किले की तरह अधिक लगता था । उसके लम्बे-चौडे आन्तरिक भाग को देख कर बिशप खिन्न हो गये, जैसा वे किसी अन्य मिशन के गिरजा को देख कर पहले कभी नही हुए थे । उन्होने दोपहर के पहले ही वहाँ सार्वजनिक आराधना की और 'मास' की धार्मिक विधि पूरी करने मे उन्हे इतनी कठिनाई पहले कभी नही हुई थी । उनके समक्ष

भूरी फर्श पर, भूरे प्रकाश में पचास-साठ व्यक्ति चुपचाप गाढे रङ्गो की शालें और कम्बल ओढे बैठे हुए थे, ऊपर और पीछे वही भूरी रङ्ग की दीवारें। उन्हे ऐसा लगा, मानो वे सागर के अतल तल मे, तथा उन जन्तुओ के लिये 'मास' मना रहे हो, जो हिब्रू बादशाह नोआ के युग मे आयी हुई भयानक बाढ से भी पहले के थे, तथा इस प्रकार के जीवो के लिये, जो इतने प्राचीन, इतने अनुदार, अपनी ही चार दीवारो के बीच इतने सीमित थे कि महात्मा ईसा के बलिदान की गाथा उनके कानो तक पहुँच ही नही सकती थी। बिशप ने सोचा कि उनके समक्ष खडे हुए इन जन्तुओ को 'बपतिस्मा' (दीक्षा) एवं दैवी कृपा द्वारा कदाचित् बचाया जा सके, जैसे नन्हे, कोमल शिशुओ को बचाया जाता है, परन्तु, उनकी निजी अनुभूति द्वारा यह सम्भव हो सके, इसमे सन्देह था। बिशप ने उन्हे आशीर्वाद दिया और विदा किया, परन्तु एक असन्तोष एव आध्यात्मिक पराजय की भावना से।

पादरी के विधि-सस्कार सम्बन्धी अपने कपडो को उतारने के पश्चात् फ़ादर लातूर जैसिटो के साथ गिरजाघर को घूम-घूम कर देखने लगे। उसको ध्यान से देखने पर उनका आश्चर्य और भी बढ गया। अकोमा मे इस विशाल गिरजाघर की कभी भी क्या आवश्यकता रही होगी? वह सोलहवी शताब्दी के आरम्भ मे फ्रे जुवा रैमिरेज नामक एक महान् धर्म-प्रचारक (पादरी) द्वारा बनाया गया था, जिसने अकोमा के इस पर्वत-खण्ड पर लगातार बीस वर्षो तक परिश्रम किया था। फादर रैमिरेज ने ही पर्वत-खण्ड की दूसरी ओर खच्चरो के चढने के लिये एक मार्ग बनाया था। वही एक ऐसा मार्ग था, जिससे कोई गधा पर्वत-खण्ड के ऊपरी भाग तक चढ सकता था और जो अब भी 'अल कैमिनो दल पादरे' कहा जाता था।

फादर लातूर जितना ही अधिक इस गिरजाघर को ध्यान से देखते

थे, उतना ही अधिक वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते थे, कि फ्रे रैमिरेज या उनके बाद का कोई अन्य स्पेनिश पादरी, भौतिक महत्त्वाकाक्षाओ से मुक्त नही था और उन्होने इसे कदाचित् आत्म-सन्तोष के लिए ही बनाया था, न कि रेड इण्डियनो की आवश्यकताओ के अनुसार। भवन-निर्माण के इस भव्य स्थान तथा इस दुर्ग की प्राकृतिक छटा ने कदाचित् उनके दिमाग फेर दिये थे। वे स्पेनिश पादरी शक्तिशाली मनुष्य रहे होगे, तभी तो वे बिना किसी सैनिक सहायता के, इस विशाल कार्य के लिये रेड इण्डियन मजदूरो को जुटा सके। इस इमारत का प्रत्येक पत्थर, इस हजारो-लाखो पौंड के वजन की इमारत की प्रत्येक मुट्ठी भर मिट्टी, पुरुषो, स्त्रियो एव छोटे-छोटे लडको की पीठो पर लाद कर सीढी की राह ऊपर पहुँचायी गयी रही होगी। और छत मे लगी खुदी हुई विशाल लकडी की बल्लियाँ—फादर लातूर ने अचम्भे से उनकी ओर देखा। जिस मैदान से होकर वे यहाँ तक आये थे, उसमे कही भी, कुछ छोटे-छोटे देवदारु के वृक्षो के अतिरिक्त अन्य कोई वृक्ष नही थे। उन्होने जैसिटो से पूछा कि वे बडी बडी बल्लियाँ कहाँ से आयी होगी।

"मेरा अनुमान है कि सैन मैटियो पहाड़ से"

"परन्तु सैन मैटियो पहाड तो चालीस या पचास मील दूर है। वहाँ से वे इतनी भारी-भरी लकडियाँ कैसे लाये होगे ?"

जैसिटो ने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया, "बेचारे अकोमा के निवासी ही ढो कर लाये होगे।" निस्सन्देह, अन्य कोई तरीका नही हो सकता था।

गिरजाघर की मुख्य इमारत के अतिरिक्त उसी से संलग्न, उसी के एक भाग के रूप मे, अनेक नीची मेहरावो वाला एक लम्बा-चौडा एव मोटी दीवारो वाला प्रकोष्ठ बना था, जिसे बनाने मे नीचे मैदान से सामान

आदि ढोने मे बड़ा परिश्रम लगा होगा। इस प्रकोष्ठ के लम्बे-लम्बे गलियारे बडे ठण्डे थे, जबकि बाहर चट्टान पर झुलस देने वाली गरमी थी। प्रकोष्ठ के एक छोर पर एक घिरा हुआ बगीचा था, जिसकी मिट्टी की गहराई से यह अनुमान लगता था कि वह कभी बडा हरा भरा रहा होगा। सम्भव है कि प्रारम्भिक काल के मिशनरी लोग इन छायादार गलियारो मे, जिनकी कच्ची ईंटो की बनी खिडकी रहित चार फुट मोटी दीवारों के कारण इस बगीचे तथा ऊपर नीले आकाश के अतिरिक्त अन्य कुछ नही दिखलाई पड सकता था, टहलते हुए अकोमा निवासियो को, जिन्हे चट्टानी कछुओ की एक आदिम जाति कहना अधिक उपयुक्त होगा, भूल गये रहे हो, और यह समझने लगे हो कि वे तो पाइरेनीज़ पर्वत के अँचल में बने किसी प्रकोष्ठ मे टहल रहे हैं।

घिरे हुए बगीचे की भूरी मिट्टी मे दो पतले तथा अर्ध-शुष्क आड़ू के वृक्ष थे, जो अब भी पानी माँग रहे थे, अर्थात् जो पानी पाने पर हरे हो सकते थे। यह ऐसा वृक्ष नही होता, जो किसी पुरानी जड से स्वय पनप कर निकलता है, परन्तु फलता नहीं। दीवार के पास किसी अगूर-वृक्ष के एक पुराने और बहुत ही मोटे और कडे ठुठ से पीले रङ्ग के अकुर निकले हुए थे। कभी यह वृक्ष के गुच्छो से लदा रहा होगा।

प्रकोष्ठ के पूर्वोत्तर किनारे पर विशप ने एक छज्जा बना देखा, जो ऊपर से तो ढँका हुआ था परन्तु अगल-बगल खुला हुआ था। वहाँ से अकोमा के श्वेत मकानो तथा भूरी चट्टानो एव नीचे के विस्तृत मैदान का अच्छा दृश्य मिलता था। विशप ने निर्णय किया कि वे रात वही वितायेगे। इस छज्जे पर खडे-खड़े उन्होने सूर्य को अस्त होते देखा, उन्होने देखा कि प्रतिबिम्ब लम्बे होते गये और धीरे-धीरे सारा मरुस्थल अन्धकार-मय हो गया। विस्तृत मैदान मे इधर-उधर छिटके हुए पर्वत-खण्डो के ऊपरी समतल भाग जो गोधूलि के प्रकाश में लाल रग के हो रहे थे, एक-

एक करके प्रकाश-हीन हो गये, जैसे एक के वाद एक मोमवत्तियाँ वुझ रही हो। विशप मरुस्थल मे, एक वनस्पतिहीन, मुक्त पर्वत-खण्ड पर थे, पाषाण-युग कालीन वातावरण मे थे। जिसमे वे स्वजनो एव अपने युग-कालीन सभ्यता की, युरोपीय मनुष्य तथा उसकी आकाक्षाओ एव महत्वाकाक्षाओ के उज्ज्वल इतिहास की उछ्वासपूर्ण याद के शिकार हो सकते थे। उन अनेक विगत शताब्दियो मे, जव विश्व का उनका अपना भाग प्रात कालीन आकाश की भाँति वरावर परिवर्तित होता जा रहा था, वहाँ के ये लोग विलकुल अचल रह गये थे, न तो उनकी सख्या मे कोई वृद्धि हुई थी और न उनकी आकाक्षाओ मे। वे आज भी अपनी चट्टान पर चट्टानी कछुए ही थे। इन्हे ऐसा लगा, जैसे यहाँ की सारी वातें रेगने की चाल से आगे वढ रही हो, जैसे सभी वस्तुएँ स्थिर हो, प्रगति का नाम नही एक ऐसा जीवन, जो पहुंच से परे हो, जहाँ प्रगतिशील वाते पहुँच ही न सकती हो, जैसे केकडे, कछुए, घोघे आदि जीव अपने खोल मे सिकुड जाने के वाद पहुँच से वाहर हो जाते है।

घर वापस आते समय विशप ने इजलेता के भलेमानस पादरी फादर जेसस के साथ एक रात और वितायी। पादरी ने उनसे मोकी प्रदेश तथा और भी पश्चिम स्थित उसी प्रकार के पर्वत-खण्डो वाली वस्तियो के सम्वन्ध मे वहुत सी वाते वतायी। उनमे से एक कहानी अकोमा के किसी पादरी के सम्वन्ध मे थी, जिसे लोग वहुत पहले ही भूल चुके थे, तथा जो वहुत कुछ यो थी —

४
फ्रे वल्ज़ार की कथा

सत्रहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे, जव रेड इण्डियनो के उस भयकर विद्रोह के वीते पचास वर्ष हो चुके थे, जिसमे उत्तरी न्यू मेक्सिको के

सभी धर्म-प्रचारक पादरी एव स्पेनियार्ड या तो वहाँ से भगा दिये गये थे या मार डाले गये थे, तथा जब देश पुन विजित हो चुका था और शहीदो के स्थान पर नये पादरी आ गये थे, फ्रे वल्जार माँटोया नामक एक व्यक्ति अकोमा का पादरी था। वह निरकुश एव क्रूर स्वभाव का व्यक्ति था और वहाँ के अधिवासियो को सताया करता था। वे सभी धर्म-प्रचार-केन्द्र (मिशन) जो इस समय नष्ट हो चुके थे, उस समय कार्य कर रहे थे, प्रत्येक केन्द्र में एक पादरी रहता था, जो अपने स्वभाव के अनुसार या तो जनता के लिये जीता था या जनता के सहारे जीता था। फ्रे वल्जार वडा ही महत्त्वाकाक्षी एव उत्पीडक था। वह यह सोचता था कि अकोमा की वस्ती मुख्यत उसके सुन्दर गिरजाघर के खर्च आदि को चलाने के लिये ही थी, तथा वह रेड-इण्डियनो के लिये गर्व की वस्तु होनी चाहिये, जैसे वह उसके लिये थी। वह उनसे उनके सर्वश्रेष्ठ अनाज, फल आदि अपने खाने के लिये ले लेता था तथा जब वे कोई भेंड़-वकरा आदि काटते थे, तो उसका सर्वश्रेष्ठ भाग अपने लिए चुन लेता था, और अपने निवास स्थान में फर्श पर विछाने के लिए उनके सब से अच्छे पशु-चर्मों को रख लेता था। इसके अतिरिक्त वह श्रम के रूप में उनसे भारी कर वसूल करता था। वह उनसे नीचे मैदान से टोकरियो मे भर-भर कर मिट्टी मँगवाने से थकता ही नही था। उसने गिरजा के अहाते को वढाकर वड़ा वनवा डाला तथा उसके प्रकोष्ठ मे वहुत सी मिट्टी डलवा कर एक वगीचा वनवा दिया और पशुओं के वाडे से गोवर लीद आदि मँगवाकर उसकी भूमि को उर्वरा वना दिया। उसमे उसने एक सुन्दर सी वाटिका तैयार कर ली, प्रतिदिन सध्या समय औरतें उसे सीचती थी, यद्यपि यह विलकुल उचित नही था कि औरतें कभी भी गिरजाघर के प्रकोष्ठ में प्रवेश करें। प्रत्येक औरत को पादरी के लिए प्रति सप्ताह हौजो से उनके लिए निश्चित सख्या के घटे में पानी ले आना पड़ता था, और वे केवल परिश्रम के ही ख्याल से इसे वुरा

नही मानती थी, अपितु इसलिये भी कि इसके कारण उनकी आवश्यकता के पानी मे कमी हो जाती थी।

बल्ज़ार कोई सुस्त व्यक्ति नही था, और अपने कार्य-काल के प्रारम्भिक दिनो मे, जब वह बहुत मोटा नही हुआ था, अपने गिरजाघर तथा बगीचे के लिए बडी-बडी यात्राएँ करता था। वह अच्छे-से-अच्छे आड़ू के बीज के लिये कई दिन की यात्रा करके ओरैबी तक गया। (ओरैबी के आड़ू के बगीचे बहुत पुराने थे, वे प्रारम्भिक स्पेनिश खोज-यात्राओ के जमाने से ही वहाँ लगे थे, जब कॉरोनैडो के कप्तान लोग स्पेन से लाये हुए आड़ू के बीज मोकी वासियो को दिये थे।) उसकी अगूर की कलमे टोकरियो मे खच्चरो पर लादकर सोनोरा से मँगायी गयी थी और जब अनुकूल मौसम आने पर मालगाड़ियाँ रायो ग्रैड घाटी में से होकर इधर आती थी, तो वह बगीचे मे लगाने के लिये अच्छे-अच्छे पौधो एव बीजो के लिये साता फे तक जाया करता था। प्रारम्भिक काल के मिशनरियो ने इन बीजो का व्यापार करके अच्छा पैसा कमाया, यद्यपि बेचारे रेड इण्डियन तथा मेक्सिकन लोग अपनी सेमो, लौकियो तथा मिर्चों से ही सतुष्ट थे और अन्य कुछ भी नही चाहते थे।

फ्रे बल्जार स्पेन के एक धार्मिक सस्थान से आया था, जो अपनी अच्छाई के लिये सुविदित था, तथा उसने स्वय उसके रसोईघर मे काम किया था। वह बडा अच्छा रसोइया था और बढई का भी कुछ काम जानता था, अत उसने दुनिया के इस कोने मे, उस पर्वत-खण्ड पर, आराम का जीवन बिताने के लिये काफी परिश्रम किया। उसने दो रेड इण्डियन लडको को नौकर रख लिया, एक उसके गधे की देखभाल तथा बगीचे मे काम करने के लिये और दूसरा भोजन बनाने तथा खिलाने के लिये। कुछ दिन बाद, जब वह मोटा हो गया, उसने एक तीसरे लडके को भी नौकर रख लिया और उससे दूरस्थ मिशनो मे सन्देश आदि ले जाने आदि का काम लेने लगा। यह लडका लाल कपडा, फावड़ा या कोई नयी छुरी लेने पैदल ही

साता फे तक जाया करता था, रास्ते में वह रुक कर वन लिलो से चमड़े की बोतल मे भरकर अगूरी ब्राडी ले आया करता था। वह पादरी के उपवास के दिनो के लिये मछली पकडने, उन्हे सुखाने तथा उनमे नमक मलने के लिये, पाच दिन की यात्रा करके सैडिया पहाड तक जाया करता था, या वह जूनी तक जाता था, जहाँ पादरी लोग खरगोश पालते थे, और वहाँ से अपने पादरी के लिये एकाध खरगोश ले आता था। उसके कार्य कदाचित् ही कभी गिरजा से सम्बन्धित होते थे।

यह स्पष्ट था कि अकोमा का यह पादरी आध्यात्मिक शान्ति की अपेक्षा भौतिक आनन्द की खोज मे अधिक रहता था। इस शुष्क एव वनस्पतिहीन पर्वत-खण्ड पर यदि पादरी को सुस्वादु एव भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन मिलने में कोई कठिनाई होती थी, तो इससे उसकी क्षुधा और भी बढती थी और वह उसे प्राप्त करने के लिए और भी प्रयत्नशील होने के लिये प्रेरित हो उठता था। परन्तु उसकी विलासिता, भोजन एव बगीचे तक ही सीमित थी। रेड इण्डियन महिलाओ के साथ सभोग करना उसके लिये बड़ा आसान हुआ होता, और पादरी अपने यौवन के चरमोत्कर्ष पर था, जब इस प्रकार के प्रलोभन बडे ही प्रचण्ड होते हैं। परन्तु धर्म-प्रचारक लोग बहुत पहले ही यह जान गये थे कि ब्रह्मचर्य से तनिक भी फिसलने से धर्म-परिवर्तित रेड इण्डियनो पर उनका रोष एव दबदबा बहुत कम हो जाता था। रेड इण्डियन लोग स्वय ही कभी-कभी प्रायश्चित के रूप मे, या देवी-देवताओ या प्रेतात्माओ को प्रसन्न करने के लिये, ब्रह्मचर्य का अभ्यास करते थे और वे उस समय यह भी चाहते थे कि उनका पादरी भी उनकी खातिर ऐसा करे। यहाँ पर स्त्रियो के साथ कामाचार आदि के दुष्परिणाम स्पेन की अपेक्षा कदाचित् अधिक गम्भीर होते थे और फ्रे वल्ज़ार ने अकोमावासियो को अपनी इस प्रकार की मानवीय कमजोरी पर उल्लसित होने का अवसर कभी नही प्रदान किया।

वह अकोमा में अपने पद पर पन्द्रह समृद्धिशाली वर्षों तक रहा। इन पन्द्रह वर्षों मे वह अपने गिरजाघर को और अपने निवास-स्थान को वरावर दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक सुधारता रहा, वह नयी-नयी तरकारियाँ, नयी-नयी जड़ी-बूटियाँ लगाता रहा, 'यूका' (एक प्रकार का पुष्प पौधा) वृक्ष की जड़ से उसने साबुन भी बनाया। वह मोटा और भद्दा हो गया तब भी उसके हाथ मजबूत और उँगलिया निपुण बनी रही। उसने अपने आड़ू के वृक्षो को बड़ा किया और अपने बगीचे की ओर छोटे से राज्य की तरह गर्व से देखता था, वह रेड इण्डियन औरतो को पानी सीचने मे कभी कमी नही करने देता था। उसने अपने पहले के तीनो बेगार नौकरो को व्याह करने के लिये अपने यहाँ से मुक्त कर दिया, और उनके स्थान पर दूसरे लड़के आये, जो अपने कामो मे उनसे भी अधिक अच्छी तरह प्रशिक्षित किये गये।

बल्जार के अत्याचार धीरे-धीरे बढने लगे, और अकोमा के लोग कभी-कभी विद्रोह करने के लिये उद्यत हो उठते थे। परन्तु वे यह अनुमान नही लगा सके थे कि पादरी का जादू कितना शक्तिशाली है और उसकी परीक्षा करने से डरते थे। इसमे तो कोई सन्देह नही कि स्पेन के सम्राट ने इसी पादरी के कहने पर सेंट जोसेफ का पवित्र चित्र भेजा था, और वह चित्र सूखा न पडने देने मे उन सभी स्थानीय लोगो की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुआ था, जो जादू-टोने आदि से पानी बरसाने का प्रयास करते थे। समुचित ढग से प्रार्थना एव पूजा करने पर चित्र पानी बरसाने से कभी नही चूका था। जब से बल्जार वह चित्र यहाँ लाया, तब से अकोमा मे अनावृष्टि आदि से खेती कभी नही नष्ट हुई, यद्यपि समीपस्थ लगूना और जूनी में ऐसे-ऐसे सूखे पडे कि लोगो को अकाल के लिये सचित अनाज के सहारे दिन काटने पडे। (इस प्रकार की स्थिति अत्यन्त सकटापन्न स्थिति समझी जाती थी।)

अकोमा में सार्वजनिक पूजा (मास)

लगूना के रेड इण्डियन अकोमा में बरावर अपने प्रतिनिधि-मण्डल भेजते रहते थे कि वे उन्हे किराये पर वह पवित्र चित्र दे दें, परन्तु फे वल्ज़ार ने उन्हे चेतावनी दे रखी थी कि वे उसे कभी वाहर न जाने दें। इसलिये वे सोचते थे कि यदि इतना शक्तिशाली सरक्षरण हटा लिया जायगा, या यदि पादरी अपने जादू को उनके विरुद्ध घुमा देगा, तो वस्ती के लिये इसका परिरणाम विनाशकारी हो सकता है। अच्छा है कि पादरी अच्छा-से-अच्छा अनाज ले, अच्छी-से-अच्छी भेंडें ले, अच्छे-से-अच्छे वर्तन ले और तीन नौकरो को भी अपने वेगार मे रखे। इस प्रकार वह धर्म-प्रचारक पादरी तथा उसकी प्रजा दिखावटी मैत्री के साथ येन केन प्रकारेण खीचे जा रहे थे।

एक वार गरमी के दिनो मे पादरी ने, जो अव अत्यधिक भारी भरकम शरीर के काररण लम्बी यात्राओ पर नही जा सकता था, निर्णय किया कि कुछ उसकी श्रेणी के लोग उसके यहाँ आवें, जो उसकी सुन्दर वाटिका की, उसके निराले रसोई घर की, उसके हवादार छज्जे की, जहाँ सुन्दर कालीन विछे थे, पानी के घडे रखे थे तथा जहाँ वह पूजा करता था और भोजन के पश्चात् विश्राम करता था, प्रशसा करें। यह सोचकर उसने 'सेंट जान्स डे' के पश्चात् पडने वाले सप्ताह मे भोजन की एक दावत देनें का आयोजन किया।

उसने अपने नौकर को जूनी, लगूना एव इज़लेता भेजकर वहाँ के पादरियो को भोज के लिये आमन्त्रित किया। नियत दिन पर वे चार पादरी (जूनी में दो पादरी थे) आये। अस्तवल की देख-रेख करनेवाला लडका पर्वत-खण्ड के नीचे तैनात किया गया, जिससे वह पादरियो के जानवरो को वहाँ सम्भाल सके और उन्हे ऊपर आने का रास्ता आदि वता सके। ऊपर सीढियो के पास ही वल्ज़ार ने उनका स्वागत किया। उन्हे सारा स्थान दिखलाया गया और वे दोपहर के पहले प्रकोष्ठ मे घूमते तथा वातें करते रहे, जो वडा ही ठण्डा एव शान्तिपूर्ण था, यद्यपि वाहर

चट्टान इतना जल रहा था कि उसे छूना भी कठिन था। अगूरी लता की पत्तियाँ मद हवा मे धीरे-धीरे डोल रही थी और गाजर एव प्याज के पौधो के पास की मिट्टी से, जो गत सध्या को जल से तर की गयी थी, परन्तु अब सूखने लगी थी, बडी सोधी बास उठ रही थी। मेहमानो ने समझा कि उनका मेज़बान बडे सुख से रहता है, और वे उसका भेद जानने के लिये लालायित हो उठे। यदि वह अपने इस हवादार स्थान के सम्बन्ध मे थोडी डीगें हाँकता था, तो उसे दोष नही दिया जा सकता था।

भोजन तैयार करने मे वल्ज़ार ने बडा परिश्रम किया था। जिस मठ मे उसने भोजन बनाने की विधि सीखी थी, वह सेवाइल जाने वाले मुख्य राजपथ के समीप पडता था, स्पेनिश सामत लोग तथा सम्राट स्वय वहाँ मनोविनोद के लिये कभी-कभी रुक जाया करते थे। उस मठ के विशाल रसोईघर मे, जिसमे भिन्न आकार के माँस भूनने के सीकचे थे, कोई तो इतना छोटा कि उस पर लवा चिडिया भूनी जाय और कोई इतना बडा कि उस पर सुअर भी भूना जा सके, पादरी ने चटनी आदि बनाना भी सीख लिया था और अकोमा से अपने एकान्त जीवन मे, भोजन बनाने मे स्वाभाविक रुचि के कारण, उसने अपनी कला मे और भी प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। सामानो की कमी उसे हतोत्साहित करने के बजाय, प्रेरणा प्रदान करने वाली सिद्ध हुई थी।

निस्सन्देह, अतिथि पादरियो को इतना सुन्दर भोजन करने को कभी नही मिला था, जिसे वे आज इस ठण्डे कमरे मे, जिसकी खिडकियो के परदे केवल इतना खुले थे कि नीचे जलते हुए मरुस्थल की एक लीक ही दिखलाई पडती थी, बैठे बडे आनन्द से कर रहे थे। उनका मेज़बान उनसे बडे दम्भपूर्ण ढग से बतला रहा था कि अगली बार जब वे यहाँ आवेंगे, तो वे प्रकोष्ठ मे एक फव्वारा भी देखेंगे। उसे अपने भूखे अतिथियो को चटनी, अचार तथा 'सूप' को सम्भल कर खाने के लिये आगाह करना पड़ा तथा यह कहना पड़ा कि वे अभी और आने वाली वस्तु के लिये भूख

बचा कर खायँ। भूने हुए मास का 'कोर्स' एक जगली 'टर्की' का था, जो बहुत ही अच्छी ढग से बनाया गया था, परन्तु हाय, उसे तो चखने का अवसर ही नही आया। उसके पहले जो 'कोर्स' आया, उसे मेजबान ने बडे ही यत्न से स्वय ही तैयार किया था और रसोइये के मत्थे कुछ भी नही छोडा था। वह था खरगोश के मास की बनी कोई कढी जो एक चीनी मिट्टी के नकाशदार सुन्दर बर्तन मे भर कर लायी गयी। उसके साथ एक चटनी भी आयी, जिसे पादरी ने बहुत दिनो के परिश्रम के पश्चात् विभिन्न प्रयोगो के बाद तैयार किया था। कढी मे ऊपर कटे हुए गाजर एव प्याज भी तैर रहे थे। जिस बर्तन मे यह कढी रसोईघर से लायी गयी, वह बडा तो था, लेकिन बहुत बडा नही, क्योकि वह बिलकुल मुँह तक भरा हुआ था। भोजन परसने का काम अस्तबल की देख-रेख करने वाला लडका कर रहा था, क्योकि रसोइया अब भी भूनने आदि के काम मे व्यस्त था। लडका बडी मुस्तैदी एव सफाई से काम कर रहा था। पादरी साहब उस पर प्रसन्न हो रहे थे और सोच रहे थे कि वे उसे उसके परिश्रम के लिये कोई चाँदी या जस्ते का पदक प्रदान करेंगे।

जिस समय यह कढी खाने के कमरे मे पहुँची, इजलेता के पादरी कोई मजेदार कहानी सुना रहे थे, जिस पर सभी लोग ठहाका मार कर हँस रहे थे। परसने वाला लडका, जो थोडी बहुत स्पेनिश भाषा जानता था, कदाचित् कहानी के उस अग को समझने का प्रयास कर रहा था, जिस पर पादरी लोग इतना हँस रहे थे। जो भी हो, उसका ध्यान कढी के बर्तन पर से हट गया, और ज्योही वह जूनी के बडे पादरी के पीछे पहुँचा, उसका बर्तन टेढा हो गया और कढी का लाल-लाल शोरबा काफी मात्रा मे पादरी के सिर और कधो पर गिर गया। वल्जार यो ही क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति था और आज तो उसने अगूरी ब्राडी भी काफी पी ली थी। उसने झट सामने पडा हुआ जस्ते का खाली मग उठा लिया और बेशऊर लडके को गाली देता हुआ तान कर मारा। मग जाकर लड़के की कनपटी पर लगा। कढी

का वर्तन उसके हाथ से छूट कर गिर पडा, लडका एकाध कदम लडखडाया और गिर पडा। फिर न तो वह वहाँ से उठा और न हिला डुला। जूनी का पादरो चिकित्सा आदि मे निपुण था। आँख पर से गोरवा पोछते हुए वह उठा और जाकर लडके को देखने लगा।

"यह तो मर गया," उसने धीरे से कहा। फिर तुरन्त अपने छोटे पादरी का हाथ पकड कर उसने उसे उठाया और दोनो विना एक शब्द बोले बगीचा पार करते हुए सीढियो की ओर दौडे। एक क्षण वाद ही लगूना और इज्लेता के पादरी भी वहाँ से चुपचाप भाग निकले। चारो मेहमान आश्चर्यजनक गति से सीढियो से नीचे उतरे और अपने खच्चरो पर सवार होकर मैदान मे सरपट भाग निकले।

वल्जार अपने आवेश एव क्रोध के परिणाम को भुगतने के लिये अकेला रह गया। दुर्भाग्य से, उधर रसोइये ने जब यह देखा कि खाने के कमरे से वहुत देर से कोई आवाज नही आ रही है, तो जिज्ञासा मे वह उठ कर आया और कमरे मे ठीक उसी समय झाँका जव अन्तिम दोनो पादरी प्रकोष्ठ से बाहर हो रहे थे। उसने अपने साथी को फर्श पर पड़े देखा और चुपके से वहाँ से एक ऐसे मार्ग से अदृश्य हो गया, जिसे अकेला वही जानता था।

जब फ्रे वल्जार रसोईघर मे गया, तो वह खाली थी, टर्की अव भी सीकचे मे पडी हुई आग पर जल रही थी। अव उसे इसे खाने की इच्छा नही रह गयी थी। वास्तव मे उसे उस समय वडी ग्लानि एव व्याकुलता हुई, उसे अपने भागे हुए मेहमानो पर क्रोध भी आ रहा था तथा उनके प्रति घृणा भी हुई। एक बार तो उसके मन मे आया कि वह भी उन्ही की तरह भाग निकले, परन्तु उसने सोचा कि कुछ दिनो के लिये भाग जाने से उसकी स्थिति ही तो कमज़ोर होगी और स्थायी रूप से भाग जाने का प्रश्न ही नही उठता। उसका बगीचा अपनी जवानी पर था, उसके आड़ू के फल पकने ही को थे और उसके अगूर की लता मे गुच्छे लटक रहे थे।

विना किसी प्रेरणा के उसने टर्की को सीकचे पर से उठा लिया, इसलिये नही कि उसे खाने की तनिक भी इच्छा थी, वरन् दया की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति से उसने ऐसा किया, मानो यदि वह चिडिया और देर तक आग पर रहती, तो उसे अधिक कष्ट होता। फिर वह अपने छज्जे पर वैठ गया और वैठकर दैनिक पूजा की पुस्तक पढने लगा, जिसे उसने कई दिन से, इस भोज के आयोजन मे व्यस्त रहने के कारण, नही पढा था। उसने उस कढी को तैयार करने में कुछ उठा नही रखा था, जिसने उसका सत्यानाश कर दिया था।

वह हवादार छज्जा, जहाँ वह दोपहर के भोजन के पश्चात् विश्राम किया करता था, हवा मे लटकते हुए चिडिया के पिंजडे की भाँति था। उसके अगल-वगल के खुले हुए मेहरावदार दरवाजो से उसने वस्ती के सटे हुए मकानो पर दृष्टि दौडायी और फिर नीचे विशाल मैदान को देखने लगा, जिसमे इधर-उधर अनेक पर्वत-खण्ड छिटके हुए थे। उसका किसी काम में मन नही लग रहा था। वस्ती विल्कुल निस्तब्ध एव शात थी। साधारणतया प्रतिदिन इस समय गाँव की औरते वर्तन-कपडे आदि धोती रहती थी, और वच्चे हौजो के पास खेलते रहते थे तथा टर्कियो के पीछे भागते रहते थे। परन्तु आज चट्टान निपट निस्तब्धता मे सूर्य की भयानक गर्मी से तप रहा था और उस पर एक भी प्राणी नही दीख रहा था, परन्तु हाँ, एक व्यक्ति अब वहाँ दीख रहा था, जो कुछ देर पहले वहाँ नही था। चट्टान की सीढियो के पास कुछ काली चमकदार वस्तु दिखलायी पड रही थी, वह था किसी रेड इण्डियन का सिर। पादरी को अब सन्देह हुआ कि रेड इण्डियनो ने सीढियो के पास सतरी तैनात कर दिया है।

अब पादरी घवराने लगा और पछताने लगा कि क्यो नही वह भी समय रहते ही पादरियो के साथ सीढियो से नीचे उतर गया। इस पर्वत-खण्ड से दूर ससार के किसी भी स्थल मे पहुँच जाने की वह कामना करने लगा। हाँ, फादर रैमिरेज का गधे वाला मार्ग तो है, परन्तु यदि रेड

इण्डियनो ने लोग एक मार्ग पर पहरा नियुक्त कर दिया है, तो दूसरे पर भी पहरा देते होगे। वह काले वालो वाला सिर अपने स्थान से एक क्षण को भी हिला-डुला नही, और मैदान मे पहुँचने के वे ही दो मार्ग थे, केवल दो ' '। इनके अतिरिक्त अन्य किसी स्थान से नीचे उतरने का अर्थ साढे तीन सौ फुट ऊँचे, खडे एव वनस्पतिहीन टीले से उतरने का प्रयास करना था जिस पर एक भी वृक्ष या झाडी नही, जिसे मनुष्य सहारे के लिये थाम सके।

सध्या होते-होते नीचे वस्ती मे पुरुषो की शिकायत भरी एक गम्भीर आवाज आरम्भ हो गयी, जो किसी मत्रोच्चारण आदि की भाँति नही थी, अपितु रेड इण्डियनो की लय के साथ एक ऐसी ध्वनि थी, जो उस समय होती थी जव किसी गम्भीर मामले पर विचार-विमर्श होता रहता था। उसे सुनकर सन् १७८० ई० के विद्रोह के समय मिशनरियो की यत्रणा की भयानक कहानियाँ वल्जार के मस्तिष्क मे कौंध गयी, किस प्रकार किसी फासिस्कन की आँखे निकाल ली गयी थी, एक मिशनरी जीवित ही जला दिया गया था और जामेज़ को वुड्ढा पादरी नगा होकर चौपाल मे रात भर घुटनो के वल चलने को वाध्य किया गया था और शराव मे चूर रेड इण्डियन उसकी पीठ पर वैठ कर उसे तव तक दौड़ाते रहे, जव तक वह थकान से गिरकर मर नही गया।

छज्जे से चद्रोदय का दृश्य वडा सुहावना लगता था। यहाँ तक कि वह इस पादरी को भी अच्छा लगता था, जिस पर किसी वस्तु का बहुत आसानी से प्रभाव नही पडता था। परन्तु आज रात तो वह यही सोच रहा था कि चद्रमा नही निकले तभी अच्छा है, क्योकि अकोमा वासियो के लिये चन्द्रमा का निकलना एक प्रकार की घडी का काम करता था और वे तभी कोई नियत कार्य आरम्भ करते थे। वह भय से उस सुनहरे हँसिये के रात के स्वच्छ नीले आकाश मे निकलने की प्रतीक्षा करने लगा।

चद्रमा निकला और उसके साथ ही अकोमा के लोग भी अपने-अपने घरो से वाहर निकले। पुरुषो का एक दल चुपचाप चलकर गिरजाघर

के प्रकोष्ठ मे पहुँचा। वे सीढियो से चढ कर छज्जे तक पहुँचे। पादरी ने उनसे कर्कश स्वर मे पूछा कि तुम लोग क्या चाहते हो, परन्तु उन्होने कोई उत्तर नही दिया। वे न तो उससे एक शब्द वोले और न आपस में ही वोले और चुपचाप उसके हाथ-पाँव वाँध दिये।

अकोमा के लोगो ने वाद को वतलाया कि पादरी ने न कोई आरजू-मिन्नत की और न तो उसने कोई विरोध ही किया। यदि उसने ऐसा किया होता, तो सम्भव है कि वे उसके साथ और भी निर्दयता से पेश आते। परन्तु वह तो अपने रेड इण्डियनो को जानता था कि यदि उन्होने सव मिल कर जव कोई निर्णय कर लिया तो कर लिया। और इसके अतिरिक्त वह एक दम्भी स्पेनियार्ड था और उसके विशाल शरीर मे साहस भी था। उसे तो आज्ञा देने की आदत थी, आरजू-मिन्नत करने की नही, और अन्त तक उसने अपने प्रति रेड इण्डियनो का सम्मान वनाये रखा।

वे उसे लेकर छज्जे से नीचे उतरे और प्रकोष्ठ को पार करके पर्वत-खण्ड के एक किनारे पर ले गये, जहाँ टीला सवसे अधिक खडा और सीधा था और जहाँ से औरतें टूटे-फूटे वर्त्तन आदि तथा अन्य कूडा-करकट नीचे फेंकती थी। वहाँ पर वहुत से लोग एकत्र थे। उन्होने उसके वँधन खोल दिये और दो-दो आदमी उसके हाथ पाँव पकड कर उसे चट्टान के ठीक छोर पर इधर-उधर झुलाने लगे। वह वजन मे भारी था और उन्होने सोचा कि इस प्रकार झुलाना खतरे से खाली नही है। उसके मुँह से एक सी-सी की आवाज के अतिरिक्त कुछ नही निकल रहा था। चारो आदमियो ने उसे जमीन पर से, जहाँ उसे रख दिया था, फिर उठाया और एक-दो वार झुला कर चट्टान के नीचे फेंक दिया।

इस प्रकार वे अपने पर्वत-खण्ड को इस अत्याचारी से, जिसे सामान्यत उन्होने वहुत पसन्द किया था, मुक्त कर सके। परन्तु वे कव तक उसे पसन्द करते रहते। प्रत्येक वस्तु की एक सीमा होती है। उसकी हत्या के वाद, उन्होने न तो गिरजाघर को अपवित्र किया और न तो पवित्र

बर्तनो आदि को तोडा-फोडा । हाँ, उन्होने पादरी के भाण्डार, सामान आदि को आपास मे लाँट लिया । औरतें अवश्य ही उसके बगीचे को पानी न पाने से सूखते हुए देख कर प्रसन्न हुई, और प्रकोष्ठ मे जाकर आडू के सूखते हुये पत्तो को तथा अँगूर के गुच्छो को लताओ मे ही सूख कर सिकुडते हुए देख कर वे हँसती थी और आपस मे वाते करती थी ।

जब कई वर्ष वाद दूसरा पादरी आया, तो उसे वहाँ अपने प्रति कोई बुरी भावना नही मिली । वह मेक्सिको का ही रहने वाला था, वह आडम्बर-पूर्ण नही था और सेम के बीजो तथा सुखाये हुए माँस मे ही सन्तोप कर लेता था, तथा वहाँ की टर्कियो को उस गरम मिट्टी मे उछलने खेलने देता था, जो कभी वल्ज़ार के बगीचे की मिट्टी थी । आड़ू के ठूँठो से वर्षों तक पीले-पीले अकुर निकलते रहे ।

अध्याय ४

सर्प विश्वास

१

पेकोस मे एक रात

बिशप की अलबुकर्क एव अकोमा यात्रा के एक मास पश्चात् मौजी फादर गैलेगोस को औपचारिक रूप से निलम्बित कर दिया गया, और फादर वेलेट ने उसके हलके का कार्य स्वय सम्भाला। पहले तो वहाँ लोगो को यह बहुत बुरा लगा, बडे-बडे कृपक तथा अलबुकर्क की आमोदी स्त्रियाँ फ्रासीसी पादरी के बहुत विरुद्ध हो गयी परन्तु उन्होने अपने सुधार तुरन्त आरम्भ कर दिये। प्रत्येक वस्तु बदल दी गयी। पर्वों के दिन जहाँ फादर गैलेगोस के जमाने में आमोद-प्रमोद चला करते थे, वहाँ अब इन दिनो बड़ी सख्ती से पूजा, आराधना आदि के कार्य चलने लगे। चञ्चल-बुद्धि मेक्सिकन जनता को शीघ्र ही धार्मिक कार्यक्रमो मे उतना ही आनन्द आने लगा, जितना दूसरो की निन्दा आदि करने मे। फादर वेलेंट ने फ्रास मे अपनी बहिन फिलोमीन को पत्र लिखा कि उनके इस हलके का मिजाज लडको के किसी स्कूल के मिजाज जैसा था, किसी एक शिक्षक के अनुशासन मे रह कर लडके अवज्ञा एव शरारत मे एक दूसरे से आगे बढने के प्रयास करते है, तथा किसी अन्य शिक्षक के अधीन वे ही बालक

आज्ञाकारी बनने तथा अन्य अच्छे कार्यों मे आगे बढना चाहते है। क्रिसमस से पहले जो नौ दिनो तक सार्वजनिक धार्मिक समारोह होता है, वह बहुत दिनो से नाच-गान आदि कार्यक्रमो के साथ मनाया जाता था, परन्तु इस वर्ष उस अवसर पर धार्मिक उत्साह पुनर्जीवित किया गया।

यद्यपि फादर वेलेंट अलबुकर्क मे एक पादरी के हलके के सभी कार्य कर रहे थे, फिर भी वे 'विकार जेनरल' थे, और फरवरी मे बिशप ने किसी अत्यन्त आवश्यक कार्य से उन्हे ला वेगास भेजा। नियत तिथि पर वे वापस नही आये और जब कई दिन बीत गये और उनका कोई समाचार भी नही मिला, तो फादर लातूर को चिन्ता होने लगी।

एक दिन सुबह ही एक रेड इण्डियन लडका बिलकुल बीमार दशा मे फादर जोसेफ के श्वेत खच्चर कटेंटो पर सवार, बिशप के आँगन मे पहुँचा और उसने बुरा समाचार सुनाया। उसने बताया कि फादर जोसेफ पेकोस पहाड के अचल मे स्थित उसके गाँव मे, जहाँ चेचक का प्रकोप हो गया था, मरने वालो का मृत्यु-सस्कार कराने के लिये रुक गये थे और स्वयं ही बीमारी के शिकार हो गये है। लड़के ने यह भी बताया कि जब वह वहाँ से साता फे के लिये रवाना हुआ, तो वह बिलकुल ठीक था, परन्तु रास्ते मे बीमार हो गया।

बिशप ने इस दूत को बगीचे के एक छोर पर बिलकुल अलग बने हुए लकडी के मकान मे रखा, जहाँ लोरेटो की 'सिस्टरें' उसकी सेवा-शुश्रुपा कर सकें। उन्होने 'मदर सुपीरियर' को एक थैले मे बीमारो के लिये कुछ दवाए तथा आराम के अन्य साधन रखने की आज्ञा दी, जिसे वे अपने साथ ले जाना चाहते थे, और अपने रसोइये फ्रेक्टोसा से अपने लिये खाने की ऐसी सामग्रियाँ बाँधने को कहा, जिन्हे वे घोडे पर यात्रा के समय अपने साथ ले जाया करते थे। जब उनका नौकर सामान ढोनेवाला एक खच्चर तथा उनका अपना खच्चर ऐंजेलिका दरवाजे पर ले आया, तो फादर लातूर ने जो अब तक घुडसवारो वाला 'ब्रीचेस' तथा चमडे का जैकेट

पहने तैयार हो गये थे, अपने सुन्दर जानवर को देख कर सिर हिलाया और कहा—

"नही, इसे कर्टेटो के साथ ही रहने दो। यह नया फौजी खच्चर काफी मजबूत है, और अकेले इसी से काम चल जायगा।"

रेड इण्डियन दूत के आने के दो घण्टे पश्चात् बिशप साता फे से रवाना हो गये। वे सीधे पेकोस गाँव को जा रहे थे, जहाँ से वे जैसिटो को अपने साथ लेने को थे। वे दुपहरी ढलते-ढलते गाँव मे पहुँचे, जो चारो ओर लाल पत्थर की चट्टानो से घिरा हुआ था तथा उनके एक ओर देवदारु वृक्षो वाला पहाड फैला हुआ था और सामने सदाबहार की झाडियो एव देवदारु जाति के ही एक अन्य वृक्ष का जंगल फैला हुआ था। बिशप का विचार पेकोस मे घोड़े बदल कर उसी दिन पर्वतो को पार करते हुए सीधे आगे बढने का था, परन्तु जैसिटो तथा उनके पास एकत्र वृद्ध रेड इण्डियनो ने उनसे रात भर वही रुकने का आग्रह किया और कहा कि वे दूसरे दिन बडे तडके ही रवाना हो जॉय। नीले स्वच्छ आकाश मे सूर्य चमक रहा था, परन्तु पश्चिम दिशा में, पहाड़ के पीछे, काले रग के घने बादल का एक विशाल टुकडा पर्वत-खण्ड की भाँति स्थिर खडा था। बूढो ने उसकी ओर देख कर सिर हिलाया।

"बडे जोर का तूफान आयेगा," गवर्नर ने गम्भीरता से कहा। बडी अनिच्छा से बिशप उतर पडे और खच्चरो को जैसिटो के हवाले किया, उन्हे लगा जैसे वे अमूल्य समय नष्ट कर रहे है। रात होने मे अब भी एक घण्टे की देर थी और इतनी देर वे गाँव तथा पुराने मिशन गिरजाघर के खण्डहर के बीच के चट्टानी मैदान मे टहलते रहे। सूर्य अब एक लाल विशाल गोले के रूप में डूबने को था। वह चीड के वृक्षो से आच्छादित पर्वत-शिखर पर चमकते हुये ताँबे के रग का लाल प्रकाश फेंक रहा था तथा उस स्याही के रग के अशुभ-सूचक बादल के छोरो को पिघले हुए चाँदी की भाँति चमका रहा था। गिरजाघर की लाल मिट्टी की विशाल दीवारें,

जो ईंट के चूरे की तरह लाल थी, आधी गिरी हुई दशा मे विषाद की कहानी कह रही थी—छत का एक भाग गिर चुका था और शेष गिरने ही वाला था।

इस घडी फादर जोसेफ बहुत ही बीमार दशा मे एक रेड इण्डियन गाँव के गन्दे एव अस्वस्थ वातावरण मे, जाडे के दिनो मे, पडे हुए थे। बिशप सोच रहे थे कि आखिरकार वे अपने मित्र को इस कठिन एवं खतरनाक जीवन मे क्यो घसीट लाये? फादर वेलेंट बचपन से ही दुर्बल शरीर के थे, यद्यपि उनमे अथाह उत्साह के परिणाम-स्वरूप कष्ट झेलने की अद्भुत शक्ति थी। माटफेराड धार्मिक विद्यालय के शिक्षको की आदत बच्चो को अनावश्यकता से अधिक लाड-प्यार करने की नही थी, परन्तु प्रत्येक वर्ष वे इस युवक को विश्राम के लिये ऊँचे वाल्विक पहाडो पर भेज दिया करते थे, क्योकि कालेज-जीवन के अवरुद्ध वातावरण मे रहते-रहते उनकी शक्ति क्षीण हो जाती थी। जब वे और फादर लातूर ओहिओ मे धर्म-प्रचारको का काम कर रहे थे, तो दो बार फादर जोसेफ मृत्यु के निकट पहुँच चुके थे, एक बार तो वे हैजा से इतना अधिक बीमार हो गये थे कि समाचार-पत्रो ने उनका नाम मृतको की सूची मे छाप दिया था। उस अवसर पर उनके ओहिओ के बिशप ने उनका नाम 'मृत्युञ्जय' रख दिया था। सच ही तो है, फादर लातूर ने स्वय को आश्वस्त किया, 'ब्लाचेट' ने मृत्यु को इतनी बार चकमा दिया था कि यह सम्भावना तो बराबर ही थी कि एक बार फिर वे ऐसा कर सकेंगे।

गिरजाघर के खण्डहरो मे चक्कर लगाते हुये बिशप ने देखा कि पवित्र बर्तन आदि रखने वाला कक्ष अब भी साफ था और उसमे सील नही थी, और उन्होने निर्णय किया कि वे इसी स्थान मे, अदर की दीवारो मे बनी हुई मिट्टी की बेंचो पर कम्बल ओढ रात बिता देगे। वे इस कमरे की जाच करने मे तल्लीन थे कि बडी तेज हवा चलने लगी और बडी जल्दी अँधेरा छा गया। बस्ती के मकानो के छोटे-छोटे दरवाजो से जलती हुई

आग का लाल प्रकाश झलक रहा था, जो उस समय आँखो को असाधारण रूप से सुहावना लग रहा था। उन्होने बाहर चट्टान पर जैसिटो की दुबली-पतली आकृति देखी, जो खडा खडा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह अपना कम्बल सिर पर ओढे हुए था और हाथ उठा कर कम्बल के एक भाग से हवा से बचने का प्रयास कर रहा था।

उस रेड इण्डियन लड़के ने उन्हे बताया कि भोजन तैयार है और विशप उसके साथ उन छोटी-छोटी झोपड़ियो की कतार मे से उसकी अपनी कुटी मे गये। ये सभी झोपडियाँ एक ही ढग की तथा एक दूसरे से मिली हुई एक साथ ही बनी थीं। जैसिटो के दरवाजे के पास एक सीढी थी, जो दूसरे तल्ले पर जाने के लिये लगी थी, परन्तु वह किसी दूसरे परिवार का निवास-स्थान था, जैसिटो के घर की छत ऊपर वाले परिवार के घर का बरामदा था। विशप ने नीचे दरवाजे मे सिर झुकाकर प्रवेश किया और झोपड़ी के अन्दर प्रवेश किया, उस कमरे की फर्श चौखट से एक कदम नीचे थी—आँधी तूफान से बचने का रेड इण्डियनो का यही तरीका था। जिस कमरे मे वे उतरे, वह लम्बा एवं सकरा था, उसकी दीवारो पर सफाई से सफेदी की हुई थी; अपनी सादगी के कारण वह देखने मे बडा स्वच्छ लग रहा था। दीवारों पर लोमडी की एकाध खालें तथा तार में पिरोयी हुई सूखी लौकियाँ एव लाल मिर्चे टगी हुई थी। गाढे रग के कम्बल, जिन पर जैसिटो को बडा नाज़ था, मिट्टी की बनी एक बेच पर लपेट कर रखे हुए थे—यही पर वह और उसकी पत्नी आग के पास सोते थे। उस बेच की मिट्टी दिन भर मे गरम हो जाती थी और रात भर तक उसकी गरमी बनी रहती थी, जिस प्रकार रूसी कृषको के 'स्टोव-बेड' होते थे। भट्ठी पर एक बर्तन मे सेम के बीज तथा सुखाया हुआ माँस पक रहा था। देवदारु की जलती हुई लकडी का सुगध युक्त धुआँ कमरे मे फैल रहा था। जैसिटो की पत्नी क्लारा पादरी को देख कर मुस्करायी। उसने माँस की कढी तश्तरियो मे परसा और विशप तथा जैसिटो अपनी-अपनी प्लेटें लेकर भट्ठी

के पास फर्श पर बैठ गये। उन दोनो के बीच क्लारा ने एक बर्त्तन मे लौकी के बीजो के साथ सेंकी हुई रोटियाँ रख दी। रेड इण्डियनो मे यह रोटी बहुत अच्छी वस्तु समझी जाती थी, जैसे कि श्वेतो मे किशमिश की रोटी समझी जाती थी। बिशप ने ईश्वर का नाम स्मरण किया और हाथ से रोटी तोड़ी। दोनो आदमियो ने भोजन आरम्भ किये और क्लारा बैठी उन्हे देख रही थी तथा बीच-बीच मे चमडे की डोर से छत से लटके हुये मृगछाले का बना एक छोटा सा पालना हिलाती-डुलाती जाती थी। पूछने पर जैसिंटो ने दु खी होकर बताया कि बच्चा बीमार है। फादर लातूर ने उसे देखने की इच्छा नही प्रकट की, वे जानते थे कि वह कई चीथडो मे लपेटा होगा, यहाँ तक कि ठण्डी हवा से बचाने के लिये उसका सिर और मुँह भी ढँका होगा। रेड इण्डियनो के बच्चे जाडे मे कभी नही नहलाये जाते थे, और बीमार बच्चो के लिये कोई चिकित्सा आदि बतलाना बेकार था। इस सम्बन्ध मे रेड इण्डियन लोग सब की अनसुनी कर देते थे।

यह बडे दु ख की बात थी कि वे जैसिटो के बच्चे के लिये कुछ नही कर सकते थे। पेकोस गाँव मे बहुत से पालने नही थे। यह कबीला धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा था, शिशु-मरण बहुत अधिक था, नव दम्पतियो के बच्चे बहुत कम पैदा होते थे,—ऐसा लगता था, जैसे प्रजनन शक्ति ही क्षीण हो गयी हो। बार-बार चेचक के प्रकोप मे बहुत से लोग मर गये थे।

जन सख्या की उत्तरोत्तर कमी के अन्य भी कारण थे, जिन पर साता फे के बहुत से भलेमानस विश्वास करते थे। पेकोस के सम्बन्ध मे अन्य गाँवो की अपेक्षा बहुत अधिक अध-गाथाये थी, ऐसा कदाचित् इसलिये था कि श्वेत लोग इस गाँव से अत्यधिक आकृष्ट हुए थे और अपेक्षाकृत वह अधिक ऐतिहासिक था। यह कहा जाता था कि यहाँ के लोग अनादिकाल से ही पहाड की किसी खोह मे एक पवित्र आग बराबर जलती रखे हुए थे, यह आग कभी बुझने नही पायी थी तथा श्वेत लोगो को उसके सम्बन्ध मे कभी

नही बताया गया था। कहा तो यह जाता था कि इस आग को बराबर जलाये रखने का काम जिन व्यक्तियो को दिया जाता था, और इस काम के लिये कुनबे के सर्वश्रेष्ठ नवयुवक ही चुने जाते थे, उनकी शक्ति इस काम मे क्षीण हो जाती थी। फादर लातूर ने सोचा कि कदाचित् ही यह सच हो। किसी पहड की खोह में, जहाँ लकडी की इतनी प्रचुरता हो, किसी आग को, जो इतनी सूक्ष्म हो कि शताब्दियो तक उसे गुप्त रखना सम्भव हो सके, जलाये रखना इतना कठिन क्यो हो ?

और, फिर सापो की भी गाथा थी, जिसे प्रथम बार प्रारम्भिक अन्वेपको (स्पेनिश और अमेरिकन दोनो) ने बतायी और जिस पर तब से ही विश्वास किया जा रहा है। गाथा यह थी कि इस कबीले की सर्प-पूजा की एक विचित्र परम्परा थी, वे विषधर सर्पों को अपने मकानो मे छिपा कर रखते थे, और उन्होने पहाड मे कही एक विशाल अजगर को घेर कर रखा था, जिसे वे कुछ विशेष भोज आदि के अवसर पर बस्ती में लाते थे। कहा जाता है कि वे इस विशाल अजगर को छोटे-छोटे शिशुओ की बलि देते थे, और इस प्रकार उनकी सख्या कम होती गयी।

यह अपेक्षाकृत बहुत अधिक युक्ति सगत जान पड़ता था कि श्वेत लोगो द्वारा यहाँ लाये गये सक्रामक रोग ही इस कबीले की उत्तरोत्तर घटती के वास्तविक कारण थे। रेड इण्डियनो मे चेचक, लाल बुखार तथा कूकर-खाँसी उतने ही मृत्यु-कारक सिद्ध होती थी, जितना आन्त्रिक ज्वर और हैजा। निस्सदेह, कबीले वालो की सख्या वर्ष प्रति वर्ष कम होती जा रही थी। जैसिंटो की झोपड़ी जीवित बस्ती के एक किनारे पर थी, उसके पीछे मृत बस्ती की लम्बी चट्टानी रेखा थी—खाली झोपड़ियाँ जो आँधी, वर्षा, तूफान आदि से नष्ट हो गयी थी, और अब मिट्टी और पत्थर के ढेर ही रह गये थे। बस्ती में एक सौ से अधिक बालिग नही थे।* कारोनैडो

* वास्तव मे, जब अमेरिका ने न्यू मैक्सिको पर अधिकार किया, तो पेकोस का यह गाँव वीरान हो चुका था।

के अभियान के समय के समृद्ध एव घनी आबादी वाले इस नगर मे अब इतना ही कुछ शेप था। उसकी रिपोर्ट के अनुसार, उस समय इस रेड इण्डियन नगर मे छ. हजार प्राणी रहते थे। उनके हरे-भरे खेत थे जिनकी सिचाई पेकोस नदी से की जाती थी। नदियो मे मछलियाँ बहुतायत से पायी जाती थी, जगलो मे खूब शिकार मिलते थे। बस्ती वस्तुत इन हरे-भरे पर्वतो के घुटनो पर पलती थी, जैसे कोई दुलारा बच्चा हो। और, दूसरी ओर, गाँव के सामने सदावहार की झाडियो से युक्त पठारी मैदानो मे स्पेनियार्ड तम्बू डाले डटे हुए थे और अपने इन अभागे मेजबानो से अनाज, जानवरो की खाले एवं रोवें, सूती कपडे आदि वसूल करते थे। कहा जाता था कि यही से वे वसत ऋतु मे क्वीवेरा के सात सुनहरे नगरो की खोज मे अपनी अगामी यात्रा पर रवाना हुए थे और अपने साथ पेकोस गाँव से अपहरण किये हुए गुलाम एव रखेल औरते ले गये थे।

आग के पास वैठे हुए तथा पहाडो से पठार पर गरजती हुई हवा की ध्वनि सुनते हुए फादर लातूर यही बाते सोच रहे थे, और वे यह सोचने लगे कि क्या उसी आग के पास बैठा हुआ जैसिटो भी वही बातें सोच रहा है। वे जानते थे कि यह हवा सूर्यास्त के समय वाले उन काले वादलो के कारण वह रही है, परन्तु यह भी तो हो सकता है कि वह किसी अधकारमय अतीत की ही गाथा सुना रही हो। इस भयानक हवा के विरुद्ध उठने वाली अकेली मानव आवाज पालने मे वीमार पडे हुए बच्चे की कराह ही थी। क्लारा एक कोने में वैठी हुई चुपचाप खा रही थी, जैसिटो आग की ओर टकटकी लगाये था।

विशप ने आग की ही रोशनी मे एक घण्टे तक धार्मिक पुस्तक पढी। फिर हड्डियो तक गरम होकर और यह निश्चित् होकर कि उनके कम्वल का वडल भी खूब गरम हो गया होगा, वे जाने के लिये उठे। जैसिटो भी कम्वल तथा अपना एक भैसो वाला कपडा लेकर उनके पीछे चला। वे लाल दरवाज़ो की एक कतार से सामने से गुज़रते हुए, वनस्पतिहीन चट्टानी

मैदान पार करके गिरजा के खण्डहरो में पहुँचे, जिसकी पार्श्ववर्ती दीवारें अपने सहारो पर अडी हुई अब भी तूफान का सामना कर रही थी। तारो का क्षीण प्रकाश खण्डहर के अदर पहुँच रहा था।

२

गुफा-द्वार

विशप को प्रातःकाल बहुत जल्दी ही उठने मे कोई कठिनाई नही हुई। आधी रात के बाद उनका शरीर शीत से ठिठुरने और अकडने लगा। बिस्तर पर ही पडे-पड़े उन्होने प्रार्थना की, उन्हे फादर वेलेंट का यह कथन याद आया कि यदि आप पहले अपनी प्रार्थना कह लें, तो फिर आपको दिन में अन्य कार्यों के लिये बहुत समय मिलेगा।

निस्तब्ध बस्ती में से होकर वे जैसिटो के दरवाज़े पर पहुँचे और उसे जगाकर आग जलाने को कहा। उधर वह लडका खच्चरो को तैयार करने गया और इधर फादर लातूर ने अपने थैले से कॉफी बनाने का बर्तन, टीन का प्याला तथा एक मेक्सिकन डबल रोटी निकाली। इस रोटी और बिना दूध की कॉफी के सहारे वे कई दिन काट सकते थे। जैसिटो बिना नाश्ता किये ही रवाना हो जाना चाहता था, परन्तु फादर लातूर ने उसे बैठा लिया और डबल रोटी उसे भी खिलायी। रेड इण्डियन घरो मे डबल रोटी बहुत कम ही मिलती है। क्लारा अब भी अपने बच्चे के साथ उस मिट्टी की बेंच पर सो रही थी।

चार बजे वे सडक पर थे। जैसिटो कम्बल आदि ढोने वाले खच्चर पर सवार था। वह अपने यहाँ के पहाड़ी रास्तो से भली-भाँति परिचित था; अत वह अंधेरे में भी उनका अनुसरण कर सकता था। दोपहर होते-होते खच्चरो को थोड़ा विश्राम देने के विचार से विशप ने थोडी देर रुकने की बात कही, परन्तु उनके पथ-प्रदर्शक ने आकाश की ओर देखकर सिर हिला दिया। सूर्य का कही पता नही था, वायुमण्डल धुंधला हो रहा था

और बर्फ पड़ने के लक्षण दीख रहे थे। शीघ्र ही बर्फ पडने लगी—पहले तो धीरे-धीरे, परन्तु वह उत्तरोत्तर बढती गयी। वायुमण्डल मे तैरते हुए हिम-चूर्णों के कारण उनके सामने चीड के वृक्षो की लम्बी कतार दृष्टि मे उत्तरोत्तर छोटी होती गयी। दोपहर के थोडी देर पश्चात् हवा के एक झोंके ने यात्रियो को बर्फ के भँवर मे डुबो दिया और फिर भयकर तूफान आरम्भ हो गया। तूफान समुद्री तूफान जैसा था और वायुमण्डल हिम-चूर्णों से पूर्णत· आच्छादित हो गया। बिशप मुश्किल से अपने पथ-प्रदर्शक को देख पा रहे थे—वे उसके कुछ ही अंग देख पाते थे, कभी सिर दिखायी पडा तो कभी कधा और कभी केवल उसके खच्चर की काली पूँछ ही। मार्ग के चीड़ वृक्ष एक क्षण के लिये दिखलायी पडे और फिर बर्फ के बवंडर मे पूर्णत अदृश्य हो गये। मार्ग, सभी सीमाचिह्न तथा स्वय पर्वत भी लुप्त हो गये।

जैसिंटो खच्चर पर से नीचे कूद पड़ा और कम्बल का बडल नीचे उतार लिया। थैले बिशप को फेंक कर देते हुए उसने चिल्लाकर कहा—'मेरे साथ आइये, मै एक स्थान जानता हूँ। जल्दी कीजिये फादर।"

बिशप ने आपत्ति की कि वे खच्चरो को नही छोड सकते परन्तु जैंसिटो ने कहा कि उन्हे भाग्य के सहारे छोड़ दीजिये।

अगला घण्टा फादर लातूर की कष्ट झेलने की शक्ति की परीक्षा का समय था। उनको कुछ भी नही दिखायी पड़ रहा था और मुँह बाये वे हाँफ रहे थे। वे अस्पष्ट दीख पडने वाली चट्टानो पर येन केन प्रकारेण चढ पा रहे थे, मार्ग मे गिरे हुए वृक्षो से टकरा कर गिरते थे, फिर उठते थे, गहरे गड्ढो मे गिर पड़ते थे, फिर निकलते थे, परन्तु प्रतिक्षण वे रेड इण्डियन लड़के के कधो पर पडे लाल कम्बलो के बडल को देखते हुए, उसी का अनुसरण कर रहे थे, जो लडके के धुँध मे अदृश्य हो जाने पर भी दिखलायी पडता रहता था।

अचानक बर्फ मे कमी सी प्रतीत हुई। पथ-प्रदर्शक भी अचानक एक

गया। विशप ने देखा कि वे पर्वत की किसी बाहर निकली हुई चट्टान के नीचे खडे थे, जो तूफान से रक्षा कर रही थी। जैसिटो ने कम्बलो का बडल ज़मीन पर रख दिया और उस खड़े टीले पर चढने की तैयारी करने लगा। ऊपर दृष्टि डालते हुए विशप ने चट्टानो मे एक विचित्र आकृति देखी। चट्टान की एक सुडौल सी परत और ठीक उसी के ऊपर वैसी ही एक दूसरी परत, तथा उन दोनो के बीच मुँह की आकृति का एक द्वार। उनको देखकर ऐसा लगता था, जैसे वे पत्थर के दो विशाल ओठ हो, जो तनिक खुले हो और आगे बढे हुए हो। जैसिटो सुपरिचित गड्ढो के सहारे इस द्वार तक चढ गया। वहाँ पहुँच कर वह निचली चट्टान पर लेट गया और विशप को भी सहारा देकर ऊपर चढा लिया। उन्हे वही प्रतीक्षा करने को कहकर वह सामान ऊपर चढाने फिर नीचे चला गया।

कुछ देर पश्चात् विशप जैसिटो तथा सामान के पीछे-पीछे इस गुफा द्वार मे प्रवेश करके उसके गले मे नीचे उतरे। वहाँ एक लकडी की सीढी थी, जिससे वे नीचे गुफा की फर्श पर उतरे।

वहाँ उन्होने स्वय को एक गहरी कदरा मे पाया, जिसकी शकल बहुत कुछ ऊँची मेहराबो वाले गिरजाघर से मिलती-जुलती थी और जिसकी बाह्य रेखा बिलकुल अस्पष्ट एव धुँधली थी, अन्दर वही प्रकाश था, जो उस सकीर्ण गुफा द्वार से होकर नीचे पहुँचता था। यद्यपि विशप को आश्रय की भारी आवश्यकता थी, तथापि सीढी से नीचे उतरते समय वे हिचकिचाये और उन्हें इस स्थान से बड़ी घृणा हुई। गुफा के अन्दर की हवा वर्फ की तरह ठण्डी थी, वह हड्डियो तक घुस जाती थी, और वहाँ उन्हे एक भयानक दुर्गंध मालूम हुई, जो तेज़ तो बहुत नही थी, लेकिन अरुचिकर बहुत। लगभग बीस फुट ऊपर छत मे गुफा-द्वार से प्रकाश की एक क्षीण किरण आ रही थी, जो किसी जगले के आडे डडे की तरह लग रही थी।

विशप आश्चर्य से चारो ओर देख रहे थे और कदरा की लम्बाई-

चौड़ाई का अनुमान लगाने का प्रयास कर रहे थे और उधर उनका पथ-प्रदर्शक फर्श तथा दीवारो की सूक्ष्म जाँच मे लगा हुआ था। सीढी के पास ही लकडी के अधजले टुकड़ो का एक ढेर था। मालूम होता है, वहाँ आग जलायी गयी थी, और वह ताज़ी मिट्टी डालकर बुझा दी गयी थी—आग के बीच वाले भाग मे मिट्टी का एक ढेर पड़ा हुआ था। कंदरा की दीवार से टेक कर देवदारु की लकड़ी के कई गट्ठे सभाल कर रखे हुए थे। फर्श की भली-भाँति जाँच कर लेने के पश्चात् उनके पथ-प्रदर्शक ने बडी होशियारी से एक-एक लकडी उठाकर एक दूसरे स्थान पर लगाना आरम्भ किया। विशप ने सोचा कि फौरन ही वह आग जलायेगा, परन्तु वह कोई जल्दी नही कर रहा था। सचमुच लकडी का ढेर लगा लेने के वाद वह फर्श पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा। फादर लातूर ने उसे अब बिना देर किये आग जलाने को कहा।

"फादर," उस रेड इण्डियन लडके ने कहा, "मै नही कह सकता कि आपको यहाँ लाकर मैने ठीक किया या नही। मेरे कबीले के लोग इस स्थान पर अनुष्ठान आदि करते है और यह केवल हमी लोगो को ज्ञात है। यहाँ से वाहर निकलने पर आप इस स्थान को बिल्कुल भूल जाइये।"

"मै इसे निश्चय ही भूल जाऊँगा। परन्तु या तो फौरन आग जलाओ अन्यथा बाहर तूफान ही मे चला जाय। मेरी तो तबीयत यहाँ खराब होने लगी है।"

जैसिंटो ने कम्बलो का बडल खोला और सबसे सूखा कम्बल विशप को ओढा दिया। फिर वह अधजली लकडियो एव राख के ढेर के पास बैठ गया, और उसमे से पत्थर के टुकडे एकत्र करने लगा, जो जलते शोलो को घेरने के लिये वहाँ रखे गये रहे होगे। पत्थरो को अपने 'सराप' मे एकत्र करके वह कदरा की पिछली दीवार के पास ले गया, जहाँ उसमे उसके सिर से तनिक अधिक ऊँचाई पर एक सूराख सा दीख रहा

था। वह एक वड़े तरबूज़ के वरावर वडा था तथा आकार में कुछ अण्डाकार था।

पजारिटो पठार के काले ज्वालामुखी पर्वतो मे इस आकार के वहुत से छेद पाये जाते है। परन्तु यहाँ तो यही एक छेद था और उसमे विलकुल अँधेरा था और ऐसा लगता था कि उसमें से किसी एक दूसरी कदरा को रास्ता जाता था। यद्यपि वह जैसिंटो की ऊँचाई से थोडी अधिक ऊँचाई पर था, फिर भी हाथ उठाने पर वह उस तक पहुँच सकता था। विशप को यह देख कर वड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एकत्र किये हुए पत्थरो को वड़ी कुशलता से तथा बिना कोई आवाज़ किये हुए इस छेद के द्वार पर एक दूसरे से सटा कर रखने लगा और थोडी देर मे उसने सूराख विलकुल वद कर दिया। फिर उसने रखी हुई देवदारु की लकडी में से पतली-पतली खपच्चियाँ काट कर पत्थरो के वीच के छिद्रो मे ठूँसने लगा। अन्त मे उसने आग वुझाने के काम मे आयी हुई मिट्टी मे से थोडी मिट्टी लेकर उसे गुफा-द्वार मे से उडकर आयी हुई वर्फ से गीला किया। सानी हुई मिट्टी को उसने सूराख़ के मुँह पर अच्छी तरह लगा दिया और अपनी हथेली से उसे चिकना वना दिया। इस सारे काम मे उसे मुश्किल से पन्द्रह मिनट लगे होगे।

अपने इस कार्य के सम्बन्ध में विना एक शब्द वोले वह आग जलाने के काम मे लग गया। कन्दरा की दुर्गंध जो विशप को इतनी वुरी लग रही थी, लकडी के जलते ही उसकी सुगन्ध के सामने समाप्त हो गयी। आग की गरमी ने भयानक ठण्ड समाप्त करने के साथ ही साथ वहाँ की हवा को भी शुद्ध कर दिया, परन्तु फादर लातूर के कानो मे जो एक विचित्र प्रकार की आवाज़ सी वज रही थी, वह नही वन्द हुई। पहले तो उन्होने सोचा कि उन्हे सर मे चक्कर आ रहा है, जिससे कानों मे एक प्रकार की तन्त्री सी वज रही है और जो कदाचित् खून मे ठण्डक आ जाने से पैदा हुई है। परन्तु कुछ गरम एव स्वस्थ हो जाने के वाद अव उन्हे

इस कन्दरा मे एक असाधारण प्रकार के स्पदन का अनुभव हुआ। वहाँ मधुमक्खियो की भनभनाहट जैसी ध्वनि सुनाई पड रही थी या यो कहिये कि कही दूर वजने वाले ढोलो की आवाज़ सुनाई पड रही हो। कुछ देर वाद उन्होने जैसिंटो से पूछा कि क्या तुम्हे भी ऐसा लग रहा है। वह दुवला-पतला रेड इण्डियन लड़का कन्दरा मे प्रवेश करने के वाद से पहली वार अव मुस्कराया। उसने एक जलती लकड़ी उठा ली और प्रकाश के लिये मशाल की तरह उसे उठाये फादर से अपने पीछे एक सुरग मे आने को कहा। यह सुरग पहाड के अन्दर तक जाती थी और उसकी चौडाई उत्तरोत्तर कम होती जाती थी, यहाँ तक कि अन्त मे उसकी छत को हाथ से छुआ जा सकता था। वहाँ पहुँच कर, वह पत्थर की फर्श पर बनी एक दरार के पास, जो मिट्टी से वन्द कर दी गयी थी, बैठ गया और अपने शिकारी चाकू से थोडी मिट्टी खोद कर उस पर अपना कान लगा कर कुछ सुनने लगा तथा विशप को भी वैसा ही करने के लिये संकेत किया।

फादर लातूर इस दरार पर वहुत देर तक कान लगाये पडे रहे, यद्यपि उस दरार मे से वडे ज़ोर की ठण्ड आ रही थी। उन्हे ऐसा लगा जैसे वे विश्व की कोई सवसे प्राचीन ध्वनि सुन रहे हो। जो ध्वनि उन्हे उस समय सुनायी पड रही थी, वह धरती के नीचे किसी प्रतिध्वनित सुरग मे वहने वाली एक विशाल नदी की ध्वनि थी। पानी वहुत नीचे था, कदाचित् इतना नीचे कि वहाँ से पहाड की धरातल से ऊँचाई आरम्भ होती थी, जैसे कोई नदी अत्यन्त प्राचीन पर्वत की परतो के नीचे निपट अन्धकार मे वह रही हो। ध्वनि तेज धार से वहने वाले पानी की आवाज़ जैसी नही थी, अपितु एक ऐसी विशाल नदी की आवाज़ जैसी थी, जो वडे शान से अथाह जल राशि लेकर आगे वढती है।

"यह तो अद्भुत है," अन्त मे उठते हुए उन्होने कहा।

"हाँ, फादर।" जैसिंटो ने दरार मे से खोदी हुई मिट्टी पर थूकना आरम्भ किया और उसे गीली करके फिर दरार पर चिपका दिया।

जव वे आग के पास लौटे तो गुफा-द्वार से आने वाला प्रकाश पीला पड़ चुका था। विशप ने दु खी मन से देखा कि वह प्रकाश भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। उन्होने अपने थैले से कॉफी का वर्तन, एक डवल रोटी तथा वकरे के मांस का पनीर निकाला। जैसिंटो गुफा-द्वार की निचली परत पर चढ गया और चीड के वृक्ष की एक टहनी को झकझोर कर कॉफी के वर्तन तथा एक कम्बल मे वर्फ भर ले आया। जिस समय जैसिंटो इस काम में लगा हुआ था, उसी समय विशप ने अपनी जेव के फ्लास्क में से एक घूँट पुरानी लाओस ह्विस्की पी। वे किसी रेड इण्डियन के सामने शराव पीना कभी नही पसन्द करते थे।

जैसिंटो ने कहा कि वह रोटी तथा विना दूध की कॉफी पाकर अपने को वड़ा भाग्यवान् समझता था। कॉफी पीने के वाद खाली प्याले को उसने विशप को वापस किया और हाथ अपने चौडे रूमाल से पोछते हुए प्रसन्नता से हँस पडा, जिससे उसके सभी सफेद दाँत वाहर झलकने लगे।

"वडे भाग्य से हम इसके समीप पहुँच गये थे," उसने कहा। "जव हमने खच्चरो को छोड़ा, तो मेरा अनुमान तो था कि मैं यहाँ पहुँच जाऊँगा, परन्तु मैं निश्चित नही था, क्योकि मैं यहाँ कई वार नही आया था। आप डर गये थे, फादर ?"

विशप ने सोच कर उत्तर दिया, "तुमने मुझे डरने का समय ही नहीं दिया, मेरे वच्चे ! क्या तुम डर गये थे ?"

"मैने सोचा कि अव गाँव वापस नही पहुँचा जा सकता," उसने अपने कन्धे सिकोडते हुए उत्तर दिया।

फादर लातूर आग की रोशनी में वहुत देर तक अपनी पूजा की पुस्तक पढते रहे। प्रात काल से ही उनका मस्तिष्क आध्यात्मिक वातो के अतिरिक्त अन्य विपयो में लगा हुआ था। अन्त मे अव उन्हे नीद आने लगी। उन्होंने अपने साथ जैसिंटो से भी ईश्वर की प्रार्थना करायी, जैसा

कि वे हमेशा ही रात को एक साथ रहने पर करते थे, और कम्बल ओढ कर आग की ओर पाँव करके लेट गये। वे यह सोच कर सोये कि रात में वे उठेंगे और उस छोटे से अद्भुत सूराख को जरा ध्यान से देखेंगे, जिसे जैसिंटो ने इतने यत्न से बन्द किया था। मिट्टी लगा देने के बाद जैसिंटो ने उसकी ओर एक बार भी नही देखा था, और फादर लातूर ने भी रेड इण्डियनो के रीति-रिवाजो का अनुसरण करते हुए, उसकी ओर एक बार भी देखने का प्रयत्न नही किया था।

वे रात को जगे भी, और अब भी जलती आग के कारण उस कन्दरा मे काफी रोशनी थी। परन्तु वहाँ दीवार के सहारे किसी अदृश्य वस्तु पर खडा हुआ उनका पथ-प्रदर्शक था। उसके हाथ चट्टान पर सीधे फैले हुए थे, उसका शरीर दीवार से चिपका हुआ था और उसका कान उसी ताजी लगायी हुई मिट्टी पर था, जैसे वह अत्यत एकाग्र चित्त से सुनने का प्रयास कर रहा हो और इस प्रचण्ड उत्सुकता के कारण ही वह दीवार से चिपका हुआ लटका मालूम पड़ रहा था। बिशप ने बिना किसी प्रकार का शब्द किये अपनी आँखें बन्द कर ली और सोचने लगे कि ऐसा अनुमान उन्होने क्यो कर लिया था कि जब वे उठेंगे तो उनका पथ-प्रदर्शक सोता ही रहेगा।

दूसरे दिन प्रात काल वे कन्दरा मे से बाहर निकले और चमचमाती हुई दुनिया मे पुनः पहुँचे। सूर्योदय के प्रकाश मे हिमाच्छादित पर्वत-प्रदेश लाल रग का हो रहा था। बिशप एक के बाद दूसरे चीड वृक्षो को खडे देखते ही रह गये, जिन पर वह स्वर्णिम प्रभात प्रस्फुटित हो रहा था और जिनकी सभी शाखाए अछूते हिम के गुलाबी बादलो से बोझिल हो रही थी।

जैसिंटो ने कहा कि खच्चरो को ढूँढना बेकार सिद्ध होगा। बर्फ के पिघल जाने पर वह काठी, लगाम आदि ढूँढ लेगा। वे आठ मील पैदल चलकर किसी खानाबदोश के खेमे तक पहुँचे, वहाँ किराये पर घोड़े लिये और तारो के ही प्रकाश मे अपनी यात्रा पूरी की। जब वे फादर वेलेंट के

पास पहुँचे, तो वे भैसो की खाल से बने हुए विस्तर पर बैठे हुए मिले। उनका ज्वर उतर गया था और अब वे अच्छे होने लगे थे। विशप के पहुँचने के पहले ही एक अन्य सच्चा मित्र उनके पास पहुँच गया था। किट कारसन ने, जो ताओस के दो रेड इण्डियनो के साथ फिर पहाडो पर हिरन के शिकार के लिये निकला था, सुना था कि इस गाँव में चेचक का प्रकोप हो गया है और विकार यही पर हैं। वह रक्षा के लिये तुरन्त दौड पडा था और काफी हिरन का मास साथ लिये हुए तूफान शुरू होने के पहले ही बस्ती में पहुँच गया था। ज्योही फादर वेलेंट इस योग्य हुए कि वे घोडे पर बैठ सके, कारसन और विशप उन्हें साता फे वापस ले गये। यात्रा उन्होने चार दिन में पूरी की, क्योकि फादर वेलेट अभी काफी कमज़ोर थे।

विशप ने अपने वादे के अनुसार जैसिंटो की गुफा के सम्बन्ध मे कभी किसी से कोई चर्चा नही की, परन्तु उसके सम्बन्ध में उनका विस्मय से सोचना नही बन्द हुआ। रह-रह कर उन्हे उसकी याद आ जाया करती थी और घृणा मे वे कॉप उठते थे, यद्यपि वहाँ उन्हे ऐसा कोई अनुभव नही हुआ था, जिससे इस प्रकार की भावना को न्यायसगत समझा जाता। घोर आवश्यकता के समय वहाँ उन्हे आश्रय मिला था। फिर वाद को जब उन्हे इस तूफान की, यहाँ तक कि अपनी उस थकान एव परेशानी की भी याद आती थी, तो उन्हे एक प्रकार का आनन्द ही मालूम होता था, परन्तु उस कन्दरा के, जिसने शायद उनकी जान बचायी थी, स्मरण मात्र से ही वे भयभीत हो उठते थे, वे सोचते थे कि कोई भी कहानी चाहे वह कितनी ही अद्भुत क्यो न हो, उन्हे अब किसी कन्दरा में जाने का प्रलोभन नही दे सकती।

घर वापस आने पर वे अब भी उस अनुष्ठानिक कन्दरा एव जैसिंटो की विचित्र हरकतो के सम्बन्ध मे एक प्रकार की जिज्ञासा का अनुभव करते थे। इसके आधार पर पेकोस निवासियो के धर्म के सम्बन्ध में जो अनेक अप्रिय गाथाएँ थी, उनमें बहुत सी सम्भाव्य जान पडने लगी। उन्हे अब

यह पूर्ण विश्वास हो गया कि न तो श्वेत लोग और न ही साता फे के मेक्सिकन, रेड इण्डियनो के धार्मिक विश्वासों एव उनके मस्तिष्क की कार्य-प्रणाली के सम्बन्ध मे कुछ भी जानते है ।

किट कारसन ने उन्हे बताया था कि ग्लोरीटा पास और पेकोस गाँव के बीच स्थित मालगोदाम का मालिक एक व्यापारी इन रेड इण्डियनो का एक प्रकार से पडोसी बन गया था और उनके सम्बन्ध में वह किसी से भी कम नही जानता था । उससे पहले उसके बाप ने यह दूकान रखी थी और माँ पास-पडोस मे रहने वाली प्रथम श्वेत महिला थी । उस व्यापारी का नाम ज़ेब ऑरचर्ड था, वह उस पर्वत-प्रदेश मे अकेला रहता था और रेड इण्डियनो तथा श्वेतो को नमक, चीनी, ह्विस्की तथा तम्बाकू बेचा करता था । कारसन ने बताया था कि वह ईमानदार और सच्चा था, रेड इण्डियनो का सच्चा मित्र था, और कभी किसी पेकोस की ही लडकी से विवाह करना चाहता था, परन्तु उसकी बूढी माँ ने, जिसे 'श्वेत' होने पर बडा नाज़ था, इसे नही माना, और इस प्रकार वह अविवाहित एव एकात सेवी रह गया था ।

फादर लातूर अपनी किसी प्रचार-यात्रा के समय एक रात भर के लिये इस व्यापारी के साथ ठहरे थे और उससे पेकोस की प्रथाओ एक धार्मिक रीति-रिवाज़ो के सम्बन्ध मे बहुत सी बाते पूछी ।

ऑरचर्ड ने उन्हे बताया कि चिर-जाग्रत आग की लोक-गाथा निस्सन्देह सत्य है, परन्तु वह पहाडो मे जलती हुई नही रखी गयी है, अपितु उनके गाँव मे ही है । यह आग एक मिट्टी के चूल्हे मे अर्द्ध-प्रज्ज्वलित आग है और शताब्दियो पहले, जब यह गाँव बसा था, तभी से जल रही है । सर्प की गाथा के सम्बन्ध मे वह कुछ निश्चित नही कह सकता । उसने गाँव मे विषधर अवश्य देखे हैं, परन्तु ऐसे साँप तो सभी जगह है । कुछ वर्ष पहले पेकोस गाँव के एक लडके को साँप ने काट लिया था और वह ह्विस्की

के लिये उसके पास लाया गया था, उसका शरीर फूल गया था और उसकी दशा खराब थी, जैसा कि किसी भी लडके की हो सकती थी।

बिशप ने ऑरचर्ड से पूछा कि जैसा कि आमतौर पर कहा जाता है, क्या यह सम्भव है कि रेड इण्डियनो ने किसी विशाल अजगर को कही छिपा कर रखा है ?

"कोई न कोई जानवर तो अवश्य वे पहाड़ो में छिपा कर रखते है, जिसे वे धार्मिक अनुष्ठानों के लिये ले आते है," व्यापारी ने कहा। "परन्तु मै यह नही कह सकता कि वह साँप है या अन्य कोई जानवर। कोई भी श्वेत व्यक्ति रेड इण्डियनो के धर्म के सम्बन्ध मे कुछ भी नही जानता, फादर।"

बातचीत के दौरान में ऑरचर्ड ने यह स्वीकार किया कि जब वह बच्चा था, तो वह भी इन साँप की कहानियो के विषय मे बडा उत्सुक रहता था, और एक बार रेड इण्डियनो के किसी त्यौहार के समय उसने उनके सभी कर्मों को छिप कर देखा था, यद्यिपि ऐसा करना बहुत निरापद नही था। वह दो रात तक पहाड़ पर छिप कर बैठा था, और उसने रेड इण्डियनों के एक दल को मशाल की रोशनी मे एक भारी सदूक ले आते देखा था। यह एक बडा सन्दूक था और वजन में इतना भारी था कि बाँस की जिन बल्लियो पर लटका कर वह लाया गया था, वे लचक गयी थी। "यदि मैं श्वेत लोगो को अँधेरे में ऐसा सन्दूक ले आते देखे होता," उसने कहा, "तो मैं यह अनुमान लगा सकता कि उसमे क्या है, शायद रूपया-पैसा हो, ह्विस्की हो या बन्दूक, कारतूस आदि। परन्तु यह देख कर कि वे लोग रेड इण्डियन हैं, मै कुछ भी अनुमान नही लगा सका। सम्भव है कि उसमें कुछ विचित्र आकार के पत्थर ही रहे हो, जिनके प्रति उनके पूर्वजो ने कुछ खास धारणाएँ बना ली हो। बहुत सी ऐसी वस्तुएँ हैं, जिन्हे वे तो बहुत मूल्यवान् समझते हैं, परन्तु वे हमारे लिये कुछ भी नही हैं। उनके

अपने अध-विश्वास है, और उनके मस्तिष्क प्रलय के दिन तक भी उन्हीं लीको में बार बार घूमते रहेगे।"

फादर लातूर ने कहा कि पुरानी रीति-रिवाजो के प्रति सम्मान की भावना रेड इण्डियनो का एक ऐसा गुण है, जिसे वे बहुत पसन्द करते हैं और उनके अपने (बिशप के) धर्म मे भी उसका बड़ा महत्त्व है।

व्यापारी ने उन्हे बताया कि रेड इण्डियनो मे से वे बहुत से अच्छे कैथोलिक बना सकते है, परन्तु वे उन्हे उनके विश्वासों से अलग नही कर सकते। "उनके पुरोहितो के अपने अलग रहस्यानुष्ठान है। यह मैं नही जानता कि इसमें कितना सत्य है और कितना बनाया हुआ। मुझे एक घटना याद है, जो उस समय की है जब मै बहुत छोटा था। एक रात पेकोस की एक रमणी गोद में एक बच्चा लिये यहाँ दौड़ी हुई आयी और मेरी माँ से विनती करने लगी कि वह उसे त्योहार तक अपने पास छिपा ले क्योंकि उसने नेताओ को आपस मे इशारा करते देख लिया था, और उसे पक्का विश्वास हो गया कि वे लोग साँप को उसके बच्चे की बलि देना चाहते है। चाहे वह सच रहा हो या झूठ, परन्तु उस बेचारी ने निश्चय ही इसे सच मान लिया था। माँ ने उसे अपने यहाँ रहने दिया, और उस समय इस घटना का मेरे ऊपर बड़ा प्रभाव पडा था।"

अध्याय ५

पादरी मार्टिनेज़

१

पूर्व व्यवस्था

विशप लातूर जैसिंटो के साथ ताओस की अपनी प्रथम आधिकारिक यात्रा पर पर्वतों से होकर चले जा रहे थे। ताओस के पादरी का यह इलाका उनके समूचे अधिकार-क्षेत्र मे अलवुकर्क के अतिरिक्त सबसे बडा एवं समृद्ध इलाका था। वहाँ का पादरी तथा जनता दोनो ही अमेरिकनों के विरुद्ध थे तथा किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही चाहते थे। सिवा किसी स्पेनियार्ड के, कोई भी यूरोपियन विदेशी समझा जाता था। विशप ने इस इलाके को अब तक छोड़ रखा था, ताकि इस लम्बी अवधि में उनका वैमनस्य ठण्डा पड जाय। कारसन की सहायता से वे वहाँ की स्थिति तथा वहाँ के पुराने शक्तिशाली पादरी एंटोनिओ जोज मार्टिनेज़ से, जो वहाँ के लौकिक एव धार्मिक दोनो मामलो का शासक था, पूर्णत अवगत हो चुके थे। फादर लातूर के यहाँ आगमन के पूर्व वस्तुत. वह उत्तरी न्यू मेक्सिको के सभी पादरी-इलाको का अधिनायक था, और सांता फे के सभी स्थानीय पादरी उसकी मुट्ठी मे थे।

यह सर्वविदित बात थी कि पादरी मार्टिनेज ने ही पाँच वर्ष पहले

ताग्रोस के रेड इण्डियनो के विद्रोह को उकसाया था, जिसमे बेण्ट नामक अमेरिकन गवर्नर तथा एक दर्जन अन्य श्वेत व्यक्तियो की हत्या कर दी गयी थी तथा उनके सिर की चमडी उतार ली गयी थी। ताग्रोस के सात रेड इण्डियनो पर एक सैनिक अदालत के सामने मुकदमा चला था और उन्हे हत्या के अभियोग मे फाँसी दे दी गयी थी, परन्तु षड्यन्त्रकारी पादरी से जवाब-तलब करने की कोई भी कोशिश नही की गयी थी। उलटे, इस मामले से पादरी मार्टिनेज़ ने काफी लाभ उठा लिया था।

जिन रेड इण्डियनो को मृत्यु-दण्ड दिया गया था, उन्होने पादरी मार्टिनेज़ को बुला कर उनसे विनती की कि वे उन्हे इस मुसीबत से, जिसमे उन्होने ही उन्हे डाला था, बाहर निकालें। मार्टिनेज़ ने उनसे वादा किया कि यदि वे बस्ती के पास की अपनी जमीन उसके नाम लिख दे, तो वह उनकी जान बचा लेगा। उन्होने उसकी बात मान ली, और जब जमीन का कानूनी ढग से हस्तान्तरण हो गया, तो पादरी ने फिर उनके मामले की कोई चिन्ता नही की, और वह अपने जन्म स्थान अबीकी नगर चला गया। उसकी अनुपस्थिति में, सातो रेड इण्डियनो को नियत तिथि पर फाँसी दे दी गयी। मार्टिनेज़ अब उनकी उपजाऊ जमीन पर खेती कराने लगा, जिससे वह उस इलाके का सब से अधिक सम्पत्तिशाली व्यक्ति बन गया।

फादर लातूर ने मार्टिनेज को कई शिष्टतापूर्ण पत्र लिखे थे, परन्तु वे उससे मिले थे केवल एक बार, उस चिर-स्मरणीय अवसर पर, जब यह पादरी ताग्रोस से साता फे तक केवल इसी लिये आया था कि यह नये विशप को अस्वीकार करने मे साता फे के पादरी का हाथ मजबूत कर सके। यद्यपि उस घटना को बीते पर्याप्त समय हो चुका था, तथापि विशप को लगता था, जैसे वह कल की बात हो,—ताग्रोस का पादरी ऐसा व्यक्ति नही था कि उसे कोई आसानी से भूल सके। सडक पर उससे भेंट हो जाने पर उसकी महान् शारीरिक-शक्ति एव निरकुश स्वभाव की छाप

अवश्य पडती थी। वास्तव मे वह बिशप से बहुत अधिक लम्बा नही था, परन्तु छाप यह छोडता था, जैसे वह कोई वृहत् व्यक्ति हो। उसके चौडे कधे भैसो के कधो की तरह थे, उसका बडा सिर एक मोटी गरदन पर चुनौती देता हुआ रखा हुआ था, और उसका भरा हुआ, लाल रग का अडाकार स्पेनिश चेहरा—बिशप को सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण मे उसका चेहरा याद था। यह कितनी विचित्र बात थी कि वे पुन इस चेहरे को देखेंगे, उभरा हुआ पतला माथा, चमकती हुई, पीली, गड्ढे मे धँसी आँखे और फूले हुए गाल, जिनमे कोई गड्ढे आदि नही थे, जैसा कि आग्ल-सैक्सन चेहरो मे होता है, अपितु वे पूर्णतया माँसल थे, और भावनाओ के परिवर्तन के साथ-साथ उनमे भी चेहरे के अन्य भागो की भाँति क्षण-क्षण सिकुडन, खिचाव आदि होते रहते थे। उसका मुँह प्रचण्ड, असयत इच्छाओ एव निरकुश स्वेच्छाचार का मूर्त रूप था, उसके मोटे ओठ बाहर निकले हुए तथा खिचे हुए थे, जैसे जानवरो की माँस पेशियाँ भय या उद्वेग से फूल जाती हैं।

फ़ादर लातूर ने यह समझ लिया कि कानून-विरुद्ध वैयक्तिक शक्ति के दिन अब यहाँ भी समाप्तप्राय थे, और इस पादरी का स्वरूप उन्हे अभी से सरल, चित्ताकर्षक, परन्तु वास्तव मे शक्तिहीन तथा पूर्वकाल के अवशेष के रूप में दीखने लगा था।

बिशप और जैसिंटो पहाड से नीचे उतरे, रास्ता एक मैदान मे पहुँचा, जो एक प्रकार की भटकने वाली झाड़ी के कुजो से, जिसके तने मनुष्य की टाँग के बराबर मोटे थे, भरा था। जैसिंटो ने आसमान मे उड़ती हुई धूल की ओर सकेत किया, जो तेजी से उनकी ओर बढती आ रही थी,—सौ या अधिक सवारो का दल, जिसमें रेड इण्डियन और मेक्सिकन दोनो थे, अपने बिशप का स्वागत करने गाता-बजाता तथा बन्दूक दागता चला आ रहा था।

घुडसवारो के समीप पहुँचने पर, उनमें स्वय पादरी मार्टिनेज़ दिखलायी

पडा, जिसे आसानी से पहचाना जा सकता था। वह हिरन के चमडे का ब्रीचेज तथा ऊँचे बूट पहने हुए था और उसकी एंड़ चाँदी की थी, वह सिर पर एक चौडी मेक्सिकन टोपी लगाये था और कधो मे एक लम्बी काली गरदनी बँधी थी, जो गड़रियो के ऊनी 'प्लेड' जैसा था। वह बिशप के पास तक आया और घोडे की लगाम खीचकर रोकता हुआ टोपी उतार कर बिशप को नमस्कार किया और उसके साथी पादरियो के चारों ओर एकत्र होकर हवा मे बन्दूकें दागने लगे।

दोनो पादरियो ने अगल-बगल घोडे पर सवार लोस राचोस दि ताओस मे प्रवेश किया। ताओस एक छोटा सा नगर था, जिसके मकानो की दीवारें पीले रग की थी, टेढी-मेढी सडकें थी और उसमे हरे-भरे फलो के बाग थे। वहाँ के सभी नागरिक गिरजाघर के सामने वाले मैदान मे एकत्र हुए थे। जब बिशप उतर कर गिरजाघर मे जाने लगे, तो स्त्रियो ने उनके चलने के लिये उस धूलि भरे मार्ग पर अपनी शालें बिछा दी, और जब वे सिर झुकाये हुए लोगो के बीच से आगे बढने लगे, तो पुरुषो और स्त्रियो मे उनकी विशेष धार्मिक अगूठी को चूमने के लिये छीना-झपटी होने लगी। अपने देश मे जीन मेरी लातूर को यह सब बहुत बुरा लगा होता। परन्तु, यहाँ ये प्रदर्शन, के देहाती दृश्य एवं उपवनो, लहलहाते नागफनी के पौधो एव भड़कीले रग मे सजायी हुयी वेदियो, क्लेश की मुद्रा में महात्मा ईसा तथा मलिन मेरी की मूर्तियो एव चित्रो मे तथा अन्य सतो की मानवाकृतियो मे जो एक विचित्र भडकीली शान थी, उसी के एक अंग जान पडते थे। उन्हे यह पहले ही ज्ञात हो चुका था कि यहाँ की जनता धर्म को भी नाटकीय बनाना आवश्यक समझती थी।

लोस राचोस से रवाना होकर यह दल पूरे मैदान को पार करने के पश्चात् ताओस नगर मे पादरी के घर पहुँचा, जो गिरजाघर के ठीक सामने था और जहाँ एक भारी भीड एकत्र हुई थी। सभी लोग घुटनो के वल बैठ गये, परन्तु एक दस बारह वर्ष का भद्दा-सा लडका खडा ही रह

गया; उसका मुँह खुला था और वह अब भी सिर पर टोपी लगाये था। पादरी मार्टिनेज सिर झुकायी हुई कई स्त्रियो को कूदते-फाँदते लडके के पास पहुँचे, उसकी टोपी उतार ली और उसकी कनपटी पर कई थप्पड लगाये। फादर लातूर के विरोध करने पर स्थानीय पादरी ने बडी धृष्टता से कहा —

"वह मेरा ही बेटा है, विशप, और मै उसे अदब, तहज़ीब सिखाना चाहता हूँ।"

तो यह है यहाँ का मिजाज़, विशप ने मन मे सोचा। परन्तु इस चुनौती से उनके सयत चेहरे पर जरा भी शिकन नही पडी और वे पादरी के घर के अन्दर गये। वे पहिले मार्टिनेज़ के लिखने-पढने के कमरे मे गये, जहाँ फर्श पर एक नौजवान व्यक्ति गहरी निद्रा मे सोता हुआ पडा था। वह एक विशालकाय नवयुवक था, बहुत ही हट्टा-कट्टा और एक पुस्तक का तकिया बनाये चित लेटा था। उसकी गहरी सास से उसका पेट अद्भुत रूप से फूलता और पिचकता था। वह एक फ्रासिस्कन वादामी रग का गाउन पहने हुए था और उसके वाल बहुत छोटे थे। उसको देखते ही पादरी मार्टिनेज़ ठहाका मार कर हँस पड़े और उसकी पसलियों में मजे के ज़ोर से लात मारा। बेचारा घवडा कर उठा और अंदर आगन मे भाग गया।

"हे, सुनते हो", पादरी ने चिल्लाकर उससे कहा, "वे ही नौजवान दिन में सोते है, जो रात में परिश्रम वहुत करते है। तुम अवश्य ही मोमवत्ती जलाकर रात मे वहुत देर तक पढते रहे होगे। मै धर्म-शास्त्र मे तुम्हारी परीक्षा लूँगा।" इसका उत्तर एक हँसी से मिला, जो खिडकियो से सुनायी पडी और जो आँगन के उस किनारे से आ रही थी, जहाँ वह व्यक्ति सूखने के लिये डाले गये किसी कपडे के पीछे छिप गया था। उसने अपना लम्वा-चौडा शरीर झुका लिया और दो गीली चादरो के वीच अदृश्य हो गया।

"वह मेरा विद्यार्थी त्रिनिदाद है", मार्टिनेज़ ने कहा, "अर्रोयो होंडो के मेरे पुराने मित्र फादर लुसेरो का भतीजा है। वह एक भिक्षु है, परन्तु हम उसे पादरी बनाना चाहते हैं। हमने उसे डुरैंगो के धर्म शिक्षालय मे भेजा, परन्तु या तो उसे घर की बहुत याद आती थी या वह इतना मूर्ख है, कि कुछ भी नही सीख सका। इसलिये अब मै ही उसे पढ़ा रहा हूँ। हम एक न एक दिन उसे पादरी बना कर ही छोडेंगे।"

फादर लातूर से कहा गया कि वे इसे अपना ही घर समझे, परन्तु इसके लिये उनका मन गवाही नही देता था। वहाँ इतनी अधिक अव्यवस्था थी कि उनकी कोमल रुचि उसे स्वीकार नही कर सकती थी। पादरी की मेज़ पर सुँघनी बिखरी पडी थी और उस पर पुस्तको का इतना ऊँचा ढेर लगा हुआ था कि उसके पीछे दीवार पर टँगा हुआ क्रूश उनकी आड़ मे छिप जाता था। सारे मकान मे जहाँ ही देखिये वही मेज़ो और कुर्सियो पर पुस्तको का ढेर लगा हुआ था, तथा फर्श और पुस्तको आदि पर आँधी से उडी हुई धूलि की परत जमी हुई थी। फादर मार्टिनेज़ के जूते और हैट कोने मे पडे हुए थे, उनके कोट तथा अन्य कपडे खूँटियो पर टँगे थे, कुर्सियो, मेज़ो आदि पर लटके पडे थे। घर मे बहुत सी नौकरानियाँ थी, जिनमे बहुत सी नौजवान थी और बहुत सी बूढी। बहुत सी बडी-बड़ी पीली रंग की मुलायम रोयें वाली बिल्लियाँ इधर-उधर दौड रही थी। ये किसी विशेष जाति की बिल्लियाँ मालूम पडती थी। वे खिडकियो पर सोती थी, आँगन मे कुयें की जगत पर पडी रहती थी और उनमे से जो बहुत ढीठ थी, सीधे भोजन की मेज पर आ जाती थी, जहाँ उनका स्वामी बिना किसी हिचकिचाहट के उन्हे अपनी प्लेट मे से खाना खिलाता था।

जब बिशप और पादरी भोजन करने बैठे, तो मेज़बान ने उस पेट निकले हुए नौजवान हट्टे-कट्टे व्यक्ति का, जो उनके आने पर फर्श पर सोया हुआ था, बिशप से परिचय कराया। उन्होने फिर कहा कि त्रिनिदाद

लुसेरो उनके साथ पढ रहा है, और एक प्रकार से उनका सेक्रेटरी है। इतना कहकर पादरी ने आगे यह भी बताया कि वह अपना अधिकाश समय रसोई घर मे बिताता है, और नौकरानियो को उनके काम मे बाधा पहुंचाता रहता है।

यद्यपि ये बातें उस आदमी के सामने ही कही गयी, परन्तु इसकी उसे जेसे कोई चिन्ता ही नही। उसका सारा ध्यान गोश्त की उस कढी पर जमा हुआ था, जिसे वह प्लेट सामने आते ही असाधारण शीघ्रता से खाने लगा। विशप ने बाद को यह अनुमान लगा लिया कि त्रिनिदाद के साथ किसी गरीब सम्बन्धी या नौकर की तरह व्यवहार किया जाता था। उसे छोटे-छोटे कामो के लिये यहाँ वहाँ दौडाया जाता था, बिना किसी सकोच के पादरी के जूते उठा कर लाने को कहा जाता था, आग जलाने के लिये लकडी लाने को कहा जाता था, पादरी का घोडा कसने को कहा जाता था। फादर लातूर ने उसके व्यक्तित्व को इतना अधिक नापसन्द किया कि मुश्किल से उसकी ओर आँख उठा कर देख सके। उसका चेहरा इतना बेहूदा था कि उसे देखकर चिढ होती थी और नरम पनीर जैसा चिकना-चिकना सा लगता था। उसके मुँह के कोनो पर बहुत अधिक चर्बी के कारण बल पडे हुए थे, जैसे कि स्वस्थ शिशुओ की जाँघो आदि मे पड जाते है और उसके लोहे के फ्रेम वाले चश्मे का नाक पर का भाग मुलायम माँस मे धँसा हुआ था। भोजन करते समय वह एक भी शब्द नही बोला, जैसे वह डर रहा हो कि अब फिर वह भोजन कभी नही देखेगा, जितना खाना हो, खा लो। एक क्षण के लिये जब उसका ध्यान प्लेट पर से हटा, तो फौरन वह भोजन परसने वाली लडकी पर उतनी ही लालच भरी निगाहो से केंद्रित हो गया। लडकी उसकी ओर नाक सिकोड कर घृणा के भाव से देखती थी। विद्यार्थी को देखने से लगता था, जैसे वह प्रति क्षण किसी न किसी विषय आक्रमण से अचेत एव मुग्ध होता ही रहता है।

पादरी मार्टिनेज गले मे एक रूमाल बाँध कर लटकाये हुए, ताकि

खाने की कोई चीज गिरने से उनका चोगा न खराब हो, बडे आनन्द से खा रहे थे। यद्यपि वहाँ पर बहुत से रसोइये थे, फादर लातूर ने देखा कि भोजन अच्छा नही है। हाँ, अल पासो द नार्ते से आयी हुई शराब अवश्य अच्छी थी।

भोजन करते समय पादरी ने बिशप से स्पष्ट तौर पर पूछा कि क्या वे किसी पादरी के लिये कुँवारा रहना अनिवार्य समझते है ?

फादर लातूर ने केवल यह उत्तर दिया कि यह प्रश्न तो शताब्दियो पहले पर्याप्त वाद-विवाद के पश्चात् निर्णीत हो चुका है।

"हमेशा के लिये कुछ भी नही निर्णीत हुआ है", मार्टिनेज़ ने आवेश से उत्तर दिया। "फ्रासीसी पादरियो के लिये कुवाँरापन बहुत अच्छा हो सकता है, परन्तु हम लोगो के लिये नही। स्वय सन्त ऑगस्टिन ने कहा है कि प्रकृति के विरुद्ध न जाना अपेक्षाकृत अच्छा है। मुझे यह सिद्ध करने के लिये अनेक प्रमाण मिले है कि वृद्धावस्था में उन्हे इस पर पश्चात्ताप रहा कि वे ब्रह्मचारी क्यो बने रहे।"

बिशप ने कहा कि उन्हे सन्त आगस्टिन के अभिलेख के उन अशो को देखकर बडी प्रसन्नता होगी, जिनसे पादरी साहब इस निष्कर्ष पर पहुँचे है, क्योकि सन्त ने जो कुछ लिखा है, उससे वे अच्छी तरह परिचित है।

"मैने इन अशो को अलग लिखकर कही रख लिया है। आपके जाने के पहले मैं इसे ढूँढ कर आपको दिखाऊँगा। आपने उनके अभिलेखो को कदाचित् बन्द मस्तिष्क से पढा है। कुआँरे पादरी तो उचित-अनुचित का ज्ञान ही खो बैठते है। कोई भी पादरी, जब तक स्वय पाप मे नही गिरता, यह अनुभव नही कर सकता कि पाप के पश्चात् पछतावा कैसा होता है, तथा उसके लिये क्षमा कैसे मिलती है। चूँकि काम की तृप्ति सबसे बडा प्रलोभन है, यह अच्छा है कि वह इसका कुछ अनुभव कर ले। आत्मा को अनशनो एव प्रार्थना से नही तुष्ट किया जा सकता, उसे भयानक पाप द्वारा पतित कर देना चाहिये, जिससे वह पाप के बाद क्षमा का अनुभव कर

सके और फिर निखर कर ऊपर उठे। अन्यथा, धर्म नीरस तर्कशास्त्र के अतिरिक्त अन्य कुछ नही।"

"यह एक ऐसा विषय है, जिस पर हम बाद को विस्तार मे बातें करेंगे", विशप ने धीरे से कहा। "मैं अपने समूचे अधिकार-क्षेत्र मे यथा सम्भव शीघ्र ही इन रीतियो का सुधार करूँगा। मुझे विश्वास है कि थोडे ही दिनो में यहाँ ऐसा कोई पादरी नही रह जायगा, जो उन सारी प्रतिज्ञाओ का पालन नही करता, जो उसने गिरजाघर का सेवाव्रत लेने के पहले की थी।"

साँवला पादरी इस पर हँस पडा, और वडी विल्ली को, जो उसके कधे पर चढ गयी थी, उतार कर ज़मीन पर फेंक दिया। "यह आपको व्यस्त रखेगा, विशप। यहाँ प्रकृति आप से आगे वढी हुई है। इसके वावजूद, यहाँ के हमारे स्थानीय पादरी आपके फ्रासीसी जेसुइटो की अपेक्षा अधिक धार्मिक हैं। यहाँ का हमारा ईसाई सम्प्रदाय एक जीवित सम्प्रदाय है, न कि यूरोपीय ईसाई सम्प्रदाय की एक प्राणहीन शाखा। हमारा धर्म यहाँ की धरती से उत्पन्न हुआ है और उसकी अपनी अलग उत्पत्ति है। हम तो महात्मा ईसा को ही पितृ तुल्य सम्मान प्रदान करते हैं, परन्तु रोम के अधिकार को विलकुल नही मानते हैं। हम रोम की धर्म-व्यवस्था समिति से कोई सहायता नही चाहते और उसके हस्तक्षेप को वुरा मानते हैं। फ्रासिस्कन फादर्स ने जिस धर्म की स्थापना यहाँ की थी, वह मर चुका था, यह तो पुनर्जीवन है और यही से उसे प्राप्त हुआ। यहाँ के लोग अव भी ससार में सव से अधिक धार्मिक वचे हुए हैं। यदि आप यूरोपीय औपचारिकताओ से उनके विश्वासो एव आस्थाओ को नष्ट करेंगे, तो वे नास्तिक और लम्पट वन जायेंगे।"

इस भाषण के उत्तर में विशप ने शान्ति से कहा कि मैं यहाँ लोगो को उनके धर्म से वचित करने नही आया हू, परन्तु यदि यहाँ के कुछ पादरी अपनी रहन-सहन का ढग नही वदलते, तो वाध्य होकर उन्हे उनके पद से च्युत करना पड़ेगा।

फादर मार्टिनेज़ ने अपना गिलास भरा और बडी मस्ती से उत्तर दिया। "आप मुझे पदच्युत नही कर सकते, बिशप। प्रयास करके देख लीजिये। मै यहाँ अपना अलग धर्म-सम्प्रदाय सगठित कर लूँगा। आप ताओस मे अपना फ्रासीसी पादरी रख सकते है, परन्तु जनता मेरे साथ रहेगी।"

इतना कह कर वह कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ और आग के पास खडा होकर अपनी पीठ सेंकने लगा, उसने अपना चोगा कमर के ऊपर तक उठा लिया, जिससे उसके पतलून मे सीधे आँच लगने लगी। "आप अभी नौजवान है, विशप साहब," अपना वडा सिर पीछे झुकाकर धुएँ से काले हुए छत के खम्भो पर दृष्टि फेरते हुए वह कहने लगा। "और आप रेड इण्डियनो तथा मेक्सिकनो के सम्वन्ध मे कुछ भी नही जानते। यदि आप यहाँ यूरोपीय सभ्यता का प्रचलन करने तथा हमारे पुराने तरीको को वदलने, उदाहरण के लिये रेड इण्डियनो के गुप्त नृत्यो मे हस्तक्षेप करने, या 'पेनीटेंटो' के वलि सस्कार की प्रथा को वन्द करने, का प्रयत्न करेंगे, तो मै कहे देता हूँ कि शीघ्र ही आपकी मृत्यु हो जायेगी। मै आपको सलाह देता हूँ कि सुधार आरम्भ करने के पहले आप हमारे स्थानीय रीति-रिवाजो का अध्ययन करे। मेरे फ्रासीसी मित्र, आप यहाँ असभ्यो के वीच, दो जगली जातियो के वीच है। वहुत-सी ऐसी वुरी वाते, जिनकी आपके धर्म मे मनाही है, रेड इण्डियनो के धर्म के एक अग है। आप यहाँ फ्रासीसी फैशन नही प्रचलित कर सकते।"

इसी समय वह विद्यार्थी, त्रिनिदाद, धीरे से उठा और विशप को नौकर की तरह झुक कर सलाम करते हुए, दवे पाँव रसोई घर की तरफ भाग गया। जव दरवाज़े से उसकी भूरी कमीज़ बिलकुल अदृश्य हो गयी, फादर लातूर अपने मेज़बान की ओर घूम पडे।

"मार्टिनेज, मै युवको की उपस्थिति मे इस प्रकार असयत ढग से वात करना वहुत अनुचित समझता हूँ, विशेप कर ऐसे किसी युवक की

उपस्थिति मे, जो पादरी की शिक्षा प्राप्त कर रहा हो। इसके अतिरिक्त, मेरी समझ में यह नही आया कि ऐसे मूर्ख नवयुवक को पादरी बनाने का क्यो प्रयास किया जा रहा है। मेरे अधिकार-क्षेत्र में वह कभी भी पादरी नही बन सकता।''

पादरी मार्टिनेज हँस पडा और उसके बडे-बडे पीले दाँत दिखलायी पड़ने लगे। उसका हँसना अच्छा नही लगता था, क्योकि उसके दाँत बहुत ही बडे थे, स्पष्ट तौर पर गँवारो जैसे। "ओह, त्रिनिदाद अपने चाचा का जो अब वृद्ध हो रहे है, सहायक बन कर अर्रोयो होडो जायगा। यह त्रिनिदाद बडा ही धार्मिक व्यक्ति है। आप उसे 'पैशन वीक' (ईस्टर से पहले का सप्ताह) मे देखिये। वह अबीकी पहुँच कर बिलकुल दूसरा आदमी बन जाता है, भारी से भारी क्रूश को पहाडो पर ढो कर ले जाता है और जितने कोडे वह खाता है, उतना अन्य कोई नही। वह यहाँ पीठ पर इतने घाव लेकर आता है कि नौकरानियो को उसे उठाकर ले जाना पडता है।''

फादर लातूर थके हुए थे और भोजन के फौरन ही बाद वे अपने कमरे मे चले गये। उन्होने जाँच करके देखा कि बिस्तर साफ तथा आरामप्रद था, परन्तु उसके आस-पास के वातावरण के सम्बन्ध में वे शकित थे। उन्हें सारे घर का ही वातावरण अच्छा नही लग रहा था। बिस्तर पर पडने के बाद प्लेट आदि धोने तथा आँगन के उस पार से स्त्रियो के खिलखिला कर हँसने की आवाज़ के कारण वे बहुत देर तक जागते रहे और जब वह बन्द हुई, तो पास के किसी कमरे से फादर मार्टिनेज़ के खर्राटो की आवाज़ आने लगी। अवश्य ही आँगन मे खुलने वाले अपने दरवाज़े को उन्होने खुला छोड रखा होगा, अन्यथा कच्ची ईंटो की बनी दीवार इतनी मोटी थी कि उसमे होकर आवाज नही आ सकती थी। पादरी क्रुद्ध साँड की तरह फुफकार रहा था, और अत में बिशप ने उठकर उसका दरवाजा बंद करने का निर्णय किया। वे उठे। उन्होने मोमबत्ती जलायी और आधे मन से अपने कमरे का दरवाजा खोला। हवा का एक हलका झोका आया

और कोई काली वस्तु दीवार के पास से उडकर बीच कमरे मे आ गयी। कदाचित् कोई चूहा हो, विशप ने सोचा। परन्तु नही, वह तो स्त्री के सिर के वालो की एक लच्छी थी, जो किसी फूहड स्त्री ने वाल झाडते समय लापरवाही से कोने मे फेंक दिया था। इसे देखकर विशप को अत्यधिक चिढ हुई।

विशेष सार्वजनिक पूजा दूसरे दिन ग्यारह वजे होने को थी, पादरी उसका नेतृत्व करने को थे और विशप अध्यक्ष पद पर वैठने को थे। वे ताग्रोस के गिरिजाघर से पूर्णत· सतुष्ट थे। इमारत साफ थी और उसकी अच्छी तरह से मरम्मत हुई थी। भीड काफी वडी थी और वडी ही धर्मिष्ठ। वेदी पर के सुन्दर गोटो, स्वच्छ कपडो एव चमकते हुए पीतल को देखने से मालूम हो जाता था कि वडी श्रद्धा से वह सजायी गयी है। वेदी पर काम करने वाले लडके लाल रग के चोगो पर चुन्नटदार वेल-वूटे लगाये हुए थे। फादर मार्टिनेज़ ने जितने प्रभावपूर्ण ढंग से 'मास' गाया, वैसा विशप ने पहले कभी नही सुना था। उसका स्वर वडा ऊँचा था, और वह वडी भावुकता से गा रहा था। सारी प्रार्थना में किसी भी अंश की रचमात्र भी उपेक्षा नही की गयी, और प्रत्येक शब्द पर उचित वल दिया गया था। 'एलेवेशन' (प्रार्थना का चरम विंदु) के समय ऐसा मालूम होता था कि इस सावले पादरी ने स्वर को ऊँचा चढाने मे अपनी सारी शक्ति लगा दी थी, जिससे उसका सारा रक्त आलोड़ित होकर ऊपर चढ गया हो। विशप ने सोचा कि यदि इस मेक्सिकन का उचित पथप्रदर्शन हुआ होता, तो वह एक महान् व्यक्ति हो गया होता। उसका व्यक्तित्व वडा ही प्रभावशाली था, उसके पास एक उलझन मे डाल देने वाली एक अद्भुत आकर्षण शक्ति थी।

प्रार्थना, दीक्षा आदि के वाद फादर मार्टिनेज़ ने घोडे मगवाये और विशप को अपना फार्म तथा पशुओ का वाडा दिखाने लिवा ले गये। उन्होने उन्हे ताग्रोस तथा रेड इरिडयनो की वस्ती के वीच की उपजाऊ भूमि मे

पडने वाले अपने खेतो को दिखाया, जिसे, जैसा कि फादर लातूर ने बाद को जाना, फाँसी पर लटके हुए सात रेड इण्डियनो से उसने हस्तगत किया था। घोड़े पर चलते-चलते ही मार्टिनेज ने बडी लापरवाही से बेन्ट हत्याकाण्ड की चर्चा की। उसने बडे गर्व से कहा कि न्यू मेक्सिको मे जो भी गडबडी पैदा होती थी, उसकी शुरुआत ताओस से ही होती थी।

वे लोग सूर्यास्त से कुछ पहले बस्ती के समीप पश्चिम की ओर रुके। बिशप जिन बस्तियो मे अब तक गये थे, उनसे यह बस्ती बिलकुल भिन्न थी उसमे दो ही विशाल सामुदायिक मकान थे, उनके आकार, पिरामिड जैसे थे और वे साध्य-रवि के प्रकाश में सुनहरे रग के हो रहे थे। लाल पर्वत उनके पीछे था। सुनहरे रग के मनुष्य श्वेत रग का लबादा ओढे सीढीनुमा छतो पर निकल आये और मूर्तिवत खडे हो गये, लगता था कि वे पर्वत पर क्षण-क्षण परिवर्तित होने वाले प्रकाश को देख रहे हो। वहाँ एक अद्‌भुत निस्तब्धता थी, जैसे किसी पूजा आदि मे लोग ध्यानमग्न हो। सुनहरे गुबार में से हो कर घर आती हुयी बकरियो के मिमियाने के अतिरिक्त अन्य कोई ध्वनि नही सुनायी पड रही थी।

पादरी ने उन्हें बताया कि गत एक हजार वर्ष से भी अधिक समय से इसी कबीले के लोग इन दोनो मकानो मे लगातार रहते चले आ रहे है। कोरोनैडो दल के लोगो ने पहली बार इन्हें यहाँ देखा और उन्हें उच्च किस्म के रेड इण्डियन बतलाया, जो सुन्दर तथा गौरवपूर्ण आचरण के थे, तथा मृग चर्म के बने कोट और यूरोपियनो की भाँति पैजामे पहनते थे।

यद्यपि पर्वत पर काफी वनस्पतियाँ थी, उसके सभी किनारे इतने सीधे और सुडौल आकार के थे कि लगता था, जैसे वे सैंडियाज़ पर्वतो की भाँति वनस्पतिहीन पर्वतो को गढ कर बनाये गये हो। उसकी ढाल पर की वनस्पतियाँ सदा हरी रहती थी, परन्तु दर्रों एव घाटियो मे मजनू के वृक्ष थे, जिसका परिणाम यह होता था कि प्रत्येक दर्रे या घाटी का ऊपरी भाग हलके हरे रंग का था, और वह ऊपर पर्वत के गाढे हरे रग के

साथ मिलकर कुछ विचित्र सांकेतिक चिह्नो का रूप धारण कर लेता था; कोई सर्प जैसा टेढा-मेढा, कोई अर्द्ध-चद्राकार और कोई अर्द्ध-परिधि के आकार का। पादरी ने बतलाया कि अनेक शताब्दियो से रेड इण्डियन लोग इस पर्वत पर तथा उसकी घाटियो मे यत्र-तत्र रह कर शान्त जीवन विताते चले आ रहे है, यही पर पुराने धार्मिक अनुष्ठान होते आ रहे है, तथा उसके गर्भ मे रेड इडियनो की अनेक गुप्त बाते छिपी हुई हैं।

"और आप विश्वास रखिये इसी पर्वत पर कही उनके पोप की गुप्त 'गुफा भी है, परन्तु कोई श्वेत मनुष्य उसे कभी नही देख सकेगा। मेरा तात्पर्य उस गुफा से है, जहाँ सन् १६८० के विद्रोह की योजना बनाते समय उनके पोप चार वर्ष तक बद पडे रहे और दिन की रोशनी नही देख सके। आप तो उस विद्रोह के सम्बन्ध मे सब कुछ जानते होंगे, विशप लातूर।"

"हाँ 'शहीदो का इतिहास' नामक पुस्तक पढ कर थोडा बहुत अवश्य जानता हूँ। लेकिन मै यह नही जानता था कि विद्रोह का आरम्भ ताओस से हुआ था।"

"मैने आपसे अभी बताया है न कि न्यू मेक्सिको मे पैदा होने वाली किसी भी गडबडी का आरम्भ ताओस से ही होता है," पादरी ने कहा। पोप एक सैन जुआन के रेड इण्डियन थे, परन्तु इससे क्या ? नेपोलियन भी तो कार्सिका मे पैदा हुए थे। वे (पोप) अपना कार्य ताओस से करते थे।'

पादरी मार्टिनेज अपने देश को भली भाँति जानता था, वह देश, जिसका कोई लिखित इतिहास नही था। उसने सन् १६८० के महान् रेड इण्डियन विद्रोह के सम्बन्ध मे जो कुछ सुन रखा था, उसे विशप को विस्तार से सुनाया। इस विद्रोह ने, जिसमे सभी स्पेनियार्ड या तो मार डाले गये थे या बाहर खदेड़ दिये गये थे और अल पासो द नार्ते के उत्तर

एक भी यूरोपियन जीवित नही बचा था, नयी दुनिया के शहीदो के इतिहास मे एक नया लम्बा अध्याय जोडा।

उस रात भोजन के पश्चात्, जब पादरी सुँघनी सूघता हुआ बैठा था, फादर लातूर ने उससे अनेक प्रश्न किये और उसके जीवन-वृतान्त के सम्बन्ध मे बहुत कुछ जाना।

मार्टिनेज ताग्रोस से पश्चिम क्षितिज में मिले हुए उस एकाकी नीले पर्वत के ठीक नीचे एक गाँव मे पैदा हुआ था, जो पिरामिड के आकार का था, जिसका ऊपरी नुकीला भाग कट कर अवीकी में पहुँच गया था। वह गाँव इस राज्य-क्षेत्र का लगभग सबसे पुराना गाँव था, जिसके चारो ओर इतनी गहरी-गहरी खाइयाँ तथा इतनी ऊबड-खाबड पर्वत श्रेणियाँ थी कि वह बाहरी दुनिया मे बिलकुल अलग हो गया था। इतना नि.सग रहने के कारण वहाँ के लोग मलिन प्रकृति के थे, धार्मिक मामलो मे विवेकहीन रूप मे उत्साही और उग्र थे तथा 'पैगन' सप्ताह क्रूश ढो कर और लहू-लुहान कर देने वाली कोडेबाजियाँ करके मनाते थे।

ऐंटोनियो जोज् मार्टिनेज यही बडा हुआ, उसने पढना-लिखना कुछ भी नही सीखा, बीस वर्ष की अवस्था मे विवाह किया और जब वह तेईस वर्ष का था, तो उसकी पत्नी और बच्चे का देहान्त हो गया। विवाह के पश्चात् उसने वहाँ के गिरजा के पादरी से लिखना-पढना सीख लिया था, और जब वह विधुर हो गया तो उसने पादरी बनने के लिये पढने का निर्णय किया। अपने कपडे तथा घर के सामान बेचने से जो थोडा सा पैसा मिला उसे लेकर वह घोडे पर सवार होकर 'ओल्ड' मेक्सिको के डुरेंगो नामक स्थान के लिये रवाना हो गया। वहाँ वह धार्मिक शिक्षालय मे भर्ती हो गया और गहरे अध्ययन का जीवन आरम्भ किया।

बिशप ने यह सहज ही अनुमान लगा लिया कि किसी नवयुवक को, जो युवावस्था तक लिखना-पढना नही जानता हो, शिक्षालय की यह कडी

शिक्षा प्राप्त करने मे कितना कठिन परिश्रम करना पडा होगा। उन्होने देखा, कि मार्टिनेज़ न केवल धार्मिक शिक्षा मे ही प्रवीण है, अपितु वह लेटिन और स्पेनिश उच्च साहित्य से भी पूर्णत. भिज्ञ है। धार्मिक शिक्षालय मे छ. वर्ष तक रहने के बाद मार्टिनेज अपने घर अबीकी के गिरजा के पादरी रूप मे वापस आ गया था। उसकी उस पिरामिड आकार के पर्वत के अचल मे बसे हुए गाँव से अत्यन्त अनुरक्ति थी। ताओस के अपने निवासकाल मे, जिसका अन्त होते-होते उसका लगभग आधा जीवन समाप्त हो रहा था, वह बहुधा ही घोडे पर सवार होकर अबीकी की 'तीर्थ-यात्रा' किया करता था, मानो उसकी जन्म-भूमि की पीली मिट्टी की गध उसकी आत्मा के लिये औषध का काम करती थी। स्वाभाविक था कि वह अमेरिकनो से घृणा करे। न्यू मेक्सिको पर अमेरिकन अधिपत्य हो जाने का अर्थ उस जैसे व्यक्तियो का अन्त था। वह पुरानी समाज-व्यवस्था का व्यक्ति था, अबीकी की एक सतान था और अब उसके दिन लद चुके थे।

ताओस से विदा होने के बाद, बिशप अपने कार्य-क्रम के विपरीत किट कारसन के फार्म वाले मकान पर गये। वे जानते थे कि कारसन भेड़ें खरीदने बाहर गया हुआ है, परन्तु फादर लातूर उसकी पत्नी सिनोरा कारसन से मिल कर उसे मैगडलेना के प्रति दया दिखाने के लिये पुन धन्यवाद देना चाहते थे, तथा उसे यह बताना चाहते थे कि वह लडकी अब साता फे के विद्यालय मे 'सिस्टरो' के साथ रह कर बहुत सुखी है और धार्मिक जीवन बिता रही है।

कारसन की पत्नी ने उनका स्वागत उस सरल परन्तु नि सकोच भाव से किया, जो मेक्सिकन परिवारो की सामान्य विशेषता है। वह एक लम्बे कद की महिला थी, दुबली-पतली, झुके हुए कधे तथा चमकदार काली आँखें और वैसे ही बाल। यद्यपि वह लिखना-पढना नही जानती थी, तथापि उसका चेहरा और बातचीत का ढंग ऐसा था कि वह बुद्धिमान्

लगती थीं। विशप के विचार से वह सुन्दर थी, उसके चेहरे पर जीवन के उस अनुशासन की झलक थी, जो उन्हे बहुत प्रिय थी। उसका स्वभाव भी बडा मृदुल तथा विनोद-भावना बडी आनन्दप्रद। उस पर भरोसा रख कर वात किया जा सकता था। उसने विशप से कहा कि आशा है कि आप पादरी मार्टिनेज़ के घर मे आराम के साथ रहे होंगे। परन्तु उसके कहने का ढग ऐसा था, जिससे यह स्पष्ट हो जाता था कि जैसे उसे इसमे सन्देह था, और जब उन्होंने यह स्वीकार किया कि वे त्रिनिदाद लूसेरो की उपस्थिति के कारण चिढ गये थे, तो वह हँस पड़ी।

"कुछ लोग कहते है कि वह फादर लुसेरो का बेटा है," उसने कुछ सकोच से कहा। "परन्तु मै ऐसा नही सोचती। सम्भवत वह पादरी मार्टिनेज के ही अनेक पुत्रों मे से एक है। आपने सुना कि गत वर्ष 'पैशन सप्ताह' मे उसे अबीकी मे क्या हुआ? वह महात्मा ईसा बनने का प्रयास करने लगा, और स्वय क्रूश-बद्ध हो गया। परन्तु क्रूश पर वह कीलो के सहारे नही रहा। रस्सियो से वह एक क्रूश पर बांध दिया गया और रात भर उसी पर लटके रहने के लिये छोड दिया गया। अबीकी मे कभी-कभी ऐसा करने की प्रथा है, यह बहुत ही पुराने ख्यालो का स्थान है। क्रूश पर वह बँध तो गया, परन्तु वह वजन मे इतना भारी है कि कुछ घण्टो के बाद उसको लिये-दिये क्रूश ही गिर पडा और इस पर वह बडा लज्जित हुआ। फिर उसने स्वय को एक खम्भे से बँधवा दिया और कहा कि वह इतने कोडे खायेगा, जितने स्वय महात्मा ईसा ने खाये थे—छ. हजार कोडे जैसा कि सेंट ब्रिजेट को उद्घाटित हुआ था। परन्तु सौ कोडे खाते-खाते वह बेहोश हो गया। लोगो ने उसे नागफनी के डडो से मारा था, जिसके उसके तन मे इतना विष हो गया कि बहुत दिन तक बीमार पडा रहा। इस साल वहाँ से लोगो ने उसके पास कहला दिया कि वह अबीकी न आवे। अत वह पवित्र सप्ताह मे यही रहा और लोगो ने खूब हँसी उडायी।"

फादर लातूर ने कारसन की पत्नी से पूछा कि वह उसे स्पष्ट बतलाये

कि क्या उसके विचार से यह सम्भव है कि वे यहाँ के अधार्मिक एव पापपूर्ण कार्यो एव प्रथाओ को बन्द कर दे । वह मुस्करा पडी और सन्देह-सूचक सिर हिलाते हुए बोली, "मै बहुधा ही अपने पति से कहती हूँ कि अच्छा होगा कि आप ऐसा करने का प्रयत्न न करें । इसका परिणाम केवल यह होगा कि जनता आपके विरुद्ध हो जायगी । यहाँ के वृद्धजन तो अपनी प्रथाओ को रीति-रिवाजो को छोड नही सकते, और नयी पीढी के लोग समय के साथ चलेंगे ।"

बिशप जब विदा होने को हुए, तो उसने मैगडलेना के लिये एक सुन्दर गोटे का काम उनके झोले मे डाल दिया । "वह इसे स्वय अपने काम मे नही लायेगी, परन्तु सिस्टरो को देने के लिये इसे पाकर उसे प्रसन्नता होगी । उसका हत्यारा पति उसके लिये कुछ नही छोड गया । उसकी फाँसी के बाद, उसकी बन्दूक एव एक गधे के अतिरिक्त बेचने के लिये कोई वस्तु थी ही नही । अत वह दोनो पादरियो को, उनके खच्चरो के लालच मे मार डालने का जोखिम उठा रहा था—सम्भव है कि धर्म के प्रति घृणा के कारण ही वह आप लोगो को मारना चाहता हो ! मैगडलेना बतलाती थी कि वह मोरा के पादरी को मारने की बहुधा ही धमकी दिया करता था ।"

साता फे पहुँचने पर बिशप ने देखा कि फादर वेलैंट उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । ईस्टर से ही वे एक दूसरे से नही मिले थे और बहुत सी बातो पर विचार करना आवश्यक था । बिशप लातूर के प्रशासन की कुशलता एव उत्साह की रोम मे पहले से ही वाहवाही हो रही थी और हाल ही मे वहाँ की धार्मिक व्यवस्थापिका समिति के अध्यक्ष कार्डिनल फ्रासोनी का उन्हे एक पत्र मिला था, जिसमे उन्होने यह घोषित किया था कि साता फे के 'विकारेट' का पद औपचारिक रूप से बढा दिया गया था और अब वह पूर्ण रूपेण बिशप का अधिकार-क्षेत्र बना दिया गया था । उसी पत्र

के साथ कार्डिनल का एक निमन्त्रण-पत्र भी था, जिसमे उन्होने विशप से अगले वर्ष वैटिकन मे होने वाली महत्त्वपूर्ण बैठको मे भाग लेने के लिये आग्रह किया था। यद्यपि इन सब बातो पर विशप और उनके विकार-जेनरल के बीच भी विचार-विमर्श होना आवश्यक था, फादर जोसेफ इस समय तो अलबुकर्क से केवल इसलिये आये थे कि वे यह जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक हो रहे थे कि विशप का ताओस में कैसा स्वागत हुआ।

अपने पुराने लबादे पहने हुए वे लिखने-पढने के कमरे में बैठकर मोमबत्तियो के प्रकाश मे रात बडी देर तक बातें करते रहे।

"इस समय तुरन्त ही" फादर लातूर ने कहा, "मै, ताओस की विचित्र स्थिति को बदलने के लिये कुछ भी नही करूँगा। इस समय हस्तक्षेप करना उचित नही है। वहाँ के गिरजा का सगठन काफी दृढ है और लोग बडे धर्मनिष्ठ हैं। पादरी का आचरण चाहे जैसा हो, उसका सगठन सुदृढ है, तथा उसकी जनता उसके प्रति बहुत ही वफादार है।"

"परन्तु क्या तुम्हारे विचार से उसे अनुशासित किया जा सकता है?"

"अनुशासन का तो प्रश्न ही नही उठता। उसकी सत्ता काफी समय से जमी हुई है। वहाँ की जनता उसका एक फ्रासीसी विशप के विरुद्ध निश्चय ही समर्थन करेगी। इस समय तो जो कुछ भी मैने वहाँ नही पसन्द किया, उस पर ध्यान ही नही दूँगा।"

"परन्तु जीन," फादर जोसेफ ने आवेश मे आकर कहा, "उसके कार्य तो बडे निंदनीय है, जगह-जगह उसकी बुराइयो की चर्चा होती रहती है। अभी कुछ ही सप्ताह पहले मैंने एक मेक्सिकन लडकी की बडी दर्दनाक कहानी सुनी है। वह कोस्टेला घाटी मे हुए रेड इण्डियनो के एक धावे मे उडा ले जायी गयी थी। जब वह उडायी गयी थी, तो आठ वर्ष की एक बच्ची थी, और जब उसका पता लगा और पैसा देकर उसको वापस लाया गया, तो उस समय उसकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी। इस अवधि मे यह भोली लडकी अनेक चमत्कारो की सहायता से अपने सतीत्व की रक्षा करती

रही। उसके गले मे कुआडालूप मे बनी देवी की समाधि का एक पदक बँधा हुआ था और वह सीखी हुई प्रार्थना दुहराया करती थी। अनेक बार उसके सतीत्व को सकट पैदा हुआ, परन्तु प्रत्येक बार कोई-न-कोई ऐसी अप्रत्याशित घटना घट जाती थी कि वह बच जाती थी। मिल जाने पर उसे अरॉयो होंडो मे रहने वाले किसी सम्बन्धी के यहाँ वापस भेज दिया गया। वहाँ वह इतनी धर्मनिष्ठ हो गयी कि किसी मठ आदि मे भिक्षुणी बनने के लिये तैयार हो गयी। परन्तु इसी मार्टिनेज़ ने उसके साथ बलात्कार किया और उसने उसका विवाह अपने किसी अर्दली से कर दिया। इस समय वह उसके किसी फार्म पर रह रही है।"

"हाँ, क्रिस्टोबाल ने मुझे यह किस्सा सुनाया था,' बिशप ने कुछ विचलित भाव से कहा। "परन्तु पादरी मार्टिनेज़ की अवस्था अब इतनी काफी हो रही है कि अधिक दिनो तक अब वह लम्पटता नही कर सकता। मै ताओस का पादरी इलाका केवल इसलिये नही खो देना चाहता कि मै वहाँ के पादरी को दण्ड दूँ, मेरे मित्र! उसके स्थान पर काम करने के लिये मेरे पास ऐसा कोई शक्तिशाली पादरी नही है। तुम्ही एक ऐसे व्यक्ति हो, जो वहाँ की परिस्थिति सँभाल सकते हो और तुम अलबुकर्क मे हो। अब एक वर्ष बाद मै रोम मे होऊँगा, और वहाँ से मै ताओस के लिये एक स्पेनिश मिशनरी ले आने का प्रयत्न करूँगा। मेरे विचार से ताओस मे किसी स्पेनियार्ड का ही स्वागत होगा।"

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो," फादर जोसेफ ने कहा। "मैं तो किसी निष्कर्ष पर पहुँचने मे बहुधा ही जल्दीबाज़ी कर देता हूँ। तुम्हारी यूरोप यात्रा के समय तुम्हारी अनुपस्थिति मे सम्भव है, मै तुम्हारा काम यहाँ ठीक से न कर सकूँ। क्यो, तुम्हारे चले जाने पर, मुझे अपना प्यारा अलबुकर्क छोड कर साता फे आना पडेगा न?"

"निश्चय ही। इससे अलबुकर्क के लोग तुम्हे और भी चाहने लगेंगे, क्योकि तुम्हारी अनुपस्थिति मे ही उन्हे तुम्हारे सच्चे मूल्य का अनुमान हो

सकेगा। मैं सोचता हूँ कि मैं आपके साथ आवर्ने से कुछ और व्यक्तियों को, मेरा मतलब अपने ही धर्म शिक्षालय से कुछ नवयुवकों को, ले आऊँ और उनमे से एक को कदाचित् अलबुकर्क में रखना पडे। तुम वहाँ काफी दिन रह चुके। वहाँ जो कुछ आवश्यक था, वह सब तुम कर चुके। फादर जोसेफ, अब मुझे तुम्हारी यहाँ आवश्यकता है। इस समय तो स्थिति यह है कि किसी आवश्यक विषय पर आपस में विचार-विमर्श करना हो, तो हम में से एक को सत्तर मील की घोडे की यात्रा करनी पडती है।"

फादर वेलेंट ने ठडी सांस भरी। "आह, मैं जानता था कि यह होगा! तुम मुझे अलबुकर्क से भी वैसे ही छीन लोगे जैसे सैंडस्की से छीना था। जब मै वहाँ पहली बार गया था, तो प्रत्येक मनुष्य मेरा शत्रु था और अब प्रत्येक मनुष्य मेरा मित्र है, अत. अब वहाँ से हट जाने का काम है।" फादर ने अपना चश्मा उतार लिया और उसे मोड़ कर केस में रख दिया। उनका यह कार्य उनके सोने जाने के इरादे का सूचक था। "तो अब से एक वर्ष बाद तुम रोम मे होगे। और मैं सच कहता हूँ कि मुझे यही अच्छा लगेगा कि मै उस समय अलबुकर्क में ही अपनी जनता के साथ रहूँ लेकिन क्लेरमोंट? वहाँ का ख्याल आने पर मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है कि मै अपने पहाडो को देखूँ। कम-से-कम तुम तो मेरे परिवार के सभी लोगो से मिलोगे और सदेश ले आओगे और तुम मेरे वे सब पादरियों वाले कपडे भी ला सकोगे, जिन्हे मेरी बहन फ़िलोमीन और उनकी भिक्षुणियाँ तीन वर्ष से मेरे लिये बना रही हैं। मैं उन्हे पाकर कितना खुश होऊँगा।" वे उठ खड़े हुए और उन्होंने एक मोमबत्ती उठा ली। "और जीन, जब तुम क्लेरमोट से विदा होने लगो, तो मेरे लिये अपने जेब मे कुछ अखरोट रख लेना।"

२
कंजूस

फरवरी मास मे बिशप लातूर एक बार फिर घोड़े की पीठ पर सवार साता फे की सडक पर थे, इस बार रोम उनका लक्ष्य था। वे लगभग एक वर्ष तक अनुपस्थित रहे, और जब वापस लौटे, तो अपने साथ अपने मोटफेराड के शिक्षालय से चार नवयुवक पादरी तथा फादर तलाद्रिद नामक एक स्पेनिश पादरी, जो उन्हे रोम में मिला था, लाये। तलाद्रिद तुरन्त ही ताओस भेज दिया गया। बिशप के कहने पर पादरी मार्टिनेज़ ने अपने पद से औपचारिक रूप से त्यागपत्र दे दिया, परन्तु इस शर्त के साथ कि विशेष त्यौहारो के अवसरो पर 'मास' आदि समारोह उन्ही के नेतृत्व मे होगे। उसने न केवल इस विशेष सुविधा का ही उपयोग किया, अपितु विवाह, मृत्यु के बाद सस्कार आदि और इलाके के निवासियो का जीवन-निर्देश अब भी वही करता रहा। शीघ्र ही उसमे तथा फादर तलाद्रिद मे खुलमखुल्ला सघर्ष हो गया।

जब बिशप उनके मतभेदो को नही दूर करा सके और नये पादरी का पक्ष लेने लगे, तो फादर मार्टिनेज़ और उसके मित्र अर्रोयो होडो के फादर लुसेरो ने विद्रोह कर दिया, अधीनता मानने से स्पष्ट इनकार कर दिया और अपना एक अलग गिरजा सगठित कर लिया। उन्होने घोषित किया कि यही मेक्सिको का पुराना कैथोलिक गिरजा है और बिशप का गिरजा तो एक अमेरिकन सस्था है। दोनो ही स्थानो की अधिकाश जनता इस नये गिरजा में चली गयी, यद्यपि कुछ धार्मिक मेक्सिकन, बड़ी घबराहट मे, दोनो ही गिरजाओं की सार्वजनिक पूजा (मास) मे भाग लेने लगे। फादर मार्टिनेज़ ने एक लम्बा और जोशीला घोषणा-पत्र छपवाया (जिसे उसके इलाके के बहुत कम लोग पढ सकते थे), जिसमे उसने अपने अलग होने के कार्य को ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर न्यायोचित सिद्ध करने का प्रयत्न किया था तथा पादरी के लिये कुँवारा-व्रत रखना अनावश्यक

बतलाया था। चूँकि उसकी तथा फादर लुसेरो की अवस्था अब काफी हो चुकी थी, घोषणा-पत्र की इस विशेष बात का लाभ उनके सगठन मे शिनिदाद के अतिरिक्त अन्य किसी को नही था। नया सगठन स्थापित करने के बाद दोनो वृद्ध पादरियो का पहला धार्मिक कार्य यह हुआ कि उन्होने फादर लुसेरो के भतीजे को पादरी का पद प्रदान किया और वह कभी ताग्रोस में और कभी अरोंयो होंडो मे रह कर दोनो के सहायक का कार्य करने लगा।

विद्रोही गिरजा ने कम से कम यह किया कि दोनो विद्रोही पादरियो मे पुन यौवन ग्रा गया और काफी दूर-दूर के लोगो का अनुराग उन दोनो मे पुनरुज्जीवित हो उठा—यद्यपि उनके कृत्य ऐसे थे कि पहले भी लोग उनके सम्बन्ध मे काफी बातें किया करते थे। पडोसी इलाको मे रहने के नाते, नौजवानी की अवस्था से ही वे दोनो आपस में मित्र थे, जिगरी दोस्त थे, प्रतिद्वंद्वी थे, और कभी-कभी घोर शत्रु भी थे। परन्तु इन झगडो के कारण वे बहुत दिन तक अलग नही रह सकते थे।

वृद्ध मेरिनो लुसेरो एक बात में भी मार्टिनेज़ से नही मिलता-जुलता था, सिवा इसके कि दोनो ही अधिकार-लोलुप थे। बचपन से ही वह कजूस था और ससार के इस प्रच्छन्न भाग अरोंयो होंडो मे अत्यत गरीबी से रहता था, यद्यपि लोग उसे बडा धनी समझते थे। वह कहा करता था कि उसका मकान गधे के अस्तबल जैसा सादा था। घर मे केवल उसकी चारपाई, क्रूश तथा एकाध अन्य सामान थे, कुर्सी-मेज़ आदि कुछ नही। उसके पास एक मरे से खच्चर के अतिरिक्त अन्य कोई मवेशी नही थे। इसी खच्चर पर चढ कर वह अपने मित्र मार्टिनेज़ से झगडा करने या भूख लगने पर उससे तगड़ा भोजन पाने ताग्रोस जाया करता था। उसके लिये सभी दिन शुक्रवार का दिन था। इस दिन ईसाई माँस नही खाते। हाँ, कभी-कभी कोई पडोसिन उस पर तरस खाकर उसके लिये मुर्गे का माँस पकाकर उसे दे जाती थी, क्योंकि उसके इलाके के लोग उसे पसन्द करते थे। वह सभी

चीजें हडपना चाहता था, परन्तु अत्याचार से नही। वह अरोंयो सेको और क्वेस्टा गाँवो से अपने निजी गाँव की अपेक्षा अधिक पैसे वसूल करता था। मितव्ययिता मेक्सिकनो मे एक ऐसा अनोखा गुण है कि वे उससे बडा मनोरजन प्राप्त करते है। उसके इलाके के लोग यह कहने मे बडा आनन्द लेते थे कि वह कभी कोई वस्तु नही खरीदता, और जब गृहिणियाँ अपना झाडू पुराना समझ कर फेक दें, तो वह उन्हे बीन कर रख लेता था, और वह पादरी मार्टिनेज़ के उतारे हुए कपडे पहनता था, यद्यपि वे उसे बहुत बडे होते थे। दोनो पादरियो के बीच एक बार भयकर झगडा इस बात पर हुआ था कि मार्टिनेज़ ने अपने कुछ पुराने कपडे लुसेरो को न देकर मेक्सिको के एक भिक्षु को दे दिया था, जो उसके ही घर में रह कर विद्याध्ययन कर रहा था और जिसके पास जाडा आने पर अपना तन ढँकने के लिये कोई कपडा नही था।

दोनो पादरी एक दूसरे के सम्बन्ध में निर्लज्जतापूर्ण ढग से बातें किया करते थे। मार्टिनेज़ की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ लुसेरो के सम्बन्ध में होती थी और लुसेरो की मार्टिनेज़ के सम्बन्ध मे।

"देखो, बात यह है," पादरी लुसेरो किसी विवाहोत्सव के अवसर पर नौजवानो से कहता, "मेरा तरीका उस बुड्ढे जोज़ मार्टिनेज़ से अच्छा है। उसकी नाक तो अब ठुड्डी से मिल रही है, और अब कोई पेटीकोट उसके लिये बेकार है। परन्तु 'मैं, अब भी डालर देख कर सीधे खडा हो जाता हूँ। पैसा हाथ में पाकर मै कितना हर्षित हो जाता हूँ और वह किसी सुन्दर युवती को देख कर सिवा हाथ मल कर रह जाने के अतिरिक्त क्या कर सकता है ?"

वह उन्हे विश्वास दिलाता था कि लालच वृद्धावस्था मे बढ जाती है और बड़ी सुहावनी भी हो जाती है। उसे पैसे की लालच थी और मार्टिनेज़ अपने काम की तृप्ति के लिये बेचैन रहता था। अपने-अपने उद्देश्यो की पूर्ति मे वे एक दूसरे के प्रतिद्वद्वी नही थे। पादरी का पद प्राप्त कर लेने के

वाद जव त्रिनिदाद अपने चाचा के साथ रहने लगा, फादर लुसेरो हमेशा शिकायत किया करता था कि मार्टिनेज के साथ रहते-रहते उसने फजूलखर्ची की आदतें सीख ली है और वह उसे वरवाद कर रहा है। फादर मार्टिनेज़ यह कह कर बडा आनन्द लेता था कि त्रिनिदाद अर्रोयो होडो के पादरी-इलाके को चूस रहा है और हरदम खाने के लिये कुछ न कुछ ढूंढता रहता है।

जव विशप विद्रोह की अधिक दिनो तक उपेक्षा नही कर सके, तो उन्होने फादर वेलेंट को ताओस भेजकर यह चेतावनी घोषित करायी कि तीन सप्ताह में दोनो पादरी अपना पाखण्ड छोड दें। चौथे रविवार को फादर जोसेफ ने, जिन्हें इस वात से शिकायत थी कि हमेशा उन्हे ही "विल्ली को कोडे लगाने के लिये" भेजा जाता है, वह घोषणा-पत्र पढा, जिसमें विशप ने फादर मार्टिनेज़ से पादरी पद के सभी अधिकार छीन लिये थे। उसी दिन, तीसरे पहर, वे अठारह मील दूर अर्रोयो होडो गये और वैसा ही पत्र फादर लुसेरो के विरुद्ध भी पढा।

फादर मार्टिनेज अपने पाखण्डी गिरजा के प्रधान के रूप में वने रहे और कुछ दिन वाद अल्प वीमारी में ही वे मर गये और विद्रोही गिरजाघर के अन्तर्गत ही फादर लुसेरो द्वारा दफनाये गये। इसके थोडे ही दिन वाद फादर लुसेरो स्वय भी वीमार पड गये और वहुत दुर्वल हो गये। परन्तु वीमारी में भी उन्होने एक ऐसा असाधारण काम कर दिखाया, जो अडोस-पड़ोस मे एक किस्सा वन गया,—उन्होने अर्द्धरात्रि को एक हाथापाई में एक चोर को मार डाला।

एक रेल कर्मचारी, जो मालगाडियो पर काम काम करता था, किसी चोरी के अपराध मे वर्खास्त कर दिया गया था और अव वह ताओस में रहकर किसी प्रकार जीविकोपार्जन कर रहा था। वहाँ उसने फादर लुसेरो के गडे हुए खजाने के सम्वन्ध में सुना। वह वुड्ढे के यहाँ चोरी करने आर्रोयो होडो आया। फादर लुसेरो श्वान-निद्रा में सोने वाले व्यक्ति थे,

और रात के सन्नाटे मे पैरो की आहट सुन कर, वे गद्दे के नीचे छिपा कर रखा हुआ छुरा लेकर आगन्तुक पर झपट पडे। दोनो अँधेरे ही मे लडने लगे, और यद्यपि, चोर नौजवान आदमी था और हथियार से लैस था, बुड्ढे पादरी ने छुरा भोक कर उसे मार डाला और फिर खून से लथपथ बाहर आकर चिल्लाकर लोगो को जगाया। पडोसियो ने जाकर देखा कि पादरी का कमरा कसाईखाना जैसा हो रहा है और चोर सेंध के पास मरा पड़ा है। बुड्ढे के इस साहसपूर्ण कार्य को देखकर लोग हैरत मे पड़ गये।

परन्तु इस घटना से जो मानसिक आघात लगा, उससे फादर लुसेरो फिर नही सम्भल सके। उनकी हालत इतनी तेजी से बिगड़ने लगी कि लोगो ने उनकी चिकित्सा के लिये ताओस से मवेशियो के ही डाक्टर को बुलवा लिया। यह डाक्टर एक अमेरिकन था, जो मनुष्यो तथा घोड़ो दोनों का चिकित्सा करता था। पर उसने फादर लुसेरो को देख कर कहा कि मैं उनके लिये कुछ नही कर सकता। उसके अनुसार फादर लुसेरो के पेट मे कोई फोड़ा या कैंसर हो गया था।

पादरी लुसेरो मरते समय अपने कर्मों पर पछताने लगे और फादर वेलेंट ने ही, जिन्होने उन्हे पद-च्युत किया था, उन्हे पुन कैथोलिक धर्म मे विधिवत ले लिया। बिशप के किसी काम से वे ताओस आये हुए थे और कारसन तथा उसकी पत्नी के साथ ठहरे हुए थे। एक दिन सध्या समय, जब जोर की वर्षा हो रही थी और तेज हवा चल रही थी और वे सब भोजन करने बैठे थे, तभी एक घुड़सवार मकान के फाटक पर आकर रुका। कारसन ने जाकर उसकी अगवानी की। जिस अतिथि को वह अन्दर लाया, वह त्रिदिनाद लुसेरो था। उसने अपना रबड का कोट उतार दिया और आर्रोयो होडो का बना हुआ लबादा पहने हुए, गले मे एक क्रूश लटकाये, अपने भारी भरकम शरीर एवं महत्ता से सारे कमरे को आच्छादित करता हुआ, खडा रहा। कारसन की पत्नी को झुक कर सलाम करने के बाद उसने फादर वेलेंट से टूटी-फूटी अंग्रेजी भाषा मे

(शुद्ध अंग्रेजी वह बोल ही नही पाता था) धीरे-धीरे मोटी आवाज मे बोला ।

"मैं पादरी लुसेरो का एकमात्र भतीजा हूँ । मेरे चाचा बहुत बीमार हैं और शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो सकती है । वे ख़ून की कै कर रहे हैं ।" इतना कह कर उसने अपनी आँखें नीची कर ली ।

"अपनी भाषा में बात करो, भले आदमी !" फादर वेलेंट ने कुछ उत्तेजित हो कर कहा । "जितना तुम अंग्रेजी जानते हो, उससे अधिक मैं स्पेनिश भाषा जानता हूँ । अच्छा, अब कहो, तुम अपने चाचा की हालत के बारे में क्या कहना चाहते हो ?"

त्रिनिदाद ने अपने चाचा की हालत का वर्णन किया और बीच-बीच में दुहराता जाता था कि "उन्हे ख़ून की कै हुई ।" इस कहने को वह बडा महत्त्वपूर्ण समझता था । उसके चाचा फादर वेलेंट के लिये बेचैन हो रहे थे और चाहते थे कि वे आकर उन्हे पुन कैथोलिक धर्म मे सस्कार के साथ ले लें ।

कारसन ने विकार से प्रात काल तक रुकने का आग्रह किया, क्योंकि होडो की सड़क वर्षा के कारण बिलकुल नष्ट हो गयी होगी और अँधेरे मे उस पर जाना खतरनाक है । परन्तु फादर वेलेंट ने उत्तर दिया कि यदि सड़क ख़राब होगी, तो वे पैदल जायँगे । कारसन की पत्नी से छुट्टी लेते हुए वे अपने कमरे मे घुडसवारी के कपडे तथा अपना झोला आदि लेने चले गये । त्रिनिदाद कहने पर फादर वेलेंट के रिक्त स्थान पर बैठ गया और खूब जम कर भोजन किया । कारसन ने फादर वेलेंट का खच्चर कस कर तैयार किया, और विकार त्रिनिदाद को रास्ता दिखाने के लिये साथ लेकर रवाना हो गये ।

यह बात नही थी कि अरोंयो होडो जाने के लिये उन्हे कोई रास्ता दिखाने वाला चाहिये ही था, उन्हे यह स्थान विशेषतौर से प्रिय था, और वे वहाँ जाने के लिये कोई-न-कोई बहाना ढूंढते रहते थे । वे बहुधा ही ग्रीष्म

ऋतु में, जब मौसम अच्छा रहता था, या वसत के प्रारम्भ में जब बनस्पतियो में हरे पत्ते नही निकले रहते थे और सारा प्रदेश लाल (लाल कोपलो से) और नीला और पीला (फूलो और पीली पत्तियो से), एक रंगीन मानचित्र की भाँति होता था, जाया करते थे।

अरोयो होडो जाते समय पहले छोटी-छोटी खुशबूदार झाड़ियो से भरा मैदान मिलता था, जो लगातार और समतल दूरस्थ पर्वतो तक फैला हुआ था, फिर अचानक ही दो सौ फुट से भी अधिक गहरे जमीन में कटे किसी दरार का कगारा मिल जाता था। दरार का यह कगारा खडे टीले के रूप में था, परन्तु चट्टानी टीला नही, अपितु मिट्टी का ही टीला। कगारे पर पहुँच कर अगर आप नीचे झाँकें, तो आप इस विशाल खाईं की गहराई में नीचे हरे खेतो और वगीचो तथा लाल-लाल मकानो की बस्ती की यह एक नयी दुनियाँ ही देखेगे। यही होडो की वस्ती थी। नीचे, इधर-उधर खेत जोतते हुए, आदमी, जानवर, खच्चर आदि बच्चो के खिलौनो जैसे दीख पड़ते थे। वस्ती के वीचो वीच खेतो और चरागाहो में से होता हुआ एक तेज नाला बहता था, जो ऊँचे पहाड़ो से निकल कर आता था। इसका उद्गम वास्तव मे इतनी ऊँचाई पर था कि मेक्सिकन लोग कभी-कभी एक लकड़ी का बन्द विशाल नालीनुमा हौदा दरार के आर पर रख कर, उसमें से नाले का पानी सैकड़ो फुट दूर एक खुली खाईं मे ले जाते थे। फादर वेलेंट यहाँ बहुधा ही खडे होकर उस वंद पानी को ठीक उस स्थान पर, जहाँ से नीचे वस्ती के लिये ढालू पगडडी आरम्भ होती थी, जीवित वस्तु की भाँति अँधेरे से बाहर, प्रकाश मे, फुफकार कर निकलते हुए, देखा करते थे। इस प्रकार फेरा हुआ पानी मुख्य सोते की एक पतली सी शाखा मात्र थी, मुख्य सोता नीचे बस्ती में श्वेत पत्थरो वाली सतह पर बहता था। उसके किनारे लचीले लकडी के हरे-हरे वृक्ष तथा बड़ी-बड़ी घासें और रग-बिरगे जंगली फूलो के पौधे थे। उन जगली घासो के बीच कुछ फूलो के पौधे तथा कुछ अन्य वृक्ष फूलो से लदे काफी बडे हो गये थे।

यह पहला अवसर था कि फादर वेलेंट सूर्यास्त के बाद अँधेरे में नीचे बस्ती में उतरने के लिये पहुँचे थे। अत कगारे पर खडे होकर उन्होने निर्णय किया कि वे कंटेंटो की इतनी कडी परीक्षा नही ले सकते। "जा तो वह सकता है," त्रिनिदाद से उन्होने कहा, "परन्तु मैं ही उस पर चढ कर नही जाऊँगा।" वे उतर गये और पैदल ही टेढी-मेढी पगडडी से नीचे उतरे।

वे लोग आधी रात के पहले ही फादर लुसेरो के घर पहुँचे। मालूम होता था कि बस्ती की आधी आबादी उनकी सेवा शुश्रुषा में डटी है और वहाँ इतनी अधिक बत्तियाँ जल रही थी, मानो कोई त्यौहार मनाया जा रहा हो। बीमार बुड्ढे के कमरे मे बहुत सी मेक्सिकन स्त्रियाँ थी। वे फर्श पर बैठी, अपनी काली शालें ओढे, सामने जली हुई मोमबत्तियाँ रखे, प्रार्थना कर रही थी। उनकी सख्या इतनी अधिक थी कि मोमबत्ती के स्थान तक पहुँचना किसी के लिए भी कठिन था।

फादर वेलेंट ने कसेप्शन गोज़ालिस नामक एक स्त्री को, जिसे वे भली-भाँति जानते थे, अपनी ओर सकेत से बुलाया और उससे पूछा कि इस सब का अर्थ क्या है। उसने धीरे से कान मे कहा कि मरणासन्न पादरी की यही इच्छा है। उसकी दृष्टि मन्द पडती जा रही थी, और वह अधिकाधिक रोशनी की माँग करता जा रहा था। कसेप्शन ने आह भर कर बताया कि वह जिन्दगी भर मोमबत्तियाँ बचाता रहा और अधिकाश अवसरो पर रात में वह लकड़ी के किसी नुकीले पतले टुकडे को जला कर ही काम चला लेता था।

कोने मे चारपाई पर फादर लुसेरो कराह रहा था और उलट-पलट रहा था, एक आदमी उसका पाँव सहला रहा था, और दूसरा गरम पानी में कपडा डुबो कर, फिर उसे निचोड़ कर उसके पेट पर रख रहा था, जिससे पीड़ा में कुछ कमी हो। सिनोरा गोज़ालिस ने धीरे से बताया कि बुड्ढा पीड़ा में चादरें चबा रहा था, वह स्वय अपनी सर्वश्रेष्ठ चादरें ले

आयी थी, और मुँह से चबा-चबा कर उसने उनके किनारो को गोटेदार बना दिया था।

फादर वेलेट चारपाई के समीप पहुँचे और स्त्रियो से बोले, "चारपाई से थोडी दूर हटो, देवियो! तुम लोग दीवार के पास जाओ, तुम्हारी मोमबत्तियाँ तो मेरी दृष्टि को चकाचौध कर रही हैं।"

परन्तु जैसे ही वे अपनी-अपनी मोमबत्तियाँ फर्श पर से उठाकर खडी होने लगी, बुड्ढे ने चिल्लाकर कहा, "नही, नही, बत्तियाँ न उठाओ! कोई चोर आ जायगा और फिर मेरा कुछ भी नही बचेगा।"

स्त्रियाँ झिझक गयी, उन्होने फादर वेलेंट की ओर भर्त्सना भरी निगाहो से देखा, और पुनः बैठ गयी।

पादरी लुसेरो क्षीण होकर ककालमात्र रह गया था। उसके गाल धँस गये थे, उसकी टेढी नाक मिट्टी के रग की और चिकनी हो रही थी। उसकी आँखो से ज्वर के कारण शोले निकल रहे थे। इन जलती आँखो से उसने फादर जोसेफ की ओर देखा,—बड़ी-बडी, काली, चमकदार एव अविश्वास भरी आँखें। आज अपनी विदाई की इस रात, बुड्ढा मेक्सिकन की अपेक्षा स्पेनियार्ड अधिक लगता था। उसने आश्चर्यजनक मज़बूती से फादर जोसेफ का हाथ जकड़ लिया और उस आदमी की छाती मे, जो उसका पाँव सहला रहा था, कस कर एक लात मारी।

"पाँव दबाना बन्द करो, और इन गीले कपडो को यहाँ से हटाओ। अब चूँकि विकार साहब आ गये है, मुझे इनसे कुछ कहना है और मै चाहता हूँ कि तुम सब लोग भी सुनो।" फादर लुसेरो की आवाज हमेशा से ही पतली और तेज थी, उनके इलाके के लोग कहा करते थे कि वह ऐसी थी, जैसे कोई घोड़ा बात कर रहा हो। "सीन्योर विकारियो, आपको पादरी मार्टिनेज़ की याद है न? अवश्य होगी क्योकि आपने उसके साथ भी वही दुर्व्यवहार किया, जो मेरे साथ। अच्छा, अब सुनिये।"

फादर लुसेरो ने बताया कि मार्टिनेज़ मरने के पहले उन्हे कुछ धन

सौंप गया था, जो उसकी आत्मा की शान्ति के लिये पूजा-समारोह आदि में खर्च किया जाने को था, और वह पूजा उसके जन्म-स्थान अबीकी के गिरजा मे की जाने को थी। लुसेरो ने यह रकम वादे के अनुसार खर्च नहीं की थी, अपितु उसे अपने कमरे में, उधर की दीवार पर टगे विशाल क्रूश के ठीक नीचे, ज़मीन में गाड़ दी थी।

इसी समय फादर वेलेंट ने पुन स्त्रियो को चले जाने के लिये सकेत किया, परन्तु ज्योही उन्होने अपनी वत्तियाँ उठायी, फादर लुसेरो उठ बैठे (उस समय वे अपनी सोते समय पहनने वाली कमीज़ पहने थे) और चिल्लाकर बोले, "बैठी रहो तुम लोग। क्या तुम लोग मुझे एक अजनबी के साथ छोड़कर भाग जाना चाहती हो? जैसे मैं तुम लोगो पर विश्वास नही करता, वैसे ही इन पर भी नही करता! ओह, ईश्वर ने ऐसी कोई युक्ति क्यो नही बतायी ताकि मनुष्य मृत्यु के वाद भी अपने धन-दौलत की रक्षा कर सके! जीते जी तो मै अपनी छुरे के वल पर उसकी रक्षा कर सकता हूँ, यद्यपि मैं बुड्ढा हूँ। परन्तु मरने—?"

सिनोरा गोंज़ालिस ने फादर लुसेरो को शान्त किया, उन्हे समझा-बुझाकर पुनः तकिये पर लेटाया और कहा कि वे जो कुछ कहना चाहते थे, कहे। लुसेरो ने कहा कि इस पैसे को, जो मार्टिनिज़ से धरोहर के रूप मे लिया गया था, अबीकी भेजना चाहिये और जिस ढग से पादरी ने खर्च करने को कहा था, वैसे ही खर्च करना चाहिये। क्रूश के नीचे तथा उनकी चारपाई के नीचे ज़मीन में गडा हुआ उनका अपना धन है। उनके इस धन-राशि का एक तिहाई भाग त्रिनिदाद के लिये है। शेष उनकी आत्मा की शान्ति के लिये सार्वजनिक पूजा-समारोह आदि में खर्च किया जाना चाहिये, और ये समारोह साता फे में सैन मिगुएल के गिरजाघर में मनाये जाने चाहिये।

फादर वेलेंट ने उसे विश्वास दिलाया कि उनकी सभी इच्छाएँ बड़ी ईमानदारी से पूरी की जायँगी और अब इस समय उन्हे ससार के माया-

जाल को भूल जाना चाहिये और अब उन्हे दीक्षा-सस्कार के लिये अपने मन को तैयार करना चाहिये ।

"सभी कुछ समय आने पर होता है । परन्तु आसानी से कोई इस ससार के माया-मोह को नही छोड सकता । कसेप्शन गोजालिस कहाँ है ? यहाँ आओ, बेटी । देखना, मेरे इस कमरे से बाहर निकाले जाने के पहले ही, इसके पहले ही कि मेरा शरीर बिलकुल ठंडा हो जाय, पैसा जमीन खोद कर निकाल लिया जाय, और इन सभी औरतो की मौजूदगी मे गिन लिया जाय तथा रकम की तादाद कही लिख ली जाय ।" इतना कहते-कहते बुड्ढे को जैसे कोई नयी बात याद आ गयी और उसने वडे आवेश से कहा, "हाँ, क्रिस्टोबाल, वह आदमी ठीक है । क्रिस्टोबाल कारसन, वह गिनने तथा रखने के लिये अवश्य रहे । वह बडा ईमानदार आदमी है । अरे मूर्ख, त्रिनिदाद, तू क्रिस्टोवाल को अपने साथ क्यो नही लिवा आया ?"

फादर वेलेंट क्षुब्ध हो उठे । "यदि आप शान्त नही हो जाते, फादर लुसेरो, और ईश्वर मे अपना ध्यान नही लगाते, तो मैं सस्कार करने से इनकार कर दूँगा । आपकी वर्तमान् मानसिक स्थिति मे ऐसा करना अधार्मिक एव अपवित्र कार्य होगा ।"

बुड्ढा हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगा और विकार की बात मानते हुए आँखें वन्द कर ली । फादर वेलेंट बगल वाले कमरे मे गये और अपना लबादा आदि पहन लिया, और उनकी अनुपस्थिति मे कसेप्शन गोज़ालिस ने पादरी की चारपाई के पास एक छोटी मेज़ पर अपना एक रूमाल विछा दिया और उस पर दो मोमवत्तियाँ तथा विकार का हाथ धोने के लिये एक प्याला पानी रख दिया । फादर वेलेंट अपना लबादा आदि पादरियो का औपचारिक वस्त्र पहने तथा सस्कार आदि के कार्यों में प्रत्युक्त होने वाले पवित्र जल, विस्कुट आदि के रखने के वर्त्तन लिये वापस आये और चारपाई तथा वहाँ एकत्र लोगो पर पानी छिड़कने लगे और किसी मंत्र का उच्चारण

करने लगे। स्त्रियाँ फर्श पर अपनी वत्तियाँ छोडकर वहाँ से खिसक गयी। फादर लुसेरो ने अपने धार्मिक विश्वास को दुहराया, पापो को स्वीकार किया और आत्म-उन्नति एवं पश्चात्ताप प्रकट करते हुए अपने पाखण्ड को तिलाजलि दी, इसके वाद सस्कार पूर्ण हुआ और वे पुन कैथोलिक वन गये।

सस्कार के वाद उनका उद्विग्न मन शान्त हुआ और वे हाथ छाती पर रखे चुपचाप पडे रहे। स्त्रियाँ वापस आ गयी और प्रार्थना गुनगुनाते हुए पहले की तरह वैठ गयी। वर्षा की धार खिडकियो के शीशो से टकरा रही थी, ऊपर से, तलहटी में आती हुई हवा सूँ-सूँ की आवाज़ कर रही थी। कमरे में एकत्र लोगो में से कुछ लोग थकावट एव नीद के मारे ऊँघने लगे, परन्तु वहाँ से जाने की किसी ने इच्छा नही प्रकट की। मृत्यु-शय्या पर पडे हुए किसी को वैठकर देखते रहना उनके लिये कोई कठिनाई की वात नही थी, अपितु वह उनके लिये वह एक गौरव की वात थी,—और किसी मरते पादरी को देखना तो एक असाधारण गौरव की वात थी।

उन दिनो यूरोपीय देशो मे भी मृत्यु का धार्मिक रूप से एक सामाजिक महत्त्व था। उसे केवल वह क्षण नही मानते थे, जव शरीर के अंग काम करने से जवाव दे देते थे, अपितु उसे जीवन रूपी नाटक के अतिम अंक का चरम विन्दु मानते थे, वह क्षण, जव आत्मा शरीर छोड कर किसी दूसरे लोक में प्रवेश करती थी और पूर्णत सचेत अवस्था में एक छोटे से दरवाज़े से गुजरती हुई एक अकल्पनीय दृश्य मे पहुँच जाती थी। पास वैठे हुए लोग हमेशा यह आशा लगाये रहते थे कि मरने वाला व्यक्ति किसी ऐसे रहस्य का उद्घाटन करेगा, केवल वह उस समय देख सकता है, तथा यदि उसका मुँह नही, तो चेहरा अवश्य कुछ-न-कुछ वोलेगा और उसके चेहरे पर अदृष्ट से कोई प्रकाश या छाया अवश्य पडेगी। महान पुरुषो के, नेपोलियन के, लार्ड वाइरन के, 'अन्तिम शब्द' अव भी भेंट की पुस्तको में छपे थे तथा प्रत्येक सामान्य पुरुष या स्त्री के मरने के

समय की बुदबुदाहट को उनके पडोसी एवं सम्बन्धी बडे गौर से सुनते थे और फिर उसे सुरक्षित रखते थे। इन शब्दो को, चाहे वे बिलकुल ही महत्त्वपूर्ण न हो, देववाणी समझा जाता था और लोग उन पर विचार करते थे, जिन्हे भी एक दिन उसी राह जाना होगा।

मृत्यु-कक्ष की वह भयावह निस्तब्धता अचानक ही भग हो गयी। बात यह हुई कि त्रिनिदाद लुसेरो दीवार पर टगे क्रूश के समक्ष घुटनो के बल बैठकर सिर झुका कर पार्थना करने लगा, और उसका चाचा, जिसे लोग समझ रहे थे कि सो रहा है, अचानक उलटने-पलटने लगा और चिल्ला पडा, 'चोर, चोर ! पकडो, बचाओ !'' त्रिनिदाद वहाँ से फौरन हट गया, परन्तु इसके बाद बुड्ढा एक आँख खोल कर ही पडा रहा और किसी को क्रूश के निकट जाने का साहस नही हुआ।

सुबह होने के लगभग एक घटा पहले पादरी को साँस लेने में इतना कष्ट होने लगा कि दो आदमी उसके पीछे जाकर उसका तकिया ऊँचा कर दिये। स्त्रियाँ कानाफूसी करने लगी कि उसके चेहरे में परिवर्तन हो रहा है और वे अपनी बत्तियाँ नजदीक ले आयी और उसकी चारपाई के बिलकुल निकट घुटनो के बल बैठ गयी। उसकी आँखो में चेतनता थी और उसकी दृष्टि-शक्ति अभी नष्ट नही हुई थी। उसने अपना सिर एक ओर घुमा लिया और मोमबत्ती की लौ को एकटक, बिना पलक झपाये, देखने लगा और उसका चेहरा उत्तेजित होने लगा। उसके ओठ काँपने लगे और लगा जैसे वह कुछ बोलना चाहता है। बैठे हुए लोग अपनी साँसें रोक लिये और उन्हे निश्चय हो गया कि मरने के पहले वह अवश्य बोलेगा,—और सचमुच वह बोला। चेहरे मे एक आजीब ऐंठन उत्पन्न हुई, जो व्यग्यपूर्ण हँसी की तरह थी, उसके मुँह में तीव्र श्वास की एक ध्वनि सुनाई पडी और फिर उनका पादरी अन्तिम वार घोडे की तरह बोला।

"खूब भोगो, मार्टिनेज खूब भोगो !" और सद्य. छटपटाता हुआ वह मर गया।

सुबह होने पर त्रिनिदाद यह कहता फिरा (और मेक्सिकन स्त्रियो ने उसकी पुष्टि की) कि मृत्यु के समय फादर लुसेरो की दृष्टि दूसरे लोक में पहुँच गयी थी, और उन्होंने पादरी मार्टिनेज को भयकर यत्रणा मे देखा था। जब तक उसकी मृत्यु-शय्या के पास बैठे क्रिश्चियन जीवित रहे, यह कहानी अरोंयो होडो मे प्रचलित रही।

पादरी के अन्तिम आदेशो के अनुसार, जब उसके कमरे की जमीन खोदी गयी, तो ताओस, साता क्रुज एव मोरा के भी लोग यह देखने आये कि ज़मीन के अदर से सोने और चाँदी के सिक्को से भरे चमडे के थैले निकले। उनमे स्पेनिश सिक्के थे, फ्रासीसी सिक्के थे, अमेरिकन सिक्के थे, अग्रेज़ी सिक्के थे, जिनमे कुछ तो बहुत पुराने थे। जब उन्हे सरकारी टकसाल में भेजकर उनका मूल्याकन कराया गया, तो पता चला कि अमेरिकन सिक्के में उनका मूल्य बीस हजार डालर के बराबर था। निश्चय ही, पर्वत की दो सौ फुट गहरी खाई के नीचे बसे गाँव के एक वृद्ध पादरी के लिये इतनी बडी रकम एकत्र करना असाधारण बात थी।

अध्याय ६

डोना इज़ाबेला

१

डॉन एंटोनियो

विशप लातूर की एक बडी भारी आकाक्षा थी। वे साता फे मे एक ऐसा गिरजाघर बनाना चाहते थे, जो वहाँ के सुन्दर प्राकृतिक दृश्यो के अनुरूप हो। अपनी इस इच्छा पर अधिकाधिक विचार करने के पश्चात्, अन्त मे वे यह सोचने लगे कि इस प्रकार की इमारत स्वय उनके तथा उनके उद्देश्यो का एक क्रमबद्ध प्रसार ही तो होगी, जो उनके लोप हो जाने के बाद भी आकाक्षाओ एव महत्त्वाकाक्षाओ के प्रतीक के रूप में खडी रहेगी। अपने प्रशासन काल के आरम्भ से ही वे अपने अल्प साधनो से गिरजा-कोष के लिये धन-सचय करने लग गये। इस काम मे उन्हे कुछ धनिक मेक्सिकन कृषको से सहायता मिली, परन्तु जितनी सहायता डॉन एंटोनियो ओलिवारिस ने की, उतनी अन्य किसी ने नही।

एंटोनियो ओलिवारिस कई भाइयो एव चचेरे भाइयो के एक विशाल परिवार का सबसे अधिक बुद्धिमान् और समृद्ध सदस्य था और उस समय एव स्थान के लिहाज़ से बहुत ही अनुभवी एव सासारिक मनुष्य था। उसने अपने जीवन का अधिकतर भाग न्यू ऑर्लियस तथा अल पासो डेल

नोर्तें में विताया था, परन्तु वह विशप लातूर के साता फे मे आने के कई वर्ष बाद वह साता फे में ही रहने के लिये वापस आ गया। वह अपने साथ अपनी अमेरिकन पत्नी तथा एक गाडी भर कर कुर्सी-मेज़ आदि लाया और नगर से सटे ही पूरब की ओर उसी पुराने मकान मे जीवन के शेष दिन बिताने के लिये विस्थापित हो गया, जहाँ वह पैदा हुआ था तथा जहाँ उसने शैशव के दिन विताये थे। उस समय उसकी अवस्था साठ वर्ष की थी। नौजवानी मे ही उसकी पहली पत्नी का देहान्त हो चुका था और न्यू ऑर्लियस जाने पर उसने पुन विवाह किया। उसकी यह पत्नी केंटकी राज्य की रहने वाली थी, जो अपने कुछ सम्बन्धियो के साथ रह कर लुजियाना राज्य में बडी हुई थी। वह सुन्दर तथा गुणवती थी, उसने किसी फ्रासीसी कनवेंट स्कूल मे शिक्षा पायी थी और अपने पति को यूरोपीय सभ्यता में ढालने के लिये उसने काफी प्रयास किया था। उसके पति के सुन्दर कपड़े और शिष्ट व्यवहार आदि तथा ठाट-वाट से रहने के ढँग उसके भाइयो एव मित्रो मे उसके प्रति घृणा-मिश्रित ईर्ष्या की भावना जाग्रत कर दिये थे।

ओलिवारिस की पत्नी डोना इजाबेला एक पक्की कैथोलिक थी और उसके घर में फ्रासीसी पादरियो का हमेशा ही स्वागत तथा अच्छा सत्कार होता था। इजाबेला ने उस असम्बद्ध रूप में व्यस्थित कच्ची ईंटो के मकान को, जिसमें बडा भारी आगन था तथा फाटक था, नक्काशीदार धरनियाँ तथा वल्लियाँ थी, ऊँची-नीची छतें थी और आग जलाने के सुरक्षित स्थान थे, सुन्दर बना लिया था। वह बड़ी विशाल-हृदया थी, और यद्यपि अब उसकी अवस्था काफी हो चुकी थी, वह देखने में आकर्षक थी। दुबली-पतली स्त्री, बडी चटपट, उत्साही, रंग बिलकुल श्वेत, जिसे उसने बुरी-से-बुरी जलवायु मे बिगड़ने नही दिया था, और भूरे रग के काफी अच्छे बाल, जिनमे उसके चेहरे के अनुसार आवश्यकता से अधिक गुच्छे और घूंघर थे। वह फ्रासीसी भाषा अच्छा बोल लेती थी, थोड़ा-थोडा

स्पेनिश भी बोलती थी, वीणा बजा लेती थी और मजे का अच्छा गा लेती थी।

निश्चय ही फादर लातूर तथा फादर वेलेंट के लिये, जिन्हे मजदूरो, रेड इण्डियनो तथा उजड्ड सीमानिवासी अमेरिकनो के साथ ही अधिकतर रहना पडता था, यह बडे भाग्य की वात थी कि वे कभी-कभी एक सभ्य महिला के साथ वैठकर अपनी मातृ-भाषा में वात कर सकते थे तथा उस सत्कारपूर्ण वातावरण मे आग के पास, पुराने बडे-बडे शीशो और खुदे हुए चित्रो, गद्दीदार कुर्सियो, साफ पर्देदार खिडकियो, और प्लेटो तथा बेल्जियन शीशे के बने हुए वर्तनो से भरी आलमारियो से युक्त कमरे मे कुछ देर मन बहला सकते थे। इस जोडी के साथ, जो इस बात मे भी अनुराग रखती थी कि वाहरी दुनिया मे क्या हो रहा है, शाम को वैठकर गप्प लडाना, वढिया भोजन करना, बढिया शराब पीना तथा अच्छा सगीत सुनना बडा आनन्दप्रद होता था। फादर जोसेफ, जो असगतियो के भाण्डार थे, उच्च सुन्दर स्वर में गा भी लेते थे। ओलिवारिस की पत्नी उनके साथ पुराने फ्रासीसी गाने गाना पसन्द करती थी। परन्तु इतना अवश्य स्वीकार करना पडेगा कि गाने को लेकर वह थोडी घमण्डी थी और यदि कभी वह गाती भी थी, तो ज़िद करती थी कि तीन भाषाओ मे गाया जाय, तथा अपने पति के प्रिय गानो को गाना कभी नही भूलती थी। स्टीफेन फोस्टर के नीग्रो राग नदियो के किनारे वाले क्षेत्र मे प्रचलित होते-होते अब इस सीमावर्ती प्रदेशो मे भी पहुँच चुके थे, परन्तु पुस्तक के रूप मे मुद्रित होकर नही, अपितु इस प्रकार कि किसी एक गायक ने दूसरे को सिखाया, दूसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को।

डॉन एटोनियो भारी-भरकम शरीर का मनुष्य था, पेट कुछ निकला हुआ, सिर थोड़ा गजा और वह बोलता था बहुत धीरे-धीरे। परन्तु उसकी आँखे बडी जानदार थी और उनकी पीली चमक उस समय स्पष्ट झलकती थी, जब वह बिलकुल चुपचाप रहता था। भोजन के पश्चात् जब वह न्यू

ऑर्लियस से लायी हुई एक बडी कुर्सी पर बैठा हुआ अपनी लम्बी-लम्बी पीली उँगलियो मे सिगार दबाये अपनी पत्नी को वीणा बजाते देख कर मुग्ध हो जाता था, तो उस समय उसे देखते ही बनता था।

उसकी पत्नी के सम्बन्ध मे साता फे मे अनेक गाथाए फैली हुई थी, क्योकि वह अब भी सुन्दर थी और अब भी उसका पति उसे पूर्ववत् प्रेम करता था। अमेरिकन लोग तथा ओलिवारिस के भाई कहा करते थे कि वह युवतियो जैसे कपडे पहनती थी, जो कदाचित् सत्य भी था और यह कि न्यू ऑर्लियस तथा अल पासो डेल नोर्ते मे उसके प्रेमी अब भी थे। उसके भाजे तो यहाँ तक कहते थे कि वह उस मेक्सिकन लडके पर ही मुग्ध थी, जिसे ये लोग सैन एटोनियो से वेला बजाने के लिये ले आये थे, वे पति-पत्नी दोनो ही सगीत के प्रेमी थे, और यह लडका, जिसका नाम पैब्लो था, अपने बाजे का तो जादूगर ही था। उसके नौकर अनेक प्रकार की बातें फैलाए हुए थे, डोना इज़ाबेला के कपडो से ही एक कमरा भरा हुआ था, और वे इतने सुन्दर थे कि उन्हे वह यहाँ पहनती ही नही थी, वह अपने पति के जेब से पैसे निकाल लेती थी और अपने कमरे में ज़मीन खोदकर गाड देती थी, वह अपने पति की वासना बढाने के लिये उसे कुछ दवाए तथा जडी-बूटी की बनी चाय पिलाया करती थी। इस सब गप्पबाज़ी का अर्थ यह नही कि उसके नौकर वफादार नही थे, उलटे वे ये बातें इस लिए कहते थे कि उन्हे अपनी गृह-स्वामिनी पर नाज था।

ओलिवारिस, जो समाचार पत्र आदि पढता था, यद्यपि वे उसे एक सप्ताह बाद मिलते थे, जो सिगरेटो की अपेक्षा सिगार और ह्विस्की की अपेक्षा फ्रेंच शराब अधिक पसन्द करता था, अपने छोटे भाइयों से बिलकुल भिन्न था। अपने पुराने मित्र मैनुएल शावेज़ के बाद साता फे मे यही दो फ्रासीसी पादरी ऐसे व्यक्ति थे, जिनके साथ उठने-बैठने में उसे बडा आनन्द आता था और वह अपनी इस भावना को उन पर व्यक्त भी कर देता था। वह अपने मित्रो के लिये बेचैन रहता था। वह बिशप के घर उन्हे उनके

फल के बगीचे के सम्बन्ध में सलाह देने या फादर जोसेफ के लिये घर की बनी हुई ब्रॉडी देने जाया करता था । ओलिवारिस ने ही फादर लातूर को चाँदी का बना हाथ धोने का एक बर्त्तन और एक घडा तथा नहाने के अन्य सामान दिये थे, जिन्हे पाकर वे जीवन भर बहुत प्रसन्न रहे । साता फे के मेक्सिकनो में आभूषण बनाने वाले कुछ अच्छे कारीगर थे और डॉन एंटोनियो ने अपने मित्र के लिये अपने ही नहाने के सेट की नकल चाँदी देकर गढवा ली थी । डोना इज़ाबेला ने एक बार कहा था कि उसका पति फादर वेलेंट को हमेशा ही कोई खाने की वस्तु देता था और फादर लातूर को ऐसी कोई वस्तु, जो देखने मे अच्छी हो ।

ओलिवारिस दम्पति के एक कन्या थी, जिसका नाम सिनोरिटा इनेज था, और जो बहुत पहले पैदा हुई थी, तथा अब तक अविवाहित थी । सच तो यह है कि यह समझा जाने लगा था कि अब वह विवाह करेगी ही नही । यद्यपि वह भिक्षुणियो के वस्त्र नही पहनती थी, उसका जीवन भिक्षुणी के जीवन ही जैसा था । वह बडे सादे ढँग से रहती थी और उसमे अपनी माँ का ठाट-बाट वाला कोई व्यसन नही था, परन्तु उसका गला बडा सुरीला था । वह न्यू ऑर्लियस मे, गिरजाघर मे प्रार्थना आदि गाया करती थी और वहाँ के किसी कनवेंट स्कूल मे सगीत सिखाती थी । जब से उसके माता-पिता साता फे मे रहने लगे तब से वह उनके पास केवल एक बार आयी थी और वह इस आमोद-प्रमोद वाले वातावरण मे कुछ उदास-सी लगती थी । डोना इज़ाबेला उसे बहुत प्यार करती थी, परन्तु उसे अप्रसन्न करने से डरती थी । जब इनेज़[illegible]र मे रहती थी, तो वह बहुत सादे कपडे पहनती थी, अपने घुँघराले बा[illegible] को, [illegible]पन लगा कर कान के पीछे किये रहती थी और दोनो औरतें साथ-स[illegible] दि[illegible] भर गिरजाघर मे रहती थी ।

बिशप के गिरजा[illegible]ने की अभिलाषा में एंटोनियो ओलिवारिस की बडी अनुरक्ति थी । उ[illegible]ह देख लिया कि फादर लातूर उसे बनवाने पर तुले हुए है और ओलि[illegible]वारिस इस प्रकृति का आदमी था कि अपने मित्र

की हार्दिक इच्छा पूरी करने मे पूरा योग देना चाहता था। इसके अतिरिक्त उसे अपने जन्म स्थान के प्रति बडा प्रेम था, वह अनेक नगरो मे गया था और सभी जगह उसने बहुत से अच्छे गिरजाघर देखे थे और उसकी भी इच्छा थी कि किसी दिन साता फे मे भी एक गिरजाघर बन जाय। कितनी बार रात को आग के पास बैठकर वह और फादर लातूर इस सम्बन्ध में बातें किये थे, किस स्थान पर वह बनेगा, डिज़ाइन कैसी होगी, इमारत मे पत्थर कैसा लगेगा, उसके बनवाने मे खर्च कितना पडेगा तथा पैसा एकत्र करने मे कठिनाई क्या थी, आदि। बिशप को आशा थी कि इमारत का काम सन् १८६० ई० मे प्रारम्भ हो जायगा, उस समय उन्हे बिशप नियुक्त हुए दस वर्ष बीत चुके होगे। एक दिन, रात को अपने मकान पर नये वर्ष की उस चिरस्मरणीय पार्टी के अवसर पर, ओलिवारिस ने अपने मेहमानो की मौजूदगी में घोषित किया कि नया वर्ष समाप्त होने के पहले ही मै गिरजा-कोष मे इतना पर्याप्त धन दे दूँगा कि फादर लातूर अपना उद्देश्य पूरा कर सकेंगे।

ओलिवारिस की पार्टी इस घोषणा के कारण ही स्मरणीय रही और इसलिये भी कि उसी समय कुछ पुराने मित्रो का बिछोह भी हो रहा था। डोना इज़ाबेला ने सीमावर्ती चौकी के अधिकारियो को, जिसमे से दो को साता फे छोड़ने का आदेश हुआ था, इस पार्टी मे आमन्त्रित किया था। चौकी का लोकप्रिय कमांडेंट वाशिंगटन वापस बुला लिया गया था और घुडसवारो वाली फौज की टुकडी का नवयुवक लेफ्टिनेंट, जो एक आयरिश कैथोलिक था और जिसने हाल ही में विवाह किया था तथा फादर लातूर को बडा प्रिय था, और भी पश्चिम भेजा जा रहा था। (अगला नया वर्ष आने के पहले ही, वह अरिज़ोना राज्य मे रेड-इण्डियनो के साथ हुए किसी सघर्ष मे मार डाला गया।)

परन्तु उस रात भविष्य को लेकर कोई चिन्तित नही था। मकान प्रकाश से जगमगा रहा था, सगीत की ध्वनि गूँज रही थी, उस सीमा-क्षेत्र

के सादे अतिथ्य-सत्कार से, जहाँ लोग अपने सम्बन्धियो से दूर एक प्रकार मे निर्वासित की तरह रहते है, तथा जहाँ लोग काफी कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं और यदा-कदा ही आपस मे मन-वहलाव के लिये मिलते है, सारा वातावरण आनन्दमय था। किट कारसन भी, जो मैडम ओलिवारिस का बडा प्रशंसक था, ताओस से दो दिन की यात्रा करके उस रात वहाँ उपस्थित हुआ था। वह अपने साथ अपनी वेटी को भी लाया था, जो सेंट लूई के किसी कनवेंट स्कूल से अभी हाल ही मे वापस आयी थी। इस अवसर पर कारसन एक सुन्दर चमडे का कोट पहने हुए था, जिसमे चाँदी के तारो से कढाई की हुई थी तथा जिसके कॉलर और कफ मखमली थे। फोर्ट के अधिकारी अपनी सैनिक पोशाक पहने हुए थे और ओलिवारिस सदा की भाँति एक चौडे कपडे का फ्रॉक कोट पहने हुए था। उसकी पत्नी एक 'हूप-स्कर्ट' पहने हुए थी, जो एक फ्रासीसी पहनावा है तथा जिसे वह न्यू ऑर्लियस से लायी थी। इस पोशाक पर लाल रग के साटन के गुलाब के फूल वने हुए थे। सैनिक अधिकारियो की पत्नियाँ ओलिवारिस के घर एक सैनिक गाडी मे आयी थी, जिससे उनके साटन के जूते कीचड, मिट्टी आदि से नष्ट न हो। विशप अपना वैगनी रग का 'वेस्ट' पहने हुए थे, जिसे वे बहुत कम पहनते थे, और फादर वेलेंट एक नया चोगा पहने हुए थे, जिसे उनकी प्रिय वहन फिलोमीन ने रियोम में उनके लिये बनाया था।

फादर लातूर को यह सोच कर वड़ा सकोच होता था कि जोसेफ अपनी बहन और उसकी भिक्षुणियो को अपने लिये कपडे वनवाने मे व्यस्त रखते थे, परन्तु पिछली बार जव वे फ्रास मे थे, तो उन्हे ये बातें विलकुल भिन्न रूप मे दिखलायी पडी। 'मदर' फिलोमीन के कनवेंट मे एक अपेक्षाकृत कम उम्र वाली 'सिस्टर' ने उन्हे वताया था कि इस प्रकार कार्यमुक्त जीवन मे दूरस्थ मिशनो के लिये काम करने से उन्हे कितनी प्रेरणा मिलती है। उसने उन्हे यह भी वताया कि उनके लिये फादर वेलेंट के लम्बे पत्र

कितने मूल्यवान् थे, वे पत्र, जिनमे, वे अपनी बहन को, उस देश, रेड-इण्डियनो, धार्मिक मेक्सिकन महिलाओ, पहले के स्पेनिश शहीदो आदि के सम्बन्ध मे बहुत सी बातें बतलाते थे। उसने बतलाया कि 'मदर' फ़िलोमीन सध्या समय इन पत्रो को हमे पढकर सुनाती हैं। वह 'सिस्टर' फादर लातूर को एक खिड़की के पास ले गयी और उसमे से बाहर सडक के उस भाग की ओर हाथ मे सकेत किया, जहाँ से वह एकाएक एक ओर को मुड़ जाती थी, और उसके आगे का भाग बिलकुल नही दिखलायी पड़ता था। "देखिये," उसने कहा, " 'मदर' जब अपने भाई का कोई पत्र पढकर सुनाती है, तो मैं इस खिडकी पर आकर बैठ जाती हूँ और एकाकी बत्ती वाली अपनी इस छोटी सी सडक की ओर देखती हूँ, और सोचती हूँ कि मोड़ के उस पार न्यू मेक्सिको है, वही पर उनके द्वारा बताये गये वे लाल मरुस्थल हैं, नीले पर्वत हैं, विशाल मैदान है, जगली भैसो के झुड हैं और वे सकरे और गहरे पहाड़ी दर्रे हैं, जो यहाँ के किसी भी दर्रे से अधिक गहरे है। मैं अनुभव करती हूँ कि मै सचमुच वहीं पहुँच गयी हूँ, मेरा दिल जोरो से धड़कने लगता है और एक ही क्षण ऐसा रहता है, तभी सोने की घण्टी बजती है और मेरा स्वप्न समाप्त हो जाता है।" इसके बाद विशप यही सोचकर वहाँ से वापस लौटे कि यह अच्छा ही है कि ये सिस्टरें फादर जोसेफ के लिये इस प्रकार काम करती हैं।

आज रात, जब ओलिवारिस की पत्नी फादर वेलेंट के पॉपलीन और मखमली कपडो की चमक की प्रशसा कर रही थी, तभी न जाने क्यों फादर लातूर को उस क्षण की याद आ गयी जब वे उस भिक्षुणी के साथ उस खिडकी के पास खडे थे, उसका श्वेत चेहरा और जलती हुई आँखें उन्हे याद आ गयी और उन्होने एक आह भरी।

भोजन तथा मदिरा-पान आदि के पश्चात् पैब्लो नामक लड़का बुलाया गया कि जब तक अतिथि लोग सिगार आदि पियें, वह 'बैन्जो' (बेला जैसा एक बाजा) बजावे। फादर लातूर इस वादन को कभी पसन्द न कर सके

और वे इसे जंगलियो का बाजा समझते थे। परन्तु जब यह विचित्र पीत रङ्ग का लडका उसे बजाने लगा, तो उसके तारो की झकार मे एक अद्भुत मधुरता एव शिथिलता थी। इसके अतिरिक्त उसमे एक प्रकार का पागलपन भी था, एक प्रकार की उद्दण्डता थी, जगली प्रदेशो की वह पुकार थी, जिसका इन सभी लोगो ने किसी न किसी रूप मे अनुभव और अनुसरण किया था। सिगार के धुएँ से आच्छादित उस कमरे मे, अतिथि रूप मे आये हुये कारसन और सैनिक मेक्सिकन कृषक और पादरीगण चुपचाप बैठे बैंजो बजाने वाले उस लडके के झुके हुए सिर और कन्धो को देख रहे थे, द्रुत गति से ऊपर-नीचे, घूमने वाले उसके पीले हाथ को देख रहे थे, जो कभी-कभी आकृति-हीन हो जाता था और भयकर चक्कर में घूमते हुए किसी जड़ पदार्थ के ही रूप मे दीखता था, जैसे किसी बवडर का एक अश कमरे मे आ गया हो।

उन्हे इस प्रकार चुपचाप विचार-मुद्रा मे बैठे देखकर, फादर लातूर सोच रहे थे कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसकी जीवन-गाथा को स्पष्ट कह रहा है। कारसन की वे उत्सुक, दूरदर्शी नीली आँखे किसी स्काउट एव बीहड रास्तो पर चलने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य किसकी हो सकती थी? वहाँ बैठे हुए लोगो मे सबसे सुन्दर व्यक्ति डॉन मैनुएल शावेज़ को, जिसके चेहरे की गढन बड़ी सुन्दर थी परन्तु देखने मे जो अवज्ञापूर्ण लगता था, उन सुन्दर मखमली कपडो मे केवल कमरे को पार करते हुए देख लीजिये, या भोजन के समय उसकी बगल मे बैठ जाइये, तुरन्त आपको उसकी गम्भीर एव शान्त मुद्रा के आवरण में ढँके हुए उसके उत्तेजनापूर्ण स्वभाव का, जीवन के अनुभवो से उत्पन्न कटुता की उग्रता का एव खतरो से खेलने की व्याकुलता का आभास मिल जायगा।

शावेज़ बडे गर्व से बतलाता था कि वह उन दो स्पेनिश सरदारो के परिवार का था, जिन्होने शावेज़ नगर को सन् ११६० ई० मे मुअरो से आज़ाद किया था। पेकोस तथा सैन मेटियो पर्वत के अचल मे उसकी

ज़मीन-जायदाद थी तथा साता फे मे उसका एक मकान था जहाँ वह अपने सुन्दर उद्यान एव वृक्षों के बीच आनन्द मे रहता था। वह अपने प्रदेश की प्राकृतिक सुन्दरता के प्रति दीवाना रहता था और उन अमेरिकनो से घृणा करता था, जो इस सुन्दरता की सरहाना न करते थे। वह कारसन की रेड इण्डियनो से लडने से सम्बन्धित ख्याति के प्रति ईर्ष्यालु था, और कहता था कि बीस वर्ष की अवस्था तक मे ही रेड इण्डियनो से जितनी लड़ाइयाँ उसने देखी है, उतनी कारसन जीवन भर मे नही देखेगा। पिस्तौल चलाने में निश्चय ही वह कारसन का प्रतिद्वन्द्वी था। तीर चलाने में तो उसका अपना कोई सानी नही था। इस कला मे वह कभी भी पराजित नही हुआ था। शावेज़ जितनी दूर तीर चला लेता था उतनी दूर कभी किसी रेड इण्डियन ने भी नही चलाया था। प्रत्येक वर्ष रेड इण्डियन लोग उसके घर बाज़ी पर तीर चलाने आया करते थे। उसका मकान तथा अस्तबल जीते हुए पदको एव ट्राफियो से भरा था। रेड इण्डियनो से बाज़ी मे लगाये हुए उनके घोडो, पैसो या कम्बलो तथा अन्य वस्तुओ को जीतने में उसे बडा आनन्द आता था। रेड इण्डियनो के अस्त्रों में अपनी प्रवीणता पर उसे बड़ा नाज था, यह कला उसने काफी परिश्रम के बाद सीखी थी।

जब शावेज़ सोलह वर्ष का था, तो मेक्सिकन छोकरो के एक दल के साथ वह नवाजो का पीछा करने गया था। उन दिनो, अमेरिका द्वारा अधिकृत किये जाने के पहले, नवाजो का पीछा करने के लिये किसी बहाने की आवश्यकता नही थी। वह भी एक प्रकार का 'शिकार' समझा जाता था। मेक्सिकन घुडसवारो का एक दल पश्चिम की ओर नवाजो प्रदेश मे पहुँच जाता था, भेंडो के दो-चार बाडो पर आक्रमण करता था और अपने साथ कुछ भेडें, टट्टू, तथा कुछ बन्दी ले आता था। प्रत्येक बन्दी के लिये मेक्सिकन सरकार से भारी पुरस्कार मिलता था। ऐसे ही एक आक्रमणकारी दल के साथ सोलह वर्ष की अवस्था मे शावेज़ लूट-पाट के लिये गया था।

नौजवान मेक्सिकनो का यह दल जिस स्थान पर आक्रमण करना चाहता था, वहाँ जब उन्हे नवाजो कबीले का कोई रेड इण्डियन नही दिखलाई पडा तो वे आगे बढ गये। वे यह नही जानते थे कि यह वह समय था, जब नवाजो के सभी कबीले कैनियन डि चेली नामक पहाडी दर्रे मे अपने धार्मिक अनुष्ठानो के लिये एकत्र होते है। अत वे जोश मे आगे बढते गये और उस रहस्यपूर्ण एव भयानक दर्रे के बिलकुल किनारे पर पहुँच गये, जहाँ उस समय रेड इण्डियनो का भारी समूह एकत्र था। तुरन्त ही वे घेर लिये गये और भाग निकलना असम्भव हो गया। वे दर्रे के ऊपर वनस्पति-हीन चट्टानो पर लडने लगे। मैनुएल का बडा भाई डॉन जोफ शावेज दल का कप्तान था और पहले वही मारा गया। दल के सभी पचास व्यक्ति कत्ल कर दिये गये। मैनुएल इक्यावनवाँ व्यक्ति था और वह बच गया। उसके शरीर मे तीर के सात घाव लगे थे और एक भाला शरीर के आरपार हो गया था और उसे मरा हुआ समझ कर लाशो के ढेर मे छोड दिया गया था।

रात को जब नवाजो लोग अपनी विजय पर आनन्द मना रहे थे, वह बेचारा चट्टानो पर खिसकता हुआ आगे बढा और जब उसके और शत्रु के बीच बडे-बडे टीले आ गये, तो वह खडा होकर पूरब की ओर पैदल चल पडा। गरमी का महीना था और उस लाल चट्टानो वाले प्रदेश मे तो भयानक गरमी पडती है। उसके घाव बहुत कष्ट दे रहे थे, परन्तु उसमे नौजवानी की अद्भुत शक्ति थी। वह दो दिन और दो रात एक बूद पानी पिये बिना चलता रहा, और कभी मैदान पार करता हुआ और कभी पहाडो को लाँघता हुआ लगभग साठ मील की दूरी पार करने के बाद, अन्त मे वह उस पार उस विख्यात सोते के पास पहुँचा, जहाँ बाद को 'फोर्ट डिफायेस' नामक किला बनाया गया। वहाँ पहुँच कर उसने पानी पिया, अपने घाव धोये और सो गया। लडाई के दिन के प्रात काल से ही उसने कुछ खाया नही था, सोते के समीप उसने नागफनी के कुछ

वडे-वड़े पौधे देखे और अपने शिकारी चाकू से उन्हे काट कर तथा उन्हे ऊपर से छील कर उनके रसदार गूदे से अपना पेट भरा।

यहाँ से वह फिर आगे वढा और अव भी रास्ते मे उसे कोई मनुष्य नही मिला। आगे वढते-वढते वह लगूना के उत्तर सैन मैटियो पहाड के समीप पहुँचा। पर्वत की एक घाटी में उसे मेक्सिकन गडेरियो का एक शिविर मिला, जहाँ वह अचेत होकर गिर पडा। गडरियो ने पेड की टहनियों तथा भेडो की खाल के अपने कोटो से एक डोली-सी तैयार की और उसे सेवोलेत्ता नामक गाँव में ले गये, जहाँ वह कई दिन तक अचेतावस्था में वडवडाता हुआ पड़ा रहा। वर्षों पश्चात्, जव वह अपने माता-पिता के मरने के बाद अपनी सम्पत्ति का मालिक हुआ, तो उसने सैन मैटियो पर्वत की उस सुन्दर घाटी के उस भूमि-खण्ड को खरीद लिया, जहाँ वह दो चीड़ के वृक्षो के नीचे अचेत होकर गिरा था। उसने उन दोनो वृक्षो के वीच एक मकान वनाया और वहाँ एक सुन्दर जागीर खडी कर दी।

चूँकि गावेज ने अमेरिकन शासन कभी भी स्वीकार नही किया था, अत जव तक वह साता फे में होता तो विलकुल एकान्त मे रहता। दूर या नजदीक किसी भी रेड इण्डियन दगे की वात सुनते ही वह चल पडता था और अपने रेकार्ड मे कुछ और हत्याएं जोडे लेता था। वह नये विशप का अविश्वास करता था, क्योकि रेड इडियनो तथा अमेरिकनो के प्रति उनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था। इसके अतिरिक्त वह मार्टिनेज पादरी का आदमी था। आज रात वह यहाँ ओलिवारिस को पत्नी के आग्रह पर आया था। वह शाम का अपना समय अमेरिकनो की पोशाक पहने हुए लोगो के वीच विताना नही पसन्द करता था।

वेला वजाने वाला लडका जव थक गया तो फादर जोसेफ ने कहा कि मैं कोई अन्य सगीत सुनना चाहता हू। अत. वे ओलिवारिस की पत्नी को उसकी वीणा के पास लिवा गये। वह वीणा वजाते समय वडी सुन्दर

लगती थी। बैठने की उस मुद्रा मे उसका एक ओर को झुका हुआ चमत्दार पीला चेहरा, उसका छोटा सा पांव तथा उसकी श्वेत बाहे बडी मनोहर लगती थी।

यह अन्तिम बार था कि बिशप ने उसे अपने सराहनाशील पति के समक्ष, जिनकी आँखें नीद भरी होने पर भी मानो उसकी ओर मुस्करा रही हो, 'ला पलोमा' (एक प्रकार का राग) गाते सुना।

ओलिवारिस की मृत्यु महात्मा ईसा के नाम पर होने वाले चालीस दिवसीय वार्षिक अनशन आरम्भ होने के तीन सप्ताह पहले रविवार के दिन हो गयी। वह उस दिन रात्रि के भोजन के पश्चात् मोमबत्तियां जलाते समय अचानक अपनी अगीठी के पास गिर गया और बेला बजाने वाला लडका बिशप को लिवा आने के लिये दौडाया गया। आधी रात के पहले ही ओलिवारिस के दो भाई, शराब के नशे मे चूर, किसी अमेरिकन वकील से बातें करने साता फे से अलबुकर्क के लिये घोडे पर रवाना हो गये।

२

पत्नी

एटोनियो ओलिवारिस का अत्येष्टि सस्कार जिस धार्मिकता एव ठाट-बाट से मनाया गया, वैसा साता फे मे पहले कभी नही देखा गया था, परन्तु फादर वेलेंट उस समय वहाँ नही मौजूद थे। वे दक्षिण की ओर अपनी किसी लम्बी मिशनरी यात्रा पर गये हुए थे, और मैडम ओलिवारिस के विधवा होने के कई सप्ताह पश्चात् घर वापस पहुँचे। अभी वे अपने घुडसवारो वाले कपडे भी न उतार पाये थे कि उन्हे उसके वकील से मिलने के लिये फादर लातूर के अध्ययन-कक्ष में बुलाया गया।

ओलिवारिस ने अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था ब्रायड ओ रेली नामक एक नौजवान आयरिश कैथोलिक के मत्थे छोड दी थी, जो वकालत करने वोस्टन से न्यू मेक्सिको आया था। उस समय साता फे मे लोहे की तिजोरियाँ न थी, परन्तु ओ रेली ने ओलिवारिस की वसीयत अपनी खास मज़बूत सन्दूक मे रख छोड़ी थी। वसीयत बहुत सूक्ष्म एव स्पष्ट थी। एंटोनियो की जायदाद को मालियत लगभग दो लाख डालर के थी (उस समय यह काफ़ी बडी सम्पत्ति समझी जाती थी)। उससे होने वाली आय उसकी पत्नी इज़ावेला ओलिवारिस तथा उसकी कन्या इनेज़ ओलिवारिस अपनी ज़िंदगी भर भोगेंगी, और उनकी मृत्यु के पश्चात् यह सम्पत्ति गिरजा सस्थान, ईसाई धर्म-प्रचार सभा को चली जाने को थी। फादर लातूर के गिरजा-कोष में कुछ रकम दिये जाने की बात दुर्भाग्य से वसीयत में न जोडी जा सकी थी।

इस वकील ने फादर वेलेंट को बतलाया कि ओलिवारिस के भाइयो ने अलवुकर्क की एक अग्रणी कानूनी फर्म को अपने कानूनी सलाहकार के रूप में नियुक्त कर लिया था, और वे वसीयत का प्रतिवाद करने जा रहे हैं। दावे मे उनकी मुख्य दलील यह थी कि सीन्योरिटा इनेज़ की अवस्था इतनी अधिक थी कि वह सिनोरा ओलिवारिस की पुत्री नही हो सकती थी। डान एंटोनियो अपनी युवावस्था मे विना सोचे समझे लड़कियो से प्रेम कर बैठता था, और उसके भाइयो का यह कहना था कि इनेज़ किसी क्षणिक वासनापूर्ण प्रेम के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न हुई थी और डोना इज़ाबेला ने उसे गोद ले लिया था। ओ रेली ने ओलिवारिस जोडी के विवाह-सम्बन्धी कागजात की प्रामाणिक नकल तथा सीन्योरिटा इनेज़ के जन्म-सम्बन्धी प्रमाण-पत्र के लिये न्यू ऑर्लियस आदमी भेजा था। परन्तु केंटकी राज्य मे, जहाँ सिनोरा पैदा हुई थी, कोई जन्म-सम्बन्धी कागजात रखे ही नही जाते थे, इजाबेला ओलिवारिस की आयु सिद्ध करने के लिये कोई कागजी सबूत नही था और वह अपनी सच्ची आयु स्वीकार करने के

लिये तैयार ही नही होती थी। साता फे मे यह आम धारणा थी कि उसकी अवस्था अभी चालीस के ही आस-पास थी (यही दो एक वर्ष अधिक), जिसका अर्थ यह हुआ, कि इनेज के जन्म के समय उसकी अवस्था सात या आठ वर्ष से अधिक न थी। वास्तव मे उसकी अवस्था पचास वर्ष से भी अधिक थी, परन्तु जब ओ रेली ने उसे यह समझाना चाहा कि वह इसे अदालत मे स्वीकार कर ले, तो उसने उनकी बात मानने से स्पष्ट इनकार कर दिया। अत ओ रेली ने बिशप और विकार से कहा कि इसे मनवाने के लिये वे लोग उस पर दबाव डालें।

फादर लातूर ने इतने नाजुक मामले में हस्तक्षेप करना न चाहा। परन्तु फादर वेलेंट ने तुरन्त यह निर्णय किया कि दोनो स्त्रियो की रक्षा करना उन लोगो का परम कर्तव्य है और साथ ही धर्म-प्रचार सभा के अधिकारो की भी रक्षा करना आवश्यक था। अत बिना कुछ अधिक सोचे-विचारे उन्होंने अपना पुराना लबादा ओढा और तीनो व्यक्ति नगर के पूरब पहाडी पर स्थित ओलिवारिस के मकान के लिये रवाना हो गये।

नये वर्ष की पार्टी के दिन से ही फादर जोसेफ ओलिवारिस के मकान पर अब तक नही गये थे, और वहाँ पहुँचने पर उन्होने ठण्डी सास ली। स्थान लापरवाही के कारण अभी से काफी बदल गया था। उसका विशाल फाटक एक बाँस के सहारे खुली हुई हालत में रखा गया था, क्योंकि लोहे का हुक टूट कर निकल गया था, आँगन मे कूडा तथा खाये हुए मास की हड्डियाँ बिखरी पडी थी, जिन्हे कुत्ते वहाँ ले आये थे, और किसी ने उन्हे वहाँ से फेंका नही था। पोर्टिको मे टँगा हुआ तोते का बडा पिजडा बीट से भरा हुआ था, और चिडियाँ चीख रही थी। ओ रेली द्वारा बाहरी फाटक पर घण्टी बजाने पर बेला बजाने वाला लडका पैब्लो बिखरे बाल लिये, गन्दी कमीज़ पहने, उन्हे अन्दर लिवा जाने के लिये दौडा हुआ आया। वह उन्हे बैठने के बडे कमरे मे ले गया, जो बिलकुल खाली और ठण्डा था, आग जलाने के स्थान मे बिलकुल अँधेरा था और चूल्हे के पास झाडू तक

नही लगा था। कुर्सियो तथा खिडकियो पर लाल धूल की परत जमी हुई थी, दरवाज़ो एव खिडकियो के शीशे गन्दे हो रहे थे और उन पर लकीरें बनी हुई थी, जैसे उन पर आँसू की बूँदे गिर कर बही हो। लिखने की मेज़ पर खाली बोतल, गन्दी गिलासें तथा सिगार के जले हुए टुकडे पडे थे। एक कोने मे वीणा अपनी हरी खोली मे बन्द रखी हुई थी।

पैब्लो ने उन लोगो को बैठाया। उसने बताया कि मालकिन बिस्तर पर पडी हुई हैं, रसोइये ने अपना हाथ जला लिया है तथा अन्य नौकरानियाँ काहिल है। थोडी सी लकडी लाकर उसने वहाँ आग जलायी।

थोड़ी देर बाद डोना इज़ाबेला कमरे में आयी। वह काले शोक-वस्त्र पहने हुए थी और काले कपड़ो की विषमता मे उसका चेहरा बहुत श्वेत लग रहा था। उसकी आँखें लाल हो रही थी और कान और गर्दन के पास उसके घुँघराले बाल रूखे एव भूरे—विवर्ण हो रहे थे।

फादर बेलेंट द्वारा अभिवादन एव सवेदना प्रकाशन के पश्चात् वकील उसे एक बार फिर अपनी कठिनाइयाँ समझाने लगा और यह बताने लगा कि उन्हे ओलिवारिस के भाइयो को उनकी चालो मे विफल करने के लिये क्या करना चाहिये। वह अपनी आँखो एव नाक को अपने छोटे से कढे हुए रूमाल से पोछती हुई चुपचाप बैठी रही और स्पष्ट था कि जो कुछ वकील साहब उससे कह रहे थे, उसका एक शब्द भी समझने का वह प्रयत्न नही कर रही थी।

फादर जोसेफ शीघ्र ही अधीर हो उठे और वे स्वय ही उस विधवा से बोले, "तुम समझती हो, मेरी बच्ची, कि तुम्हारे पति के भाई लोग, उनकी इच्छाओ को पूरा नही होने देना चाहते और वे तुम्हे, तुम्हारी बेटी, तथा गिरजा को छल द्वारा सम्पत्ति से वचित रखने के लिये कृत-सकल्प है। यह बचपने का हठधर्मी का समय नही है। तुम्हारे स्वर्गीय पति की स्मृति को अपमानित करने का जो यह प्रयत्न किया जा रहा है, उसे रोकने के लिये, तुम्हें अदालत को यह विश्वास दिलाना ही होगा कि तुम्हारी

अवस्था इनेज़ की माँ बनने के उपयुक्त है। तुम्हे दृढ़ता से अपनी सही अवस्था वतलानी होगी। तिरपन वर्ष है न, वह ?"

डोना इज़ावेला डर से पीली पड गयी। वह मोटे गद्दे वाले विशाल सोफा के एक कोने मे सिकुड कर वैठ गयी, परन्तु तुरन्त ही वहुत उत्तेजित हो उठी और उसकी नीली आँखे विस्फारित हो कर चमक उठी, जैसे वह अपने अन्तिम आश्रय पर पहुँच कर सवका सामना करने को तैयार हो गयी हो।

"तिरपन वर्ष !" उसने भय एव आश्चर्य से कहा। "ऐसा कहना घोर अपमानजनक है। इसी साल मै बयालीस वर्ष की हुई हूँ। गत चार दिसम्बर को मैंने अपनी वयालीसवी वर्षगाँठ मनायी थी। मेरे पति यदि जीवित होते तो वे भी आपको यही वताते। और फ़ादर जोसेफ़, उन्होंने आपको मुझे न तो गाली दी होती और न तो मुझसे सम्पत्ति जायदाद सम्वन्धी ऐसी कोई वात करने दिया होता। वे किसी को भी मुझसे ऐसी वात नही करने देते थे।" इतना कहकर वह अपने रूमाल से मुँह ढँक कर रोने लगी।

फादर लातूर ने अपने अधीर एव उतावले विकार को रोका और सोफा पर मैडम ओलिवारिस के समीप बैठकर उसके प्रति शोक प्रकट करने लगे और वड़ी नरमी से वोले—"मैडम ओलिवारिस आप अपने मित्रो एवं सारी दुनिया के लिये बयालीस ही वर्ष की है। हृदय से और अपनी शकल-सूरत के लिहाज़ से तो आप उससे भी कम है। परन्तु कानून एव धर्म के समक्ष तो सच्ची वात ही स्वीकार करनी चाहिये। अदालत मे एक औपचारिक वक्तव्य आपको अपने मित्रो की दृष्टि मे अधिक अवस्था की तो वना नही देगा, उससे आपके चेहरे मे एक झुर्री भी तो नही पडेगी। आप तो जानती है कि औरत् की वही अवस्था होती है, जितनी वह देखने मे लगती है।"

"ऐसा कहना आपकी वडी कृपा है, विशप लातूर," उसने काँपते

हुए स्वर मे आँसू भरे नेत्रो से उनकी ओर देखते हुए कहा। "परन्तु ऐसा वक्तव्य दे देने पर फिर मै अपना सिर नही उठा सकूँगी। ले जाने दीजिये मेरे पति के भाइयो को सारी सम्पत्ति। मुझे वह नही चाहिये।"

फादर वेलेंट आवेग से उठ खड़े हुए और उन्होने उसकी ओर घूर कर इस प्रकार देखा, जैसे वे अपनी टकटकी से ही उसके मस्तिष्क में समझदारी की बात भर देना चाहते हो। "चार लाख पेसोज़ (मेक्सिकन सिक्का) का मामला है, सीन्योरा इज़ाबेला!" चिल्ला कर वे बोले। "इससे आपका और आपकी लड़की का शेष जीवन बडे ठाट से कट सकता है। क्या आप अपनी लड़की को भिखारी बना देना चाहती है? जानती है न, ओलिवारिस के भाई सभी कुछ हडप लेंगे।"

"इनेज़ के लिये तो मै यो भी कुछ नही कर सकती।" उसने विनय भरे स्वर में कहा। "इनेज तो कनवेंट का ही जीवन बिताना चाहती है। और रही मै, सो मुझे भी उस सम्पत्ति की परवाह नही है। मै बूढी और धनी होने की अपेक्षाकृत कम अवस्था की और गरीब बनी रहना अधिक पसन्द करूँगी।"

फ़ादर जोसेफ ने उसका बर्फ जैसा ठण्डा हाथ पकड लिया। "और क्या आपको अपनी सम्पत्ति के उस भाग से गिरजा को वचित करने का अधिकार है, जो वसीयत के अनुसार उसे मिलना चाहिये? क्या आपने सोचा है कि इस प्रकार गिरजा के साथ दगा करने का परिणाम क्या होगा?"

फादर लातूर ने बडी कड़ी दृष्टि से अपने विकार की ओर देखा। "बहुत हो चुका," उन्होने धीरे से कहा। उन्होने इज़ाबेला का हाथ पकडते हुए, जिसे फादर जोसेफ ने अब तक छोड दिया था, उसे बडे सम्मान से चूमा। "हमें अब आगे और नही कहना चाहिये। हमे इसे मैडम ओलिवारिस के ही निर्णय पर छोड देना चाहिये। उनकी आत्मा जैसी गवाही दे, वैसा वे करें। मेरी बच्ची, मेरा विश्वास है कि यदि तुम अपनी

इस हठधर्मी को छोड़ दो, तो तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिलेगी। मामले को यदि क्षण भर के लिये केवल सासारिक दृष्टि से ही सोचा जाय, तो भी यह कहना होगा कि गरीबी बर्दाश्त करना तुम्हरे लिये कठिन हो जायगा। तुम्हे अपने पति के भाइयो का मुहताज रहना पडेगा है न ठीक? और मै नही चाहता कि ऐसा हो। मेरा तो इसमे अपना निजी स्वार्थं है, मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा ही सुन्दर बनी रहो और यहाँ हम लोगो के जीवन को थोडा सरस बनाये रहो। यो तो हम दोनो का जीवन कितना नीरस है।"

मैडम ओलिवारिस ने रोना बन्द कर दिया। वह अपना मुँह ऊपर उठा कर आँसू पोछने लगी। अचानक वह बिशप के चोगे का एक बटन पकडकर काँपती उँगलियो से उसे ऐंठने लगी।

"फादर," उसने धीरे से कहा, "इनेज़ की माँ कहलाने के लिये मुझे कम से कम कितनी अवस्था का बनना पड़ेगा?"

बिशप इसका उत्तर न दे सके, वे ज़रा हिचकिचाये, कुछ सकुचित हुए, और फिर हाथो से ओ रेली को संकेत किया कि वे ही इसका उत्तर दें।

"बावन वर्ष, सीन्योरा ओलिवारिस," उसने सम्मान-सूचक ध्वनि में कहा। "यदि आप इसे स्वीकार कर लें और उसी पर दृढ रहे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम मुकदमा जीत जायँगे।"

"अच्छी बात है, ओ रेली साहब," कहकर उसने अपना सिर झुका लिया। उसके अतिथि उठ गये और वह फर्श पर पडे धूल भरे कालीन को एकटक देखने लगी। "सबके सामने कहना पडेगा!" वह अपने-आप बुदबुदायी।

घर वापस जाते समय रास्ते मे फादर वेलेंट ने कहा कि मै एक समूचे गाँव के रेड इण्डियनो के अन्ध-विश्वासो का सामना आसानी से कर सकता हूँ, लेकिन किसी श्वेत महिला की हठधर्मी का नही।

"और मै चाहे अन्य कुछ भी कर लूँ, लेकिन फिर जीवन मे आज जैसे दृश्य का सामना नही कर सकता," विशप ने खिन्न होकर कहा। मेरा ख्याल है कि मैंने ऐसे निर्दय काम मे पहले कभी नही हाथ बँटाया था।

क्लायड ओ रेली ने ओलिवारिस के भाइयो को पराजित करके मुकदमा जीत लिया। विशप मुकदमे की सुनवाई के दिन न्यायालय मे नही गये थे, परन्तु फादर वेलेट वहाँ मौजूद थे। दुर्गंधपूर्ण भीड के बीच वे भी खडे थे (न्यायालय के कमरे मे कुर्सियाँ न थी), और उस समय उनका पैर काँपने लगा, जब उस नौजवान वकील ने डर के कारण उत्पन्न प्रचण्डता से अपने मुवक्किल की ओर उँगली उठाते हुए उससे पूछा—

"सीन्योरा ओलिवारिस, आपकी अवस्था बावन वर्ष की है न?"

मैडम ओलिवारिस शोक मे सनी हुई थी और उसका चेहरा काली ओढनी के बीच से यो दीख रहा था जैसे वह उसी की श्वेत धारी हो।

"जी, हाँ।" इतना ही शब्द मुश्किल से उसके मुँह से निकला।

फैसले के दूसरे दिन रात के समय मैनुएल शावेज़ एटोनियो के अन्य पुराने मित्रो के साथ मैडप ओलिवारिस को बधाई देने उसके घर गया। वे लोग उसके घर जाने वाले है, यह बात सारे नगर मे फैल गयी थी और अन्य लोग भी उसके घर जो इतने दिनो तक अतिथियो के लिये बन्द था, जाने की तैयारी मे लग गये थे। अत उस रात वहाँ काफी लोग एकत्र हुए, जिनमें कुछ सैनिक अधिकारी तथा ओलिवारिस के भाइयो के पुश्तैनी शत्रु भी थे।

बैठने के वड़े कमरे मे एक बार पुन इतने लोगो को एकत्र देखकर बावर्ची भी उत्साहित हो उठा और उसने बड़ी तत्परता से सुन्दर भोजन तैयार किया। पैब्लो ने एक सफेद कमीज़ तथा मखमली जैकेट पहना, और अपने स्वर्गीय मालिक की अलमारी से सर्वश्रेष्ठ ह्विस्की, शेरी तथा शैंपेन

(शराव की किस्मे) निकाल कर मेज़ पर लगाने लगा। (मोक्सिकन लोग इस प्रकार की शरावो के वडे शौकीन होते है। इस घटना के कुछ ही वर्ष पहले की वात हैं कि एक अमेरिकन व्यापारी का साता फे के मेक्सिकन सैनिक अधिकारियो से गहरा राजनीतिक मतभेद हो गया था जिसके कारण वह भयकर सकट मे पड गया था। उसने उनके पास एक गाड़ी भर शैंपेन की वोतले भेज कर पुन उनका विश्वास एवं मैत्री प्राप्त कर ली थी। गाडी मे तीन हज़ार तीन सौ बानवे बोतलें थी।)

घर मे आमोद-प्रमोद का यह वातावरण अचानक ही उत्पन्न हुआ। पहले से कोई तैयारी नही हुई थी। शराव पीने के गिलास गन्दे हो रहे थे, परन्तु पैब्लो ने उन्हे झट अभी उतारी हुई कमीज़ से झाड़ पोछ डाला और बिना किसी से कहे ही शराव से भरे गिलासो को ट्रे मे रखकर लोगो के पास पहुँचाने लगा। इन गिलासो को बाद मे वह वहाँ रखी मेज़ के पास खडे होकर दराजो मे से शराव निकाल-निकाल कर भरता रहा। यहाँ तक कि डोना इजावेला ने भी थोडी शैंपेन पी, जार्जिया के कप्तान के साथ एक गिलास पी चुकने के वाद भी वह अपने समीपतम पडोसी, फर्डिनेंड साचेज़ के साथ भी, जो हमेशा ही उसके पति का सच्चा मित्र था, एक और गिलास पीने से इनकार न कर सकी। वहाँ पर उपस्थित सभी लोग नौकर एव अतिथि, आनन्द-विभोर थे। प्रत्येक वस्तु सुहानी लग रही थी, जैसे वर्षा के बाद कोई उपवन।

फादर लातूर एव फादर वेलेट को मित्रो की इस अचानक पार्टी का कोई ज्ञान नही था। वे लोग उस वहादुर विधवा को वधाई देने अपने घर से आठ वजे रवाना हुए। उसके घर के वाहरी आगन मे प्रवेश करते ही अन्दर से सगीत की ध्वनि सुन कर तथा पोर्टिको के पीछे खिडकियो की कतार से चमकती हुई रोशनी देखकर, उन्हे वड़ा आश्चर्य हुआ। बिना घण्टी वजाये ही, उन्होने वडे कमरे का दरवाजा खोल कर अन्दर प्रवेश किया। कमरे मे वहुत सी मोमबत्तियाँ जल रही थी। पुरुष लोग लम्बे-लम्बे फ्रॉक

कोट पहने खडे थे। ओ रेली तथा फोर्ट के अधिकारी मेज को घेरे हुए खडे थे, जहाँ पैब्लो अपनी कलाई में एक सफेद रङ्ग का रूमाल लपेटे शैंपेन ढाल रहा था। कमरे के दूसरे कोने मे वीणा की झंकार तथा डोना इजावेला के सगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी।

"कोयल का सदेश सुनो,
बुलबुल का सगीत सुनो।"

पादरी लोग गाना समाप्त होने तक दरवाजे ही पर खडे रहे, फिर इजावेला का अभिवादन करने आगे बढे। वह श्वेत वस्त्र पहने हुए थी और उसके घुँघराले बाल पुन पहले की भाँति कढे हुए थे। तीन घूँघर दाहिने कान के पास लटक रहे थे, एक-एक घूँघर दोनो कनपटियो पर, और गर्दन के पीछे अनेक घूँघरो की एक छोटी-सी कतार ही थी। काले कपडे पहने हुए दोनो पादरियो को अपनी ओर आते देख कर उसने वीणा बजाना बन्द कर दिया, और वह दोनो हाथ फैला कर उनका स्वागत करने के लिये आगे बढी। उसकी आँखें चमक रही थी और उसके चेहरे में अपने धर्म-पिताओ के लिये श्रद्धा की स्पष्ट झलक थी। परन्तु अभिवादन में उसने हँसते हुए एक मीठी-सी चुटकी ली, जिसे उसने इतने ऊँचे स्वर मे कहा कि लोगो की बातचीत के बावजूद वह स्पष्ट सुनाई पड़ी।

"फादर जोसेफ़ आपको मैं इसके लिये कभी भी क्षमा नही कर सकती, और विशप लातूर न आपको ही कि आपने मुझे भरी अदालत में अपनी अवस्था के सम्बन्ध में ऐसी भयानक झूठ बोलने के लिये बाध्य किया!"

इस पर लोग ठहाका मार कर हँस पडे और दोनो पादरियो ने अभिवादन में सिर झुका लिये।

अध्याय ७

विशाल इलाक़ा

१

देवी मेरी का मास

वाह्य घटनाओ से विशप के काम मे कभी-कभी तो सहायता मिलती थी, परन्तु अधिकतर उनसे वाधा ही पहुँचती थी।

'गैड्स्डेन क्रय' के अन्तर्गत, जो फादर लातूर के साता फे आने के तीन वर्ष बाद सपन्न हुआ, अमेरिका को मेक्सिको से एक विशाल राज्यक्षेत्र मिला, जो अब न्यू मेक्सिको एव अरिज़ोना राज्यो का दक्षिणी भाग है। रोम स्थित अधिकारियो ने फादर लातूर को सूचित किया कि यह नया राज्य-क्षेत्र उनके इलाके मे मिला लिया जाय, परन्तु चूँकि राष्ट्रीय सीमा रेखाएं वहुधा ही गिरजा अधिकार-क्षेत्रो को विभाजित कर दिया करती थी, उन्हे यह भी सूचित किया गया कि वे धार्मिक अधिकार-क्षेत्र की वात चिहुआहुआ और सोनोरा के मेक्सिकन विशपो से मिलकर तय कर ले। इस प्रकार के सम्मेलनो मे लगभग चार हजार मील की यात्रा करनी पडती थी, फादर वेलेंट ने ठीक ही कहा कि रोम के अधिकारी यह नही समझ पाते थे कि दो मिशनरियो के लिये घोडे पर सवार होकर इतिहास के साथ पग मिलाये रहना आसान काम नही है।

अतः यह प्रश्न कई वर्षों तक टलता रहा। पत्रो का इतना अधिक आदान-प्रदान हुआ कि उनका एक पोथा तैयार हो गया। अन्त में, सन् १८५८ ई० में, फ़ादर वेलेंट को मेक्सिकन बिशपो से विवादग्रस्त सीमाओं का मामला हल करने के लिये भेजा गया। वे शरद् ऋतु में रवाना हुए और सारा जाड़ा रास्ते ही मे कटा। पहले वे अल पास्तो डेल नोर्ते से पश्चिम टक्सान गये, वहाँ से साता मैगडलेना और 'गल्फ ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया' के एक बन्दरगाह गायमास गये तथा घर की ओर लौटने के पहले प्रशान्त महासागर मे कुछ छोटी-मोटी यात्राएँ की।

वापस आते समय वे दोषयुक्त पानी पीने तथा खुले में सोने के कारण मलेरिया के शिकार हो गये और अरिज़ोना के एक मरुस्थल में (वहाँ नागफनी के पौधे बहुत थे) काफ़ी सख्त बीमार हो गये। एक रेड इण्डियन दूत ने उनकी बीमारी का समाचार साता फे पहुँचाया, और फादर लातूर तथा जैसिंटो न्यू मेक्सिको और अरिज़ोना राज्य का भी आधा भाग पार करने के बाद फादर वेलेंट के पास पहुँचे और रास्ते मे अनेक स्थान पर पड़ाव डालते हुए वे उन्हे घर वापस ले आये।

बिशप के घर मे वे दो महीने तक बीमार पड़े रहे। यह पहला वसन्त था कि वे और फादर लातूर दोनो साथ वहाँ रहे और उस वाटिका का आनन्द ले सके, जिसे उन्होने साता फे पहुँचने के तुरन्त ही बाद लगाया था।

मई का महीना था। इसी महीने मे देवी मेरी की पूजा-आराधना का विशेष उत्सव भी होने को था। फादर वेलेंट बगीचे में अंगूर-कुञ्ज के नीचे कम्बल ओढे खाट पर पडे थे। उनकी दृष्टि बिशप तथा उनके माली पर, जो तरकारियो की क्यारी में काम कर रहे थे, लगी हुई थी। सेब के वृक्ष फूलो से लदे हुए थे, बेर के फूल झड चुके थे। वसन्त ऋतु की गरम हवा के झोंको में धरती एवं आसमान एक दूसरे मे अन्तर्व्याप्त हो रहे थे। मिट्टी के

कण-कण मे सूर्य की गरमी व्याप्त थी और सूर्य के प्रकाश मे लाल रज कण वायुमण्डल मे तैरते दीख रहे थे। हवा मे मिट्टी की सोंधी वास थी और पाँव के नीचे घास मे नील गगन का प्रतिविम्ब था।

यह वगीचा छ. वर्ष पहले लगाया गया था, जब विशप सेंट लूई से लोरेट्टो की 'सिस्टरो' के साथ, जो देवी मेरी के विद्यालय की स्थापना के लिये आयी थी, गाडियो मे भरकर पेड़ के पौधे (उस समय ये पौधे सूखे डठल मात्र थे) ले आये थे। विद्यालय अब भली-भाँति जम चुका था, प्रोटेस्टेट और कैथोलिक दोनो ही मत के लोग उसे जनता के लिये लाभकारी मानने लगे थे, और वृक्षो मे अब फल लगने लगे थे। उनसे ली गयी कलमें अनेक मेक्सिकन वगीचो मे लगायी गयी थी और उनमे पहले ही फल लगने लगे थे। जिस समय विशप वाल्टीमोर की अपनी प्रथम यात्रा पर गये हुए थे, फादर जोसेफ ने, अपने पद से सम्बन्धित सभी कार्यों को करते हुए भी, घर का प्रवन्ध करने वाली मेक्सिकन औरत फ्रक्टोसा को भोजन बनाने की शिक्षा देने का समय निकाल लिया था। इसके वाद फदार लातूर ने फ्रक्टोसा के पति ट्रैन्क्विलिनो को माली का काम सिखलाया। उन्होने भविष्य के लिये अच्छी योजना वनायी थी। गिरजा के पीछे वाली जमीन मे, जो विशप के घर और विद्यालय के वीच पडती थी, उन्होने फलो का एक लम्बा-चौडा बाग तथा तरकारियो की क्यारियाँ तैयार कर ली थी। तभी से विशप उस पर वडा परिश्रम करते थे, पौधे लगाना, उनकी काँट-छाँट करना आदि। उनके मनोरञ्जन का यही एक मात्र साधन था।

गिरजा के आँगन से लेकर विद्यालय तक छोटे-छोटे वृक्षो की कतार थी। दक्षिण तरफ कच्ची दीवार से सटी एक अन्य वृक्षो की कतार थी, जो उनके वहाँ आने के पहले से ही लगी थी। ये झाऊ के वृक्ष वहुत पुराने थे और उनके तने ऐंठे हुए थे। उनकी किसी ने परवाह नही की थी, धूप मे सूखी तथा गधो के पैरो से रौंदी हुई जमीन कड़ी हो गयी थी और उसी मे वे किसी तरह खडे थे। उनके तने वडे कठोर हो गये थे। वस्तुत· वे

बहुत पुरानी पकी हुई बल्लियों की तरह चिकने लगते थे, परन्तु उनमे अब भी नरम-नरम कोपलें एवं फूल फूट पडते थे तथा लाल-लाल कलियो से वे भर जाते थे।

फादर जोसेफ इस भाऊ के वृक्ष को सब वृक्षों से अधिक पसन्द करते थे। यात्रा मे वह उनका साथी था। न्यू मेक्सिको एवं अरिजोना राज्यो के रेगिस्तानी प्रदेश मे उनकी यात्रा के समय बराबर ही उन्हे मेक्सिकन बस्तियों की कडी जमीन में, कच्ची दीवारों के आस-पास यह भाऊ का वृक्ष अपनी नीली-हरी पत्तियों से लदा लहराता दिखलाई पड जाता था। घर का पालतू गधा उसके तने से बँधा रहता था, मुर्गियाँ उसके नीचे उछलती-कूदती रहती थी, कुत्ते उसकी छाया मे सोते थे और धुले हुए कपडे सूखने के लिये उसकी डालो पर फैलाये जाते थे। फादर लातूर बहुधा ही कहा करते थे कि इस वृक्ष की आकृति एवं रग कच्चे घरो वाले गाँव के लिये विशेषकर उपयुक्त था। उसके फूल मकानो की लाल रङ्ग की दीवारो के रग के थे और उसका रेशेदार तना कही सुनहरे रङ्ग का और कही हलके नीले रङ्ग का था। फादर जोसेफ विशप की इस तुलना की बडी कद्र करते थे, परन्तु वे स्वय इसलिये बहुत पसन्द करते थे कि वह जन-साधारण का वृक्ष था तथा प्रत्येक मेक्सिकन परिवार में वह एक प्राणी की तरह था।

इस वर्ष देवी मेरी का महीना फादर वेलेंट के लिये बडे हर्ष का महीना था। वर्षों से वे इस महीने को उचित ढङ्ग से नही मना सके थे, जिसे उन्होने अपने बचपन में वर्ष का पवित्र महीना चुन रखा था और वे देवी मेरी के ध्यान आदि में ही बिता देते थे। अपने भूतपूर्व मिशनरी जीवन में, 'ग्रेट लेक्स' के किनारे वे वर्ष के इस समय एकान्तवास में चले जाते थे। परन्तु यहाँ यह सब करने के लिये समय ही नही मिलता था। गत वर्ष, मई के महीने मे वे होपी रेड इण्डियनो के इलाके का दौरा कर रहे थे, उन्हे प्रति दिन विवाह-सस्कार पूरा कराते हुए, बच्चो को दीक्षा देते हुए

कितने लोगो को विधिवत ईसाई धर्म मे लेते हुए तीस-तीस मील घोडे की यात्रा करनी पड़ी थी। रात को वे छोटी-छोटी पहाड़ियो के बीच ही कही डेरा डाल देते थे। इन्ही कारणो से उपासना-पूजा आदि के कार्यों मे बरावर ही व्यतिक्रम होता रहा।

परन्तु इस वर्ष, अपनी बीमारी के कारण देवी मेरी के महीने में वें अपना सारा समय देवी की पूजा-आराधना ही मे लगा सके थे। वे अपने घूमने का भी समय उनकी सेवा में ही अर्पित कर दिये थे। रात को वे इस आश्वस्त भावना से सोते थे कि देवी उनकी रक्षा कर रही हैं। प्रात.काल जब वे सो कर उठते थे, तो आँख खोलने के पहले ही उन्हे वायुमण्डल मे एक विशेष मिठास का अनुभव होता था—देवी मेरी तथा मई का महीना। माँ देवी रक्षा कर रही है। एक बार पुन· वे नये धर्म भिक्षु के उत्साह से, जिसके लिये धर्म एक व्यक्तिगत पूजा की वस्तु है तथा केवल औचित्य के ही ख्याल से नही, और मिशनरी के कामो की चिन्ता से पूर्णतः मुक्त होकर, पूजा आदि कर सके थे। एक बार पुन· यह महीना उनका अपना महीना हो गया था, देवी ने पुन यह महीना उन्हे दे दिया था, जिसका उनके धार्मिक जीवन मे बराबर ही अत्यधिक महत्त्व रहा था।

वे एक बहुत पुरानी बात का स्मरण करके मुस्करा पडे। जब वे फ्रास के किसी नगर के एक गिरजा मे पादरी के सहायक थे, तो उन्होने एक वार किस प्रकार मई मास मे देवी मेरी की विशेष उपासना-पूजा की योजना वनाई थी और किस प्रकार उस वुड्ढे पादरी ने उसे स्पष्ट अस्वीकार करके उनकी सारी आशाओ पर पानी फेर दिया था। वुड्ढा उस आतक के ज़माने से गुज़रा था और उसे उन दिनो की कठोरता की ही शिक्षा मिली थी, जब पादरियो को वात-बात पर तग किया जाता था, और वह भी वाइप्रेस के विशप जानसेन के मतो से अछूता नही रह गया था। नवयुवक फादर जोसेफ ने उसकी झिडकियो को चुपचाप सहन कर लिया था और उदास होकर वे अपने कमरे मे चले गये थे। वहाँ वे अपनी माला लेकर

दिन भर प्रार्थना करते रहे। "मेरी इच्छा की पूर्ति के लिये नही, परन्तु यदि यह तेरी इच्छा हो, माँ मेरी, तो तू मेरी यह माँग अवश्य पूरी कर दे।" उसी दिन संध्या समय वुड्ढे पादरी ने उन्हे बुलाया था और बिना कहे ही, उसने उनकी उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया था, जिसे प्रात.काल उसने इतनी रुखाई से इनकार कर दिया था। कितना प्रसन्न होकर फादर जोसेफ ने ये सारी वातें अपनी वहन फिलोमीन को लिखी थी, जो उस समय उनके जन्म-स्थान रियोम नगर की भिक्षुणियो की शिष्या थी, और उनसे आग्रह किया था कि वे मई मास के विशेष पूजा-अवसर के लिये वेदी पर अर्पणार्थ कुछ वनावटी फूल तैयार कर दें। उनकी बहन ने कितनी तत्परता से उनकी बात मान कर कितनी प्रचुर मात्रा मे फूल तैयार किये थे। उन्हे इस वात पर फादर जोसेफ़ से कम प्रसन्नता नही हुई थी कि उनके इस विशेष समारोह में इतने अधिक लोग आये थे, विशेपकर उस पादरी इलाके के अल्पवयस्क लोग, जिनमें धार्मिक भावना की वृद्धि स्पष्ट थी। फ़ादर वेलेंट का परिवार वडा संयुक्त परिवार था। वचपन मे ही माँ का निधन हो जाने के कारण सभी भाई-वहन एक-दूसरे से बहुत अनुरक्त हो गये थे और फादर जोसेफ की यह वहन फिलोमीन उनकी सारी आशाओ, महत्त्वाकाक्षाओ एव उनके घोर धार्मिक जीवन की भी सहचरी थी।

तभी से उनके जीवन की सभी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ इसी पवित्र मास मे घटी थी, जव यह पापी एव कलकित ससार श्वेत वस्त्र धारण करता है, मानो वह पच्चीस मार्च की स्मृति में (इस तिथि को ईसाई धर्म मे 'देवी मेरी दिवस' कहते है) उत्सव मना रहा हो, और कुछ देर के लिये वह वास्तव में महात्मा ईसा की पत्नी वनने के उपयुक्त मनोहर हो जाता है। मई मास मे ही उन्हे अपने जीवन के सबसे कठिन काम के लिये अपना देश छोडने के लिये, अपनी प्रिय वहिन एव पिता से विलग होने के लिये (किस शोकयुक्त परिस्थिति मे!) और नयी दुनिया में जाकर मिशनरी का काम आरम्भ करने के लिये ईश्वरीय आज्ञा हुई थी। वह विछोह-वछोह

न था, वह तो एक प्रकार का पलायन था, एक श्रेष्ठतर विश्वास की खातिर परिवार के साथ विश्वासघात करना था। आज वे उस पर भले ही मुस्करा ले, परन्तु उस समय वह काफी कष्टप्रद जान पडा था। बिशप को भी जो थोडी दूर बैठे हुए गाजर छील रहे थे, वह बात याद होगी। इस घडी मे फादर लातूर से जो उन्हे प्रेरणा मिली थी, वास्तव मे उसी के कारण फादर जोसेफ आज साता फे के इस बगीचे मे थे। नये बिशप द्वारा अपने कष्टो को बाँटने का प्रस्ताव किये जाने पर वे अपने प्रिय सैंडस्की को छोडने के लिये कदापि न तैयार हुए होते, यदि वे उस समय स्वय से यह न कहते, "आह, इस समय अब ये उलझन में फँसे हुए है। मै इस समय इनके लिये वही बन जाऊँगा, जो ये मेरे लिये उस दिन बन गये थे, जिस दिन हम सडक पर खडे पेरिस जाने के लिये गाडी की प्रतीक्षा कर रहे थे, और मै अपने सकल्प से विचलित हो गया, और—इन्होने मुझे बचा लिया।"

उन दिनो की स्मृति फादर वेलेंट के हृदय मे इस समय ऐसी चुभ गयी कि उन्हे अपनी आखे पोछनी पडी, (सभी बीमार लोगो की भाँति वे बडी जल्दी द्रवित हो जाते थे) और उन्होने अपना चश्मा पोछ कर पुकारा।

"फ़ादर लातूर, अब थोडा विश्राम करो, काफी देर से तुम काम कर रहे हो।"

बिशप चले आये और कुञ्ज के किनारे खडी हुई एक हाथगाडी पर बैठ गये।

"मै सोच रहा था कि अब मै तुम्हारे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रार्थना नही करूँगा, जोसेफ। अपने विकार को समीप रखने का केवल यही तरीका है कि वह बीमार रहे।"

फादर जोसेफ़ मुस्करा पडे।

"तुम स्वय भी तो साता फे मे बहुत अधिक नही रहते, मेरे बिशप।"

"लेकिन इस ग्रीष्म ऋतु मे मैं यही रहूँगा और तुम्हे भी अपने साथ रखूंगा। इस साल मैं तुम्हे अपने कमल के फूल दिखलाना चाहता हूँ। ट्रैंक्विलिनो आज ही शाम को मेरी 'झील' को पानी से भर देगा।" यह 'झील' बगीचे के बीच मे बना हुआ एक छोटा-सा तालाब था, जिसे ट्रैंक्विलिनो ने, जो सभी मोक्सिकनो की भाँति पानी को नालियो द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान मे पहुँचाने की कला मे निपुण था, पास ही से बहने वाली साता फे की एक छोटी नदी से पानी काट कर भर दिया था। "गत वर्ष गर्मियो मे, जब तुम यहाँ नही थे," विशप ने आगे कहा, "मेरी इस 'झील' में सौ से भी अधिक कमल के फूल लगे थे। और कमल का यह वन उन पाँच गाँठो से ही इतना फैल गया, जिन्हे मै रोम से अपने झोले मे रख कर ले आया था।"

"ये फूल कब लगते हैं ?"

"फूलो का लगना तो जून में ही आरम्भ हो जाता है, परन्तु जुलाई मास में वे अपनी जवानी पर पहुँचते हैं।"

"फिर तो तुम्हे उनके साथ थोडी शीघ्रता करनी होगी, क्योकि मै अपने विशप की आज्ञा लेकर जुलाई में चला गया रहूँगा।"

"इतनी जल्दी ! आखिर क्यो !

फ़ादर वेलेंट ने बिस्तर पर एक करवट ली। "उन धर्मच्युत कैथोलिको के पुनरुद्धार के लिये, जीन ! टकसान की ओर, तुम्हारे नये क्षेत्र के इन पूर्णतः धर्म-भ्रष्ट कैथोलिको के लिये। वहाँ सैकडो ऐसे गरीब परिवार है, जिन्होने कभी किसी पादरी को देखा तक नही है। मै इस बार प्रत्येक बस्ती के घर-घर में जाना चाहता हूँ। वे बडे धर्मिष्ठ एव आस्था वाले हैं, परन्तु उनकी यह निष्ठा अध-विश्वासो तक ही सीमित है, क्योकि वहाँ अन्य कुछ है ही नही। वे अपनी सारी प्रार्थनाएँ अशुद्ध रूप में याद किये हुए है। वे पढ तो सकते नही, और चूँकि उन्हे सिखलाने वाला कोई नही है, वे अपना सुधार कैसे कर सकते है ? वे उन बीजों की भाँति हैं, जिनमें अंकुर तो

बहुत है, परन्तु उनके प्रस्फुटित होने के लिये आवश्यक नमी नही है। थोडा सम्पर्क करने से ही, वे हमारे ईसाई सम्प्रदाय के जीते जागते अग बन सकते है। जितना ही अधिक मै मेक्सिकनो के साथ काम करता हूँ, उतनी ही मेरी यह भावना दृढतर होती जाती है कि महात्मा ईसा ने ऐसे ही लोगो को दृष्टि मे रख कर यह कहा था 'जब तक तुम बच्चो की भाँति नही बन जाते।' उन्होने ऐसे ही लोगो की कल्पना की थी, जो सासारिक बातो मे बहुत चतुर नही होते, जो हर समय लाभ तथा सासारिक उन्नति की ही बात नही सोचते। ये गरीब ईसाई हमारे देश के ग्रामीणों की भाँति कजूस नही होते, सम्पत्ति के प्रति उन्हे कोई स्पृहा नही होती तथा भौतिक लाभ-हानि क्या है, इसका उन्हे कोई ज्ञान नही होता। मै किसी गाँव मे कुछ घण्टो के लिये ठहरता हूँ, दीक्षा, सस्कार आदि पूरा कराता हूँ, प्रत्येक घर मे कोई छोटा-मोटा चिह्न छोड़ता हूँ, जैसे कोई माला या धार्मिक चित्र, और फिर इस भावना से वहाँ से रवाना होता हूँ कि मैने इन्हे कितना प्रसन्न कर दिया तथा इन धर्मभीरु आत्माओ को उन्मुक्त कर दिया है जो उपेक्षा के कारण ईश्वर से दूर कर दी गयी थी।

"टकसान के समीप एक धर्मान्तरित पीमा रेड इण्डियन ने एक बार मुझसे अपने साथ रेगिस्तान में चलने को कहा, क्योकि वहाँ वह मुझे कुछ दिखाना चाहता था। वह मुझे एक ऐसे बीहड स्थान में ले गया कि ऐसी बातो से कम अभ्यस्त व्यक्ति को आशंका होने लगती और वह अपनी जान के लिये डरने लगता। हम लोग काली चट्टानो के एक भयंकर दर्रे में नीचे उतरे और वहाँ एक गुफा में उसने मुझे एक सोने का पात्र, पादरियो के वस्त्र, अन्य पवित्र बर्तन, तात्पर्य यह कि 'मास' बनाने की सभी आवश्यक वस्तुएँ दिखायी। अपाचे लोगो ने मिशन पर जब एक बार आक्रमण करके उसे लूटा था तो उसके पूर्वजो ने इन पवित्र वस्तुओ को छिपा कर रख दिया था, उसे यह नही मालूम था कि यह कितनी पीढ़ी पहले की बात है। यह रहस्य केवल उसके परिवार वालो को ही मालूम था, और मैं पहला

पादरी था, जो ईश्वर को उसकी अपनी वस्तुएँ वापस करने के लिये वहाँ पहुँचा था। मेरे लिये तो वह कर्तव्य निर्धारण के लिये उदाहरण बन गया। उस बीहड़ सीमावर्ती प्रदेश मे धर्म एक गडा हुआ खजाना है, वे उस खज़ाने की रक्षा तो करते है, परन्तु यह नही जानते कि अपनी आत्मा की मुक्ति के लिये उसका उपयोग कैसे किया जाय। थोड़ी-सी धार्मिक शिक्षा, एकाध प्रार्थना, कुछ उपासना से ही उनकी आत्माएँ बन्धन से मुक्त हो सकती है। मै मानता हूँ कि मैं यह काम पूरा कराने के लिये लालायित हो रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि मै ही ईश्वर के इन भटके हुए बच्चो को उसके मार्ग मे प्रेरित करूँ। यह मेरे जीवन की सबसे बडी खुशी होगी।"

विशप ने उनके इस आग्रह का तुरन्त उत्तर नही दिया। कुछ देर बाद उन्होने गम्भीरता से कहा, "फादर जोसेफ, तुम्हे यह भी तो सोचना चाहिये कि मुझे यहाँ तुम्हारी आवश्यकता है। मेरा काम एक व्यक्ति के लिये बहुत अधिक है।"

"परन्तु तुम्हें मेरी उतनी आवश्यकता नही है, जितनी उन्हे!" फादर जोसेफ अपना कम्बल फेंक कर उठ बैठे और अपने पाँव खाट पर से नीचे ज़मीन पर रख दिये। "माटफेराड के फ्रासीसी पादरियो मे से कोई भी अच्छा पादरी यहाँ पर तुम्हारा काम कर सकता है। यहाँ का काम तो बुद्धि से किया जा सकता है, परन्तु वहाँ सहृदयता की आवश्यकता है, एक विशेष प्रकार की सहानुभूति की आवश्यकता है, और हमारे ये नये पादरी उन बेचारो के स्वभाव को वैसा नही समझते, जैसा मैं समझता हूँ। मै तो क़रीब-करीब मेक्सिकन ही बन गया हूँ। मैं उनका भोजन पसन्द करने लग गया हूँ। उनकी मूर्खतापूर्ण बातो से अब मुझे कोई क्षोभ नही होता, उनके दोष ही मुझे प्रिय हो गये हैं। मैं 'उनका ही आदमी' हो गया हूँ!"

"वह तो ठीक है, बिल्कुल ठीक है! परन्तु मैं फिर भी यही कहूँगा कि फिलहाल तो तुम कुछ दिनो तक लेटे ही रहो।"

फादर वेलेंट तमतमा गये और उत्तेजित हुए, अपने तकियो पर पुनः

धम्म से लेट गये, और बिशप बगीचे मे टहलने लगे। वे झाऊ के वृक्षो की कतार तक गये और वापस आये। वे धीरे-धीरे, नपे-तुले एव निश्चित कदमो से, बिना जरा भी झुके हुए, परन्तु लाठी-डण्डे की तरह सीधे नही, तथा गर्दन को इस अन्दाज से उठाये हुए चल रहे थे जिसे देख कर हमेशा यही लगता था कि स्थिति पूर्णत उनके काबू मे है। उन्हे इस समय देखकर कोई यह अनुमान नही लगा सकता था कि उनके हृदय मे एक भयकर सघर्ष चल रहा है। फादर जोसेफ के मर्मस्पर्शी अनुरोध ने एक सजोयी हुई योजना रद्द कर दी थी और फादर लातूर को व्यक्तिगत रूप से मर्मान्तिक निराशा हुई थी। अब तो एक ही काम करना था,—और झाऊ के वृक्षो के पास पहुँचने के पहले ही वे उसे कर चुके। उन्होने सूखे हलके नीले रङ्ग के फूलो से भरी एक टहनी तोड ली, मानो उनका यह कार्य उनके आत्म-त्याग की पुष्टि कर रहा हो। वे उसी प्रकार स्थिर कदमो से वापस आये और उस सैनिक चारपाई के पास मुस्कराते हुए खडे हो गये।

"जोसेफ, इस मामले मे तुम अपनी आत्मा की ही पुकार पर चलो। मै तुम्हारे मार्ग में बाधा नही डालूंगा। हाँ, यह मै अब भी कहूँगा कि तुम अपने स्वास्थ्य की चिन्ता अवश्य करो, परन्तु जब तुम पूर्णत. स्वस्थ हो जाओ तो तुम वही करो, जिसे तुम्हारी आत्मा सर्वप्रथम करने को कहे।"

कुछ क्षणो तक दोनो व्यक्ति मौन रहे। फादर जोसेफ ने धूप से बचने के लिये अपनी आँखें बन्द कर ली और फादर लातूर विचारो में डूबे खडे रहे और झाऊ के उन फूलो को अपनी पतली और कुछ काँपती हुई उँगलियो के बीच इधर-उधर फेरते रहे। उनके हाथो मे एक विचित्र प्रकार की शक्ति थी, परन्तु उनमे वह निश्चलता नही थी जो पादरियो के हाथो मे आमतौर पर होती है, ऐसा लगता था जैसे वे प्रत्येक क्षण किसी जाँच-पडताल मे लगे हो, और पक्के निर्णय कर रहे हो।

चिडियो के पखो की तेज़ फडफडाहट से दोनो मित्र अपने विचारो से जगे। कबूतरो का एक झुण्ड उनके ऊपर से उडता हुआ बगीचे के उस

ओर गया, जहाँ स्कूल के मैदान मे खुलने वाले फाटक से एक औरत उसी समय अन्दर प्रवेश कर रही थी। वह मैगडलेना थी जो प्रति दिन कबूतरों को खिलाने तथा फूल चुनने वहाँ आया करती थी। 'सिस्टरो' ने उसे इस महीने स्कूल के गिरजा की वेदी सजाने का काम दे रखा था, और वह विशप के सेब तथा लिली के फूल लेने आया करती थी। वह चमकते हुए डैनो के एक ववण्डर में से होकर आगे बढी और ट्रैक्विलिनो उसे इतने ध्यान से देखने लगा कि फावडा उसके हाथ से गिर गया। एक क्षण तो चिडियो के समूचे झुण्ड पर प्रकाश इस प्रकार पडा कि वे सभी सद्य अदृश्य सी हो गयी, मानो प्रकाश में ही वे घुल कर लुप्त हो गयी, जैसे पानी में नमक घुल जाता है। दूसरे ही क्षण वे सूर्य के विपरीत दिशा में काले एव श्वेत रङ्ग मे चमक उठी। वे मैगडलेना की बाहो एव कधो पर वैठ गयी और उसके हाथ से खाने लगी। उसने रोटी का एक छिलका अपने मुँह में दवा लिया तो दो चिड़ियाँ अपने पख फडफडाती उसके चेहरे के ऊपर हवा में लटकी हुई उस टुकडे को नोचने लगी। वह अब एक सुन्दर महिला बन गयी थी, उसका शरीर सुगठित हो गया था और उसके सुनहरे बादामी रङ्ग के गालो के नीचे लाली आ गयी थी।

"उसे इस समय देख कर यह कौन कह सकता है कि हम उसे एक ऐसे स्थान से ले आये थे, जहाँ निर्दयता एव वासना का ही राज्य था!" फादर वेलेंट ने धीरे से कहा। "ईसाई धर्म के आदि काल से ही हमारा धर्म-सम्प्रदाय अब तक ऐसा कुछ नही कर सका है जो वह यहाँ कर सकता है।"

"उसकी अवस्था सत्ताईस-अठाईस वर्ष ही होगी। कदाचित् उसे पुन विवाह भी कर लेना चाहिये," विशप ने विचार में डूबे हुए कहा। "यद्यपि वह बहुत सन्तुष्ट दीखती है, मैने कभी-कभी अचानक ही उसकी आँखो में वेदना की एक मलिन छाया देखी है। तुम्हे याद है उसकी आँखो मे भरी वह हृदय विदारक करुणा जो प्रथम बार उससे मिलने पर हमने देखी थी?"

"क्या मै उसे कभी भूल सकता हूँ ? परन्तु उसका सारा शरीर अब बदल गया है। उस समय वह निर्जीव एव भयातुर प्राणी थी। मैने तो उसे सनकी समझा था। नही, नही ! उसे जीवन के दु.खो का पर्याप्त अनुभव हो चुका है। यहाँ वह निरापद एव सुखी है।" फादर वेलेंट उठ कर बैठ गये और उसे पुकारा। "मैगडलेना, मैगडलेना, मेरी बच्ची, यहाँ आओ हमसे कुछ देर बैठ कर बातें करो। दो मनुष्य जब एक दूसरे से अतिरिक्त अन्य किसी को नही देखते तो अकेलापन अनुभव करने लगते है।"

२

दिसम्बर की रात

फ़ादर वेलेंट ग्रीष्म ऋतु के मध्य से ही अरिज़ोना राज्य में थे, और अब दिसम्बर का महीना था। बिशप लातूर इस समय उस शुष्क एवं संदिग्ध मन.स्थिति के काल से गुज़र रहे थे जो बचपन से ही कभी-कभी उनके हृदय पर छा जाती थी और जिसके कारण वे जहाँ भी रहते थे स्वयं को परदेशी अनुभव करने लगते थे। वे अपने पत्रो आदि का उत्तर अवश्य दे रहे थे, पादरियो के इलाको का दौरा अवश्य कर रहे थे, पादरी-हीन मिशनो पर सार्वजनिक पूजा आदि भी करा रहे थे, 'सिस्टरो' के विद्यालय की नयी इमारत के निर्माण-कार्य का अधीक्षण भी कर रहे थे, परन्तु उनका मन खोया-खोया सा रहता था।

क्रिसमस से तीन सप्ताह पूर्व एक दिन रात को वे बिस्तर पर पडे-पडे करवटें बदल रहे थे। नीद नही आ रही थी और असफलता की भावना उनके हृदय को दबोचे जा रही थी। उनकी प्रार्थनाएँ अर्थहीन थी और उनसे उन्हे कोई नयी प्रेरणा नही मिल रही थी। उनकी आत्मा उजाड़ भूमि बन गयी थी उनके पास अपने पादरियो एव जनता को देने के लिये

अब कुछ नही रह गया था। उनका कार्य तत्वहीन, बालू की भीत जैसा लग रहा था। उनका विशाल इलाका अब भी असभ्यो एव अधार्मिको का प्रदेश था। रेड इण्डियन लोग अब भी भय एव अज्ञान की अपनी पुरानी लीको पर, पुराने अध-विश्वासो एव अपशकुनो आदि से लडते-झगडते चल रहे थे। मेक्सिकन लोग अब भी बच्चो की भाँति धर्म के साथ खेलवाड कर रहे थे।

ज्यो-ज्यो रात बीतती जाती थी, बिशप का बिस्तर उनके लिये काँटो की सेज बनता गया, यहाँ तक कि अब वे उसे बर्दाश्त नही कर सके। अन्धेरे ही मे वे उठे और खिडकी के बाहर झाँककर देखा। उन्हे यह देख कर बडा आश्चर्य हुआ कि बर्फ पड रही है, और ज़मीन पर एक हलकी सी सतह जम चुकी है। पूर्णमासी का चन्द्रमा बादलो के आवरण में छिपा हुआ आसमान मे पीला प्रकाश छिटका रहा था, और आकाश की इस रुपहली पृष्ठभूमि में गिरजाघर की मीनारें काली दीख रही थी। फादर लातूर की इच्छा हुई कि वे गिरजाघर मे जाकर प्रार्थना करें, परन्तु वे कम्बल ओढ़कर पुन. लेट गये। फिर, यह सोचकर कि वे तो गिरजाघर की ठण्डक से डर रहे है, उन्हे स्वय से घृणा हुई और वे पुन उठ गये, जल्दी से कपडे बदले और अपना वही पुराना लबादा डालते हुए, जो फादर वेलेंट के लबादे की जोड़ी थी, गिरजाघर के आगन में पहुँच गये।

उन्होने इन लबादो का कपडा बहुत समय पहले पेरिस में खरीदा था, जब वे नवयुवक थे और बाक की सडक पर स्थित विदेशी मिशनो के धर्म शिक्षालय मे ठहरे हुए थे और नयी दुनिया की अपनी प्रथम यात्रा की तैयारी कर रहे थे। इस कपड़े से ओहियो के एक दर्जी ने उनके लिये घुडसवारो वाला लबादा बना दिया था, जिसके कधे के भाग पर अलग से कपड़ा जोडा हुआ था और उसका अस्तर लोमडी की खाल का था। इसके कई वर्ष पश्चात्, जब फादर लातूर अपने इलाके की प्रथम यात्रा पर रवाना होने को थे, इन लबादो को खोलकर पुन. सिलाई की थी और उनके

अस्तर मे गिलहरी की खाल लगा दी थी, जो मध्यम जलवायु के लिये अधिक उपयुक्त था। यह तथा अन्य वहुत सी पुरानी वातें बिशप को लबादा ओढते-ओढते तथा आगन से पवित्र बर्तन आदि रखे जानेवाले घर के पास पहुँचते-पहुंचते स्मरण हो आयी। लोहे की बडी चाबी उनके हाथ मे थी।

आगन गिरी हुई बर्फ से सफेद हो रहा था और उसमे दीवारो तथा इमारतो की छाया बादलो से ढके चद्रमा के धुँधले प्रकाश मे स्पष्ट पड रही थी। पवित्र बर्तन आदि वाले घर के दरवाज़े के रास्ते मे उन्होने किसी को झुक कर बैठा हुआ देखा, अरे, यह तो एक स्त्री है और रो रही है। वे उसे उठा कर अदर लिवा गये। मोमबत्ती जलाते ही, उन्होने उसे पहचान लिया, और उन्हे उसके आने के प्रयोजन का अनुमान भी लग गया।

वह एक बूढी अमेरिकन औरत थी, जिसका नाम साडा था, और जो किसी अमेरिकन परिवार मे गुलाम थी। यह परिवार 'प्रोटेस्टेट' परिवार था, जो रोमन कैथोलिको के बहुत ही विरुद्ध था, और वे लोग इस बूढी को न तो 'मास' (सार्वजनिक-पूजा) मे सम्मिलित होने देते और न किसी पादरी का उसे स्वागत करने देते। घर मे उस पर कड़ी निगाह रखी जाती थी, परन्तु जाडे की ऋतु मे जब घर के सभी प्राणी गरम कमरो मे सोते थे, उसे बाहर एक लकड़ी के गोदाम मे सोने को कहा जाता था। आज रात, कडी सर्दी के कारण सो न सकने की वजह से उसने साहस करके यह कदम उठाया था और अस्तबल वाले दरवाज़े से चुपके से वाहर खिसक आयी थी और एक गली मे से दौडती हुई ईश्वर के घर प्रार्थना करने चली आयी थी। गिरजा घर के बाहरी दरवाजे को बन्द पाकर, वह बिशप के बगीचे मे प्रवेश कर गयी थी, और वहाँ से घूमकर पवित्र बर्तन आदि रखने वाले घर के समीप पहुँच गयी थी, परन्तु यहाँ आकर उसने देखा कि उसका भी दरवाजा बन्द है।

बिशप मोमवत्ती लिये हुए उसके चेहरे को चुपचाप देख रहे थे और वह कुछ कह रही थी। उसका चेहरा स्याह हो गया था और जीवन के

संघर्षों एव विपदाओं के कारण सूख गया था, उसमे हड्डियाँ उभड आयी थी। बिशप को ऐसा लगा कि उन्होंने किसी मानव चेहरे में ऐसी विशुद्ध सरलता पहले कभी नही देखी थी, जैसी उसके चेहरे से टपक रही थी। उन्होंने देखा कि उसने बिना मोजे के ही जूता पहन रखा है, और जूते भी उसके मालिक के पुराने, फेंके हुए, कच्चे चमडे के जूते थे। फटी हुई काली शाल के नीचे उसने सूती कपडे की बनी कोई पतली सी पोशाक पहन रखी थी, जिसमे कई जगह पैबन्द लगे हुए थे। ठण्डक के मारे वह काँप रही थी और उसके दात बजे रहे थे। अपने खाली हाथ से बिशप ने रोयेंदार अस्तर वाला अपना लबादा कधे पर से उतार लिया और उसे उसके ऊपर डाल दिया। इससे वह डर गयी। डर के मारे सिकुडते हुए शिकायत भरे अस्फुट स्वर मे कहा, "ओह, नही, नही, फादर।"

"तुम्हे अपने फादर की आज्ञा माननी चाहिये, मेरी बेटी। ओढ लो यह लबादा अच्छी तरह, फिर चलो गिरजा घर मे प्रार्थना करने चलें।"

गिरजाघर में वेदी की बत्ती के लाल प्रकाश के अतिरिक्त बिलकुल अधेरा था। उसका हाथ पकडे हुए तथा अपने आगे मोमबत्ती दिखाते हुए, वे उसे सगीत कक्ष के उस पार देवी मेरी की मूर्त्ति के समीप लिवा गये। वहाँ वे देवी के सामने रखी हुई बत्तियाँ जलाने लगे। बूढी साडा घुटनो के बल बैठकर फर्श चूमने लगी। उसने देवी माँ के पाँव चूमे, वह चबूतरा चूमा, जिस पर उनकी मूर्ति खडी थी। यह सब करते हुए वह बराबर रो रही थी। परन्तु उसके चेहरे की भाव-भगिमा देखकर, उस पर होने वाले स्पदन को देखकर, वे समझ गये कि ये हर्षातिरेक के आँसू हैं।

"उन्नीस वर्ष हो गये, फादर, उन्नीस वर्ष से मैंने वेदी की ये पवित्र-वस्तुएँ नही देखी थी।"

"अब तो वह सब बीत गया, साडा। तुमने पवित्र भावनाएँ तो हृदय में सुरक्षित रख छोडी है। आओ, अब प्रार्थना करें।"

बिशप भी उसके बगल घुटनो के बल बैठ गये, और प्रार्थना आरम्भ किया, 'ओ देवी मेरी, देवी माँ . '

इस वृद्धा बदी के विषय मे फादर वेलेंट ने कई बार बिशप से चर्चा की थी। इलाके की धर्म-भीरु स्त्रियो मे उसकी दयनीय स्थिति के सम्बन्ध मे काफी कानाफूसी होती थी। स्मिथ परिवार के लोग, जिनके साथ वह रहती थी, जॉर्जिय राज्य के निवासी थे। वे कभी एक बार अल पासो डेल नोर्ते में भी रहे थे, और वही से वे उसे अपने जन्म-स्थान वाले राज्य में वापस जाते समय साथ ले गये थे। थोडे ही दिन पहले जॉर्जिया मे इस परिवार पर कोई मुसीबत आ गयी थी, और वे अपने सभी नीग्रो गुलामो को बेचकर राज्य छोडकर भागने को बाध्य हुए थे। वे इस मेक्सिकन औरत को नही बेच सके, क्योकि उनका उस पर कोई कानूनी अधिकार नही था, उसकी स्थिति अनियमित थी। अब, चूँकि स्मिथ परिवार वाले एक मेक्सिकन प्रदेश मे वापस आ गये थे, उन्हे भय था कि उनकी यह गुलाम नौकरानी कही उनके यहाँ से भाग न जाय और अपने प्रदेश के लोगो के यहाँ शरण न ले-ले। इसलिये वे उस पर कड़ी निगरानी रखते थे। वे उसे अपने घर की चहारदीवारी से बाहर नही जाने देते थे, यहाँ तक कि वह अपनी मालकिन के साथ बाजार भी नही जा सकती थी।

गिरजाघर की दो सेविकाएँ साहस करके साडा से बात करने, स्मिथ के घर के आगन मे पीछे से प्रवेश कर गयी थी। उस समय वह कपडे धो रही थी। परन्तु वे घर की मालकिन द्वारा बडी अभद्रता से भगा दी गयी थी। श्रीमती स्मिथ बिना अच्छी तरह कपडे पहने ही दौड़ी हुई आगन मे निकल आयी थी और उनसे बोली थी कि यदि उनका इस घर से कोई काम है, तो वे सामने वाले दरवाज़े से अन्दर आ सकती है। यह क्या कि वे लुक-छिपकर अस्तबल वाले रास्ते से आती है और इस बेचारी (साडा) को डराती है। जब उन्होने उनसे (श्रीमती स्मिथ से) यह कहा कि वे साडा को सार्वजनिक पूजा मे लिवा जाने के लिये आयी है, तो उन्होने उत्तर

दिया कि मैंने इस बेचारी को बडी मुश्किल से पादरियो के पजे से एक वार छुडाया है, और अव पुन. उनके हाथ में इसे नही पड़ने दूँगी।

इस फटकार एव झिडकी के वाद भी, एक वडी ही धार्मिक पडोसी औरत ने एक वार अस्तवल के दरवाज़े के पास, जो गली मे खुलता था, साडा से, जो इस समय एक गधे पर से लकडियाँ उतार रही थी, कुछ कहने आयी थी। परन्तु इस बुड्ढी नौकरानी ने अपने मुँह पर उँगली रख कर तथा अपने पीछे की ओर देख कर इतने भय से सकेत किया था कि आगन्तुक यह सोचकर फौरन भाग गयी थी कि यदि साडा किसी वाहरी व्यक्ति से वात करती हुई पकडी गयी, तो उसकी खूब मरम्मत की जायगी। उस भली औरत ने फौरन ही फादर वेलेंट के पास जाकर उनसे यह वात वतायी थी और उन्होने विशप से इस सम्वन्ध मे सलाह किया था, और कहा था कि इस गुलाम औरत को धर्म का आश्रय प्रदान करने के लिये कुछ अवश्य करना चाहिये। विशप ने उत्तर दिया था कि अभी उपयुक्त समय नही है। इस समय इन लोगो की शत्रुता मोल लेना उचित नही। स्मिथ परिवार निम्न कोटि के 'प्रोटेस्टेंटो' के एक छोटे से दल के अगुआ थे, जो कैथोलिको को परेशान करने का अवसर ढूँढते रहते थे। वे पर्वों के दिन गिरजाघर के फाटक के पास एकत्र हो जाते थे और वहाँ ज़ोर-ज़ोर से हँस कर कैथोलिको का मज़ाक उड़ाते थे, सडक पर भिक्षुणियो से अभद्रतापूर्ण वातें करते थे, और जव 'कार्पस क्रिस्टी' वाले रविवार (ईस्टर के वाद आठवाँ रविवार) के दिन कैथोलिको का जुलूस निकलता था, ये लोग उस पर छीटाकशी करते थे। स्मिथ परिवार में पाँच वेटे थे, जो वुरी आदतो के थे, और गालियाँ वकते थे। यहाँ तक कि दो छोटे लडके भी जो अभी वच्चे ही थे, वुरी प्रवृत्तियो के थे। ट्रैक्विलिनो ने इन दो लडको को कई वार विशप के वगीचे से भगाया था, जहाँ वे अपने लपट साथियो के साथ नाशपाती तोड़ने या पादरियो को गाली देने आते थे।

उठकर खडे होने पर फादर लातूर ने साडा से कहा कि मुझे

यह जानकर वडी प्रसन्नता हुई है कि तुम्हें प्रार्थनाएँ इतनी अच्छी तरह याद है ।

"आह, फादर, रोज रात को मै देवी माँ के नाम पर माला जपकर ही सोती हूँ ।" उस बुढिया ने फादर के मुँह की ओर देखते हुए तथा अपने दोनो हाथो के पजो को एक दूसरे से जकड कर अपनी छाती पर रखते हुए वडी गम्भीरता से कहा ।

जब उन्होने उससे पूछा कि क्या उसका माला इस समय उसके पास है, तो वह कुछ घवरा सी गयी । वह उसे कपडो के नीचे अपनी कमर मे बाँधे रहती थी, क्योकि इसी ढग से वह उसे छिपा सकती थी ।

बिशप उसे ढाढस देते हुए वोले, "याद रखो साडा, आने वाले वर्ष मे तथा क्रिसमस से पूर्व नौ दिन के सार्वजनिक पूजा-समारोह में, मै तुम्हारे लिये प्रार्थना कही भूलूँगा । अब तुम निश्चित हो जाओ, क्योकि मैं तुम्हे वेदी के समक्ष मौन प्रार्थना के समय तुम्हें भी याद करूँगा, जिस प्रकार मैं अपनी वहनो एव भतीजियो को याद करता हूँ ।"

उन्होने बाद को फादर वेलेंट को वताया कि उन्हे धर्म के नैसर्गिक आनन्द का ऐसा गहरा अनुभव पहले कभी नही हुआ था, जैसा उस दिसम्बर की धुँधली रात को । देवी के समक्ष उसके वगल मे झुक कर बैठे हुए उन्होने अनुँभव किया था कि गिरिजाघर की सारी वस्तुएँ उसके लिये जिसके पास अपनी कहने को कोई वस्तु नही थी, कितनी अधिक मूल्यवान् थी : वहाँ की बत्तियाँ, देवी मेरी की मूर्ति, अन्य सतो की मूर्तियाँ, वह क्रूश, जो कष्ट के प्रति अनुचित तिरस्कार की भावना को समाप्त कर देता था तथा दुःख एवं दरिद्रता को महात्मा ईसा तक पहुँचने का साधन वना देता था । उस दु ख की मारी गुलाम औरत के बगल मे झुके हुए, उन्हे उन दैवी रहस्यो का अनुभव हुआ, जिनका उन्हे युवावस्था में हुआ था । उन्हे यह भली-भाँति अनुभव हुआ कि इस औरत के लिये यह जानना कितना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि यद्यपि धरती पर इतनी निर्दय स्त्रियाँ हैं, स्वर्ग मे एक

अत्यत दयालु स्त्री है। वृद्ध लोगो का, जो सघर्ष एव विपदाओ में ही जीवन काटे रहते है तथा जिन्हे ससार की निर्दयता के कटु अनुभव हुए रहते हैं, बच्चो से भी अधिक स्त्री के स्नेह की आवश्यकता रहती है। स्त्री को कितने कष्ट सहन करने पड सकते हैं, इसे कोई दैवी स्त्री ही समझ सकती है।

सचमुच, जीन मेरी लातूर सृष्टि की समस्त दया की स्रोत देवी मेरी के वास्तविक स्वरूप पहचानने के इतने समीप कदाचित् पहले कभी नही पहुँचे थे, जितना उस रात गिरजाघर में देवी की मूर्ति के समक्ष। उन्हे अनुभव हुआ कि देवी दया की मूर्ति ही है, तभी तो स्त्री के गर्भ से पैदा हुआ कोई मनुष्य दयाहीन हो ही नही सकता, यह दया हत्यारे के लिये भी फाँसी के तख्ते पर चढते समय व्यक्त हो उठती है, जिस प्रकार वह मरते हुये सैनिक के लिये अथवा यत्रणा पाने वाले शहीद के लिये व्यक्त होती है। देवी मेरी के सम्बन्ध मे यह सुहावनी कल्पना विशप के हृदय मे तीर की तरह चुभ गयी।

"ओ देवी मेरी!" वह उनके बगल में झुके हुए बुदबुदायी, और उन्हें अनुभव हुआ कि वह नाम ही उसके लिये खाना-कपडा बन गया, मित्र और माँ बन गया। उन्होने उसके हृदय में उत्पन्न चमत्कार को अपने हृदय में ग्रहण किया, उसकी आँखो से इसे देखा और उन्हे यह ज्ञान हुआ कि उसको भी गरीबी उतनी ही भयानक है, जितनी उसकी। जब स्वर्ग का राज्य इस ससार मे प्रथम बार उतरा था, यत्रणा एव गुलामो और मालिको वाले इस क्रूर ससार मे उतरा था, तो उसने जिसने इसे धरती पर उतारा था, कहा था, "आह, तुममे से जो सबसे तुच्छ है, वही स्वर्ग राज्य मे श्रेष्ठतम समझा जायगा।" यह गिरजा साडा का घर था, और वे उसमे एक नौकर थे।

विशप ने बुढिया के धार्मिक विश्वास की स्वीकारोक्ति सुनी। उन्होने उसे आशीर्वाद दिया और अपने दोनो हाथ उसके सिर पर रख दिये। जब वे उसे गिरजा के मुख्य भाग से लिवा कर बाहर निकलने लगे, तो साडा

अपने कधे से वह लवादा उतारने लगी। वे उसे यह कह कर मना करने लगे कि वह उसे अपने लिये रख ले और रात को वही ओढ कर आराम से सोये। परन्तु उसने जल्दी से उसे उतार दिया, उसे अपने पास रखने की कल्पना ही उसके लिये भयावह थी। "नही, नही, फादर! यदि वे लोग इसे देख लेंगे, तो!" इससे अधिक वह अपने अत्याचारियो के विरुद्ध कुछ न बोली। परन्तु उसे उतारते समय उसने उसे पुराने लबादे को सहलाया और थपथपाया, जैसे वह कोई चेतन वस्तु हो, जिसने उसके साथ इतनी दया दिखायी थी।

सयोग से फादर लातूर को उस रजत पदक की याद आ गयी, जिसपर देवी मेरी का चित्र खुदा हुआ था और जो इस समय उनकी जेब मे था। उन्होने उसे निकाल कर उसे दे दिया और कहा कि वह स्वय पोप का प्रसाद है। यह तो उसके लिये एक निधि बन गया, जिसे वह छिपा कर तथा बहुत सम्भाल कर रखेगी, और जब उस पर निगाह रखने वाले सो जायेंगे, तो वह उसकी पूजा करेगी। आह, उन्होने सोचा, उसके लिये, जो न पढ सकती है और न सोच सकती है, यह चित्र, प्रेम का स्थूल रूप, कितना मूल्यवान् है।

उन्होने विशाल चाबी ताले मे लगायी, दरवाजा लकडी के कब्जो पर धीरे से खिसक कर खुला। बाहर की निस्तब्धता उनकी आतरिक शान्ति का ही एक रूप जान पड़ने लगी। बर्फ का गिरना बन्द हो गया था, झीने बादल, जो पहले आकाश मे बिखरे हुए थे, अब सैंग्रे डि क्रिस्टो पर्वत पर श्वेत कुहरे के रूप मे एकत्र हो गये थे। पूर्णमासी का चन्द्रमा, स्वच्छ नीले आकाश मे काफी ऊपर उठ कर, भव्य एव सुहावना, अकेला ही चमक रहा था। विशप अपने गिरजाघर के दरवाज़े के पास विचारो मे निमग्न खडे थे, तथा उन काले पद-चिह्नो की रेखा को देख रहे थे, जिन्हे उनके अतिथि ने जाते समय बर्फ की भीगी सतह पर छोडा था।

३
नवाजो प्रदेश में वसन्त

फादर वेलेंट जाड़े भर अरिजोना राज्य मे रहे। वसत ऋतु के प्रथम आगमन के साथ ही विशप और जेसिटो घोडे की एक लम्बी यात्रा पर न्यू मेक्सिको राज्य के पार 'पेंटेड डेजर्ट' एव होपी नामक गाँवो के लिये रवाना हो गये। ओरेबी गाँव से विदा होने के वाद विशप एक नवाजो मित्र से मिलने के लिये कई दिन तक दक्षिण की ओर चलते रहे। इस मित्र का एक मात्र लड़का अभी हाल में ही मर गया था और उसने इसकी सूचना विशप के पास साता फे में भेजी थी।

फादर लातूर इस मित्र यूज़ावियो को वहुत पहले से जानते थे, और अपने नये इलाके में आने के फौरन वाद ही उससे मिले थे। यह नवाजो मित्र उस समय साता फे मे था, और वह वहाँ अपने तथा होपी गाँव के लोगो के बीच अनवरत चलने वाले झगड़े को शान्त करने मे सैनिक अधिकारियो की सहायता कर रहा था। तभी से बिशप तथा इस रेड इण्डियन सरदार के मन में एक दूसरे के प्रति वडा सम्मान था। यूज़ावियो विशप से दीक्षा दिलाने अपने बेटे को साँता फे तक लाया था,—उसी प्रिय बेटे को, जिसकी इसी जाडे में मृत्यु हुई थी।

यद्यपि यूज़ावियो फ़ादर लातूर से अवस्था में दस वर्ष कम था, नवाजो सम्प्रदाय मे उसका वड़ा प्रभाव था और उसके पास बहुत सी भेड़ें तथा घोडे थे। साता फे तथा अबुलकर्क मे उसकी वुद्धिमानी एव रोब की धाक थी, लोग उसके आकर्षक व्यक्तित्व की प्रशंसा करते थे। उसका कद बहुत ही लम्बा था, यद्यपि नवाजो लोग अमूमन लम्बे होते थे और उसका चेहरा रिपब्लिक युग के किसी रोमन जनरल की तरह था। वह हमेशा से वडे अच्छे कपडे पहनता था, मखमल एव मृगछाला के बने वस्त्र, जिनमें गुरियो एव पक्षी के पर के गोटे लगे रहते थे। वह उनके ऊपर चाँदी की पेटी बाँधता

था तथा अच्छे-से-अच्छे ऊन का बना बढिया डिज़ाइन का कम्बल ओढता था। वह कमीज़ की ढीली आस्तीन के नीचे अपनी बाहो पर चाँदी के बाजूबन्द पहने रहता था और गले मे कौडियो, नील मणियो तथा मूगे की बनी एक पुरानी माला लटकाये रहता था। ये मूगे भूमध्य सागरीय मूगे थे और इस नवाजो प्रदेश मे कारोनैडो के कप्तानो द्वारा पहुँचे थे, जब वे होपी गाँव एव 'ग्रैड कैनीयन' का पता लगाने इस प्रदेश से गुज़रे थे।

यूज़ाबियो अपने सम्बन्धियो एव आश्रितो के साथ कोलोरैडो चिकिटो पर्वत के समीप छोटे-छोटे मकानो की एक बस्ती मे रहाता था, पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर मे उसके परिवार के लोग उसके विशाल भेंडो के झुण्ड चराते थे।

फादर लातूर और जैसिंटो बाड़ा जैसे बने इन सटे-सटे मकानो की बस्ती मे जिस समय पहुँचे, उस समय एक ज़ोर की आँधी आयी हुई थी, जिसकी धूलि से वे तथा उनके खच्चर बिलकुल ढँक गये और उनके लिये आगे रास्ता देखना कठिन हो रहा था। नवाजो अपने मकान से बाहर निकल आया और ऐंजेलिका की लगाम थाम कर बिशप को नीचे उतारा। पहले तो वह कुछ नही बोला, केवल फादर लातूर के बिलकुल श्वेत हाथो को अपने साँवले हाथो से पकडे खडा रहा और आँखो मे शोक एव विराग का सन्देशा लिये उनके मुँह की ओर देखता रहा। उसके चेहरे पर भावनाओ का एक तूफान सा आया और फिर वह धीरे से बोला।

"मेरे मित्र, तुम आ ही गये!"

उसने इससे आगे कुछ नही कहा, परन्तु उतना ही कहने में सब कुछ व्यक्त हो गया, स्वागत, विश्वास, सराहना।

बिशप के रहने के लिये, बस्ती से दूर एकान्त स्थान में एक बाडा दिया गया। यूजाबियो ने उसमें फौरन अपने अच्छे-से-अच्छे मृगछाले तथा कम्बल, कालीन आदि बिछवा दिये और अपने अतिथि से कहा कि वे यहाँ कुछ दिन रहे और विश्राम करें। उनके खच्चर भी थक गये थे, उसने

कहा, और स्वय फादर भी तो थके हुए थे, और साता फे अभी बहुत दूर था।

विशप ने उसे धन्यवाद दिया और कहा कि वे तीन दिन ठहरेंगे, क्योकि एकान्त मे रहकर उन्हे कुछ ध्यान आदि भी करना है। घर छोडने के बाद से ही उनका मस्तिष्क सासारिक समस्याओ मे उलझा हुआ था। यह एक ऐसा स्थान जान पडता है, जहाँ आदमी शान्ति से कुछ सोच विचार सकता है। वहाँ की नदी जो वसन्त आते-आते केवल नाले के ही रूप मे रह गयी थी, मिट्टी के विशाल टीलो एव स्तूपो के बीच से गुजरती थी। वसत की तेज हवा के कारण इन टीलो की मिट्टी से वायुमण्डल भरा रहता था। जिस वाडे में विशप रहने के लिये आये, उसके पास ही एक टीला था। बाड़े की दीवारे लकडी की बनी हुई थी और उन पर मिट्टी का लेप चढा था। उसकी दरारो से छन कर हवा से उडायी हुई मिट्टी अन्दर भी पहुँचती थी।

नदी के किनारे एक प्रकार के ऊँचे-ऊँचे वृक्षो का एक बाग था। ये वृक्ष बहुत ही पुराने और आकार में बहुत बडे थे, इतने बडे कि लगता था कि वे पूर्व युग के है। वे दूर-दूर उगे हुए थे, और उनकी विभिन्न ऐंठी हुई आकृति जान पडता है उस अनवरत हवा के ही कारण हो गयी थी, जिसने उन्हे पूरब की ओर झुका दिया था और मिट्टी से रगड़-रगड कर उन्हे चिकना एव चमकीला बना दिया था। उनकी इस आकृति का कारण यह भी था कि उन्हे पानी बहुत कम मिलता था, क्योकि इस स्थान पर नदी लगभग वर्ष भर सूखी ही रहती थी। ये पेड जमीन से तिरछे निकले हुए थे और चालीस, पचास फुट की ऊँचाई पर ये सभी सफेद एव सूखे तने अपनी दिशा बदल दिये थे और पुन अपनी जड की ओर घूम पडे थे। कुछ वृक्षो में बडी-बडी शाखाएँ निकल गयी थी, जो नीचे की ओर झुक कर लगभग जमीन तक पहुँच गयी थी, कुछ में कोई शाखा नहीं निकली थी, परन्तु तना एकाएक नीचे की ओर झुक गया था, जैसे धनुप की

प्रत्यंचा से झुका दिया जाता है, और कुछ के शिखर पर घने चमकदार पत्ते थे जैसे कोई टेढा ताड़ का वृक्ष हो। वे सभी हरे वृक्ष थे, परन्तु वे बहुत पुराने, मृतक, एव सूखे हुए लगते थे और उनमे पत्तियाँ बहुत कम थी। शाखाओं मे बहुत ऊँचाई पर या किसी बहुत ही लम्बी पतली डाली के सिरे पर मुलायम हरी पत्तियो का एक हलका सा गुच्छा दिखलायी पड़ जाता था, जो उन लम्बे जीर्ण, श्वेत तनो और शाखाओ से बिलकुल बेमेल लगता था। यह बाग विशाल वृक्षो वाले जाडे की ऋतु का जगल-सा दीखता था, ऐसे वृक्ष, जिनकी पत्तीहीन डालियो मे परवृक्षाश्रयी पौधो के गुच्छे लगे हुए हो।

नवाजो लोग आतिथ्य-सत्कार मे अनधिकार हस्तक्षेप नही करते। यूज़ाबियो ने विशप पर केवल यह स्पष्ट कर दिया कि उसे उनके आने से बडी प्रसन्नता हुई है, अन्यथा उसने उन्हे पूर्णतः अपनी सुविधानुसार रहने के लिये छोड़ दिया। फादर लातूर वहाँ तीन दिन तक लगभग अनवरत आँधी ही में रहे और वे धूलि की उन चलती-फिरती दीवारो तथा पर्दों के कारण अपने दूरस्थ छोटे से रेड इण्डियन शिविर से भी बिलकुल विलग रहे। या तो वे अपने बाडे मे बैठे हवा की सनसनाहट सुनते रहते थे, या एक रेड इण्डियन कम्बल ओढे जिससे वे अपना मुँह और नाक भी ढँके रखते थे, उन प्राचीन एवं हवा से टेढे हुए वृक्षो के नीचे टहलते रहते थे। यहाँ आने के बाद से ही वे यह निर्णय करने मे लगे हुए थे कि क्या फादर वेलेंट को टकसान से वापस बुलाना उनके लिये न्याय-सगत होगा। विकार के पत्रो से, जिन्हे यात्री उनके पास तक पहुँचाते थे, यह जान पड़ता था कि वे जहाँ थे, वहाँ पूर्णत· सतुष्ट थे, और सेंट जेवियर डेल बाक के पुराने मिशन गिरजा का जीर्णोद्धार करने मे लगे हुए थे, जिसे वे इस महाद्वीप का सबसे अधिक सुन्दर गिरजाघर कहते थे, यद्यपि लगभग दो सौ वर्षो से उसकी उपेक्षा कर दी गयी थी।

फादर वेलेंट के जाने के बाद से विशप की ज़िम्मेदारियाँ उत्तरोत्तर

बढती गयीं। आवर्न से आये हुए सभी नये पादरी वडे अच्छे लोग थे, वे वडे वफादार थे तथा विशप की सभी इच्छाएँ वड़ी तत्परता से पूरी करते थे, परन्तु फिर भी वे इस देश के लिये अजनवी थे, स्वय कोई निर्णय लेने में हिचकते थे और अपनी प्रत्येक कठिनाई विशप से कहते थे। फादर लातूर को अपने विकार की आवश्यकता थी, जो यहाँ के निवासियो मे इतनी चतुराई से पेश आते थे, उनके दोषो के प्रति इतनी सहानुभूति दिखाते थे। साथ रहने पर तो विशप फादर वेलेंट के आशावादी उतावलेपन को हरदम नियन्त्रण मे रखते थे, परन्तु अकेला हो जाने पर उन्हे इसी गुण की सबसे अधिक कमी खटकती थी। और यह मान लिया जाय कि सबसे अधिक तो उन्हे फादर वेलेंट के साथ की कमी खटकती थी ?

यद्यपि जीन मेरी लातूर और जोसेफ वेलेंट फ्रांस मे पाय दे डोम नामक नगर के पडोसी इलाको मे पैदा हुए थे, वचपन मे वे एक-दूसरे को नही जानते थे। लातूर का परिवार विद्वानो एव शिक्षको का पुराना परिवार था, जब कि वेलेंट का परिवार उस प्रात मे अपेक्षाकृत निम्नकोटि का परिवार था। इसके अतिरिक्त वचपन मे जोसेफ अधिकतर घर से दूर ही रहे। वे अपने वावा के साथ वोल्विक पर्वतीय प्रदेश में उनके फ़ार्म पर रहे, जहाँ की जलवायु विशेषरूप से अच्छी थी तथा वह प्रदेश चिडचिडे प्रकृति के वच्चे के लिये वडा शान्त एव स्वास्थ्यप्रद था। दोनो लडको का प्रथम साथ क्लेरमोट के मोटफेराड के धार्मिक शिक्षालय मे ही हुआ।

जब जीन मेरी शिक्षालय के अपने दूसरे वर्ष मे थे, तो एक दिन, वर्ष के आरम्भ मे, वे खेल के मैदान में खडे हुए थे और नये आये हुए लड़को को वड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। उन्ही लडको मे उन्हे एक खास ही सुस्त एव भद्दी आकृति वाला लड़का दिखलायी पडा, उसकी अवस्था उन्नीस वर्ष की थी, वह नाटे कद का था, वहुत ही पीला, चेहरा वहुत ही सरल, ठुड्डी पर एक मसा तथा वाल वहुत ही भूरे थे, जिसके कारण देखने में वह

जर्मन लगता था। इस लडके ने लातूर को अपनी ओर ताकते हुए देख लिया और फौरन ही उनके पास चला आया, जैसे वह बुलाया गया हो। स्पष्ट था कि वह अपने सादेपन के प्रति अनभिज्ञ था, बिलकुल शर्मीला नही था, परन्तु अपने आस-पास की वस्तुओ के प्रति वह वडा जिज्ञासु था। उसने जीन लातूर से उनका नाम पूछा, उनका घर कहाँ है, तथा उनके बाप क्या करते है। फिर बड़ी सरलता से उसने कहा—

"मेरे पिता जी बेकर (पाव रोटी आदि बनाने तथा बेचने वाले) है। रीयोम के वे सर्वश्रेष्ठ बेकर है। वस्तुतः वे असाधारण प्रकार के बेकर है।"

युवक लातूर यह सुनकर हँस पडा था, परन्तु उसने जोसेफ की अपने पिता के प्रति इस श्रद्धा-भावना की सराहना की थी। उस विचित्र लड़के ने उन्हे अपने भाई, चाची एव अपनी सयानी छोटी बहन फिलोमीन के सम्बन्ध मे भी बताया। उसने पूछा कि लातूर शिक्षालय मे कितने दिन से हैं।

"क्या तुमने पहले से ही पादरी बनने का सोच लिया है ? मैने भी यही सोचा है, लेकिन मै तो सेना मे भरती होते-होते बचा।"

उससे एक वर्ष पहले, अल्जियर्स के आत्मसमर्पण के पश्चात्, क्लरेमोट नगर मे सैनिक पर्यवेक्षण हुआ था, सैनिक पोशाको एव बाजो का भारी प्रदर्शन हुआ, तथा फ्रॉसीसी सेना की महानता के सम्बन्ध मे बडे-बडे जोशीले भाषण हुए थे। युवक जोसेफ वेलेंट भी उसी जोश मे बह गया था और बिना अपने पिता से पूछे ही स्वयसेवक के रूप मे भर्ती होने के लिये अपना नाम लिखा दिया था। उसने लातूर को अपनी देशभक्ति की भावना का अपने पिता की अप्रसन्नता का तथा बाद के अपने पश्चात्ताप का पूरा विवरण दिया। उसकी माँ की इच्छा थी कि वह पादरी बने। जब वह तेरह वर्ष का था, तभी उनकी मृत्यु हो गयी, और तभी से उसने इरादा कर लिया था कि वह अपनी स्वर्गीया माँ की इच्छा पूरी करेगा

श्रौर श्रपना जीवन देवी माँ की सेवा में श्रर्पित कर देगा। परन्तु ठीक उस दिन, उस बाजे श्रौर सैनिक पोशाको के जोशपूर्ण वातावरण में वह सब कुछ भूल गया था श्रौर उसकी केवल यह इच्छा रह गयी थी कि वह फ्रास की सेवा करे।

श्रचानक युवक वेलेंट, यह कहते हुए कि घण्टा समाप्त होने के पहले ही मुझे एक पत्र लिखना है, श्रपना गाउन ऊपर उठाते हुए बडी तेज़ी से भाग गया था। लातूर उसे खड़ा देखता रह गया, तभी उसने श्रपने मन में पक्का इरादा कर लिया कि वह इस नये लडके को श्रपने सरक्षण मे लेगा। इस वेकर के पुत्र में कोई ऐसी वात थी, जिसने उनके इस मिलन को कौतूहल-युक्त श्रनुभव का रूप दे दिया था। लातूर इस मिलन को दुहराने के लिये उत्सुक हो गये। प्रथम मिलन में ही उन्होने इस चचल एव वदसूरत लडके को श्रपना मित्र चुन लिया। यह निर्णय तत्काल हो गया। लातूर स्वय तो वड़ा शान्त चित्त एव छान-वीन करने वाले मिजाज़ का था, जिसे प्रसन्न करना कठिन था, वह कुछ उदास प्रकृति का भी था।

शिक्षालय मे वह पढाई-लिखाई में श्रपने मित्र से कही श्रागे था, परन्तु वह यह वरावर श्रनुभव करता था कि जोसेफ धार्मिक उत्साह मे उसकी श्रपेक्षा वहुत श्रागे है। मिशनरी बन जाने के बाद जोसेफ ने उनकी श्रपेक्षा श्रग्रेज़ी भाषा, श्रौर बाद को स्पेनिश भी बोलना श्रधिक श्रासानी से सीख लिया था। श्रारम्भ में तो वह दोनो भाषाश्रो को वहुत गलत ही बोलता था, परन्तु वह झूठ-मूठ का दिखावा नही करता था कि उसे व्याकरण या श्रच्छे मुहावरो का भी ज्ञान है। चपरासियो से बातचीत करने में वह चपरासियो की ही तरह बोलने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

यद्यपि बिशप को फादर जोसेफ के साथ काम करते हुए पच्चीस वर्ष वीत चुके थे, वे उनके स्वभाव के परस्पर-विरोधी पहलुश्रो में सगति नही ला सके। उन्होने उन्हे महज़ स्वीकार कर लिया था, श्रौर जव जोसेफ काफी दिनो के लिये उनसे दूर हो जाते थे, तो वे श्रनुभव करते थे कि उन्हे ये

सभी पहलू बहुत प्रिय है। उनके विकार जैसा सच्चा धार्मिक मनुष्य उन्हे कोई नही मिला था, यद्यपि अनेक सासारिक वस्तुओ के प्रति उनके (विकार) मन मे स्पृहा भी बहुत थी। यद्यपि वे अच्छे भोजन एव अच्छी शराब के बडे प्रेमी थे, वे न केवल सभी शास्त्र विहित व्रतो का कडाई से पालन करते थे, अपितु वे अपनी लम्बी-लम्बी मिशनरी यात्राओ की कठिनाइयो एव कम भोजन आदि की कोई शिकायत भी नही करते थे। अच्छी शराबो के प्रति फादर जोसेफ की रुचि अन्य किसी व्यक्ति मे दोष समझी जा सकती थी। परन्तु चूँकि वे शरीर से कमजोर थे, ऐसा लगता था कि उन्हे हर समय किसी ऐसी स्फूर्तिदायक वस्तु की आवश्यकता रहती थी कि जो उनके उद्देश्यो एव कल्पना की अचानक उड़ानो को सहायता प्रदान कर सके। बिशप ने कितनी बार देखा था कि कोई अच्छा भोजन तथा अच्छी शराब का बोतल उनकी आँखो के सामने देखते-देखते मानसिक स्फूर्ति मे परिवर्तित हो गया। किसी अच्छे भोजन के पश्चात्, जो सामान्यतया लोगो को सुस्त बना देता है और लोग थोड़ा आराम करना चाहते है, फादर वेलेंट ताज़े होकर उठ खडे होते और दस या बारह घण्टे तक उस उत्साह एव लगन से काम करते जिसके परिणाम स्थायी होते।

बिशप बहुधा ही इस बात से सकुचित हो जाते थे कि उनके विकार अपने इलाके के लिये, गिरजा-कोष के लिये तथा दूरस्थ मिशनो के लिये बराबर ही लोगो से चन्दा आदि माँगते रहते है। परन्तु, अपने लिये वे इतनी भी चीज़ें नही रखते थे कि कायदे से रह सकें। ससार मे उनकी अपनी कही जाने वाली वस्तु खच्चर कर्टेटो के अतिरिक्त अन्य कुछ नही थी। यद्यपि रीयोम मे रहने वाली अपनी बहन से उन्हे अच्छे-अच्छे वस्त्र प्राप्त हुआ करते थे, उनके रोज़ के पहनने के कपडे बिलकुल साधारण एव गन्दे ही रहते थे। बिशप के पास तो कम से कम पुस्तको का एक विशाल एव अमूल्य सग्रह था, तथा घर मे आराम की अन्य कई वस्तुएँ भी थी। उनके पास अच्छे-अच्छे मृगछाले थे, कम्बल थे, जो उन्हे भेट रूप मे

यूज़ावियो तथा अन्य रेड इण्डियन मित्रो से प्राप्त हुई थी। मेक्सिकन औरते जो कढाई-बुनाई तथा गोटे लगाने के काम मे वडी निपुण थी, उन्हे पहनने के लिये, विछाने-ओढने के लिये तथा मेज के लिये कपडे भेंट दिया करती थी। उनके पास चाँदी की तश्तरियाँ थी, जो उन्हे ओलिवारिस तथा इलाके के अन्य धनी व्यक्तियो मे मिली थी। परन्तु फादर वेलेंट प्रारम्भिक काल के ईसाई सन्तो की भाँति थे, जिनके पास अपनी कहने को कोई भी वस्तु नही होता थी।

अपने युवाकाल में जोसेफ अकेले मे रहकर एकान्त साधना कर जीवन विताना चाहते थे, परन्तु सच तो यह था कि वे विना मानव समागम के प्रसन्न ही नही रह सकते थे। और वे लगभग सभी प्राणी को पसन्द करते थे। ओहियी में, जव ये दोनो व्यक्ति घोडा गाडियो में यात्राएँ किया करते थे, फादर लातूर ने यह देखा था कि जव कभी कोई नया यात्री उनकी गाड़ी में, जो पहले ही से ठमाठस भरी रहती थी, घुसे तो फादर जोसेफ उसे देखकर खुश हो जाते थे, जैसे उसका आना वडा अच्छा हुआ, जव कि वे स्वय वहुत चिढ जाते थे, यद्यपि वे अपनी इस भावना को प्रकट नही होने देते थे। ओहियो के जीवन की वुरी परिस्थितियो से जोसेफ कभी नही घवराते थे। वहाँ के घृणास्पद मकान और गिरजाघर, विना मरम्मत वाले फार्म एव वगीचे, नगरो एव देहातो की गन्दगी फादर लातूर को हमेशा ही खिन्न वनाये रहती थी, परन्तु जोसेफ तो जैसे इन वातो को देखते ही न थे। तो शायद यह कहा जा सकता है कि सौन्दर्य एवं शोभा के लिये उनके मन में कोई स्थान ही नही था। परन्तु सगीत के वे अत्यधिक प्रेमी थे। सैंडस्की मे वे कितनी शामे अपने गिरजा के गायको के जर्मन अगुआ के साथ नवयुवको को 'वाच' का संगीत सिखाने में वितायी थी।

फादर वेलेंट के व्यक्तित्व की प्रशसा शब्दो मे नही की जा सकती थी। यह मनुष्य अपने गुणो से समूचे योग से अधिक वडा था। उन्हे किसी भी प्रकार के मानव-समाज में छोड़ दिया जाय, उसमे वे चार चाँद लगा देते

थे। नवाजो का कोई वाड़ा हो, छोटी-छोटी गन्दी मेक्सिकन झोपडियो का समूह हो, रोम मे विशिष्ट पादरियो और कार्डिनलो की कोई सभा आदि हो, सभी जगह वात वही रहती थी।

पिछली वार जब विशप रोम मे थे, तो उन्होने विशिष्ट पादरी माजुक्ची से, जो उस समय सोलहवें ग्रेगोरी के सेक्रेटरी थे, जिस समय फादर वेलेट अपने ओहियो मिशन से प्रथम वार रोम गये थे, एक वडी मजेदार कहानी सुनी थी।

जोसेफ रोम में तीन महीने तक ठहरे थे। उनका दैनिक खर्च चालीस सेंट था और वे वहाँ की सभी वस्तुएँ घूम-घूम कर देख रहे थे। कई वार उन्होने माजुक्ची से कहा कि वे पोप से उनसे अकेले मिलने का प्रवन्ध कर दे। सेक्रेटरी साहव ओहियो के इस मिशनरी को वहुत पसन्द करते थे, उसमे एक प्रकार की उद्विग्नता, चचलता एव सादापन था, एक ऐसी ताजगी थी, जो रोम मे एकत्र होने वाले पादरियो मे वहुधा नही देखने को मिलती थी। अत उन्होने पोप से एक ऐसी भेट का प्रवन्ध किया, जिसमे केवल पोप, फादर वेलेट और माजुक्ची ही मौजूद थे।

मिशनरी जोसेफ पोप के एक निजी नौकर के साथ, जो प्रथा के विरुद्ध एक थैले के वजाय दो वडे-वडे काले थैले, जिनमे आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये वहुत सी वस्तुएँ थी, लिये हुए था, अन्दर आये। अपने स्वागत के पश्चात् फादर जोसेफ अपने मिशन तथा तत्सम्वन्धी अन्य मिशनो का इतना विस्तृत विवरण देने लगे कि पोप और उनके सेक्रेटरी समय देखना भूल गये और इस प्रकार की भेट मे जितना समय लगता था उससे तिगुना समय वीत गया। सोलहवे ग्रेगोरी ने जो वडे ही शानदार एव स्वेच्छाचारी पोप थे, और जो यूरोपीय राजनीति मे वरावर ही कमजोर पक्ष मे थे और स्वतन्त्र इटली के शत्रु थे, ससार के दूर-दूर भागो मे ईसाई धर्म-प्रचार के लिये जितना किया था, उतना उनके किसी पूर्वाधिकारी ने नही किया था। और आज उन्हे अपने मन का एक मिशनरी

मिल गया था। फादर वेलेट ने अपने लिये, अपने साथी पादरियो के लिये अपने मिशनो के लिये तथा अपने बिशप के लिये आशीर्वाद माँगा। उन्होने फेरी करने वालो के थैलो की शकल के अपने थैले खोले, जिनमे बहुत से क्रूश, जपने की मालाएँ, प्रार्थना की पुस्तकें, पदक, तथा विशेष-पूजा की पुस्तकें थी, जिनके सम्बन्ध मे वे विशेष आशीर्वाद चाहते थे। आश्चर्यचकित सेवक इतनी देर मे कई बार वहाँ आया था और फिर बाहर चला गया था, और अन्त मे मजुक्ची ने पोप को याद दिलायी कि उन्हे अन्य कई काम भी है। फादर वेलेट ने स्वय ही अपने दोनो थैले उठा लिये, क्योकि उस समय, वह सेवक वहाँ नही था, और इस प्रकार उन्हे लादे हुए, वे सिर आगे झुकाये, जाने के लिये पोप के पास से पीछे हटने लगे। तभी पोप अपनी कुर्सी पर से उठ खडे हुए और अपने हाथ उठा लिये, आशीर्वाद देने के रूप मे नही, अपितु अभिवादन के रूप मे, और विदा हो रहे मिशनरी को ऐसे पुकारा जैसे कोई साधारण व्यक्ति किसी अन्य साधारण व्यक्ति को पुकारता है, और कहा, "साहस रखो, अमेरिकन !"

बिशप लातूर को नवाजो वाला अपना बाड़ा विचार के लिये, पुरानी बातो को याद करने तथा भविष्य की योजना बनाने के लिये, बडा अनुकूल सिद्ध हुआ। उन्होने अपने भाई तथा फ्रास में अपने पुराने मित्रो को लम्बे-लम्बे पत्र लिखे। वह बाड़ा इस प्रकार एकान्त वातावरण मे था, जैसे महासागर में चलने वाले किसी जहाज का केबिन हो, जिसमे चारो ओर से तूफानी हवा की आवाज़ सुनाई पड रही हो। दरवाजे के अतिरिक्त उसमे अन्य कोई खिडकी आदि नही थी, और वह हमेशा ही खुला रहता था और बाहर का वायुमण्डल आँधी के कारण धुंधले पीले रङ्ग का हो रहा था। दिन भर दीवारो की दरारो से धूल अन्दर आती रहती थी और कच्ची फर्श पर उसकी परत जम जाती थी। वृक्षो की डालियो से बने हुए छत की सूखी पत्तियो पर वह ओले की तरह तडतडाती थी। यह मकान

इतना कमज़ोर आश्रय था कि उसमे बैठने पर यह लगता था, जैसे कोई धूलिमय मिट्टी एव बहती हुई हवा के बने ससार के बीच बैठा हुआ हो ।

४

यूज़ावियो

यूज़ावियो के यहाँ पहुँचने के तीसरे दिन बिशप ने विकार को बुलाने के लिये एक औपचारिक सा पत्र लिखा और फिर वे प्रति दिन की भाँति रेगिस्तान मे टहलने चले गये । वे सूर्यास्त तक बाहर ही रहे । उस समय हवा बन्द हो गयी और वायुमण्डल बिलकुल साफ हो गया । वापस आते समय जब वे नदी के किनारे, घर से अभी एक मील से भी दूर थे, उन्हे कही ढोल बजने की आवाज़ सुनायी पडी । उन्होने अनुमान लगाया कि यह आवाज़ यूज़ावियो के मकान से आ रही है, और उनका मित्र घर पर है ।

गाँव में पहुँचने पर फादर लातूर ने देखा कि यूज़ावियो अपने दरवाज़े के पास बैठा हुआ है और नवाजो भाषा मे कोई गाना गा रहा है तथा अपने लम्बे ढोल के एक ओर को हलके हाथ से ठोक रहा है । उसके सामने दो छोटे-छोटे रेड इण्डियन बालक, जिनकी अवस्था चार और पाँच वर्ष की रही होगी, सगीत की ताल के अनुसार उस सख्त भूमि पर नाच रहे है । दो औरतें, यूज़ावियो की पत्नी और बहन, झोपडी के अँधेरे मे बैठी उन्हे देख रही थीं ।

छोटे बच्चो को इस अजनबी के आने का आभास नही हुआ । वे अपने काम मे बिलकुल तल्लीन थे, उनके चेहरे बडे गम्भीर थे तथा उनकी भूरी आँखें अर्द्ध-निमीलित थी । बिशप उनके छोटे-छोटे हाथो की निश्चित एवं शिथिल गतियो को, उनके छोटे-छोटे पावो को, जिनमे मृगचर्म के जूते थे और जो रेशम वाले वृक्ष के पत्तो से बडे नही थे, तालो को, जो बिना

वताये ही अनियमित तथा अद्भुत राग वाले सगीत का अनुसरण कर रहे थे, खडे-खडे देखते रहे। स्वय यूज़ाबियो की भी मुद्रा धार्मिक रूप से गम्भीर थी। वह ढोल को घुटनो के बीच दबाये, हाथो को भुकाये तथा अपने सिर के काले बालो को रोकने के लिये माथे पर एक लाल फीता बाँधे हुए बैठा था। ढोल को वह एक छोटी सी लकड़ी से और कभी-कभी अपनी उँगलियों से ही धीरे-धीरे पीट रहा था। हाथ को इस प्रकार चलाने में उसकी साँवली बाहो मे पहना हुआ चाँदी का बाजूबन्द चमक रहा था। गाना समाप्त करके वह उठा और दोनो बच्चो का, जो उसके भतीजे थे और जिनके रेड इण्डियन नाम 'ईगिल फेदर' (चील का पख) तथा 'मेडिसिन माउटेन' (औषधि पर्वत) थे, उसने विशप से परिचय कराया और फिर उन्हे वहाँ से चले जाने का सकेत किया। वे घर के अन्दर भाग गये। यूज़ाबियो ने ढोल अपनी पत्नी को थमाया और अपने मेहमान के साथ वहाँ से चल दिया।

"यूज़ाबियो, "बिशप ने कहा, "मैं फादर वेलेंट के पास टकसान में एक पत्र भेजना चाहता हूँ। पत्र लेकर मैं जैसिटो को वहाँ भेजना चाहता हूँ, बशर्ते साता फे जाने के लिये तुम अपना कोई आदमी मेरे साथ कर दो।"

"मै स्वयं ही 'विला' तक आपके साथ घोडे पर चलूँगा।" यूज़ाबियो ने उत्तर दिया। नवाजो लोग अब भी राजधानी का पुराना ही नाम (विला) लेते थे।

अत दूसरे ही दिन प्रात काल जैसिटो को तो दक्षिण की ओर रवाना किया गया और फादर लातूर तथा यूज़ाबियो अपने खच्चरो पर सवार हो कर पूरब की ओर चले।

साता फे की वापसी यात्रा चार सौ मील से कुछ कम थी। मौसम बदलता रहता था, कभी भयानक आँधिया और कभी सूर्य का प्रखर प्रकाश। आकाश उतनी ही गतिमय एव परिवर्तनशील था, जितना नीचे का मरुस्थल एकरस एवं निस्तब्ध,—और अन्तरिक्ष का विस्तार यहाँ इतना

अधिक था कि उतना विस्तार न तो सागर मे रहने पर दिखायी पडता है और न ससार मे अन्य कही भी। मैदान तो आपके पाँव के तले था, परन्तु ऊपर दृष्टि दौड़ाने पर तीर की तरह चुभने वाली हवा एव उडते बादलो वाला दीप्तिमान् नीला अपार गगन-मण्डल दिखलायी पडता था। उसके नीचे पर्वत भी चीटियो के ढूह ही जैसे लगते थे। और जगह तो आकाश धरती की छत जैसा लगता है, परन्तु यहाँ धरती आकाश रूपी अट्टालिका की फर्श सी दीख पडती थी। आप किसी दूरस्थ स्थान मे पहुँच जाइये और किसी विशाल मैदान मे पहुँचने के लिये व्याकुल हो उठिये, तो वह मैदान भी यह आकाश ही था, आपके चारो ओर का वायुमण्डल भी यह आकाश ही था, यहाँ तक कि जिस दुनिया मे आप वस्तुत रहते है, वह दुनिया भी यह आकाश ही था, तात्पर्य यह, कि सब कुछ यहाँ आकाश ही था।

यूज़ाबियो के साथ यात्रा करना ऐसा था, जैसे उस मैदान ही ने मानव रूप धारण कर लिया है, और आप उसी के साथ यात्रा कर रहे हो। वह सयोग एव मौसम को वैसे ही स्वीकार कर रहा था, जैसे वहाँ, का वह प्रदेश, एक प्रकार का अव्यक्त आनन्द लेते हुए। वह बोलता कम था, खाता कम था, कही सो जाता था, मुद्रा सरल एव स्नेहपूर्ण बनाये रखता था और जैसिंटो की भाँति उसके व्यवहार शिष्ट थे। बिशप को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वह रास्ते में फूल तोडने बहुधा ही रुक जाया करता था। एक दिन प्रात काल वह खच्चरो के साथ, हाथ मे लाल फूलो का एक गुच्छा लिये हुए आया। ये फूल लम्बे तथा घण्टियो के आकार के थे और पत्ती-ही छोटे डंठलो से एक ओर लटके हुए थे तथा हवा के कारण काँपते रहते थे।

"रे [illegible] इयन लोग इसे इन्द्रधनुष फूल कहते है," उसने उन्हे हाथ मे ऊपर उठ[illegible]यो व और उन लाल नलियो को हिलाते हुए कहा। "इनके लिये अभी ज[illegible] है।"

जहाँ कही भी वे रात बिताते थे, चाहे वह कोई चट्टान हो, या किसी वृक्ष की साया हो या कोई मिट्टी का टीला, वहाँ से चलने के पहले नवाजो (यूज़ावियो) वहाँ से अस्थायी निवास के सभी चिह्न बिलकुल नष्ट कर देता था। वह जली हुई लकडी के टुकडे आदि, खाने की बची खुची चीजें जमीन में गाड़ देता था, यदि कुछ पत्थर के टुकडे आदि एकत्र किये रहता था, तो उन्हे बिखेर देता था, जमीन मे अगर कोई गड्ढा खोदे रहता था, तो उसे बन्द कर देता था। चूँकि जैसिंटो भी ठीक यही करता था, फादर लातूर ने अनुमान लगाया कि जिस प्रकार किसी श्वेत व्यक्ति का यह तरीका होता है कि जिस प्रदेश मे वह पहुँच जाय, उसमें वह अपना अधिकार दिखाने लगता है, उसमे परिवर्तन करता है और उसमे हेर-फेर कर देता है (जिससे कम-से-कम उसकी यात्रा का कोई यादगार तो रह जाय), उसी प्रकार रेड इण्डियन का यह तरीका होता है कि वह किसी प्रदेश मे, विना उसमे कोई परिवर्तन किये ही, गुजर जाता है, उसे पार कर जाता है और उसमें अपना कोई चिह्न नही छोडता जैसे मछली पानी में और चिड़िया हवा में कोई निशानी नहीं छोडती।

रेड इण्डियन तरीका यह था कि मैदान मे लुप्त हो जाय, न कि उसमे दृश्यमान रूप मे स्थित रहे। समतल पर्वत-खण्डो पर बसे हुए होपी गाँवो के मकान आदि इस प्रकार बनाये गये थे कि वे भी उसी पर्वत-खण्ड की ही भाँति लगते थे और दूर से वे अलग दिखायी ही नही पडते थे। नवाजो के वे बाडे जो मिट्टी तथा झाडियो वाले प्रदेश में थे, मिट्टी तथा इन वृक्षो की लकडियो आदि से बने भी थे। उस समय किसी भी बस्ती में कोई व्यक्ति अपने मकान में शीशे की खिडकियाँ नही लगाता था। उन्हे शीशे पर धूप का चमकना भद्दा और अप्राकृतिक, यहाँ तक कि खतरनाक भी समझा जाता था। इसके अतिरिक्त ये रेड इण्डियन लोग नवीनता एव परिवर्तन को नापसन्द करते थे। वे अपने पहाडो मे अपने पूर्वजो के पावो द्वारा बनाये गये मार्गों से ही आते-जाते थे, पर्वत-खण्ड पर बसे हुए

गाँवो एव बाजारो में जाने के लिये प्राकृतिक रूप से बनी पत्थर की सीढियो से ही ऊपर चढते थे, श्वेत वर्ग वालो द्वारा कुएं खोदे जाने पर भी उन्ही पुराने चश्मो से ही पानी भरते थे।

चाँदी पर खुदाई करने या कौडियो और माले की गुरियो में छेद करने मे रेड इण्डियन लोग अथाह धैर्य का प्रदर्शन करते थे, वे अपने कम्बलो, पेटियो तथा त्योहारो आदि पर पहने जाने वाले वस्त्रो आदि को तैयार करने मे अपना सारा हुनर लगा देते थे और बहुत परिश्रम करते थे। परन्तु सजावट की उनकी धारणा सीमित थी और वह मैदानो, पर्वतो आदि तक नही पहुँचती थी। उनमें यूरोपियनो की प्रकृति पर विजय प्राप्त करने, उसे अपने अनुकूल बनाने तथा पुनः सर्जन की कोई भी इच्छा नही थी। वे अपनी प्रतिभा का उपयोग अन्य दिशा मे करते थे, अर्थात् जिस स्थिति मे वे स्वय को पाते थे, उसी के अनुकूल स्वय को बना लेने मे उसका उपयोग करते थे। विशप ने अनुमान लगाया कि इसका कारण उनका ढीलापन उतना नही था जितना पुश्तैनी सतर्कता एवं सम्मान की उनकी भावना। ऐसा लगता था, जैसे वह विशाल प्रदेश सो रहा हो और वे उसे विना जगाये ही अपना जीवन बिता देना चाहते हो, या जैसे क्षिति, जल एवं वायु सब देवता हो और उन्हे रुष्ट करना और उत्तेजित करना ठीक नही। शिकार करने मे भी वे उसी विवेक एव विचारशीलता से काम लेते थे, रेड इण्डियन का शिकार निरीह जीवो की हत्या नही था वे नदियो या जगलो का विध्वस नही करते थे, और यदि वे सिंचाई करते थे, तो नदियो से उतना ही पानी लेते थे, जितने से उनका काम किसी प्रकार चल जाय। जमीन या उस पर उगने वाली किसी वस्तु का वे बड़ा लिहाज़ रखते थे; यदि वे उसकी उन्नति करने का प्रयास नही करते थे, तो कम-से-कम वे उसे दूषित भी नही करते थे।

फादर लातूर और यूजवियो जब अलबुकर्क के समीप पहुँचने को हुए तो उन्हे अब अन्य लोगों का साथ भी मिलने लगा, मैदान के आर-पार

अध्याय ८

पर्वत पर सोना

१

गिरजाघर

फादर वेलेंट को साता फे आये तीन सप्ताह हो गये थे, और अब तक उन्हे यह बिलकुल नही बतलाया गया था कि विशप ने उन्हे टकसान से क्यो वापस बुला लिया था। एक दिन प्रातःकाल फ्रक्टोसा ने बगीचे मे आकर उन्हे बताया कि आज दोपहर का भोजन कुछ जल्दी होगा, क्योकि तीसरे पहर विशप कही जाना चाहते है। आधे घण्टे बाद वे भोजन वाले कमरे मे पहुँच गये, जहाँ उनके वरिष्ट अधिकारी पहले से ही मौजूद थे।

ऐसा अवसर बहुत कम आता था कि विशप दोपहर का भोजन अकेले करें। उसी समय वे दूरस्थ किसी इलाके के पादरी से, किसी सैनिक अधिकारी से, किसी अमेरिकन व्यापारी से, ओल्ड मेक्सिको या कैलिफोर्निया राज्य से आये हुए किसी मिलने वाले से, बडी सुविधा से भेंट मुलाकात कर सकते थे। उनके पास कोई बैठका तो था नही, अत वे खाने के कमरे से ही बैठका का काम लेते थे। खाने का कमरा काफी लम्बा और ठण्डा था, उसमे खिडकियाँ, केवल पश्चिम की ही ओर थी, जो बगीचे मे खुलती थी। हरे रग की झिलमिलियो से रोशनी छन कर आती थी। प्रकाश की

किरणें श्वेत दीवारो पर नाचती रहती थी और अलमारी में लगे शीशे तथा उसके कुण्डे आदि पर पडकर चमकती रहती थी। जब ओलिवारिस की पत्नी न्यू ऑर्लियस मे रहने के लिये साता फे छोडकर जाने के पहले अपना सारा समान नीलाम कर रही थी, तो फादर लातूर ने उसकी यह अलमारी तथा खाना खाने वाली वह मेज, जिसके पास मित्र बहुधा ही एकत्र हुआ करते थे, खरीद ली थी। डोना इजाबेला ने उन्हें स्मृति-चिह्न के रूप मे चाँदी का बना अपना कॉफी का सेट तथा दीपदानी दे दी थी। उस सादे एव अँधेरे से कमरे में सजावट की केवल ये ही वस्तुएँ थी।

जब फादर जोसेफ ने कमरे मे प्रवेश किया, तो विशप वहाँ पहले ही से बैठे मिले। "फक्टोसा ने तुम्हे बताया है कि हम जल्दी खाना क्यो खा रहे है ? आज तीसरे पहर हमे घोडे पर चढकर एक जगह चलना है। मै तुम्हे एक चीज दिखाऊँगा।"

"बहुत अच्छा। तुमने शायद वह देखा भी हो कि मै थोडा बेचैन हो रहा हूँ। इसके पहले शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि दो सप्ताह तक मैंने घुडसवारी न की हो। अस्तबल मे कटेंटो को देखने जाता हूँ, तो वह मेरी ओर क्रोध से देखता है। बैठे-बैठे वह बहुत मोटा हो जायगा।"

बिशप यह सुनकर कुछ व्यग्य-मिश्रित हँसी हँस पडे। वे अपने जोसेफ को भलीभाँति जानते थे। "ठीक है," उन्होने लापरवाही से कहा, "टकसान से छ सौ मील की यात्रा करने के पश्चात् थोडा विश्राम उसे नुकसान नही करेगा। आज तीसरे पहर तुम उसे बाहर निकालो और मैं अपना ऐंजोलिका निकालूंगा।"

दोनो पादरी दोपहर के थोडी ही देर बाद साता फे से पश्चिम की ओर रवाना हो गये। बिशप ने अपना उद्देश्य नही प्रकट किया और न तो विकार ने कोई प्रश्न ही किया। शीघ्र ही उन्होने गाडी चलने वाली सडक छोड दी और एक पगडडी पकड ली, जो एक जगली ढालवाँ मैदान से होकर वनस्पति-हीन नीले सैडिया पर्वत की ओर सीधे दक्षिण दिशा मे जाती थी।

लगभग चार बजे वे रायो ग्राड घाटी की एक ऊँची पर्वत श्रेणी पर पहुँचे। इस स्थान पर रास्ता एकाएक नीचे उतरता था और सैडिया पर्वत की तलहटी मे टेढ़ा-मेढ़ा घूमता हुआ लगभग साठ मील दूर अलबुकर्क तक जाता था। इस पर्वत श्रेणी पर नुकीले आकार की छोटी-छोटी चट्टानी पहाडियो की, जिन पर यत्र-तत्र चन्दन के वृक्ष थे और वहाँ की चट्टानें अनोखे हरे रग की थी, ऐसा हरा रग, जो सागर के रग एवं जैतून के रग के बीच का था। वहाँ की ककरीली मिट्टी भी, जो वर्षा, धूप आदि के कारण चूर्ण हुई चट्टान ही थी, उसी रग की थी। फादर लातूर एक सबसे पृथक् पहाडी के पास पहुँचे, जो उस पर्वत-रेखा के ठीक पश्चिमी छोर पर ढाल के ठीक ऊपर निकली हुई थी, और ठीक उसी स्थान से रास्ता नीचे उतरता था। यह पहाडी काफी ऊँची और बिलकुल अकेली थी, और वह अस्ताचल की ओर जाने वाले सूर्य की किरणो तथा नीले सैडिया पर्वत के ठीक सामने पडती थी। उसके समीप पहुँचने पर फादर वेलेंट ने देखा कि पश्चिम की ओर कुछ दूर तक खोदायी की गयी है, जिससे चट्टानो की एक दीवार दिखलाई पड रही थी और ये चट्टाने आस-पास की पहाडियो की भाँति हरे रग की नही थी, अपितु वे पीले रग की थी, गाढे सुनहरे रग की मिट्टी की तरह और बहुत कुछ सूर्य की स्वर्णिम किरणो की रग की थी, जो उस समय उस पर पड रही थी। कुदालियाँ तथा लोहे के मोटे छड आदि तथा ताजे तोडे हुए पत्थर के टुकडे वहाँ पडे थे।

"यह कुछ विचित्र बात है न, कि इन हरी पहाडियो के बीच यहाँ एक पीले रग की भी पहाडी है ?" बिशप ने पत्थर का एक टुकडा उठाने के लिये झुकते हुए कहा। "मै इस पर्वत श्रेणी पर चारो ओर घूमा हूँ, परन्तु यहाँ इस रंग की यही एक पहाडी है।" वे पत्थर के उस टुकडे को हाथ मे लिये, देखते हुए खड़े रह गये। जिस प्रकार प्रत्येक पवित्र वस्तु को देखने, छूने आदि का उनका एक विशेष ढँग था, उसी प्रकार उन वस्तुओ को भी वे उसी ढग से देखते थे, जिन्हे वे सुन्दर समझते थे। एक

क्षण तक चुप रहने के पश्चात् उन्होंने उस कठोर दीवार की ओर, अपने ऊपर चकमते हुए उस सोने की ओर देखा। ब्लाचेट, यही पहाडी मेरा गिरजाघर है।"

फादर जोसेफ ने आँख मिचकाते हुए अपने विशप की ओर देखा, और फिर उस पहाड़ी की ओर देखा। "सचमुच ? पत्थर काफी सख्त है ? रग तो निश्चय ही बहुत अच्छा है, सेंट पीटर्स गिरजाघर के खभो की तरह बहुत कुछ।"

विशप अपने अँगूठे से पत्थर के टुकडे को सहलाते रहे। "उससे भी ज्यादा यह घर की तरह है—मेरा तात्पर्य क्लेरमोट की तरह है। जब मैं इस चट्टान को देखता हूँ, तो लगता है जैसे रहोन मेरे पीछे ही है।"

"आह, तुम्हारा मतलब अविग्नॉन के 'पैलेस ऑव पोप्स' से है ! तुम ठीक कहते हो, यह उससे बहुत कुछ मिलता-जुलता है। दिन के इस समय तो यह वैसा ही लगता है।"

बिशप अब भी पहाडी की ओर देखते हुए, पत्थर के एक टीले पर बैठ गये। "इसी पत्थर की तलाश मे मै हमेशा से ही था, और अचानक ही मैं इसे पा गया। मै इज़ुलेटा से वापस आ रहा था। वहा मै बुड्ढे पादरी जेसस को देखने गया था, जो उस समय मर रहा था। इस रास्ते से मै पहले कभी नही आया था, परन्तु जब मै सेटो डोमिंगो पहुँचा, तो मैने देखा कि सडक मूसलाधार वर्षा के कारण पानी में डूब गयी है और मै घूम पडा और इस रास्ते से घर पहुँचने की कोशिश करने लगा। मै पश्चिम की ओर से चढ कर इस स्थान पर दिन के तीसरे पहर पहुँचा, सामने यह पहाडी खडी दिखलायी पडी, जैसे यह आज हम लोगो को दिखलायी पड रही है, और फौरन ही मेरे मन मे विचार आया कि यही तो मेरा गिरजाघर है।"

"ओह, ऐसी घटनाएँ अकस्मात् ही नही घटती, जीन। परन्तु अभी

बहुत दिनो तक तो तुम गिरजाघर के निर्माण की वात ही नही सोच सकते ।"

"बहुत दिन नही लगेंगे, ऐसी मेरी आशा है । मरने के पहले मै इसे पूरा कर देना चाहता हूँ, यदि ईश्वर ने चाहा तो । मै भाग्य या अमेरिकनो की इच्छा पर कुछ नही छोडना चाहता । ओहियो राज्य के नगरो मे आजकल जैसी भद्दी इमारते लोग वना रहे है, वैसी इमारत वनवाने से तो अच्छा है, कि हमारा यही पुराना इँटो वाला गिरजा ही वना रहे । मै सादा गिरजाघर अवश्य चाहता हूँ, परन्तु साथ ही उसे अच्छा भी चाहता हूँ । मै लाल ईंटो की अंग्रेजी गाडीखाने की तरह भद्दी इमारत वनाने मे कभी हाथ नही लगाऊँगा । अपने 'मिदी रोमानेस्क' की डिजाइन ही इस देश के लिये उपयुक्त डिजाइन है ।"

फादर वेलेंट ने नाक सिकोड़ कर अपना चश्मा उतार लिया और उसे पोछने लगे । "अगर तुम कारीगरो और डिजाइनो की बात सोचने लगोगे, जीन, तव तो हो चुका ! यदि उन्हे अमेरिकन कारीगर न मिले, तो क्या करोगे ?"

"तुलोस मे मेरा एक पुराना मित्र है, जो वडा अच्छा कारीगर है । जब मै पिछली बार घर गया था, तो इस सम्बन्ध मे मैंने उससे वातें की थी । वह स्वय तो यहाँ नही आ सकता; वह लम्बी समुद्री यात्रा से डरता है तथा घुडसवारी का वह आदी नही है । परन्तु उसका एक बेटा है, जो अभी पढ ही रहा है और जो इस काम के लिये वडा उत्सुक है । सच तो यह है कि उसके बाप ने लिखा है कि उसके बेटे की यह बड़ी भारी इच्छा है कि नयी दुनिया में 'रमानेस्क' के ढग का प्रथम गिरजाघर वही बनाए । वह सही नमूनो का अध्ययन किये रहेगा, उसके विचार से मिदी के हमारे गिरजाघर फ्रास के सबसे सुन्दर गिरजाघर है । जब हम अपनी ओर से तैयार हो जायगे, तो यहाँ आ जायगा और अपने साथ दो फ्रासीसी पत्थर गढने वालो को भी लायेगा । निश्चय ही वे सेंट लूई के मजदूरो से मँहगे

नही पड़ेंगे। अब चूँकि मुझे मेरे मन का पत्थर मिल गया है, मुझे लगता है कि मेरे गिरजाघर का निर्माण आरम्भ हो चुका है। यह पहाडी साता फे से लगभग पन्द्रह ही मील तो है। चढाई अवश्य है, परन्तु एकाएक चढ़ाई नही है, धीरे-धीरे वह बढ़ती है, पत्थर का ढोना मेरी आशा से भी अधिक आसान होगा।"

"तुम तो बहुत आगे की योजना बनाते हो," फादर वेलेंट ने अपने मित्र की ओर अचम्भे से देखते हुए कहा। "खैर, हर बिशप को करना भी यही चाहिये। रही मेरी बात, सो मै तो सामने जो बात रहती है, उसी को देखता हूँ। लेकिन, मुझे यह ख्याल नही था कि तुम इतनी अच्छी इमारत बनाने के चक्कर मे हो, जबकि हम लोगो की सभी बातें इतनी साधारण हैं, यहाँ तक कि हम स्वय ही इतने गरीब हैं।

"परन्तु गिरजाघर तो हम लोगो के लिये नही बन रहा है, फादर जोसेफ। हम तो उसे भविष्य के लिये बनवा रहे हैं, जब तक हम ऐसा न कर सकें, अच्छा होगा कि हम एक पत्थर भी न जोडें। हमारे धार्मिक शिक्षालय से, जो फ्रास की एक बेजोड इमारत है, निकलने वाले किसी व्यक्ति के लिये यह कितने लज्जा की बात होगी कि वह इस महाद्वीप पर आकर एक भद्दा सा गिरजाघर बनवाये, जहाँ भद्दे गिरजाघरो की पहले ही से भरमार है।"

"तुम शायद ठीक ही कहते हो। मैने यह नही सोचा था। यह मुझे कभी सूझा ही नही कि हमे यहाँ ओहियो के ढग के गिरजाघर तो नही बनवाना चाहिये, चाहे अन्य किसी भी ढंग का बनवा लें। मुझे याद है कि तुम्हारे पूर्वजो ने ही क्लेरमोंट का गिरजाघर बनवाया था, वे तेरहवी शताब्दी में ला तूर के इमारत बनवाने मे प्रवीण दो बिशप थे। निस्सन्देह, समय सब कुछ पूरा करा देता है। मुझे यह ख्याल नही था कि तुम इन सब बातो को इतनी गम्भीरता से सोच रहे हो।"

फादर लातूर हँस पडे। "तो क्या गिरजाघर भी हँसी-खेल की वस्तु है।"

"नही, नही, कभी नही।" फादर वेलेंट कुछ अचकचा कर अपने कधे हिलाने लगे। वे स्वय यह नही समझ पा रहे थे कि वे इसमे क्यो पीछे पडे रहे।

जिस पहाडी के सामने वे खडे थे, उसकी जमीन से सटे भाग मे अब छाया पडने लगी थी, अतः अब उसका रग गाढी पीली मिट्टी के रग का हो रहा था, परन्तु उसका ऊपरी भाग अब भी पिघले हुए सोने के रग की तरह झलक रहा था—यह ठीक वैसा रग था, जैसा कि अस्त होते हुए सूर्य की किरणो का रग होता है। बिशप अन्त मे सतोष की गहरी साँस लेकर घूम पडे। "ठीक है," उन्होने धीरे से कहा, "यह पत्थर बिलकुल ठीक होगा। लेकिन चलो अब घर चलें। प्रत्येक बार यहाँ आने पर यह पत्थर मुझे अधिकाधिक पसन्द आता है। मुझे यह आशा नही थी कि ईश्वर मेरी इस व्यक्तिगत रुचि को, अथवा यो कहो कि मेरी इस अहकारपूर्ण अभिलाषा को, पूरा कर सकेगा। मैं सच कहता हूँ, ब्लाचेट, कि मुझे दान देने के लिये बहुत बडी धनराशि पाकर भी वह प्रसन्नता न होती, जितनी इस पीले पत्थर वाली पहाडी को पाकर हुई है। अनेक कारणो से गिरजाघर मेरे हृदय मे समा गया है। मेरा ख्याल है कि तुम मुझे बहुत दुनियादार नही समझते।"

चाँदनी मे रुपहले रग की चमकवाली झाडियो के बीच से वापस होते हुए, फादर वेलेंट अब भी सोच रहे थे कि वे अरिजोना राज्य से, जहाँ वे कितनी आत्माओ का कल्याण कर रहे थे, क्यो बुला लिये गये थे और यह भी सोच रहे थे कि एक गरीब मिशनरी बिशप किसी इमारत के सम्बन्ध मे इतनी चिन्ता क्यो करे। वे स्वय भी चाहते थे कि गिरजाघर का निर्माण प्रारम्भ हो जाय, परन्तु उसकी डिज़ाइन चाहे मिदी रोमानेस्क की हो या ओहियो जर्मन, इसका उनके मन में कोई महत्त्व नही जान पड़ता था।

२

लीवेनवर्थ से पत्र

जिस दिन बिशप और विकार पीली पहाडी पर गये थे, उसके दूसरे दिन सांता फे में साप्ताहिक डाक पहुँची। बिशप के कई पत्र आये और वे सुबह से दोपहर तक अपने लिखने-पढने वाले कमरे मे बन्द उन्ही को पढते रहे। दोपहर के भोजन के समय उन्होने फादर वेलेंट से कहा कि शाम को उन्हे (फादर वेलेट को) उनके (बिशप के) साथ बैठ कर लीवेनवर्थ के बिशप के यहाँ से आये हुए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्र पर विचार करना है।

कई पृष्ठ का यह पत्र कोलोरैडो राज्य मे, राकी पर्वत के एक अज्ञात भाग मे होने वाली अनेक घटनाओ के सम्बन्ध मे था। यद्यपि वह साता फे से कुछ सौ मील ही दूर था, उस क्षेत्र से सचार-साधन इतना कम था कि यूरोप से साता फे तक समाचार जितनी जल्दी पहुँच जाता था, उतनी जल्दी पर्वत के 'पाइक' नामक शिखर से नही। उस शिखर के नीचे जमीन के अन्दर खनिज सोने के भारी भण्डार का पिछले वर्ष पता चला था, परन्तु फादर वेलेट को उसके सम्बन्ध मे प्रथम ज्ञान फ्रास से आये हुए एक पत्र द्वारा ही हुआ था। इसकी खबर अटलाटिक तट पर पहुँचकर, वहाँ से यूरोप पहुँची और फिर वहाँ से वापस आकर जितने समय मे अमेरिका के इस दक्षिण-पश्चिम भाग मे पहुँच गयी थी, उतने समय मे शायद वह 'शेरी क्रीक' और साता फे के बीच कुछ सौ मील के बीहड पर्वतो एव घाटियो वाले प्रदेश से होकर पहुँच नही सकती थी। जब फादर वेलेट टकसान मे थे, तो उन्हे आवर्न से अपने भाई मेरिअस का एक पत्र मिला था, जिसे पढकर उन्हे इस बात से बडा दु:ख हुआ था कि उस पत्र मे कोलोरैडो राज्य के इस स्वर्ण-भण्डार के सम्बन्ध में तो अनेक बाते पूछी गयी थी, जिसके सम्बन्ध मे उन्होने कुछ नही सुना था, परन्तु इटली मे होने

वाले युद्ध के सम्बन्ध मे उनके भाई ने कुछ भी नही लिखा था जब कि वह अपेक्षाकृत अधिक समीप और बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण था।

पाइक शिखर के आस-पास की वह राकी पर्वत-श्रेणी इस समय महाद्वीप का एक शून्य स्थान था। व्योमिंग राज्य से ताओस को आने वाले लोमडी आदि रोयेंदार जानवरो को पकडने वाले भी इस कूबडनुमा पथरीली पर्वत श्रेणी पर नही जाते थे। अभी कुछ ही वर्ष पहले फ्रेमोंट ने कोलोरैडो के राकी पर्वत को पार करने का प्रयास किया था, और अन्त मे उसका दल भोजन आदि के कष्ट से घबरा कर, अधिकाश अपने खच्चरो को खा जाने के बाद ताओस मे वापस चला आया था। परन्तु बारह महीने के अन्दर ही सब कुछ बदल गया था। घूम-घूमकर खोजने वाले स्वर्ण-अन्वेषको ने चेरी नामक झील के आप-पास काफी सोना पाया था, और इन पर्वत श्रेणियो पर जो एक वर्ष पहले बिलकुल निर्जन थी, अब आदमियो की भीड थी। मिसूरी नदी से सटे हुए वृक्षहीन मैदान के पार पश्चिम की ओर मालगाडियाँ दौड रही थी।

लीवेनवर्थ के बिशप ने फादर लातूर को लिखा था कि वे स्वय ही अभी हाल मे कोलोरैडो की यात्रा से वापस हुए थे। उन्होने देखा था कि पाइक शिखर के चारो ओर ढाल पर बहुत से तम्बू तने थे, घाटियो एव दर्रों मे खनिको की भीड़ थी, हज़ारो आदमी तम्बुओ और झोपडियो मे रह रहे थे, डनेवर नगर मे अनेक सराएँ एव जुआ खेलने के अड्डे खुल गये थे, और इन घुमक्कडो एव खानाबदोशो के बीच बहुत से ईमानदार आदमी तथा सैकडो सज्जन कैथोलिक भी रहे है, परन्तु वहाँ पादरी एक भी नही है। वहाँ के सभी नौजवान कानून-विहीन समाज मे बिना किसी आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन के मारे-मारे फिर रहे है। बूढे लोग ठड एव पर्वतीय निमोनिया से मर रहे है, और उन्हे धार्मिक रीति से दफनाने वाला भी वहाँ कोई नही है।

कसास के बिशप ने लिखा था कि पहला काम यह करना था कि यह

नयी और घनी आवादी वाली वस्ती सद्य. फादर लातूर के अधिकार-क्षेत्र मे मिला ली जाय। उनके विशाल इलाके मे, जिसके क्षेत्रफल मे दक्षिण और पश्चिम मे हजारो वर्ग मील की वृद्धि पहले ही से हुई थी, अब उत्तर की ओर का भी कोलोरैडो राकी पर्वत का यह अनिश्चित परन्तु अचानक ख्याति-प्राप्त क्षेत्र शामिल कर लिया जाना चाहिये। लीवेनवर्थ के विशप ने उनसे प्रार्थना की थी कि वे वहाँ किसी पादरी को शीघ्रातिशीघ्र भेज दें जो न केवल धर्मिष्ठ हो, अपितु सभी प्रकार योग्य हो, अर्थात् साधन-सम्पन्न हो, बुद्धिमान् हो, तथा जो सभी प्रकार के व्यक्तियो से वडी चतुराई से निभा सके। आते समय पादरी अपना विस्तर, शिविर मे रहने के लिये आवश्यक सभी वस्तुएँ, दवाएँ, खाने-पीने की सामग्री तथा कडे जाडे के लिये कपडे लेता आवे। कैप डेनवर मे तम्बाकू (सिगरेट आदि) तथा ह्विस्की शराव के अतिरिक्त अन्य कोई चीज़ नही मिलती। वहाँ भोजन वाली औरतें नही है और न तो स्टोव आदि ही मिलते है। खनिक लोग कच्ची-पक्की रोटी खाकर तथा शराव पीकर रहते है। वे पहाड का पानी भी शुद्ध नही रखते थे, अतः वे ज्वर-पीडित होकर मर रहे थे। वहाँ की सारी रहन-सहन ही घृणास्पद थी।

रात को भोजन के पश्चात, फादर लातूर ने अपने लिखने-पढने के कमरे मे फादर वेलेंट को यह पत्र पढ कर सुनाया। पढने के वाद घने अक्षरो मे लिखे हुए पत्र को उन्होने रख दिया।

"तुम शिकायत कर रहे थे कि तुम्हारे पास काम नही है। फादर जोसेफ, लो, तुम्हारे लिये अब अवसर आ गया है।"

फादर जोसेफ ने, जो पत्र सुनते समय अधीर हो रहे थे, केवल यह कहा, "तो अव मुझे फिर से अंग्रेजी बोलना आरम्भ कर देना चाहिये। तुम कहो तो मै कल रवाना हो सकता हूँ।"

बिशप ने अपना सिर हिलाया। "इतनी जल्दी नही। इस यात्रा के वाद वहाँ तुम्हारा आतिथ्य-सत्कार करने के लिये मेक्सिकन लोग थोडे ही

हैं। तुम्हे अपने साथ आवश्यकता की सभी वस्तुएँ ले जानी होगी। तुम्हे अपने लिये एक गाडी तैयार करनी होगी, सोच-समझकर यह तय करना होगा कि तुम्हे क्या-क्या सामान ले जाना चाहिये। ट्रैक्विलिनो का भाई, सैबिनो, तुम्हारा कोचवान रहेगा। मेरा अनुमान है कि आज तक तुमने जितने काम उठाये है, उनमे कही यह सबसे अधिक कठिन न सिद्ध हो।

दोनो पादरी रात मे बहुत देर तक बातें करते रहे। अरिज़ोना राज्य के भी सम्बन्ध मे कुछ करना था, किसी ऐसे आदमी को ढूँढना ही था, जो फादर वेलेंट द्वारा आरम्भ किये गये वहाँ के काम को चालू रख सके। जितने प्रदेशो को फादर वेलेंट जानते थे, उनमे अरिज़ोना राज्य का वह मरुस्थल तथा वहाँ के पीले रग के लोग उन्हे सर्वाधिक प्रिय थे। परन्तु लोगो से नाता तोड़ना तो उनके जीवन का नियम बन गया था, लोगो से विदा हो जाना और फिर अज्ञात की ओर आगे बढ जाना, यही तो अब तक होता रहा है।

उस रात सोने के पहले फादर जोसेफ ने अपने बूटो पर पालिश लगायी और अपने पाँव पर पडे घट्ठो को एक पुराने उस्तरे से काट कर ठीक किया। ट्रूकास पर्वत के अचल मे बसे हुए चिमायो नामक मेक्सिकन गाँव के भले लोग अपने गिरजाघर मे रखी हुई सत सैंटियागो की घोडे पर सवार एक मूर्ति की विशेष रूप से पूजा करते थे, और वे लोग उनके लिये (सत के लिये) प्रत्येक दो-चार महीने बाद एक जोडी जूता तैयार कर देते थे और यह कहते थे कि वे रात को जब बाहर जाते है, तो चाहे घोडे पर भी सवार होकर जायँ, वे उन्ही का जूता पहनकर बाहर जाते हैं। फादर जोसेफ जब वहाँ रहते थे, तो वे उनसे कहा करते थे कि यदि भगवान् ने मिशनरियो के हाथो को पवित्र करने के साथ-साथ उनके पाँवो के लिये भी कोई विशेष वरदान दे दिया होता, तो क्या ही अच्छा हुआ होता।

वे चिमायो के सत सैंटियागो के सम्बन्ध मे एक घटना याद करके पुलकित हो उठे। कुछ वर्ष पहले फादर जोसेफ मे चिमायो के निवासी एक

हत्यारे को साता फे के बदीगृह मे देखने जाने के लिये कहा गया। वहाँ जाकर उन्होने देखा कि वन्दी एक बीस वर्षीय युवक है, जो देखने मे बडा सज्जन जान पडता था। उसका नाम रैमोन अर्माजिलो था। वह मुर्गा लड़ाने का बडा शौकीन था और उसका यही शौक उसे ले डूबा। उसके पास एक ऐसा मुर्ग़ा था, जो कभी किसी लडाई मे हारा ही नही था और आस-पास के सभी कस्वो के नामी मुर्गों को लडाई मे मार चुका था। अन्त में रैमोन अपने मुर्गे को साता फे के एक विख्यात मुर्गे से लडाने ले गया और उसके साथ चिमायो के आधे दर्जन लडके भी गये, जिन्होने रैमोन के मुर्गे पर अपना सब कुछ वाज़ी में लगा दिया। दोनो ओर से गहरी वाज़ी लगी थी और दर्शको से टिकट मे आया हुआ पैसा भी जीतने वाले ही को मिलता था। लड़ाई के प्रारम्भ में तो रैमोन का मुर्गा कुछ दवा रहा, परन्तु इसके वाद उसने वड़ी सफ़ाई से अपने प्रतिद्वन्द्वी के गले को फाड डाला, परन्तु हारे हुए मुर्गे का मालिक, इसके पहले कि उसे कोई रोक सके, अखाडे में कूद पडा और उसने विजयी मुर्गे का गला ऐंठ कर उसे मार डाला। इसके पहले कि वह उस मुर्गे की लाश को फेंके, रैमोन का छुरा उसकी पसलियो मे घुस गया। यह सब कुछ क्षण भर मे ही हो गया—यहाँ तक कि देखने वालो मे कुछ लोगो ने यह कहा कि मुर्गे तथा उस आदमी की मृत्यु साथ-साथ हुई। यह तो सभी कहते थे कि उस आदमी द्वारा कलाई घुमाने तथा छुरे के चमकने के वीच किसी को सास लेने का भी समय नही था। दुर्भाग्य से अमेरिकन जज वडा मूर्ख व्यक्ति था, जो मेक्सिकनो से घृणा करता था और मुर्गा लडाने की प्रथा को ही समाप्त करना चाहता था। उसने मरे हुए व्यक्ति के मित्रो के इस वयान को सही मान लिया कि रैमोन ने कई वार उसे मार डालने की धमकी दी थी।

जब फादर वेलेंट फांसी से पहले उस लडके से उसकी कोठरी में मिलने गये, तो उन्होने देखा कि वह मृगचर्म का एक वहुत छोटा-सा वूट वना रहा था, मानो वह किसी गुडिया के लिये हो, और रैमोन ने उन्हें

बताया कि वह उसके गाँव के गिरजाघर के संत सैंटियागो के लिये है। जब फाँसी के दिन उसके घर के लोग साता फे आयेंगे, तो वे इस बूट को चिमायो ले जायेंगे, और सम्भव है सत उसे आशीर्वाद दें।

मोमबत्ती के प्रकाश में अपने बूट में तेल लगाते हुए, फादर वेलेंट ने एक ठडी सास ली। उन्होने सोचा, जिन अपराधियो से उन्हे कोलोरैडो मे वास्ता पडेगा, वे शायद ही रैमोन की तरह हो।

३
देवी मेरी रक्षा करे

फादर वेलेंट की गाडी बनने मे एक महीना लग गया। यह एक विशेप प्रकार की गाड़ी बन रही थी, जिसमे सामान तो बहुत लद सके, लेकिन वह हलकी एवं बहुत चौडी न हो, ताकि वह बस्ती से बाहर सकरे पर्वतीय मार्गों से आसानी से गुजर सके। वहाँ सडकें तो थी नही, केवल सकरी पहाडी दर्रे थे, जो उन नदियो द्वारा कटे हुए थे, जो बसत मे तो पूरे वेग से बहती है, और अब शरद् में सूख गयी होगी। जब फादर की गाड़ी बन रही थी, उस समय वे अपनी चीजें तथा एक छोटे से गिरजाघर के सभी साज-सामान जुटाने मे व्यस्त थे। वे कैंप डेनवर पहुँचते ही किरमिच और पेड की टहनियो से एक छोटा गिरजाघर खडा कर देना चाहते थे। इसके अतिरिक्त उनके थैले थे, जिनमे पदक, क्रूश, पाठ की पुस्तकें, जप की मालाएँ, रगीन चित्र तथा धार्मिक पुस्तिकाएँ थी। अपने लिये तो उन्हे सिवा अपनी पाठ-पुस्तक के अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नही थी।

बिशप के आँगन मे उन्होने अपना सारा सामान एकत्र किया और उसमे से छाँटने, चुनने का काम कई बार किया, जिससे अपेक्षाकृत अधिक आवश्यक वस्तु की खातिर कोई अनावश्यक वस्तु को वह छोड सकें। फ्रक्टोसा तथा मैगडलेना उनकी सहायता के लिये कई बार बुलायी गयी, जब कोई सदूक अंतिम रूप से बद कर दिया जाता, तो फ्रक्टोसा उसे

उठवा कर लकडी के घर मे भेज देती। उसने देखा था कि विशप ने इन वक्सो एव वडी-वडी पेटियो को भोजन के कमरे में या वरामदे मे देखकर अपनी भौंहे सिकोड लिया था। विस्तर तथा अन्य सभी कपडे वछडे के सिझाये हुए कपडो के वने वडे-वडे थैलो मे जिन्हे सैविनो वहाँ के पुराने मेक्सिकन निवासियो से माँग कर लाया था, भर कर बाँधे गये। इनका अव फैशन नही रह गया था, परन्तु पहले जमाने मे ये ही थैले गरीवो के सदूक थे।

विशप लातूर भी इस समय क्लेरमोट से आये हुए एक नये पादरी को प्रशिक्षित करने मे व्यस्त थे। वे उन्हे लिवाकर दूरस्थ पादरी-इलाको मे जाते थे और कोशिश करते थे कि वे वहाँ के लोगो को समझ जाँय। बिशप की हैसियत से तो उन्हे फादर वेलेंट की शीघ्रता से रवाना हो जाने की उत्सुकता एव इस नये प्रकार के कठिन जीवन मे प्रवेश करने के उत्साह का अनुमोदन ही करना था। परन्तु मनुष्य की हैसियत से उन्हे यह सोचकर थोडा दु ख हो रहा था कि उनका साथी तनिक भी खेद प्रकट किये बिना ही उनसे अलग हो रहा है। ऐसा लगता था कि उन्हे मालूम है, (जैसे उन्हे यह दैवी प्रेरणा हुई हो) कि यह उनका अन्तिम विछोह होगा, उनकी जीवन-धाराएँ सदैव के लिये अलग हो रही है और पुन वे एक साथ काम न कर सकेंगे। मकान मे तैयारी का हगामा उनके लिये दु खप्रद था, अत वहाँ से दूर पादरी-इलाको मे रहने मे उन्हे प्रसन्नता थी।

एक दिन विशप अभी अलवुकर्क से वापस ही हुए थे कि फादर वेलेट वडे प्रसन्नचित्त, उनके साथ दोपहर का भोजन करने आये। वे अपनी नयी गाडी मे वैठकर कही घूमने गये थे, और अन्त मे यह घोषित किये थे कि वह सन्तोषजनक है। सैविनो तैयार था और उनका ख्याल था कि वे परसो रवाना हो सकेंगे। मेजपोश पर ही उन्होने अपने मार्ग का चित्र बना डाला और अपने सामानो की सूची को एक वार पुन देखा। विशप थके

हुए थे और उन्होंने कुछ भी नही खाया। परन्तु फादर जोसेफ ने खूब जमकर खाया, जैसा कि वे हमेशा ही किसी नयी योजना के उमंग में खाते थे।

फ्रक्टोसा कॉफी ले आयी और फादर वेलेट अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुकते हुए बडे उत्फुल्ल चेहरे से अपने मित्र की ओर घूम गये। "मै सोचता हूँ, जीन, कि जब तुमने मुझे टक्सान से यहाँ बुलाया था, तो तुम ईश्वर के हाथ मे अनजाने मे ही एक निमित्त बन गये। मुझे लगता था कि मै वहाँ अपने जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा हूँ, और तुमने मुझे जाहिरन बिना किसी कारण ही बुला लिया। न तुम्ही जानते थे कि तुमने मुझे क्यो बुलाया और न मै ही जानता था। हम दोनो ही अज्ञात प्रेरणा से काम कर रहे थे। परन्तु भगवान् तो जानता था कि 'चेरी क्रीक' मे क्या हो रहा है, और उसने हमें शतरज के मोहरो की तरह आगे बढ़ा दिया। जब पुकार हुई, तो उसका उत्तर देने मैं यहाँ पहुँच गया—वास्तव मे चमत्कार द्वारा ही मै यहाँ पहुँचा।"

फादर लातूर ने चाँदी का बना अपना कॉफी का प्याला रख दिया। "चमत्कार तो होते ही है, जोसेफ, परन्तु इसमे मुझे कोई चमत्कार नही दीखता। मैंने तुम्हे इसलिये बुलाया कि मुझे तुम्हारे साथ की आवश्यकता महसूस हुई। अपनी निजी इच्छा पूरी करने के लिये ही मैने अपने बिशप के अधिकार का प्रयोग किया। उसे तुम चाहो, तो स्वार्थपरता कह सकते हो, परन्तु वह निश्चय ही स्वाभाविक था। हम लोग एक ही देश के रहने वाले है और जीवन के प्रारम्भिक काल की स्मृतियो की डोर मे एक-दूसरे से बँधे हुए है। और यह भी स्वाभाविक है कि दो मित्र, जो जीवन भर साथ-साथ रहते चले आये हो, विलग हो जायँ और भिन्न-भिन्न मार्ग पर चले जायँ। मै तो नही समझता कि मेरे इस कार्य को समझने के लिए किसी चमत्कार की आवश्यकता है।"

फादर वेलेट स्वर्ण-खानो के पास शिविरो मे रहने वाले लोगों की

आत्माओ के उद्धार की तैयारी में बिलकुल डूबे हुए थे, उन्हे अन्य किसी बात की सुध ही नही थी। अब अचानक उनकी समझ में आया कि बिशप आजकल अपने कार्यकलाप से विमुख हो गये हैं, फादर लातूर को उन्हे वहाँ से जाने देना बडा कठिन मालूम हो रहा है तथा उनका एकाकीपन अब उन्हे खलने लगा है।

अपने कमरे मे चुपचाप जाते हुए उन्होने सोचा कि यह बिलकुल सच है कि उन दोनो व्यक्तियो के स्वभावो में भारी अन्तर है। वे जहाँ भी जाते थे, शीघ्र ही वहाँ पर उनके बहुत से मित्र बन जाते थे और वह स्थान अपना घर तथा मित्रगण अपने परिवार के लोगो जैसे बन जाते थे। परन्तु जीन, जो किसी भी समाज मे स्वय को खपा लेते थे और विनय की मूर्ति थे, जल्दी से नये सम्बन्ध नही जोड सकते थे। यह बात हमेशा से ही थी। लडकपन में भी वे वैसे ही थे, सभी के प्रति विनयशील, परन्तु बहुत कम लोगो से परिचित। मानव की साधारण बुद्धि को यही उचित जान पड़ता कि यदि फादर लातूर जैसा असाधारण गुणो वाला पादरी विश्व के किसी भाग मे रहता, जहाँ विद्वता, सुन्दर व्यक्तित्त्व तथा सूक्ष्म दृष्टि प्रभावकारी होती, तो अधिक अच्छा हुआ होता, और न्यू मेक्सिको के प्रथम बिशप के रूप में भगवान् की सेवा करने के लिये अपेक्षाकृत अधिक कठोर व्यक्ति ही उपयुक्त हुआ होता। यह तो निश्चित था कि बिशप लातूर के उत्तराधिकारी भिन्न प्रकार के व्यक्ति होगे। परन्तु फादर जोसेफ का यह अडिग विश्वास था कि ऐसा करने मे जगन्नियता का विशेष मन्तव्य छिपा हुआ था। कदाचित् भगवान् की यही इच्छा थी कि एक नये विशाल इलाके में नये युग के पदार्पण के समय वहाँ एक सुन्दर व्यक्तित्व का मनुष्य पहुँचे। और यह भी तो हो सकता है कि आने वाले वर्षों में वहाँ अपनी कोई बात—कोई आदर्श या कोई स्मृति या कोई लोक-गाथा—छोड जायँ।

दूसरे दिन मध्याह्न मे फादर वेलेंट की गाडी लदी तैयार आगन मे खडी थी और वे बिशप के डेस्क पर झुके हुए फ्रास भेजने के लिये कई पत्र

लिख रहे थे; एक छोटा-सा पत्र उन्होने मेरियस को लिखा, तथा एक बडा पत्र अपनी प्रिय बहन फिलोमीन को लिखा, जिसमे उन्होने उन्हे अपने अज्ञात मे कूदने की सूचना दी थी और उनसे विनती की थी कि वे सोने के लिये पागल हुए लोगो की दुनिया में उनकी सफलता के लिये भगवान् से प्रार्थना करें। वे जल्दी-जल्दी और झटके से लिख रहे थे, और उँगलियो के साथ-साथ उनके होठ भी हिल रहे थे। जब बिशप कमरे में आये, तो वे लिखे हुए पन्नो को हाथ मे लेकर खडे हो गये।

"मै तुम्हारे काम मे बाधा नही पहुँचाना चाहता, जोसेफ, लेकिन मै यह पूछने आया हूँ कि क्या तुम अपने साथ कटेंटो को भी कोलोरैडो ले जा रहे हो ?"

फादर जोसेफ की पलकें गिर गयी। "क्यो, इरादा तो यही था कि मै उसी पर चढकर जाऊँ। परन्तु यदि तुम्हे उसकी यहाँ आवश्यकता हो तो—"

"नही, नही। मुझे उसकी क्या आवश्यकता हो सकती है। परन्तु यदि तुम कटेंटो को ले ही जा रहे हो, तो मै यह कहूँगा कि तुम ऐंजेलिका को भी लेते जाओ। उनमे आपस में एक दूसरे के प्रति बहुत प्यार है, उन्हे अनिश्चित काल के लिये एक दूसरे से क्यो अलग किया जाय ? और उन्हे तो यह बात समझायी नही जा सकती। वे इतनी लम्बी अवधि से साथ ही रहे है।"

फादर वेलेंट ने कोई उत्तर नही दिया। वे अपने पत्र के पन्नो पर एकटक दृष्टि गड़ाये खडे रह गये। बिशप ने देखा कि बैगनी रग की लिखावट पर एक बूँद आँसू गिरा और वह फैल गया। वे शीघ्रता से घूम पडे और मेहराबदार दरवाज़े से बाहर निकल गये।

दूसरे दिन सूर्योदय होते ही फादर वेलेंट रवाना हो गये। सैबिनो उनकी गाडी हाँक रहा था, उसका सबसे बडा लड़का ऐंजेलिका पर सवार

था और स्वयं फादर जोसेफ कंटेंटो पर सवार थे। वे उत्तर-पूरव की ओर जाने वाली पुरानी सडक पर नुकीली लाल पहाडियो के बीच से होकर, जिन पर यत्र-तत्र सदावहार की झाडियाँ थी, जा रहे थे, और विशप ने उनका साथ उस मोड तक दिया, जहाँ सडक एक ऐसी पहाडी के शिखर पर से घूम कर दूसरी ओर चली जाती थी जहाँ से विदा होने वाले यात्री को साता फे की अन्तिम झलक मिलती थी। वहाँ पहुँच कर फादर जोसेफ ने घोडा रोक दिया और उस कस्बे की ओर घूम कर देखा, जो प्रभात की स्वर्णिम किरणो मे सो रहा था, पीछे पर्वत खडा था और पास की दो पहाडियाँ दो बाहुपाशो जैसी दीख रही थी।

"देवी मेरी रक्षा करें!" वे बुदबुदाने लगे और इन सुपरिचित वस्तुओ से मुँह फेर कर आगे चल पड़े।

विशप अपने एकाकीपन मे घर वापस आये। उनकी अवस्था इस समय सैतालीस वर्ष की थी, और नयी दुनिया में वे बीस वर्ष से मिशनरी का काम कर रहे थे—जिसमें से बाद के दस वर्ष न्यू मेक्सिको में बीते थे। यदि वे अपने देश में किसी इलाके के पादरी रहे होते, तो उनके भतीजे उनसे लेटिन भाषा सीखने या जेब-खर्च के लिये कुछ पैसे माँगने उनके पास आते, भतीजियाँ उनके बगीचे मे दौड़ती रहती और अपना सिलाई का काम नही करती तथा उनके घर-गृहस्थी पर भी नज़र रखती। घर वापस होते समय रास्ते में वे ऐसी ही बातें सोचते रहे, जैसा कि पचास के समीप पहुँचने वाला कोई भी अविवाहित व्यक्ति सोचता।

परन्तु जब उन्होंने अपने लिखने-पढने के कमरे मे प्रवेश किया, तो उन्हे लगा कि वे पुन. वास्तविकता में वापस आ गये है, उन्हे एक ऐसी शक्ति की उपस्थिति का आभास सा हुआ, जो उनकी प्रतीक्षा कर रही हो। मेहराबदार दरवाज़े पर लगे परदे को हटा कर कमरे के अन्दर प्रवेश करते ही एकाकीपन की उनकी भावना समाप्त हो गयी और कुछ खोने की भावना के स्थान पर पुनर्लाभ की भावना आ गयी। वे अपनी डेस्क के

पास गहरे विचार में डूबे हुए बैठ गये। प्रेम के इस एकाकीपन मे ही किसी पादरी का जीवन उसके प्रभु के जीवन की तरह हो सकता है। यह एकाकीपन क्षयकारी नही था और न तो आत्म-निषेध का ही एकाकीपन था, अपितु निरन्तर विकास करने वाला एकाकीपन। यह आवश्यक नही कि पादरी का जीवन सासारिक अर्थ मे शुष्क एव सौन्दर्यविहीन हो, बशर्ते वह देवी की कृपा से प्लावित हो रहा हो, वह देवी जो सम्पूर्ण सौन्दर्य की निधि है, कन्या रूप में देवी, माता रूप मे देवी, सर्व-साधारण की अबोध बालिका तथा स्वर्ग की साम्राज्ञी—उस सिहासन की सर्वोच्च अधिष्ठात्री। सरलता मे बच्चो की कहानी भी उसकी समानता नही कर सकती और पाडित्य की गहराई मे विद्वान् से विद्वान् धर्मशास्त्रज्ञ भी उसके समीप नही पहुँच सकते।

यहाँ साता फे मे उनके अपने गिरजाघर मे बालिका देवी की एक ऐसी ही मूर्ति थी, लकडी की बनी एक छोटी सी मूर्ति, जो बहुत पुरानी थी तथा वहाँ के लोगो को बहुत प्रिय थी। दे वर्गाज़ ने दो सौ वर्ष पहले जब स्पेन की ओर से इस नगर पर अधिकार किया था, तो उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि हर वर्ष वह उसके (देवी के) सम्मान मे एक जुलूस निकालेगा, और अब भी वह साता फे मे ईसाइयो का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना समझी जाती थी। देवी की लकडी की बनी यह मूर्ति लगभग तीन् फुट ऊँची थी, बड़ी ही दिव्य तथा स्पेनिश चेहरा बडा ही सुन्दर परन्तु गम्भीर बना हुआ था। उनके साज-शृगार के सामान से एक अलमारी ही भरी हुई थी। उसमे अनेक प्रकार के वस्त्र, गोटे तथा सोने-चाँदी के मुकुट आदि भरे हुए थे। औरतो को उनके लिये कपडे बनाने मे आनन्द आता था और आभूषण बनाने वाले उनके लिये जज़ीरें, पिन आदि बडे चाव से बनाते थे। उनके वस्त्र, आभूषण आदि रखने वालो को जब फादर लातूर ने यह बतलाया कि इगलैण्ड की महारानी या फ्रास की सम्राज्ञी के पास भी शायद इतने कपडे, पोशाक आदि न हो, तो वे बडे

खुश हुए थे। वे उनकी गुडिया थीं, उनकी सम्राज्ञी थी, जिनसे लाड-प्यार भी किया जा सके तथा जिनकी पूजा भी की जा सके, जैसे कि देवी मेरी के पुत्र (महात्मा ईसा) उनके (अपनी माँ के) लिये रहे होंगे।

फादर लातूर ने सोचा कि उनके प्रति इस सरल ढग से भक्ति एव श्रद्धा का प्रदर्शन करने वाले ये गरीब मेक्सिकन ही पहले लोग नहीं थे। रैफेल और टिटियन ने भी अपने समय मे उनके लिये कपडे आदि बनवाये थे, तथा महान् सगीतज्ञो ने उनके पूजा-गान के लिये रागो एवं लयो की रचना की थी और महान् कारीगरो ने उनके लिये गिरजाघरो का निर्माण किया था। ससार में उनके अवतरण के बहुत पहले ही, बाबा आदम और हौवा के पतन तथा देवी द्वारा मानव के पुनरुद्धार के बीच की लम्बी अधकारपूर्ण अवधि में मूर्ति पूजा मे विश्वास करने वाले शिल्पी किसी ऐसी देवी की मूर्ति बनाने का अनवरत प्रयत्न कर रहे थे, जो स्त्री के रूप मे अवतार ले।

विशप लातूर की आशका सही थी—फादर वेलेंट न्यू मेक्सिको मे उनके काम मे हाथ बँटाने पुन वापस नही आये। वहाँ वे आते अवश्य थे, परन्तु व्यस्त जीवन से फुरसत पाने पर पुराने मित्रो आदि से मिलने। परन्तु उनके लक्ष्य की पूर्ति शीत एव दुर्गम कोलोरैडो राकी पर्वत के अचल मे हो रही थी इस पर्वत को उन्होने इतना कभी नही पसन्द किया, जितना दक्षिण के उन नीले पर्वतो को। वे बीमारियो एव दुर्घटनाओ के पश्चात्, जो लगातार ही घटती रहती थी, स्वास्थ्य-लाभ के लिये साता फे आया करते थे, उस समय पोप के दूत के साथ भी साता फे आये, जब विशप लातूर आर्चबिशप बनाये गये; परन्तु उनका कार्यपूर्ण जीवन उस मुक्त पर्वत पर तथा कष्टपूर्ण खनिक शिविरो मे, पथभ्रष्ट असहाय प्राणियो की देख-भाल करने मे बीतता था।

क्रीड मे, डुरैंगो में, सिलवर सिटी मे, सेन्ट्रल सिटी में, उटा राज्य की

विभाजन रेखा के उस पार भी, अर्थात् उस सारे वीहड पर्वतीय प्रदेश में, उनकी वह विचित्र गाडी सुपरिचित हो गयी थी ।

वह एक ढँकी हुई गाड़ी थी, जिसका ऊपरी भाग पहियो के धुरे पर स्प्रिग के आधार पर जडा हुआ था । वह लम्वी इतनी थी कि रात को वे उसमे लेट कर सो सकते थे—फादर जोसेफ कद मे वहुत छोटे थे । गाडी के पीछे सामान रखने का सन्दूकनुमा स्थान वना हुआ था, जिससे वे खुले मे किसी चीड वृक्ष के नीचे सार्वजनिक पूजा करने के समय वेदी का भी काम ले लेते थे । वे कहा करते थे कि पर्वतीय नदियो ने ही यहाँ प्रथम बार सड़को का निर्माण किया था और उन्होने अपने लिये जहाँ रास्ता ढूँढ लिया था, वही वे भी अपने लिये रास्ता ढूँढ सकते थे । वे एक नही, अनेक कोचवानो को थका मारते थे, और उनकी गाडी की इतनी वार तथा इतनी अधिक मरम्मत हुई कि उसका परित्याग करने के वहुत पहले ही, उसका पहले वाला कोई भी पुर्ज़ा नही रह गया था ।

गाडी का साज़ और पट्टे टूटे हुए है, पहियाँ ख़राब हो रही है तथा धुरा घिस गया है, इन बातो को वे बिलकुल साधारण और महत्त्वहीन समझते थे । दो बार पूरी गाडी ही पहाड़ी सडक पर से फिसल कर नीचे गड्ढे मे चली गयी और फ़ादर वेलेंट उस समय उसमे बैठे थे । पहली दुर्घटना मे तो वे बच गये और उन्हे साधारण मोच ही सी आयी और उन्होने बिशप लातूर को लिखा कि आर्चेजेल रैफेल की ही कृपा से वे बच गये, जिनकी उस दिन प्रातःकाल उन्होने असाधारण भक्ति से पूजा की थी । दूसरी बार वे सेंट्रल सिटी के समीप एक गहरी खाई मे लुढक कर चले गये थे, उनकी जाँघ की हड्डी टूट गयी थी । धीरे-धीरे वह जुड तो गयी थी, परन्तु जीवन भर के लिये वे लँगडे हो गये और फिर घोडे की सवारी कभी नही कर सके ।

परन्तु इस दुर्घटना के पहले वे एक बार काफी दिनो के लिये, अपने मित्रो आदि से मिलने साता फे एव अलवुकर्क आये थे और अपने पुराने

सम्बन्धो को ताज़ा कर रहे थे। यह यात्रा उनके जीवन मे उतनी ही सुखद थी जितनी रेड इण्डियनो की ग्रीष्म ऋतु। डेनवर मे रवाना होते समय उन्होने कहा था कि मै मेक्सिकनो के पास पैसा मांगने जा रहा हूँ। डेनवर के गिरजाघर की छत तो तैयार थी, परन्तु खिडकियाँ महीनो से लकडी के तख्तो से वन्द कर दी गयी थी, क्योकि उनके लिये शीशा खरीदने वाला कोई नही था। डेनवर मे रहने वाले लोगो में ऐसे भी लोग थे, जिनके पास खानें तथा लकडी चीरने की मिलें थी और उनके व्यवसाय काफी उन्नतिशील थे, परन्तु उन्हे अपने इन व्यवसायो को आगे वढाने के लिये पैसो की आवश्यकता थी। परन्तु मेक्सिकनो से, जिनके पास कच्चे मकान तथा एक गधे के अतिरिक्त अन्य कुछ नही था, उन्हे हमेशा पैसा मिल जाया करता था। उनके पास जो कुछ भी रहता था, उसे देने के लिये वे हमेशा तैयार रहते थे।

वे अपनी इस यात्रा को नि सकोच भिक्षा-अभियान कहते थे और वे वहाँ से जो कुछ भी एकत्र कर सकते थे, उसे ले आने अपनी गाडी पर रवाना हो गये। ताओस तक पहुँचते-पहुँचते उनके आयरिश ड्राइवर ने विद्रोह कर दिया। उसने कहा कि इन सडको पर अव मै एक मील भी आगे नही जाऊँगा। वह अपने इस इलाके को भली-भाँति जानता था, परन्तु यहाँ उसने अपनी तथा पादरी साहव की जिन्दगी जोखिम मे डालने से इनकार कर दिया। उस समय ताओस से साता फे तक कोई सडक नही थी। लगभग एक पखवारे के पश्चात् उन्हे एक ऐसा व्यक्ति मिला, जो उन्हे उस पर्वतीय प्रदेश से पार करा सके। एक वुड्ढा सा ड्राइवर जिसे मालगाडियो पर चलने का अनुभव था, चलने को तैयार हुआ, और कुल्हाडी, कुदाली तथा फावडे आदि की सहायता से वह फादर वेलेंट की गाडी सकुशल साता फे तक ले गया और विशप के आगन मे पहुँचा दिया।

एक वार अपने लोगो के वीच पहुँचकर, (वे उन्हें अव भी अपना ही

कहते थे), फ़ादर जोसेफ़ ने अपना अभियान आरम्भ कर दिया और गरीब मेक्सिकन अपनी कमीज़ो और बूटो मे से डालर निकाल कर (इन्ही स्थानो पर वे अपने पैसे रखते थे) डेनवर के गिरजाघर की खिडकियो के लिये देने लगे। उनकी माँग खिडकियो के लिये ही पैसे पर नही समाप्त हो गयी—वह तो उससे शुरू हुई। उन्होने साता फे और अलबुकर्क की हमदर्द औरतो से डेनवर के अपने जीवन की सभी मूर्खतापूर्ण एव अनावश्यक कठिनाइयो के सम्वन्ध मे वतलाया—ऐसी कठिनाइयाँ जो अनुचित एव अशोभन भी थी। 'वाइल्ड वेस्ट' (अमेरिका के पश्चिमी बीहड़ वन-प्रदेश का नाम) के लोगो के जीवन का दृष्टिकोण ही सभी अच्छी वस्तुओ से विरक्त होने का था। फादर जोसेफ ने उनसे कहा कि अच्छे मेक्सिकन विस्तरो पर एक वार पुन सोने का अवसर पाकर उन्हे कितनी प्रसन्नता हुई है। डेनवर मे वे ऐसे गद्दो पर सोते थे, जिनमे पुआल आदि भरा होता था, उनके आये हुए एक फ्रासीसी पादरी ने फटे गद्दे के एक छेद से पुआल का एक लम्वा टुकडा, जो वाहर निकला हुआ था, खीच लिया था और कहा था कि यह तो किसी अमेरिकन चिड़िया का पर है। उनके खाने की मेज पायो पर लकडी का तख्ता जड़ कर वनायी गयी थी, जिसके ऊपर मोमजामा लगा हुआ था। उनके पास विछाने आदि के लिये कोई कपड़ा नही था, न तो चद्दरे थी, और न मेजपोश और मुँह पोछने का काम वे अपनी पुरानी कमीज़ो से लेते थे। मेक्सिकन औरतें ये वातें आगे सुनना भी नही चाहती थी। फादर वेलेंट ने वतलाया कि कोलोरैडो मे कोई वगीचा तो लगाता ही नही, कोई भी आदमी सोने के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु के लिये जमीन खोदना ही नही चाहता। न तो वहाँ मक्खन मिलता था, न दूध, न अडे और न फल। वे सडे हुए आटे की रोटी तथा सुअर का सुखाया हुआ माँस ही खाकर रहते थे।

यहाँ आने के कुछ सप्ताहो के अन्दर ही, फ़ादर वेलेंट के लिये चिड़ियो के परो से भरे छ. गद्दे विशप के घर पहुँचा दिये गये, दर्ज़नो चद्दरे, कढे

हुए तकिया के गिलाफ, मेजपोश तथा छोटे अगोछे पहुँचे, तार में पिरोयी हुई लाल मिर्चें, बक्सो मे भरे हुए बीन के दाने तथा सूखे फल भी पहुँचे। छोटे चिमायो गाँव ने अपने यहाँ के सर्वश्रेष्ठ कम्बलो का एक बण्डल ही भेज दिया।

फादर जोसेफ ने इन वस्तुओ को लकड़ी वाले घर में रखवाया, क्योकि वे भली-भाँति जानते थे कि विशप को इस बात से कष्ट होता था कि वे (फादर वेलेंट) हर समय भेट आदि स्वीकार करने के लिये तत्पर रहते है। परन्तु एक दिन सुबह ही टहलते-टहलते फ़ादर लातूर लकडी के घर मे पहुँच गये और उन्होने स्वय ही सब चीज़े देख ली।

"फादर जोसेफ", उन्होने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा, "तुम इन सब वस्तुओ को डेनवर तक ले तो जा नही सकते, क्योकि इनको ढोने के लिये एक बैलगाड़ी की आवश्यकता है।"

"ठीक तो है", फादर जोसेफ ने उत्तर दिया, "भगवान मेरे लिये एक बैलगाड़ी भी भेज देगा।"

और वास्तव में उसने भेज दिया। साथ में एक ड्राइवर भी आया, जो उस गाडी को प्यूब्लो नामक स्थान तक ले जाने को तैयार था।

जिस दिन फ़ादर वेलेंट डेनवर के लिये रवाना होने वाले थे, उस दिन सुबह उनकी गाड़ी तिरपाल से ढकी, तैयार खडी थी, बैल जुते हुए थे और फादर वेलेंट जो सूर्योदय से ही हर काम में जल्दी लगा रहे थे, अचानक चिंतित हो उठे। वे विशप के लिखने-पढने के कमरे मे गये और बैठकर उनसे बिलकुल महत्त्वहीन विषयो पर बातें करने लगे और इस प्रकार जानबूझ कर देरी करने लगे, जैसे अभी कुछ करना शेष हो।

"हम लोग अब बूढ़े हो रहे है, जीन", उन्होने अचानक ही, कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद कहा।

विशप मुस्करा पडे। "हाँ, अब हम जवान नही रह गये है। आज जैसी ही कोई विदाई शीघ्र ही अंतिम विदाई हो जायगी।"

फादर वेलेंट ने सिर हिलाया। "ईश्वर जब चाहे तब मुझे बुला सकता है। मै तो तैयार हूँ।" वे उठ खडे हुए और कमरे मे टहलते हुए, अपने मित्र की ओर बिना देखे ही उनसे कुछ कहने लगे। "परन्तु जीवन हमारा कोई बहुत बुरा नही रहा, जीन ! हमने वे काम कर लिये है, जिनके करने की योजना हमने बहुत पहले, जब धर्म-शिक्षालय मे विद्यार्थी थे, बनायी थी, कम से कम उनमे से कुछ काम तो कर ही लिये हैं। बचपन के स्वप्नो का पूरा हो जाना ही मनुष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ बात है। कोई भी सासारिक सफलता उसका स्थान नही ले सकती।"

"ब्लाचेट", बिशप ने उठते हुए कहा, "तुम मुझसे अच्छे आदमी हो। तुमने कितनी आत्माओ का उद्धार किया है और वह भी बिना किसी गर्व के या बिना किसी लज्जा के—और मै तो हमेशा ही शुष्क रहा हूँ—कठोर नियमवादी रहा हूँ, जैसा कि तुम कहा करते थे। यदि मृत्यु के पश्चात् पुरस्कार मे हमे तारे मिलें, तो तुम्हें स्थिर तारक-पुज मिलेगा। मुझे अपना आशीर्वाद दो।"

वे घुटने के बल झुक गये, और फादर वेलेट उन्हे आशीर्वाद देने के बाद स्वय झुक गये और उन्हे भी आशीर्वाद मिला। उन्होने एक दूसरे को छाती से लगाया—विगत दिनो की याद मे, भविष्य के उपलक्ष्य में।

अध्याय ६

आर्चबिशप की मृत्यु

१

जब उस धार्मिक महिला, मदर सुपीरियर फिलोमीन की, लम्बी आयु मे, अपने जन्म स्थान रियोम मे मृत्यु हुई, तो उनके कागजात मे आर्चबिशप लातूर के अनेक पत्र भी मिले। उनमे एक पत्र सन् १८८८ ई० के दिसम्बर मास में, उनकी मृत्यु के कुछ ही महीने पहले लिखा गया था। "जब से आपके भाई ने अपनी इहलीला समाप्त की," उन्होने लिखा था, "मै स्वय को पहले की अपेक्षा उनके अधिक निकट पाता हूँ। कर्तव्य ने अनेक वर्षो तक हमे एक दूसरे से अलग रखा, परन्तु मृत्यु ने हमें साथ कर दिया है। वह समय अब दूर नही है, जब मै भी उनके पास पहुँच जाऊँगा। इस बीच, मै मनन-ध्यान के इस समय का, जो कार्य-रत जीवन का श्रेष्ठतम अन्तिम अध्याय होता है, पूर्ण आनन्द ले रहा हूँ।"

आर्चबिशप ने मनन-ध्यान का यह समय अपने गाँव वाले मकान पर बिताया जो साता फे से लगभग चार मील दूर उत्तर की ओर था। अपने पद के कार्यों से अवकाश ग्रहण करने के बहुत पहले ही फादर लातूर ने टेसूक गाँव के समीप लाल टीलो वाले पर्वतीय प्रदेश मे थोडी सी जमीन खरीद ली थी, और एक बाग लगा दिया था, ताकि कार्य-काल से मुक्त होने

के समय उसके वृक्षो मे फल लगने आरम्भ हो गये रहे। उन्होने सदाबहार की झाड़ियो वाली इन लाल पहाडियो का इलाका अपने मित्रो की सलाह के विरुद्ध चुना था, क्योंकि उनका विश्वास था कि फल वाले वृक्ष उगाने के लिये यह स्थान सर्वोत्तम सिद्ध होगा।

एक बार घोडे पर टेसूक मिशन की यात्रा करते समय वे किसी नदी के किनारे-किनारे इस स्थान पर पहुँच गये थे, जहाँ उन्होने एक छोटा सा मेक्सिकन मकान तथा एक बगीचा देखा। बगीचे मे लुकाट का एक इतना बडा वृक्ष था जितना बडा उन्होने पहले कभी नही देखा था। उसके दो तने थे, और दोनो ही मनुष्य के शरीर से मोटे थे, यद्यपि स्पष्टतया वह बहुत प्राचीन था, फलो से वह लदा था। लुकाट काफी बडे थे, देखने मे बडे सुन्दर रग के और खाने मे बहुत ही सुस्वाद। चूँकि यह वृक्ष पर्वतीय प्रदेश में उगा था, बिशप इस परिणाम पर पहुँचे कि यहाँ की जलवायु फलो के लिये बहुत ही उपयुक्त होगी। उन्होने अनुमान लगाया कि सूर्य की गरमी चट्टानी पहाडी से परावर्तित होकर वृक्ष पर पडती है और वही फलो को सम तापमान पर रखती है, गरमी दो ओर से पहुँचती है, जैसे फ्रास मे शफ्तालू के फल ऐसी ही गरमी मे पकते है।

वहाँ रहने वाले बूढे मेक्सिकन ने बतलाया कि वृक्ष दो सौ वर्ष पुराना है, उसके बाबा के बचपन मे भी वह ऐसा ही था और हमेशा से ही उसमे ऐसे स्वादिष्ट फल लगते रहे है। बिशप को पता चला कि बूढा चाहता है कि वह अपने इस स्थान को बेच कर साता फे चला जाय। अत उन्होने कुछ सप्ताह पश्चात् उसे खरीद लिया। वसंत मे उन्होने उसमे फलो का अपना बगीचा लगाया और बबूल जाति के एक वृक्ष की भी कुछ कतारें लगायी। कुछ वर्षों के पश्चात् वहाँ उन्होने पहाडी की ऊँचाई पर कच्ची ईंटो का एक छोटा सा मकान तथा एक छोटा सा गिरजाघर भी बना लिया। मकान के ठीक सामने ही, नीचे बगीचा था। वहाँ वे विश्राम करने तथा विशेष पूजा-अवसरो पर जाया करते थे। कार्यमुक्त होने के बाद वे वहाँ रहने के लिये

चले गये, यद्यपि उन्होने अपना अध्ययन-कक्ष पहले की भाँति उसी मकान मे रखा, जिसमे अब नये आर्चविशप रहते थे।

अपने अवकाश-ग्रहण के काल में फादर लातूर का मुख्य काम फ्रास से आये हुए नये पादरियो को प्रशिक्षित करना था। उनके उत्तराधिकारी, द्वितीय आर्चविशप, भी आवार्न से ही, फादर लातूर के ही कालेज से शिक्षित होकर, आये थे और उत्तरी न्यू मेक्सिको का पादरी-वर्ग मुख्यतः फ्रासीसी ही बना रहा। जब भी नये पादरियो का कोई दल साता फे पहुँचता (वे अकेले कभी नही आते थे), तो आर्चविशप स ˙ ˙˙ ˙ उन्हे कुछ महीनो के लिये फादर लातूर के पास भेज देते थे, ताकि वे उनसे स्पेनिश भाषा, वहाँ के स्थानीय भूगोल तथा विभिन्न बस्तियो की विशेषताओ एव परम्पराओ के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त कर सकें।

फादर लातूर के मन-बहलाव का साधन उनका बगीचा था। उसमें उन्होने ऐसे फलो के वृक्ष लगाये थे, जो कैलिफोर्निया के प्राचीन बगीचो में भी नही मिल सकते थे, लाल बेरो के वृक्ष, लुकाट के वृक्ष, सेव, बिही तथा फ्रास के अद्वितीय नाशपाती के वृक्ष और वे सभी नाजुक से नाजुक जाति के। वे नये पादरियो से कहा करते थे कि वे जहाँ कही भी जायँ फलो के वृक्ष अवश्य लगावे और मेक्सिकनो को इस बात के लिये प्रोत्साहित करें कि वे अपने स्टार्च-प्रधान भोजन मे फल भी जोडें। जहाँ भी कोई फ्रासीसी पादरी रहे, वहाँ फलो, तरकारियो तथा फूलो का एक बगीचा अवश्य होना चाहिये। वे अपने विद्यार्थियो को आवर्न के ही रहने वाले पैस्कल के सुविदित कथन को कहकर सुनाया करते थे 'मनुष्य का पतन हो गया था और किसी बगीचे ही में उसका पुनरुद्धार हुआ।'

उन्होंने वहाँ के स्थानीय जगली फूल भी लगाये और यत्न से उनका विस्तार किया। उन्होने पहाडी के एक भाग को सुगन्धयुक्त पत्तियो वाले उन छोटे-छोटे बैगनी पौधो ही से भर दिया, जो न्यू मेक्सिको की पहाडियो पर यत्र-तत्र बिखरे रहते है। वह एक विशाल बैंगनी रंग के

मखमली लबादे की तरह था, जो सूखने के लिये धूप मे फैला दिया गया हो। उसमें वे सभी वारीक रग मिल जाते थे, जिनके लिये इटली और फ्रास के सभी रगसाज़ और बुनकर शताब्दियो से प्रयत्न कर रहे थे, ऐसा वेगनी रंग, जिसमे गुलावी रग तो पूरा रहता है, फिर भी वह हलके नीले रग का नही होता है। ऐसा नीला होता है जो करीब-करीब हलकी लाली लिये आ जाता है और फिर सागर की तरह वैगनी बन जाता है—विशप के वस्त्रो का सच्चा रग तथा उसके अनेक चढाव-उतार।

सन् १८८५ ई० मे, न्यू मेक्सिको में एक युवक पादरी आया, जो अभी धर्म-शिक्षालय मे विद्यार्थी ही था। उसका नाम वर्नार्ड डुक्रोट था। वह फादर लातूर का बेटा सा बन गया। बूढे आर्चविशप को जीवन-गाथा ने, जो मोट फेराड के शिक्षालयो एव मठो मे बहुधा ही कही जाती थी, इस लड़के को वहुत प्रभावित किया था और वह वहुत दिनो से यहाँ आने के अवसर की ताक मे था। वर्नार्ड देखने मे बडा सुन्दर था, वह असाधारण स्वभाव का मनुष्य था। उसमे अपने पूज्य गुरु के सभी गुणो के प्रति श्रद्धालु बने रहने की सभी वाते विद्यमान थी। वह फादर लातूर की प्रत्येक इच्छा को फौरन समझ जाता था, उनके मनन-ध्यान मे हाथ बँटाता था तथा उनके सस्मरणो को अपने हृदय मे सजो कर रखता था।

"निश्चय ही," विशप अपने पादरियो से कहा करते थे, "ईश्वर ने स्वय ही इस लड़के को मेरे पास भेज दिया है, जिससे जीवन के अन्तिम दिनो मे वह मेरी सहायता कर सके।"

२

सन् १८८८ ई० की सारी शरद् ऋतु मे विशप का स्वास्थ्य अच्छा रहा। उनके घर मे पाँच फ्रासीसी पादरी थे, और विशप अव भी उनके साथ समीपस्थ मिशनो की यात्रा घोडे पर चढकर किया करते थे। क्रिसमस से एक दिन पूर्व सध्या समय उन्होने साता फे के गिरजाघर मे मध्य

रात्रि की सार्वजनिक आराधना सम्पन्न करायी। जनवरी में वे बर्नार्ड के साथ साता क्रूज के बीमार आवासिक पादरी को देखने गये। घर वापस आते समय रास्ते ही मे मौसम में अचानक परिवर्तन हुआ और भयानक आंधी एव वर्षा आरम्भ हो गयी। वे एक खुली घोड़ा गाडी मे थे और इसके पहले कि वे किसी मेक्सिकन घर मे शरण ले सकें, बिलकुल भीग गये।

घर पहुँचने पर फादर लातूर फौरन सोने चले गये। रात मे वे अच्छी तरह सो नही सके और उन्हे कुछ ज्वर मालूम होने लगा। उन्होने घर मे किसी को बुलाया नही और रोज की तरह सूर्योदय से पहले ही उठे और गिरजाघर मे अपनी दैनिक पूजा-आराधना के लिये चले गये। प्रार्थना करते समय उन्हे अचानक ठण्ड मालूम होने लगी और वे कॉपने लगे। किसी तरह रसोईघर में पहुँचे और उनकी रसोई पकाने वाली वही पुरानी औरत फ्रक्टोसा उन्हे देखकर घबरा सी गयी और उसने उन्हे बिस्तर पर लिटा कर थोडी सी ब्राडी पिलायी। इस ठण्ड से उन्हे ज्वर हो आया और फिर धीरे-धीरे बडी कष्टप्रद खाँसी आने लगी।

कुछ दिन तक चुपचाप बिस्तर पर पडे रहने के बाद एक दिन प्रात काल उन्होने बर्नार्ड को अपने पास बुलाया और कहा—

"बर्नार्ड, आज तुम साता फे चले जाओ और मेरी ओर से आर्चबिशप से मिलो। उनसे पूछो कि यदि मै उनके मकान मे, अपने अध्ययन कक्ष में, कुछ समय के लिये आ जाऊँ, तो उन्हे कोई असुविधा तो न होगी। मैं साता फे मे ही मरना चाहता हूँ।"

"मै फौरन ही जाता हूँ, फादर। परन्तु आप अधीर न होइये, सर्दी जुकाम से कही कोई मरता है ?"

बूढे बिशप मुस्करा पडे। "मै सर्दी से नही मरूँगा, मेरे बच्चे। मै तो इसलिये मरूँगा कि अब मै बहुत जी चुका।"

उस क्षण से वे अपने पास रहने वाले सभी लोगो से फ्रासीसी भाषा

ही मे वात करने लगे और घर के लोग उनके इस अचानक नियम-परिवर्तन से उनकी हालत के सम्बन्ध मे जितना घवराये उतना अन्य किसी वात से नही। जब कोई पादरी अपने घर से कोई बुरा समाचार सुनता या वह बीमार रहता, तो उस समय फादर लातूर उससे अपनी ही भाषा (फ्रासीसी) मे वात करते थे, परन्तु अन्य अवसरो पर वे यही चाहते थे कि उनके घर मे सभी वातें स्पेनिश या अग्रेजी भाषा ही मे हो।

वर्नार्ड उसी दिन तीसरे पहर वापस आ गया और उसने वताया कि आर्चविशप को इससे वडी प्रसन्नता होगी कि फादर लातूर जाडे भर उनके साथ ही रहे। मैगडलेना ने उनके अध्ययन-कक्ष को खोल दिया है और वह उसकी सफाई आदि करने लग गयी है और वह उनके निवास काल के समय विशेष रूप से उन्ही की शुश्रुषा मे रहेगी। आर्चविशप उन्हे लिवा आने के लिये अपनी नयी गाड़ी भेज देंगे, क्योकि फादर लातूर के पास तो एक खुली गाडी ही है।

"आज नही, मेरे वेटे", विशप ने कहा। "हम किसी ऐसे दिन चलेगे, जिस दिन मेरी तवियत कुछ ठीक रहेगी, जिस दिन मौसम भी अच्छा होगा, वादल आदि नही रहेगे, और हम अपनी ही खुली गाड़ी मे चल सकेंगे और तुम उसे हाँकोगे। मै तीसरे पहर यहाँ से चलना चाहता हूँ, लगभग सूर्यास्त के समय।"

वर्नार्ड समझ गया। वह जानता था कि एक वार, वहुत समय पहले, दिन के उसी समय, एक नौजवान विशप अलवुकर्क की सडक पर घुड़सवारी करके साता फे पहुँचा था और प्रथम वार उसे देखा था ' ' और वहुधा ही, जव वे एक साथ उस नगर मे गाड़ी पर वैठकर जाते, तो विशप वर्नार्ड के साथ उस पहाड़ी पर क्षण भर के लिये रुक जाते, जहाँ से फादर वेलेंट ने कोलोरैडो मे नया काम आरम्भ करने जाते समय साता फे की ओर घूम कर देखा था। उनका (फादर वेलेंट का) यही काम उनके शेष जीवन भर चलता रहा और यही करते-करते अन्त में वे भी विशप वन गये थे।

फ़ादर लातूर ठण्डी आह भर कर वर्नार्ड को वतलाया करते थे कि उन दिनो नगर देखने मे अपेक्षाकृत अच्छा लगता था। उन दिनो उसकी अपनी एक विशिष्टता थी, अपना एक ढग था। कच्ची ईंटो के मकानो का, भूरे रङ्ग का छोटा सा नगर, जिसमे वहुत थोडे से हरे वृक्ष थे, और जो अर्द्ध-चंद्राकार रूप में लाल पहाड़ियो के वीच वसा हुआ था, वस इससे अधिक कुछ नही। परन्तु सन् १८८० ई० में अमेरिकनो द्वारा वेमेल मकानो के वनने का श्रीगणेश, यहाँ भी हो गया। इस समय स्थिति यह थी कि वीच के मैदान के चारो ओर का आधा भाग तो अव भी कच्ची ईंटो के मकानो का था और आधे भाग में कमजोर लकडी के मकान थे, जिनमें दो-दो वरसातियाँ थी, चक्करदार वेल वूटे थे, व्यर्थ के खम्भे आदि थे, जिन पर सफेदी की हुई थी। फादर लातूर कहा करते थे कि इन लकडी के मकानो ने, जिन्हे वे ओहियो में देखकर चिढ जाते थे, यहाँ भी उनका पीछा किया। यह सब उस गिरजाघर के उपयुक्त नही था, जिसे उन्होने इतने वर्षों मे वनाया था, वह गिरजाघर, जिसने उनके जीवन मे मृत्यु के पश्चात् फादर वेलेंट जैसे अद्भुत मनुष्य का स्थान ले लिया था।

फादर लातूर ने साता फे मे अन्तिम वार प्रवेश फरवरी मास में एक दिन तीसरे पहर, जव आसमान विलकुल साफ था, किया। वर्नार्ड ने नगर की एक लम्वी सडक के किनारे उस स्थान पर, जहाँ वह नगर मे प्रवेश करती थी, घोडो को रोक दिया और सूर्यास्त की प्रतीक्षा करने लगा।

रेड इण्डियन ढग का कम्वल ओढे, वूढे आर्चविशप अपने गिरजाघर के खुले एव सुनहरे अगवाडे को देखते हुए वहुत देर तक वैठे रह गये। उनके फ्रासीसी कारीगर, नवयुवक मोल्नी ने उसे ठीक वैसा ही वनाया था, जैसा वे चाहते थे। उसमे कोई खास वात नही थी, महज़ सादी सी इमारत थी परन्तु पत्थरो की अच्छी कटाई हुई थी। मिदी रोमानेस्क की सादी-से-सादी डिज़ाइन की अच्छी नकल थी। और इस समय जाड़े में भी, जव दरवाज़े के सामने लगे ववूल के वृक्षो में पत्तियाँ नही थी, वह ठीक दक्षिण

प्रदेश का गिरजाघर लगता था, उसे देख कर ही दक्षिण का आभास मिल जाता था।

मोलनी और बिशप के अतिरिक्त शायद अन्य किसी ने भी उस इमारत की भव्यता की इतनी प्रशसा न की होगी—शायद कोई कभी करेगा भी नही। परन्तु इन दो व्यक्तियो ने घण्टो खडे रह कर उसकी सराहना की थी। लाल रग की ढालुवाँ पहाड़ियाँ गिरजाघर के पीछे इतने निकट थी कि उस ढाल पर यत्र-तत्र उगे चीड़ के सभी वृक्ष स्पष्ट दीखते थे। सडक के किनारे जिस स्थान पर बिशप की गाडी खडी थी, वहाँ से देखने पर लगता था, कि भूरे रग का गिरजा उन गुलाबी रग की पहाड़ियो से ही अचानक निकल पडा है,—और वह भी इतने निश्चित प्रयोजन से, कि लगता था कि वह चल कर आया है। इतनी दूर से देखने पर लगता था कि यत्र-तत्र बिखरे चीड के वृक्षो वाले ढाल के सामने खड़ा गिरजाघर किसी परदे के सामने खडा है। बर्नार्ड ने ज्यो-ज्यो धीरे-धीरे गाडी आगे बढाई, ज्यो-ज्यो वह समीप आता गया, पहाडी का ऊपरी भाग गिरजा की आड मे नीचे होता गया और उसकी मीनारें नीले आसमान मे स्पष्ट उभर आयी, परन्तु उसके निचले भाग की पृष्ठभूमि में अब भी पहाडी दिखलायी पड रही थी।

वह युवक कारीगर बिशप से कहा करता था कि केवल इटली मे, या नाटकीय दृश्यो ही में, गिरजाघर इस प्रकार पर्वतो एव काले चीड के वृक्षो के बीच खडे दिखलायी पडते थे। कितनी बार ऐसा हुआ था कि कोई आँधी आने पर मोल्नी ने बिशप को उनके अध्ययन-कक्ष से बुलाकर अधूरी इमारत को दिखाया था। इस समय पर्वतो के ऊपर आकाश काला हो जाता, लाल रग की पहाडियाँ गाढे नीले रग की हो जाती, उन पर उगे सभी चीड के वृक्ष गाढे बैंगनी रग की लकीरो जैसे हो जाते, पहाडियाँ और भी निकट मालूम होने लगती, सारा पृष्ठ-प्रदेश ही भयानक खतरे के रूप मे आगे बढता हुआ सा लगता था।

मोल्नी फ़ादर लातूर से कहा करता था, "सयोग से ही उपयुक्त दृश्य

एव स्थान मिल जाता है। कोई इमारत या तो अपने स्थान का एक अग वन ही जाती है, या फिर नही ही वनती। एक बार वह अग वन गयी और दोनो मे सम्वन्ध स्थापित हो गया, फिर तो ज्यो-ज्यो समय वीतता है, वह दृढतर ही होता जाता है।"

विशप मोल्नी के इसी कथन का स्मरण कर रहे थे, तभी कोई आवाज उनके कान में पडी, जिससे वे पुन वर्तमान् मे आ गये। आवाज वर्नार्ड की थी।

"कितना सुहावना सूर्यास्त है फादर! देखिये, पर्वत किस प्रकार अधिकाधिक लाल होते जा रहे है, साग्रे दि क्रिस्टो के रग के।"

हाँ, साग्रे दि क्रिस्टो का रग, परन्तु सूर्यास्त चाहे कितना ही चटकीला लाल हो, ये पहाडियाँ कभी भी सिन्दूरी रग की नही होती, उलटे वे अधिकाधिक गुलावी और धुँधले लाल रग की होती हैं, और विशप बहुधा ही यो सोचा करते थे कि यह रग ताजे खून के रग का नही होता, अपितु सतो एव शहीदो के सूखे हुए खून के रग का होता जाता है, जो रोम के गिरजाघरो मे सुरक्षित रखा रहता है और विशेष अवसरो पर पिघल कर द्रव वन जाता है।

३

दूसरे दिन प्रात काल विशप प्रसन्नता की इस भावना के साथ जागे कि वे गिरजाघर के समीप है, वह गिरजाघर, जो उनकी कब्र भी वनेगा। वे स्वय को उसकी छत्र-छाया मे सुरक्षित महसूस करने लगे, जैसे कोई जहाज वन्दरगाह के अपने प्रकोष्ठ में पहुँच जाने पर सुरक्षित समझा जाता है। वे अपने पुराने अध्ययन-कक्ष मे थे, 'सिस्टरो' ने विद्यालय से उनके लिये लोहे की एक चारपाई भेज दी थी, उन्होने अपनी सर्वोत्तम चद्दरे तथा कम्वल आदि भी भेज दिया था। वे इस स्थान पहुँच कर, जहाँ वे एक युवक के रूप मे आये थे और जहाँ उन्होने अपना काम आरम्भ किया था, वड़े

सन्तोष का अनुभव कर रहे थे। कमरे मे शायद ही कोई परिवर्तन हुआ हो, फर्श पर वे ही पुराने कालीन और मृग-चर्म बिछे थे, वही डेस्क, जिस पर उनकी मोमवत्तियाँ रखी जाती थी, वे ही मोटी एवं असम श्वेत दीवारे भी थी, जो किसी प्रकार की आवाज अन्दर नही पहुँचने देती थी, और बाहरी दुनिया का आभास भी नही होने देती थी, तथा जिनके आड मे रह कर आत्मा को शान्ति मिलती थी।

प्रभात के आगमन के साथ ही अंधकार का नाश हुआ, और वे गिरजा घर के घण्टो की आवाज सुनने लगे,—और भी एक आवाज़ के लिये वे उत्सुक हो उठे, जिसे सुनकर उन्हे हमेशा ही बडी प्रसन्नता होती थी, 'वह थी किसी रेलगाडी के इजन की सीटी। वे जब यहाँ प्रथम बार आये थे, तो भैसो पर ही सामान आदि ढोने का काम होता था और उनके देखते-देखते साता फे मे रेलगाडियाँ दौडने लगी थी। वे यहाँ पूरा एक ऐतिहासिक काल बिता चुके थे।

घर पर उनके सभी सम्बन्धियो तथा न्यू मेक्सिको के उनके सभी मित्रो ने यही आशा की थी कि बूढे आर्चबिशप अपने अन्तिम दिन फ्रास मे, सम्भवत: क्लेरमोट मे बितायेंगे, जहाँ वे अपने पुराने कालेज से किसी पद पर सुशोभित हो सकेंगे। यही करना स्वाभाविक जान पडता था और उन्होने इस पर गम्भीरता से विचार भी किया था। यहाँ तक कि जब वे अपने आर्चबिशप के पद से अवकाश ग्रहण करने के ठीक पहले, पिछली बार आवार्न गये थे, तो उन्हे भी थोडी यह आशा थी कि वे ऐसी कोई व्यवस्था कर लेगे। परन्तु 'पुरानी दुनिया' मे उन्हे 'नयी दुनिया' की याद सताने लगी। इस भावना को वे किसी को समझा नही सकते थे, यह कुछ इस प्रकार की भावना थी कि न्यू मेक्सिको मे बुढापा उतना नही खलता जितना पाय-दे-डोम मे।

उन्हे अपने देश के पर्वतो की गगनचुम्बी चोटियाँ, गाँवो की शोभा,

देहाती क्षेत्र की सफाई, अपने कालेज की सुन्दर इमारतें, मठ आदि वहुत प्रिय थे। क्लेरमोट मुन्दर अवश्य था,—परन्तु वे वहाँ स्वय को उदास पाते थे, उनका हृदय पत्थर की भाँति, स्पद-हीन जान पडता था। कारण कदाचित यह था कि विगत की स्मृतियाँ बहुत अधिक थी. ग्रीष्म-ऋतु की हवा जब यहाँ के बगीचो मे लगे नीले फूल वाले उन वृक्षो को झकझोर देती थी, और अखरोट जाति के उन अन्य वृक्षो के फूलो को धरती पर बिखेर देती थी, तो उन्हे देखकर कभी-कभी वे अपनी आँखें बन्द कर लेते थे और उस गर्जनकारी सगीत का ध्यान करने लगते थे, जिसे नवाजो के जगलो मे सीधे और नगे चीड के वृक्षो को झकझोर कर हवा गाया करती थी।

दिन मे उनकी घर की विरह-वेदना कम होने लगती थी और रात के भोजन का समय आते-आते वह विलकुल समाप्त हो जाती थी। उन्हे अपने भोजन मे, शराव में तथा सभ्य एव सुसस्कृत व्यक्तियो के साथ मे बडा आनन्द आता था और सोने जाने के समय वे अमूमन प्रसन्नचित्त ही रहते थे। प्रात काल ही वे हृदय में टीस का अनुभव करते थे। कदाचित् उसका सम्बन्ध बडे सुवह जागने ही से था। उन्हे लगता था कि धुँधला प्रभात यहाँ वहुत देर तक वना रहता है, और काफी देर के पश्चात् देश जागृतावस्था मे आता है। बाग और खेत नम बने रहते थे, घाटी मे गाढा कुहरा छाया रहता था, जिसके कारण पर्वत दृष्टि से ओझल रहते थे, घण्टो बीत जाते थे, तव कही जाकर सूर्य इस कुहरे को समाप्त करके गावो के वायुमण्डल को गरम एव पवित्र कर पाता था।

न्यू मेक्सिको मे प्रात काल जागने पर वे स्वय को जवान अनुभव करते थे, जव तक कि वे बिस्तर से उठ नही जाते थे और हजामत नही वनाने लग जाते थे, वे यह अनुभव ही नही करते थे कि वे अब बूढे हो रहे है। प्रथम वस्तु वे यह अनुभव करते थे कि शुष्क एव मन्द वयार खिड़कियो से अन्दर आ रही है, और उसके साथ ही सूर्य की प्रखर किरणो एव झाड़ी के पुष्पो तथा चारे के काम आने वाले पौधो की सुगन्ध भी आती हैं, यह

ऐसी हवा थी, जो शरीर मे स्फूर्ति भर देती थी और हृदय बच्चो की तरह बरवस चिल्ला उठता था , "आज, आज ।"

सुन्दर वातावरण, विद्वानो का समागम, भद्र महिलाओ के आकर्षण तथा कला-कृतियो के सौदर्य, मरुस्थल के उन सुहावने प्रभातो तथा मनुष्य को पुन. बच्चा बना देने वाली उस मस्त हवा की कमी नही पूरा कर सकते थे । उन्होने यह अनुभव किया कि पिछडे एव अविकसित देशो की जलवायु का यह अद्भुत् गुण मनुष्य द्वारा उनका विकास किये जाने पर तथा उनकी भूमि मे फसल उगाने पर, लुप्त हो जाता है । टेक्सास तथा कसास राज्यो के उन भागो मे, जिन्हे उन्होने पहले बीहड पर्वतीय एव वन प्रदेश के रूप में देखा था, अब बड़े ज़ोरो से खेती हो रही थी, और हवा की वह पवित्रता तथा शुष्क सुगन्धि नष्ट हो चुकी थी । जुते हुए खेतो की नमी ने, बीजो की उत्पत्ति, ने फिर पौधो की वृद्धि ने एवं अन्त में उनमे फल लगने आदि के लिये आवश्यक खुराक प्रदान करने की क्रिया ने उस सुगन्धि को बिलकुल नष्ट कर दिया था वह तो अब धरती के सीमावर्ती प्रदेशो, विशाल घास के मैदानो तथा महकदार झाडी वाले मरुस्थलो मे ही मिल सकती है ।

कालान्तर मे चलकर यह हवा कदाचित् सारी धरती से ही लुप्त हो जायगी, परन्तु वह तो उनके अवसान के बहुत दिन बाद होगा । उन्हे यह नही मालूम कि कब वह उनके लिये इतनी आवश्यक हो गयी परन्तु उसी के लिये तो वे परदेश मे मरने वापस चले आये थे । वह तो कोई ऐसी वस्तु थी, जो कोमल, मुक्त एव स्वच्छद थी । कोई ऐसी वस्तु थी, जो चुपके से आकर तकिया पर पडे कान मे कुछ कहती थी, हृदय को पागल बना देती, बहुत धीरे-धीरे ताला हटाती, कुण्डे खोलती, और मनुष्य की बन्दी आत्मा को मुक्त करके उसे वायुमण्डल मे, नील गगन के नीचे, स्वर्णिम प्रभात मे, हाँ सोने से लदे सुहाने प्रभात मे, भेज देती थी ।

४

फादर लातूर ने अपने अन्तिम दिनो के लिये एक दिनचर्या बनायी। नीरोगावस्था मे यदि नियम आवश्यक था, तो बीमारी में तो और भी आवश्यक था। सुबह ही सुबह बर्नार्ड गरम पानी लेकर आता था, उनकी हजामत बनाता था और उन्हे नहलवाता था। वे गाँव से अपने साथ पहनने के कपडो, चद्दरो तथा हाथ धोने के उन चाँदी के बर्तनो के अतिरिक्त, जिन्हे ओलिवारिस ने फादर को बहुत पहले ही दिया था, अन्य कोई भी वस्तु नही लाये थे। गत तीस वर्षों से वे हाथ से गढे हुए उस बर्तन में ही अपने हाथ धोते आ रहे थे। सुबह की प्रार्थना समाप्त हो जाने पर मैगडलेना नाश्ता ले आती, और उठकर वे अपनी आराम कुर्सी पर बैठ जाते थे। इस बीच मैगडलेना उनका बिस्तर तथा कमरे की अन्य वस्तुएँ ठीक-ठाक कर देती थी। तब वे लोगो से मिलने के लिये तैयार रहते थे। आर्चबिशप जब घर पर रहते थे, तो दो-चार मिनट के लिये उनके पास आते थे, मदर सुपीरियर आती थी, अमेरिकन डाक्टर आता था। दोपहर तक बर्नार्ड कुछ न कुछ पढकर उन्हे सुनाता रहता था, सत आगस्टिन की कोई पुस्तक, या मैडम डि सेवीन के पत्र या उनका प्रिय पैस्कल।

कभी-कभी सुबह ही वे अपने युवक शिष्य को अपने इलाके के प्राचीन मिशनो के सम्बन्ध मे कुछ विशेष बातें लिखाया करते थे, ऐसी बातें जिनका ज्ञान उन्हे सयोगवश ही हुआ था और उन्हे भय था कि कही वे भुला न दिये जायें। उनकी इच्छा तो यह थी कि वे इन्हे सिलसिलेवार रूप मे लिखा सकें, परन्तु उन्हे अब शक्ति नही थी। बीते युग के सम्बन्ध में वे सच्ची बाते और गल्प कालान्तर मे चलकर कदाचित् लुप्त हो जांय, प्राचीन गाथाएँ, रीति-रिवाज तथा अध-विश्वास आदि अभी से समाप्त होने लगे थे। अब वे सोचने लगे यदि बहुत समय पहले मैने फुरसत से इन्हें लिखा होता और उन पर लचीली फासीसी भाषा मे प्रकाश डालकर उन्हे मरने से बचा लिया होता, तो क्या ही अच्छा हुआ होता!

सचमुच वर्षों तक वे उन युवक पादरियो को, जिन्हे वे पढाते थे, यह समझाते रहे कि किस साहस एव लगन से उन प्रथम मिशनरियो ने, स्पेनिश ईसाई भिक्षुओ ने, यहाँ काम किया था। वे यह भी कहते थे कि जब वे (बिशप) प्रथम बार न्यू मेक्सिको आये थे, तो उनकी (मिशनरियो की) तुलना मे उनका स्वय का जीवन कितने आराम का था। यदि कभी उन्हे सप्ताहो तक अल्प भोजन पर, खुले में सो कर, तथा बिना नहाये-धोये, गन्दा शरीर लिये, बाहर रहना पडता था, तो कम-से-कम उन्हे यह तो सन्तोष रहता था कि जहाँ भी वे जाते थे, वे मित्रो के बीच रह रहे हैं और प्रत्येक व्यक्ति के घर मे उनका स्वागत होता था।

परन्तु वे स्पेनिश पादरी लोग तो, जो पहले जूनी तक आये, फिर उत्तर मे नवाजो तक गये, पश्चिम मे होपी तक गये, और पूरब मे अलबुकर्क तथा ताओस के बीच बिखरे हुए सभी बस्तियो मे गये, वे एक शत्रु-प्रदेश मे पहुँचे थे और अपने साथ पाठ-पुस्तक तथा क्रूश के अतिरिक्त बहुत थोड़ी सी सामग्री लेकर चलते थे। जब रेड इण्डियन लोग उनके खच्चर चुरा लेते और यह बहुधा ही होता था, तो वे पैदल ही, बिना कपडे बदले ही, बिना कुछ खाये-पिये, चल देते थे। कोई यूरोपियन इन कठिनाइयो की कल्पना भी नही कर सकता था। प्राचीन देश तो मानव जीवन की आवश्यकताओ के उपयुक्त बन गये थे, मनुष्य के लिये एक अभिषेक बन गये थे, एक प्रकार से उसका दूसरा शरीर ही बन गये थे। वहाँ की जगली जडी-बूटियाँ, जगली फल तथा जगलो के कुकुरमुत्ते आदि खाद्य वस्तुएँ बन गयी थी। नदियो का पानी मीठा था, वृक्ष छाया एव आश्रय प्रदान करते थे। परन्तु रेह-मिश्रित मिट्टी वाले उन मरुस्थलो मे सभी जल-स्रोत विषैले थे और भूखे आदमी को वहाँ की बनस्पतियो से कुछ भी खाने को नही मिल सकता था। प्रत्येक वस्तु सूखी, कँटीली एव तेज़ थी, स्पेनिश भाले, सदाबहार की झाड़ियाँ, अन्य जगली वृक्ष, नागफनी के पौधे, छिपकलियाँ,

विषैले साँप,—यहाँ तक कि मनुष्य भी कठोर जीवन विताने के कारण, निर्दय वन गया था। इन प्रारम्भिक मिशनरियो ने स्वय को, नगे ही, ऐसे देश के वीहड भाग में फेंक दिया था, जो महामानवो के भी धैर्य एव साहस को समाप्त कर सकता था। वे उसके मरुस्थलो मे प्यासे रह जाते थे, पर्वतो पर भूख की ज्वाला सहन करते थे, ककड-पत्थर से घायल हुये पाँव लिये भयानक दर्रों मे उतरते और चढते थे और लम्बे अनशनो को गन्दे तथा घृणित भोजन से तोडते थे। निश्चय ही वे ऐसी भूख, प्यास, सर्दी आतप, वात आदि वर्दाश्त करते थे, जिसकी कल्पना भी सेट पॉल और उनके साथियो ने न किया होगा। प्रारम्भिक काल के ईसाइयो ने जो कुछ भी कष्ट सहन किया, वह सब उस छोटी एव सुरक्षित भूमध्य सागरीय दुनिया ही मे, पुराने रीति-रिवाजो के बीच पुराने सीमाचिह्नो के दायरे मे हुआ। यदि वे शहीद हुए तो कम-से-कम वे अपने बन्धु-बाँधवो के बीच मरे। उनके अवशेष बड़ी हिफाजत से रखे गये थे और उनके नाम सन्तो, महात्माओ आदि की जवान पर रहते थे।

आवार्न के अपने साथियो के साथ उन प्राचीन मिशनो पर पहुँचने पर जहाँ कोई धर्म-प्रचारक कभी शहीद हुआ था, विशप उनसे कहा करते थे कि कोई भी यह नही जान सकता कि वहाँ धर्म की किस प्रकार विजय हुई होगी, जहाँ अकेला श्वेत मनुष्य अनेक नास्तिको के बीच घोर यन्त्रणा के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हुआ होगा, या यह कि उस निर्दयतापूर्ण अन्त का कष्ट हलका करने के लिये ईश्वर ने कौन सा-रहस्योद्घाटन या देवी प्रेरणा प्रदान की होगी।

जब फादर लातूर, यौवनावस्था मे, डुरैगो के बिशप से बिशप की अपनी गद्दी माँगने प्रथम वार ओल्ड मेक्सिको गये थे, तो यात्रा ही मे उनकी सोनोरा और लोअर कैलिफोर्निया के मिशनो के पादरियो से भेंट हो गयी जिन्होने, जो उन्हे प्रारम्भिक फ्रासिस्कन मिशनरियो के अनुभवो की अनेक गाथाएँ सुनाया था। लगता है कि बीहड वन-प्रदेशो में भटकते हुए उन्हे

छोटे-मोटे चमत्कार भी देखने को मिले थे । एक बार ऐसा हुआ कि जब सुप्रसिद्ध फादर जुनिपेरो सेरा और उनके दो साथी किसी नदी को खतरनाक स्थान पर पार करने का प्रयत्न कर रहे थे और अपनी जिन्दगी को खतरे में डाल दिया था, उस समय एक अद्भुत अजनबी आदमी नदी के उस पार कही पर्वत पर से ही प्रकट हो गया और उनसे स्पेनिश भाषा मे बोलते हुए किनारे के ऐसे स्थान पर उन्हे ले गया, जहाँ नदी में पानी बहुत कम था और वे उसमे हिल कर खडे-खडे नदी पार कर गये । उन्होने जब उस से उसका नाम पूछा तो उसने बहाना बना दिया और अदृश्य हो गया । दूसरी बार यह हुआ कि वे एक विशाल मैदानी प्रदेश को पार कर रहे थे, और प्यास के मारे बिलकुल शिथिल हो गये थे, तभी एक नौजवान घुडसवार पीछे से उनके पास पहुँचा । उन्हे उसने तीन पके अनार दिये, और फिर सरपट घोडा दौड़ा कर निकल गया । इस फल ने न केवल उनकी प्यास बुझायी, वरन् उनके शरीर में इतनी ताजगी और शक्ति ला दी, जितनी ताजगी कोई भी पुष्टिकारक भोजन न ले आये होता और फिर वे रञ्चमात्र थकावट महसूस किये बिना ही अपनी यात्रा पूरी कर गये ।

डुरैंगो इलाके की यात्रा करते समय, एक बार फादर लातूर रात के समय, एक गाँव मे किसी बडे कृषक के यहाँ ठहरे, जहाँ का आवासी पादरी पश्चिम के किसी मिशन का था । उस पादरी ने इन्ही फादर जुनिपेरो के सम्बन्ध मे एक कहानी सुनायी, जो उसके मठ मे बहुत पहले से ही प्रचलित थी ।

उसने बताया कि एक बार फादर जुनिपेरो केवल एक साथी के साथ उसके मठ पर बिना किसी सर-सामान के पैदल ही पहुँचे थे । वहाँ के पादरियो ने आश्चर्यचकित होकर दोनो का स्वागत किया था, उन्हे यह विश्वास ही नही होता था कि कोई मनुष्य इस प्रकार बिना किसी भोजन, वस्त्र के इतने विशाल मरुस्थल को पार कर सकता है । बडे पादरी ने उनसे पूछा कि आप कहाँ से आ रहे है, और जान लेने पर कहा कि जिस मिशन से

वे लोग चले है, वहाँ के पादरी को उन्हे बिना किसी पथ-प्रदर्शक या रसद आदि के रवाना ही नही होने देना चाहिये था। उसे वडा आश्चर्य हुआ कि वे लोग यहाँ जीवित कैसे पहुंच गये। परन्तु फादर जुनिपरो ने उत्तर दिया कि मैं तो वडे आराम से पहुँच गया, और रास्ते मे एक गरीव मेक्सिकन परिवार ने मुझको वडे प्रेम से भोजन आदि कराया था। यह सुनकर एक खच्चर हाँकनेवाला, जो उस समय पादरियो के लिये लकडी अन्दर ला रहा था, हँस पडा और बोला कि वहाँ तो छत्तीस मील की दूरी मे कोई मकान ही नहीं है और न तो जिस रेगिस्तान को पार करके आप लोग आये है, उसमे कही कोई रहता ही है। पादरियो ने भी उसकी इस वात की पुष्टि की।

इस पर फादर जुनिपेरो तथा उसके साथी ने अपनी यात्रा का पूरा वृत्तांत सुनाया। वे लोग केवल एक दिन के लिये भोजन और पानी लेकर रवाना हुए थे। परतु दूसरे दिन वे सुवह से ही नागफनी के पौधो से भरे एक रेगिस्तान में चलते रहे और सूर्यास्त के समय जव वे हिम्मत हारने लगे, तो उन्होने दूर तीन वडे-वडे सेमल के वृक्ष देखे, जो उस धुँधले प्रकाश में वहुत ही ऊँचे दीख रहे थे। वे लोग इन्ही वृक्षो की ओर वढे। पेडो के समीप पहुँचने पर उन्होने देखा कि वे काफी फैले हुए, हरे थे तथा फलो से लदे हैं, जिनसे काफी मात्रा मे सेमल धरती पर छिटका हुआ था। पास ही में उन्होने देखा कि एक सूखे हुए तने से, जो रेत में यो ही निकला हुआ दीखता था, एक गधा वँधा है। गधे के मालिक को ढूँढते हुए वे एक छोटे से मेक्सिकन घर के समीप पहुँचे जिसके दरवाजे के पास ही एक भट्टी वनी हुई थी तथा तार में पिरोकर दीवार पर मिरचा लटकाया हुआ था। आवाज़ देने पर एक भद्र मेक्सिकन, जो भेंड की खाल ओढे वाहर आया और उसने वडे प्रेम से उनका स्वागत किया तथा रात भर वही रहने के लिये उनसे आग्रह किया। उसके साथ अन्दर जाकर उन्होने देखा कि घर वडा साफ-सुथरा तथा सुन्दर है और उसकी पत्नी, जो एक सुन्दर

नौजवान स्त्री थी, आग के पास बैठी हुई दलिया पका रही है। उसका बच्चा, जो अभी शिशु ही था और एक कमीज़ के अतिरिक्त अन्य कुछ नही पहने था, उसकी बगल मे फर्श पर ही बैठा एक पालतू भेंड से खेल रहा था।

उन्होने देखा कि ये लोग सज्जन, धर्मात्मा तथा मृदु-भाषी है। पति ने बतलाया कि हम गडरिये है। पादरी लोगो ने उन्ही के साथ बैठकर भोजन किया और फिर रात की अपनी प्रार्थना कही। वे लोग अपने मेज़बान से उस प्रदेश के सम्बन्ध मे कुछ प्रश्न करना चाहते थे, यह पूछना चाहते थे कि वे अपनी ज़िन्दगी कैसे बिताते है, वे अपनी भेंडो के लिये चारागाह कहाँ पाते है, आदि। परन्तु उन्हे बडी गहरी तथा मीठी थकान का अनुभव हुआ और दोनो व्यक्ति अपनी-अपनी भेड की खाल ओढ कर, जो उन्हे उनके मेज़बान ने दी थी, जमीन पर ही लेट गये और सद्य. गहरी निद्रा मे सो गये। प्रात काल उठ कर उन्होने देखा कि सब कुछ पूर्ववत है, मेज़ पर खाना भी लगा है, परन्तु पूरा परिवार गायब है, यहाँ तक कि वह पालतू भेंड़ भी नही है। पादरियो ने सोचा कि वे लोग अपनी भेंड़ें देखने चले गये होगे।

मठ के पादरियो ने यह वृत्तात सुन कर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया और कहा कि रेगिस्तान मे उस स्थान पर तीन सेमल के वृक्ष अवश्य है और यह मार्ग का काफी सुविदित चिह्न है, परन्तु यदि कोई परिवार इस समय वहाँ रह रहा है, तो निश्चय ही वह हाल ही मे वहाँ आया होगा। अत· फादर जुनिपेरो तथा उनके साथी फादर ऐन्ड्रिया मठ के कुछ पादरियो तथा उस गधा हाँकने वाले के साथ, जो मजाक उडा रहा था, इस बात को सच सिद्ध करने के लिये उस वीरान स्थान पर वापस गये। उन्हे वहाँ तीनो वृक्ष मिले, जिनसे सेमर गिर रहा था और वह सूखा ठूँठ भी दिखायी पडा, जिससे गधा बँधा हुआ था। परन्तु न तो वहाँ गधा था, न कोई मकान था, न दरवाज़े के पास कोई भट्टी। फिर तो दोनो फादर उस

पवित्र स्थान पर घुटने के बल झुक कर बैठ गये और धरती को उन्होने चूमा, क्योकि उन्हे अब समझ मे आया कि उन्हे आश्रय देने वाला वह कौन सा परिवार था।

फादर जुनिपेरो ने मठ के पादरियो से बतलाया कि किस प्रकार मकान के अन्दर प्रवेश करते ही वे अद्भुत रूप से उस बच्चे की ओर आकर्षित हुए थे और चाहते थे कि वे उसे अपनी गोद मे उठा लें, परन्तु चूँकि प्रति क्षण वह अपनी माँ ही के पास था, वे ऐसा न कर सके। जब वे अपनी रात की प्रार्थना पढ रहे थे, उस समय बच्चा अपनी माँ के घुटनो के सहारे फर्श पर बैठा हुआ था और भेंड को अपनी गोद पर बैठाये हुए था। उसे देख कर उस समय फादर को अपनी पाठ-पुस्तक पर दृष्टि जमाये रखना कठिन हो गया। प्रार्थना के पश्चात् जब वे अपनी मेजबानो से रात्रि की विदाई का नमस्कार कर चुके, तो वास्तव मे वे बच्चे के ऊपर झुक गये थे, और बच्चे ने अपना हाथ उठाकर अपनी नन्ही उँगली से फादर जुनिपेरो के माथे पर क्रूश का चिह्न बना दिया था।

फादर जुनिपेरो के पवित्र परिवार की यह कथा जब विशप को इस विशाल फार्म पर, जहाँ वे एक रात के लिये मेहमान के रूप मे ठहरे थे, आग के पास बैठे, सुनायी गयी थी, तो वे उससे अत्यधिक प्रभावित हुए थे। वस्तुत यह कथा उन्हे इतनी प्रिय थी कि उन्होने उसे केवल दो बार अन्य किसी को सुनायी थी, एक बार रियोम मे मदर फिलोयीन के कनवेंट की भिक्षुणियो को और दूसरी बार रोम में कार्डिनल माजुक्ची द्वारा दिये गये एक भोज के अवसर पर। महानता तुच्छता की ओर वापस आये, इस कल्पना में निस्सदेह एक आकर्षण है—महारानी देहाती लडकियो के साथ घास काटे, यह कितनी आकर्षक कल्पना है—परन्तु यह विश्वास मनुष्य को ईश्वर के प्रति कितना अधिक श्रद्धालु बनाने वाला है कि वे (महात्मा ईसा का परिवार) शताब्दियो पश्चात्, जिस बीच बराबर उनकी कीर्ति का गान होता रहा, पुनः अपनी लीला करने वापस आये, और वह भी

एक हीन मेक्सिकन परिवार के रूप मे, जो तुच्छो मे भी तुच्छ तथा दरिद्रो में भी दरिद्र था—और ससार के एक छोर पर एक बीहड़, वीरान मरु-प्रदेश मे, जहाँ देवदूत उन्हे पा ही न सके ।

५

दोपहर के भोजन के पश्चात् बूढ़े आर्चबिशप सोने का बहाना करते थे । वे लोगो से कह देते थे कि रात के भोजन के पहले मुझे जगाया न जाय, और एकान्त का यह लम्बा समय उनके लिये अत्यन्त मूल्यवान् था । उनकी चारपाई कमरे के उस किनारे पर थी, जहाँ अपेक्षाकृत अँधेरा रहता था, और छाया से उनकी आँखो को आराम मिलता था । जिस दिन आसमान साफ रहता था, उस दिन कमरे का दूसरा किनारा सूर्य के प्रकाश से आलोकित रहता था, और जिस दिन बादल रहते थे, उस दिन कमरे मे जलती हुई आग की धुँधली रोशनी असम, श्वेत दीवारो पर नाचती रहती थी । बिशप इतना निश्चल लेटे हुए रहते कि उनका ओढना भी नही हिलता था तथा हाथो को बगल मे चद्दर पर या अपनी छाती पर आहिस्ता से रखे, अपने विगत जीवन की याद करते रहते थे । यो तो वे गतिहीन रहते थे, परन्तु कभी-कभी उनके दाहिने हाथ का अँगूठा उनकी तर्जनी मे पहनी हुई अँगूठी को धीरे-धीरे सहलाता रहता था । अँगूठी मे याकूत पत्थर जडा हुआ था और उस पर 'देवी मेरी रक्षा करें' खुदा हुआ था,—यह फादर वेलेट की मुहरदार अँगूठी थी । उसे सहलाते समय उन्हे जोसेफ की याद आ जाती, उनके साथ यहाँ, इस कमरे मे . ओहिओ मे 'ग्रेट लेक्स' के किनारे .. . युवको के रूप मे पेरिस मे . बच्चो के रूप मे मोंट फेराड मे . . बिताये गये दिनो की याद आ जाती । उनके मिशनरी जीवन रूपी पुस्तक मे बहुत से ऐसे अध्याय थे, जिन्हे बार-बार याद करने में उन्हे बड़ा आनन्द आता था और बहुधा ही और बडे चाव से वे इस पुस्तक के प्रारम्भिक अध्याय को याद करते थे ।

उन लोगो की अवस्था बीस के पार थी और वे अपेक्षाकृत अधिक अवस्था वाले पादरियो के सहायक थे, तभी क्लेरमोट मे ओहिओ से एक बिशप आये, जिनका जन्म-स्थान आवर्न था। वे पश्चिम मे अपने मिशनो के लिये स्वयसेवको की तलाश में थे। फादर जीन और फादर जोसेफ ने शिक्षालय मे उनका भाषण सुना और वे दोनो अकेले मे उनसे मिले और बातें कीं। उनके उत्तर दिशा की ओर रवाना होने के पहले ही इन दोनो नवयुवको ने उनसे (बिशप से) वादा कर लिया कि वे अमुक तारीख को उनसे पेरिस में मिलेंगे, और विदेशी मिशनो के कालेज मे कुछ सप्ताह रह कर स्वय को काम के उपयुक्त बनायेंगे और फिर उनके साथ शेरबुर्ग के लिये रवाना हो जायंगे।

दोनो नौजवान पादरी जानते थे कि उनके परिवार के लोग उनकी इस योजना का विरोध करेंगे। अत: उन्होने यह निश्चय किया कि वे इसे किसी से बतायें ही नही, कोई औपचारिक विदाई आदि का झंझट न करें, अपितु साधारण नागरिको के कपड़ो मे भेप बदलकर चुपचाप धीरे से खिसक जांय। उन्होंने यह कह कर एक दूसरे को सात्वना दी कि सेंट फासिस ज़ेवियर भी तो, मिशनरी के रूप मे भारतवर्ष के लिये रवाना होते समय इसी प्रकार चुपचाप भाग कर निकले थे, "वे तो अपने माता-पिता के मकान के सामने से बिना उन्हे नमस्कार किये ही आगे बढ गये थे," जैसा कि उन्होने स्कूल मे पढा था, ये शब्द ही किसी फासीसी लडके के लिये कितने कष्टकर थे!

फादर वेलेंट की स्थिति विशेप रूप से शोचनीय थी, उनके पिता बडे गम्भीर एव शान्त व्यक्ति थे। वे बहुत दिनों से विधुर थे और अपने बच्चो को अत्यधिक प्यार करते थे, यहाँ तक कि उनके जीवन से ही उनका जीवन था। जोसेफ सबसे बडी सतान थे। अत. जिस दिन उन्होने जाने का निश्चय किया, उस दिन से लेकर जिस दिन वे चले नही गये, तब तक का समय उनके लिये भारी सताप का समय था। ज्यो-ज्यो रवाना होने का दिन

निकटतर आता गया, वे अधिकाधिक दुबले और पीले होते गये।

दोनो मित्रो में तय हुआ कि वे निर्धारित दिन को सूर्योदय के समय, रियोम से बाहर एक खेत मे मिलेगे और वहाँ पेरिस जाने वाली गाडी की प्रतीक्षा करेंगे। जीन लातूर एक वार निर्णय एवं वादा कर लेने के बाद फिर आगा-पीछा करना जानते ही न थे। निर्धारित तिथि पर बडे तडके ही वे अपनी बहन के घर से चुपके से निकल पडे और सोते हुए नगर मे से उस पर्वत के पास खेत मे पहुँच गये, जो अत्यधिक ढालुवाँ होने के कारण शिखर पर एक ओर को झुका हुआ था और जिसकी हरियाली मेघाच्छन्न सूर्योदय के धुँधले प्रकाश मे अब दीखने लगी थी। वहाँ उन्होने अपने साथी को बडी बुरी हालत मे पाया। जोसेफ अपने चरमोद्देश्य के सम्बन्ध में भयानक अतर्द्वन्द्व लिये, रात से ही इन्ही खेतो में इधर-उधर भटक रहे थे। रोते-रोते उनकी आँखें सूज आयी थी। वे ठण्ड के मारे कांप रहे थे और उनके मुँह से ठीक से आवाज़ नही निकल रही थी।

"मैं क्या करूँ जीन ? मेरी सहायता करो!" वे चिल्ला पडे। "मैं अपने पिता का दिल नही तोडना चाहता और न तो ईश्वर से की हुई प्रतीज्ञा ही तोड सकता हूँ। इनमे से कुछ भी करने के बजाय मै मर जाना अच्छा समझता हूँ। क्या ही अच्छा होता, यदि मै इस यत्रणा से अभी, यही मर जाता!"

बूढे आर्चबिशप को वह दृश्य बिलकुल स्पष्ट याद आया। दोनो युवक, अपने-अपने घरो से चोरी से भागे हुए, इस प्रकार भेष बदले, जैसे वे अपराधी हो, उस धुँधले प्रभात मे खेत मे खडे थे। वे यह समझ नही सके थे कि अपने मित्र को किस प्रकार ढाढस बँधाएँ, उन्हे ऐसा लगा था कि जोसेफ को असहनीय वेदना हो रही है, वे वास्तव मे महत्वाकाक्षाओ के सघर्ष मे पिसे जा रहे थे। वे एक दूसरे का हाथ पकडे, विचारो मे निमग्न इधर-उधर टहल रहे थे कि उन्हे कोई गडबडाहट जैसी आवाज़ सुनायी पडी, पेरिस जाने वाली गाडी पहाड से नीचे उतर रही थी। जोसेफ निस्तब्ध

खडे रह गये और दोनो हाथो से अपना चेहरा ढँक लिये। तभी गाडी हाँकने वाले की सीटी बजी।

"चलो, चलें।" जीन ने धीरे से कहा। "यात्रा का आमत्रण है! तुम मेरे साथ पेरिस तक चलो। हमारे वहाँ पहुँच जाने पर, यदि तुम्हारे पिता तब तक शान्त नही हो गये रहेगे, हम बिशप फ.. से तुम्हे तुम्हारी प्रतिज्ञा से मुक्त करा देंगे, और तुम रिमोय वापस चले आना। यह बिलकुल आसान काम है।"

वे दौड कर सड़क पर गये और उन्होने गाडी के ड्राइवर को रुकने का सकेत किया। गाडी रुक गयी। क्षणभर बाद ही गाडी रवाना हो गयी और जोसेफ रात भर जगने के कारण तुरन्त ही अपनी सीट पर सो गये। परन्तु बाद को वे हमेशा कहा करते थे कि यदि जीन लातूर ने उन्हे उस समय हिम्मत न दिलायी होती, तो वे जीवन भर पाय-दे डोम में गिरजा के पादरी बने रहते।

इन दोनो पादरियो मे, जो उस वसत ऋतु के प्रभात में रियोम से रवाना हुए थे, जीन लातूर ही ऐसे जान पडते थे, जिनके मिशनरी जीवन मे सफल होने की अपेक्षाकृत अधिक सम्भावना थी। वास्तव मे वे शरीर और दिमाग दोनो ही से स्वस्थ थे। विदेशी मिशनो के कालेज मे उनके रहने के समय, वहाँ के अधिकारियो को यह आशका हुई थी कि जोसेफ मिशनरी जीवन की कठिनाइयो के लिये उपयुक्त नही हैं। परन्तु आगे चलकर, वर्षो की लम्बी परीक्षा में, उस कृशगात ने ही अधिक कष्ट सहन किया था और काम भी उसी ने अधिक किये थे।

फादर लातूर बहुधा ही कहा करते थे कि उनके इलाके मे सीमा-रेखाओ के अतिरिक्त कोई परिवर्तन ही नही होता था। मेक्सिकन हमेशा मेक्सिकन ही रहते और रेड-इण्डियन रेड-इण्डियन ही। साता फे काफी पिछडा हुआ स्थान था, वहाँ कोई प्राकृतिक साधन भी नही थे और व्यवसाय की दृष्टि से भी उसका कोई महत्त्व नही था। परन्तु फादर

वेलेट एक महान् औद्योगिक विकास वाले क्षेत्र मे फेंक दिये गये थे, जहाँ धूर्तता और चालबाजी तथा श्रेष्ठ महत्वाकाक्षाएँ एक दूसरे से लिपटी हुई साथ-साथ चल रही थी, एक ऐसा क्षेत्र जो अचानक ही बडी तेजी से आगे बढा था और फिर उस पर विनाशकारी विपत्तियाँ आ गयी थी। प्रत्येक वर्ष, पगु हो जाने के बाद भी, वे वहाँ की सरकारी गाड़ियो से तथा अपनी निजी गाडी से हजारो मील चलकर उन पहाडी नगरो की यात्रा करते थे, जो आज तो धनी हैं, और कल गरीब एवं निर्जन तथा परित्यक्त, बोल्डर, गोल्ड हिल, कैरीवी, काशे-अ ला पोड़े, स्पेनिश बार, साउथ पार्क, अर्कास राज्य मे काशे क्रीक तथा कैलिफोर्निया गल्च तक।

और फादर वेलेट को केवल मिशनरी पादरी बने रहने से ही सतोष नही हुआ था। वे तो एक उन्नायक भी बन गये थे। उन्होने देखा कि कोलोरैडो राज्य मे धर्म-प्रचार के लिये काफी अच्छी सम्भावनाएँ है। वे खुद इतनी गरीबी मे थे कि वे अपने लिये एक मकान तथा आराम के सामान्य साधन भी नही रख सकते थे। किन्तु अब वे धार्मिक सस्थानो की स्थापना के लिये बडे-बडे भूखण्ड खरीदने लगे। वे बहुत थोडे पैसो मे काफी अधिक जमीन खरीद सके, परन्तु वह थोड़ा पैसा भी बैको से अत्यधिक ऊँचे व्याज पर ऋण के रूप मे लेना पडा। उन्होने कनवेंट तथा स्कूलो के निर्माण के लिये ऋण लिया और उसका व्याज ही उन्हे खा गया। उन्होने ओहिओ तथा पेसिल्वेनिया राज्यो एव कनाडा देश की लम्बी-लम्बी भिक्षा-यात्राएँ की और व्याज चुकाने के लिये, जो दिन दूना रात चौगुना बढता जा रहा था, लोगो से चन्दे माँगे। उन्होने एक भूमि-कम्पनी स्थापित की, वे फ्रास गये और वहाँ से धन एकत्र करने के लिये लोगो को ऋण पत्र बेचे, और बेइमान दलालो ने उन्हे बदनाम कर दिया।

जब फादर वेलेंट की अवस्था सत्तर वर्ष की थी, और उनका एक पाँव दूसरे से चार इञ्च छोटा था, और उस समय वे कोलौरेडो के प्रथम बिशप थे, उन्हे पोप की अदालत के सामने अपने पैसो का पेचीदा हिसाब-किताब

समझाने के लिये रोम बुलाया गया,—और वडी कठिनाई से वे कार्डिनलो को उसके सम्वन्ध में सन्तुष्ट कर सके।

जिस समय साता फे मे विशप वेलेंट की अचानक मृत्यु का समाचार तार द्वारा पहुँचा, फादर लातूर तुरन्त डेनवर के लिये नये रेल-मार्ग से रवाना हो गये। परन्तु उन्हे तार पर विश्वास ही नही होता था। उन्हे उनका वही पुराना उपनाम 'मृत्यु को धोखा देने वाला' याद आया और उन्होने सोचा कि पहले कितनी वार वे पर्वतो एव रेगिस्तानो को पार करते हुए उनके पास पहुँचे थे, और तव भी रास्ते भर उन्हे यह आशा न रहती थी कि वे अपने मित्र को जीवित पायेंगे।

विचित्र वात थी कि फादर लातूर यह कभी महसूस ही नही कर सके कि वे फादर की अत्येष्टि के समय विद्यमान थे—या यो कहिये कि उन्हे विश्वास ही नही होता था कि वहाँ फादर जोसेफ का शव है। शवपेटिका में रखा हुआ वह चुचका हुआ छोटा सा बूढा व्यक्ति, जो वन्दर से वड़ा नही लगता था—नही, नही ये फादर वेलेट नहीं हो सकते। वे जोसेफ को स्पष्ट रूप से अपनी आँखो के सामने वैसे ही देख रहे थे, जैसे वर्नार्ड को, परन्तु उनका यह चित्र ठीक वैसा था, जैसे वे उस समय थे, जव वे प्रथम वार न्यू मेक्सिको आये थे। यह कोई भावुकता न थी, उनकी स्मृति फादर जोसेफ का केवल वही चित्र प्रस्तुत करती थी, अन्य कोई नही। स्वय अंत्येष्टि को ही वे एक स्वीकृति, एक मान्यता के रूप में याद किया करते थे। अत्येष्टि संस्कार खुले मैदान मे, शामियाने के नीचे हुआ था, डेनवर में, या यो कहो कि सारे सुदूर पश्चिमी अमेरिका मे, इतनी वड़ी कोई इमारत ही नही थी, जिसमे उनके ब्लाचेट का अन्तिम सस्कार किया जा सकता। दो दिन पहले से ही गाँवो तथा खनिक शिविरो मे विशाल जन-समूह एकत्र होने लगा था, वे गाडियो मे, तम्बुओ मे, खलिहानो मे रात विताते हुए आ रहे थे। वहाँ इतनी वड़ी भीड़ एकत्र हुई, जैसे किसी मठ

के विशाल मैदान मे राष्ट्रीय सभा हो रही हो और सस्कार के समय एक विचित्र घटना घटी—

फ्रासीसी पादरी फादर रेवार्डी, जो लगभग बीस वर्ष पहले फादर वेलेट के साथ साता फे से कोलोरैडो भेजे गये थे, और जो तब से ही उनके सहायक एव विकार के रूप मे काम कर रहे थे अपने बिशप (फादर वेलेट) द्वारा किसी काम से फास भेजे गये थे। वहाँ उनके डाक्टर ने उन्हे बताया कि उन्हे कोई असाध्य रोग हो गया है। यह सुनते ही वे जहाज द्वारा तुरन्त घर के लिये रवाना हो गये, ताकि वे अपनी रिपोर्ट बिशप वेलेट को दे सकें और काम करते-करते ही मर जांय। शिकागो पहुँचते-पहुँचते उनके रोग का एक गहरा दौरा हुआ और वे एक कैथोलिक अस्पताल ले जाये गये, जहाँ वे बीमार पड़े रहे। एक दिन कोई नर्स उनकी चारपाई के पास एक अखबार छोड गयी, उस पर दृष्टि दौडाते हुए, फादर रेवार्डी ने कोलोरेडो के बिशप की मृत्यु-सूचना देखी। जब नर्स लौट कर आयी, तो उसने देखा कि वे कपडे पहने तैयार बैठे है। उन्होने उसे इस बात के लिये तैयार कर लिया कि उन्हे सद्यः रेलवे स्टेशन पहुँचा दिया जाय। डेनवर पहुँच कर उन्होने एक घोडा-गाडी ली और उससे बिशप के अत्येष्टि सस्कार के स्थल पर चलने को कहा। वे वहाँ उस समय पहुँचे, जब पूजा-पाठ आधा ही समाप्त हुआ था, और इस मरते हुए आदमी के दृश्य को देख कर कोई उसे भुला नही सकता था। गाडी के ड्राइवर तथा दो पादरियो का सहारा लिये वह भीड़ को चीरता हुआ शव-मच के पास तक पहुँचा और उसी बगल मे घुटनो के बल झुककर बैठ गया। उसके लिये एक कुर्सी मँगायी गयी और सस्कार समाप्त होने तक वह शवपेटिका के छोर पर अपना माथा टेके बैठा रहा। बिशप वेलेट के अपनी कब्र मे पहुँचाये जाने के बाद फादर रेवार्डी अस्पताल ले जाये गये, जहाँ वे थोडे ही दिन बाद मर गये। फादर जोसेफ लाल लोगो मे (रेड इण्डियन लोग), पीले लोगो मे तथा श्वेत लोगो मे अपने प्रति बहुधा ही जो

असाधारण श्रद्धा उत्पन्न कर देते थे, और इतनी लम्बी अवधि तक बनाये रखते थे, उसी बात का यह एक और ज्वलन्त उदाहरण था।

६

बिशप अपने जीवन के उन अन्तिम सप्ताहो मे मृत्यु के सम्बन्ध मे बहुत कम सोचते थे, वे सोचते थे कि वे तो केवल विगत काल को छोड़ रहे हैं। भविष्य स्वय अपनी चिन्ता करेगा। परन्तु मरने के सम्बन्ध में उन्हे एक मानसिक जिज्ञासा अवश्य थी, उन परिवर्तनो के सम्बन्ध मे जिज्ञासा थी, जो मनुष्य के विश्वासो एव जीवन के आपेक्षिक मूल्यो के सम्बन्ध में होते है। अधिकाधिक उन्हे यह लगने लगा कि जीवन आत्मा की अनुभूति है, परन्तु किसी भी अर्थ में वह स्वय आत्मा नही है। वे जानते थे कि उनका यह विश्वास उनके धार्मिक जीवन से एक अलग वस्तु है, यह ज्ञान तो उन्हे मनुष्य के रूप मे, साधारण मानव प्राणी होने के नाते, ही प्राप्त हुआ था। और उन्होने देखा कि अब वे अपने तथा अन्य लोगो के आचरण को एक भिन्न दृष्टिकोण से परखते हैं। उनके जीवन की गलतियाँ महत्त्वहीन लगने लगी, वे दुर्घटनाएँ महत्त्वहीन लगने लगी, जो यहाँ आते समय रास्ते मे घटी थी, जैसे गेलवेस्टन बन्दरगाह मे जहाज का डूबना या उस समय गाडी का उलटना, जब वे अपने पद पर आसीन होने के लिये प्रथम बार न्यू मेक्सिको आ रहे थे, और जिसमें वे घायल हो गये थे।

उन्होने यह भी देखा कि अब उनकी स्मृतियो मे कोई आनुपातिक स्पष्टता नही रह गयी है। उन्हे बचपन के वे दिन जब वे जाड़े मे अपने चचेरे भाइयो के साथ भूमध्य सागर के तटवर्ती प्रदेश में रह रहे थे तथा पवित्र नगर (रोम) में विद्यार्थी के रूप में बिताये गये दिन उतना ही स्पष्ट याद थे, जितना मोलनी का यहाँ आना तथा उनके गिरजाघर का निर्माण। शीघ्र ही वे दिन, सप्ताह, महीना वर्ष आदि सूचित करने वाले

समय की सीमाओं का उल्लंघन कर जायँगे, और अभी से उनके लिये उसका कोई महत्त्व नही रह गया था। वे अपनी ही चेतनता के बीच घिरे हुए थे। उनसे मस्तिष्क की कोई भी पूर्व-स्थिति न तो नष्ट हुई थी और न ही वह किसी अन्य स्थिति द्वारा अतिक्रान्त हुई थी। वे सभी उनकी पहुँच मे थी और उन सभी को वे समझ सकते थे।

कभी-कभी ऐसा होता था कि मैगडलेना या बर्नार्ड जब उनके पास आकर उनसे कोई प्रश्न पूछते तो उन्हे अतीत से वर्तमान में आने मे कई क्षण लग जाते थे। वे जानते थे कि वे (मैगडलेना आदि) यह समझ रहे है कि उनका मस्तिष्क अब जवाब दे रहा है, परन्तु सच तो यह था कि वह (मस्तिष्क) उनके जीवन रूपी महान् नाटक के किसी अन्य दृश्य मे असाधारण रूप से व्यस्त था, ऐसा दृश्य, जिसके सम्बन्ध मे वे (बर्नार्ड या मैगडलेना) कुछ भी नही जानते थे।

आवश्यकता पडने पर वे वर्तमान् मे आ भी जाते थे, परन्तु अब वर्तमान् मे कुछ शेष ही नही रह गया था, फादर जोसेफ मर चुके थे, ओलिवारिस, पति-पत्नी दोनो ही, मर चुके थे, किट कारसन मर चुका था, उनके जीवन-नाटक के केवल छोटे-छोटे नायक ही तो अब वर्तमान मे शेष रह गये थे। बिशप के साता फे वापस आने के कई सप्ताह पश्चात् एक दिन सुबह, उनके गहरे बीते दिनो का एक श्रेष्ठ नायक उनके समक्ष प्रकट हुआ, स्मृति मे नही अपितु हाड़-मास के रूप मे, और वर्तमान के इस सारहीन प्रकाश में—नवाजो यूज़ावियो। एक चौकी से दूसरी चौकी मे पहुँचते-पहुँचते, अन्त मे कोलोरैडो चिकिटो मे यह समाचार उसे मिला था कि बूढे आर्चविशप की हालत अब ठीक नही है, और वह रेड इण्डियन तुरन्त साता फे के लिये चल पडा था। वह भी अब बूढा हो गया था। एक वार पुन. दोनो के हाथ मिले। विशप ने अपनी आँखो से आँसू का एक बूंद पोछा।

"मै इस मिलन के लिये कितना बेचैन हो रहा था, मेरे मित्र। मै तो

तुम्हारे पास आने के लिये सन्देश भेजना चाहता था, परन्तु सोचता था कि रास्ता बहुत दुर्गम है।"

बूढा नवाजो मुस्करा पडा। "अब रास्ता दुर्गम नही रह गया है। मै गाडियो से आया हूँ, फादर। मैने गैलप में गाडी पकडी, और उसी दिन यहाँ पहुँच गया। वह दिन तो आपको याद होगा, जब हम अपने घर से साता फे आये थे। तब आने मे कितना अधिक समय लगा था! लगभग दो सप्ताह! अब यात्राएँ बड़ी तेज होती है, परन्तु पता नही अपेक्षाकृत तेज यात्रा करके लोग तब से अपेक्षाकृत श्रेष्ठ मार्ग पर जा रहे है या नही!"

"हमें भविष्य जानने का प्रयत्न नही करना चाहिये, यूज़ावियो! अच्छा है कि हम न जानें। और मैनुलिटो कैसा है?"

"मैनुलिटो ठीक है, वह अब भी अपने कबीले का नेता है।"

यूज़ावियो वहाँ अधिक देर तक नही रुका परन्तु उसने कहा कि मैं कल फिर आऊँगा, क्योकि साता फे मे मेरा कुछ काम है और मैं यहाँ कुछ दिन रहूँगा। वास्तव मे उसका कोई काम नही था। उसने फादर लातूर की ओर देख कर मन मे कहा, "अब अधिक देर नही है।"

उसके चले जाने के बाद विशप ने बर्नार्ड से कहा, "मेरे बेटे, मेरे जीवन-काल में दो भारी अन्याय समाप्त हुए, मैंने नीग्रो जाति के लोगो को गुलाम बनाने की प्रथा का अन्त देखा और मैंने नवाजो को पुन. अपने प्रदेश में पूर्वावस्था मे वापस होते देखा।"

अनेक वर्षो तक फादर लातूर वह सोचा करते थे कि क्या एक भी नवाजो या अपाचे के जीवित रहते, रेड इण्डियनो की लडाई का कभी खात्मा हो सकेगा। उस लडाई से बहुत से व्यापारी तथा उद्योगपति बहुत पैसा कमाते थे, उसे चालू रखने के लिये एक राजनीतिक यन्त्र-जाल तथा अथाह पूँजी का उपयोग किया जा रहा था।

७

बिशप न्यू मैक्सिको मे अपने आवास के मध्यकालीन वर्षो मे नवाज़ो के सताये जाने तथा अपने ही प्रदेश से निष्कासित किये जाने से बडे दु:खी हुए थे। यूज़ावियो से मैत्री के कारण वे अपने नये इलाके मे आते ही नवाज़ो लोगो मे दिलचस्पी रखने लगे थे, वे उनकी प्रशसा करते थे, उनके सम्बन्ध मे वे बहुत सी बातें सोचते थे। यद्यपि ये खानाबदोश लोग उन रेड इण्डियनो की अपेक्षा, जो गाँवो मे बसकर घरो मे रहते थे, श्वेत लोगो के तरीको को अपनाने मे बहुत सुस्त थे और मिशनरियो तथा श्वेत लोगो के धर्म के प्रति अपेक्षाकृत बहुत अधिक उदासीन थे, तथापि फादर लातूर उनमे श्रेष्ठतर शक्ति का अनुभव करते थे। उनके रहस्यपूर्ण मौन के पीछे कोई प्रयोजन, एक विश्वास छिपा हुआ था, जो सक्रिय एव द्रुत था और जो प्रभावकारी भी था। नवाज़ो का अपने देश से निष्कासन, जो पता नही कितने समय से उनके भाग्य मे लिखा हुआ था, बिशप को एक ऐसा अन्याय लगता था, जो चिल्ला-चिल्ला कर ईश्वर की भी दुहाई दे रहा था। वे उस भयानक जाडे को कभी नही भूल सकते, जब उनका पीछा किया जा रहा था और हज़ारो की सख्या में उन्हे अपने ही सरक्षित स्थान से तीन सौ मील दूर पेकोस नदी के किनारे बोस्क रेडोडो नामक स्थान पर खदेडा गया था। उनमे से सैकड़ो, पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे, ठण्ड और भूख से रास्ते ही में मर गये, उनकी भेड़ें और घोडे पहाडो को पार करने में थककर चूर हो गये और मर गये। कोई भी खुशी या स्वेच्छा से नही भागा था, उन्हे भूख और सगीनो ने मार भगाया था। उन्हे अलग-अलग भुण्ड मे बदी बना लिया जाता था और फिर बड़ी निर्दयता से निर्वासित कर दिया जाता था।

उनका (बिशप का) पथ-भ्रष्ट मित्र किट कारसन ही तो था, जिसने इन नवाज़ो के बचे हुए अन्तिम अविजित दल को परास्त किया था। उसने उनका कैनियन डि चेली नामक पर्वत के ही दर्रे तक पीछा किया था,

जहाँ वे अपने चरागाहो वाले मैदानो तथा चीड़ के जगलो से भागकर अन्तिम मोर्चा बनाने पहुँच थे। वे गडरिये थे, उनके पास अपने जानवरो के अतिरिक्त अन्य कोई सम्पत्ति नही थी, ऊपर से स्त्रियो एव बच्चो का भी बोझ था। उनके पास शस्त्र बहुत थोडे थे और गोला बारूद भी बहुत कम। परन्तु यह दर्रा अब तक श्वेत सैनिको के लिये अभेद्य सिद्ध हुआ था। नवाजो का विश्वास था कि उस पर अधिकार नही किया जा सकता। उनका विश्वास था कि उनके देवता इसी दर्रे के दुर्ग मे रहते है, उनके शिपराक (इस नाम का ऊँचा पहाड़) की भाँति वह एक अलघ्य स्थान था वह उनके जीवन का सर्वस्व था।

कारसन लाल पत्थर वाले ऊँचे-ऊँचे पर्वत-शिखरो के बीच छिपी हुई उस दुनिया मे उनका पीछा करता, उनके सामान आदि नष्ट कर देता, उनके अनाज के खेत बरबाद कर देता और शफ्तालू के बगीचे उजाड़ देता। जब नवाजो देखते कि उनकी सभी प्रिय वस्तुएँ बरबाद कर दी गयी हैं, तो वे हताश हो उठते थे। फिर भी उन्होने आत्म-समर्पण नही किया, महज़ लड़ना बन्द कर दिया और वे बंदी बना लिये गये। कारसन हुक्म तामील करने वाला सिपाही था और उसने एक सिपाही की भाँति सभी निर्दयतापूर्ण कार्य किये। परन्तु वह सबसे बहादुर नवाजो सरदार को नही गिरफ्तार कर सका। मैनुलिटो कैनियन डि चेली में अपने दल की करारी हार के पश्चात् भी अभी फरार था। उसी समय यूज़ावियो ने साता फे आकर विशप लातूर से कहा था कि वे मैनुलिटो से जूनी मे मिल लें। पादरी की हैसियत से विशप सोचते थे कि इस बागी सरदार से मिलने के लिये राज़ी हो जाना बुद्धिमत्ता नही है, परन्तु पादरी के अतिरिक्त वे मनुष्य भी तो थे और न्याय के वे बहुत बडे समर्थक थे और यह प्रार्थना उनसे इस ढंग से की गयी थी कि वे इनकार नही कर सके। वे यूज़ावियो के साथ चले गये।

यद्यपि सरकार ने मैनुलिटो को जीवित या मृत पकडने के लिये भारी

इनाम की घोषणा कर रखी थी, वह अपने स्थान से जूनी तक, दिन दोपहर को गया। उसके साथ उसके एक दर्जन अनुयायी थे, जो सभी दुवले पतले घोड़ो पर सवार होकर गये थे। वह कोलोरैडो चिकिटो मे, युजावियो के इलाके मे, अब तक छिपा हुआ था।

मैनुलिटो को आशा थी कि विशप वाशिंगटन जायँगे और वहाँ अधिकारियो से उसके गिरोह के लोगो की ओर से सिफारिश करेंगे कि वे पूर्णत. नष्ट न कर दिये जाँय। उसने फादर लातूर से कहा कि वे अपने धर्म तथा अपने आवास-क्षेत्र के अतिरक्त जहाँ वे अनादि काल से ही रहते चले आ रहे है, सरकार से अन्य कुछ नही चाहते। उसने समझाने की कोशिश की कि उनका प्रदेश उनके धर्म का ही एक अग है, दोनो एक दूसरे से अलग नही किये जा सकते। कैनियन डि चेली को तो पादरी साहव जानते हैं, उसी दर्रे मे उसके कवीले के लोग तव से रहते आ रहे है, जब उनका दल बहुत छोटा और कमजोर था, उसी दर्रे मे पल कर वे वडे हुए, उसने उनकी रक्षा की, वह उनकी माँ के तुल्य है। इसके अतिरिक्त उनके देवता वही रहते है—मानव पहुँच के परे उन श्वेत मकानो मे, जो ऊँची-ऊँची चट्टानो के बीच वनी गुफाओ मे वने है—वे गुफाएँ श्वेत लोगो की दुनिया से अपेक्षाकृत प्राचीन है, और जिनमे किसी भी मनुष्य ने प्रवेश नही किया था। उनके देवी-देवता वही है, जिस प्रकार पादरी साहव के देवता गिरजाघर मे रहते है।

और कैनिडियन चेली के उत्तर शिपराक था, जो एक पतला सा, परन्तु अत्यन्त ऊँचा पहाड़ था और एक समतल मरुस्थल मे अकेला खडा था। पचास-साठ मील की दूरी से देखने पर वह एक मस्तूल वाले छोटे जहाज की तरह लगता था, जिसका पाल पूरा फैला हुआ हो, और इसी कारण श्वेत लोगो ने उसका नाम 'शिपराक' रख दिया था। परन्तु रेड इण्डियन लोग उसका दूसरा नाम रखे हुए थे। उनका विश्वास था कि यह पर्वत खण्ड कभी हवा मे उड़ने वाला जहाज था। मैनुलिटो ने विशप से

वतलाया कि शताब्दियो पहले वह पहाड हवा में चलता था। उस समय उसके शिखर पर नवाजो जाति के पूर्वज बैठे हुए थे और वह उन्हे सुदूर उत्तर में उस स्थान से लेकर उडा था, जहाँ सभी मनुष्यो का प्रादुर्भाव हुआ था। यह पर्वत जहाँ भी उतरता, वही स्थान उनका आवास-क्षेत्र हो जाता था। वह एक मरु-प्रदेश मे उतरा, जहाँ प्राणियो के लिये रहना अत्यन्त कठिन था। परन्तु उन्होने कैनियन डि चेली को ढूंढ निकाला, जहाँ आश्रय स्थान एव प्रचुर मात्रा मे पानी था। वह दर्रा और शिपराक उसकी जाति के लोगो के लिये दयालु माता-पिता की तरह है, ये स्थान उनके लिये गिरजाघरो से भी अधिक पवित्र है, जितना कोई भी स्थान किसी श्वेत के लिये पवित्र नही हो सकता। फिर वे वहाँ से तीन सौ मील दूर एक अनजाने प्रदेश मे कैसे रह सकते है ?

इसके अतिरिक्त, वोस्क रेडोडो, रायो ग्राड से बहुत पूरब पैकोस नदी के किनारे था। मैनुलिटो जमीन पर ही एक नकशा खीच कर विशप को समझाने लगा कि आदिकाल से ही उसकी जाति के लोगो को यह आदेश था कि वे पूरब में रायो ग्राड से पार न जांय, उत्तर में रायो सैन जुआन से पार न जांय और पश्चिम मे रायो कोलोरैडो से पार न जांय, और यदि वे ऐसा करेंगे तो उनका कबीला ही नष्ट होकर समाप्त हो जायगा। यदि फादर लातूर जैसा कोई वडा पादरी वाशिंगटन जाकर इन सारी वातो को समझाये, तो सरकार कदाचित् मान जाय।

फादर लातूर ने उस रेड इण्डियन को समझाने की कोशिश की कि किसी प्रोटेस्टेंट देश में कोई रोमन पादरी सरकार के मामलो में हस्तक्षेप नही कर सकता। यही उसकी मजबूरी है। मैनुलिटो ने वडे धैर्य से इसे सुना, परन्तु विशप ने देखा कि वह उनके कहने का विश्वास नही कर रहा है। उनके कह लेने के वाद नवाजो उठा और वोला —

"आप क्रिस्टोबाल के मित्र है, जो हम लोगो का पीछा करता है और हमे पहाडो पर खदेडता हुआ वोस्क रेडोडो तक पहुँचा देता है। आप अपने

मित्र से कह दीजिये कि वह मुझे ज़िन्दा कभी नही पकड सकता। वह जब भी चाहे, आकर मुझे मार डाल सकता है। दो वर्ष पहले मेरे पास इतनी भेंड़ें थी कि मै उन्हे गिन नही सकता था, और अब मेरे पास केवल बीस भेंडें तथा कुछ मरियल घोडे ही रह गये है। मेरे बच्चे वृक्षो की जड़े खा रहे है और मै अपनी जान की चिन्ता नही करता। परन्तु मेरी माँ और मेरे देवता पश्चिम मे है, और मै रायो ग्राड को कभी भी नही पार कर सकता।"

उसने सचमुच कभी नही पार किया। वह अपनी जाति के लोगो की निर्वासन से वासपी तक छिपा ही छिपा घूमता रहा। उनकी वापसी एक अप्रत्याशित बात के कारण हो गयी।

बोस्क रेडोडो नवाजो के लिये एक अत्यन्त अनुपयुक्त प्रदेश सिद्ध हुआ। सिंचाई आदि करके वहाँ खेती अवश्य की जा सकती थी, परन्तु वे लोग तो बनजारे गडरिये थे, कृषक नही। उनकी भेंडो के लिये वहाँ कोई चरागाह नही था। वहाँ जलाने के लिये लकडी नही थी। वे एक प्रकार के वृक्ष की जडें खोद-खोद कर निकालते थे और सुखाकर उन्ही से इंधन का काम लेते थे। वह रेह-प्रधान प्रदेश था और गन्दा एव अशुद्ध पानी पीने के कारण सैकड़ो रेड इण्डियन मर गये। अन्त मे वाशिंगटन स्थित सरकार ने अपनी गलती महसूस की, यद्यपि सरकारे कदाचित् ही गलती स्वीकार करती है। पाँच वर्ष के निष्कासन के पश्चात् नवाजो कबीले के बचे-खुचे लोगो को अपने प्रिय एव पवित्र स्थान पर वापस जाने की अनुमति मिल गयी।

सन् १८७५ ई० मे बिशप अपने फ्रासीसी कारीगर को अरिज़ोना राज्य की यात्रा करने लिवा गये, ताकि फ्रास वापस होने से पूर्व, वह इस देश की एक झलक पा जाय। वहाँ वे नवाजो घुडसवारो को एक बार फिर अपने विशाल मैदानो मे स्वच्छदता से दौड़ते हुए देखकर बडे प्रसन्न हुए। दोनो फ्रासीसी व्यक्ति अद्भुत् पहाडी खण्डहरो को देखने कैनियन डि चेली तक

गये, ऊँची-ऊँची चट्टानी दीवारो के बीच उस नीची घाटी प्रदेश में एक बार फिर फसले उग रही थी, विशाल सेमल के वृक्षो के नीचे भेड़ें चर रही थी और मीठे जल वाली नदियो मे पानी पी रही थी, वह रेड इण्डियनो के लिये स्वर्ग था।

आज, जब वे वृद्ध होकर बीमार पडे हुए थे, विशप के मस्तिष्क मे बीते हुए उन दिनो के अनेक दृश्य, अच्छे और बुरे सभी, नाचने लगे—नवाजो के वे भयानक चेहरे, जब वे देश-निष्कासक के समय नदी से उस पार उतरने के लिये रायो ग्राड के किनारे नाव की प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे, घर वापस जाते समय बचे हुए लोगो की लम्बी पक्ति, जो अपने थोडे से जानवरो को हाँकते हुए तथा बूढो एव बच्चो को लादे हुए चले जा रहे थे। उन दिनो की स्मृतियाँ उनके मस्तिष्क में आयी, जब वे यूजावियो के साथ वसत के प्रारम्भ में कुछ दिन लिटिल कोलोरैडो मे रहे थे। भेडो का बच्चा देने का मौसम अभी समाप्त नही हुआ था—साँवले रग के घुड़सवार ऐसे मेमनो को अपनी गोद मे लिये चले जा रहे थे, जिनकी माँ मर गयी थी— एक नौजवान नवाजो औरत ने एक मेमने को तब तक अपना स्तन पिलाया था, जब तक उसके लिये अन्य भेंड नही ढूंढ निकाली गयी थी।

"बर्नार्ड," बूढे विशप बडबडा उठते, "ईश्वर की बडी कृपा रही कि उसने मुझे उन अन्यायो का सुन्दर समाधान देखने के लिये जीवित रखा। अब मै नही सोचता कि रेड इण्डियन जाति का कभी अवसान हो जायगा, यद्यपि पहले मै ऐसा सोचता था। मेरा विश्वास है कि ईश्वर उसे सुरक्षित रखेगा।"

८

अमेरिकन डाक्टर आर्च विशप से तथा मदर सुपीरियर से कह रहा था—"अब तो इनकी बीमारी हृदय की बीमारी है। मे थोडी-थोड़ी खुराक में उन्हे दवा दे रहा था, ताकि वह काम करता रहे, परन्तु अब

दवा का कोई असर नही है। मैं दवा की खुराक बढा नही सकता. क्योंकि वह तुरन्त ही घातक सिद्ध हो सकती है। और तभी तो आप उनमे यह परिवर्तन देख रहे है।"

परिवर्तन यह था कि बूढे विशप ने खाना छोड़ दिया था, और रात-दिन सोते रहते थे या लगता था कि वे सो रहे है। उनकी मृत्यु के दिन उनकी दशा का आभास लगभग सभी को लग गया था। दिन भर गिरजाघर लोगो से भरा रहा और लोग उनके लिये प्रार्थना करते रहे, भिक्षुणियाँ तथा बूढी औरतें, युवक एव युवतियाँ आती-जाती रही। बीमार विशप को बडे तड़के ही महात्मा ईसा के अन्तिम भोज का स्मारक सस्कार-भोज दिया जा चुका था। टेसूक के कुछ रेड इण्डियन, जो गाँव मे उनके पडोसी थे, साता फे आ गये थे और दिन भर आर्चविशप के आँगन मे उनके सम्बन्ध मे समाचार जानने के लिये बैठे रहे। उनके साथ नवाजो यूजाबियो भी था। उनके पुराने नौकर फ्रक्टोसा और ट्रैक्विलिनो प्रार्थना करने वालो के साथ गिरजाघर मे थे।

मदर सुपरियर और मैगडलेना और वर्नार्ड उनकी सेवाशुश्रुषा मे लगे हुए थे। वरना वहाँ क्या था, केवल उनको देखते हुए वैठे रहना और प्रार्थना करते रहना। उनकी मुद्रा इतनी शान्त एव निश्चल थी। कभी-कभी लगता था कि वे सो गये है, ऐसा अनुमान लोग उनके निस्पन्द चेहरे को देखकर लगाते थे, दूसरे ही क्षण उनके चेहरे में एक चेष्टा सी आ जाती थी, एक चेतनता आ जाती थी, यद्यपि उनकी आँखें बन्द ही रहती थी।

दिन समाप्त होते-होते, गोधूलि वेला मे, जब वत्तियाँ जल चुकी थी, विशप थोडा बेचैन से होने लगे, वे थोडा हिले और वडवडाने लगे। वडवडाना फ्रासीसी भाषा मे था परन्तु वर्नार्ड कुछ समझ न सका, यद्यपि एकाध शब्द वह स्पष्ट रूप से सुन सका। वह चारपाई के पास झुक गया और वोला—"क्या है, फादर ? मै यही हूँ।"

वे बड़बड़ाते रहे और अपने हाथ धीरे-धीरे हिलाते रहे मैगडलेना ने समझा कि वे कोई चीज़ माँगने की कोशिश कर रहे है, या कुछ कहना चाहते है। परन्तु वास्तव में बिशप तो वहाँ थे ही नही, वे तो फ्रास में अपने जन्मस्थान के उस पर्वतीय भाग के एक हरे खेत में खडे थे और एक नवयुवक को, जो वहाँ से चले जाने की प्रबल इच्छा एव घर पर ही रुकने की घोर आवश्यकता के सघर्ष मे उनके समक्ष ही पिसा जा रहा था, सात्वना देने का प्रयत्न कर रहे थे। वे उस घोर धर्मिष्ठ एव शिथिल पादरी के मन मे एक नयी इच्छाशक्ति उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रहे थे और अब समय बहुत कम था, क्योकि पेरिस जाने वाली गाड़ी उधर पहाडी मार्ग से नीचे उतरने लगी थी।

अँधेरा होने के ठीक बाद ही गिरजाघर का घण्टा बजने लगा, और साता फे की मेक्सिकन जनता अपने घुटनो के बल धरती पर झुक गयी, और सभी अमेरिकन कैथोलिक भी झुक गये। बहुत से लोगो ने, जो झुके नही, मन ही में प्रार्थना की। यूजाबियो तथा टेसूक के लोग अपने यहाँ लोगो को समाचार देने चुपचाप वहाँ से चल दिये। दूसरे दिन प्रात.काल बूढे आर्चबिशप स्वनिर्मित गिरजाघर की उच्च वेदी के समक्ष चिर निन्द्रा मे पडे थे।